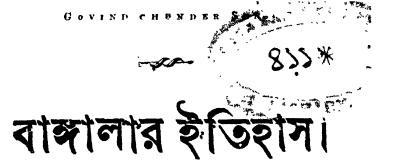
HISTORY

OF

BENGAL,

TRANSLATED INTO BENGALI,

BY



इ॰ ब्राक्ति इंहेट अनुवारिक इहेब्रा

শ্রীযুত বুজনাথ বসুর ছারা চোরবাগানের এংগ্নো ইণ্ডিয়ান যত্ত্রে মূদ্ভি হইল বাং সন ১২৪৬ সাল ইং ১৮৪১ সাল

निर्घण

| ই^রাজিশাল। | मुंड |
|---|-----------|
| ু বাঙ্গালাদেশের প্রাচীন ইতিহাশের | |
| অনিশ্চয় | > |
| গৌড় সুবর্ণ গ্রাম ও সপ্তগ্রাম এই তিন | • |
| প্রাচীন রাজ্ধানীর বিবর্ণ | ঽ |
| ় আদিশুর বল্লালসেন এবং অপর বৈষ্ট্য- | |
| বৰ্ণশীয় রাজারা | 8 |
| বাঙ্গালার প্রাচীন বিভাগ | * |
| ভারতবর্ষে মুসলমান্দিগের শক্তিবৃদ্ধি | 9 |
| ১২০০ ব্থতিয়ার থিলিজীকতৃ ক বাঙ্গালার জয় | 2 |
| ুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুু | 32 |
| ১২ ৩৭ তঘান্থী শুবাদার | 23 |
| ১২৫৩ মল্লীক্যজবেক শাসনকর্ত্র। হুইয়া আসাম | |
| জয় করিতে গিয়া পরাস্ত হইলেন | , 28 |
| ১২ ৭৭ অদীনতগরল রাজবিদ্রোহী হইয়াপরাস্ত | |
| হন | 3¢ |
| ১২৮২ নাজিরউদিন .৪৩ বৎসর বাজালা | |
| শাসন করেন | >2 |
| ১ ^{৩৪৩} नम्म उपिन वाकानाय श्रयस्य वाधीन | |
| রাজা | ンコ |
| ১৩৫৮ দেকুন্দর রাজা হইলেন | 20 |

| हरमा | াল | el & |
|--------------|--|------------|
| | भर्गमनामक अकिंग्यू त्रांका इहेरतम | , |
| | কিন্তু তাঁহার পুত্র মুসল্যান্ ছইলেন | ع ِع |
| 7805 | গণেশের পৌত্র অহমদসাহ রাজা হই- | |
| | িলেন | ই |
| 582 0 | নাজির শাহ রাজাহইলেন | 28 |
| | সৈয়দ হয়িন্সাহ রাজা হইয়া উত্তন- | |
| • | क्रिंग वाकामान्य करत्व - | ર ૯ |
| • | তাঁহার পৌত্র মহম্মদ সাহ ঐ রাজা | |
| | প্ৰাপ্ত হন | २१ |
| | সেরসাহের উহ্নতি | a ; |
| 50.09 | সের সাহ বাঙ্গালা জয় করিতে উদ্যোগ | |
| | করিলে তথাকার সাহায্যার্থে পোভু- | |
| | গিসদিগের আন্থান করেন | 24 |
| 7687 | <i>দের</i> সাহ দিল্লীর মহারাজ হ ই লেম | ٧> |
| 2686 | তাঁহার মৃত্যু | ঐ |
| 3¢ ≥8 ₹ | দলিমান্নামক এক পাঠান বাছালার | |
| | রাজা হুইলেন | ৩২ |
| ንፍቃት . | তাঁহার রাজভকালে কালাপাহাড়ের | |
| • | बाता छेड़िमात इंटल्ब्स | ⊘ 8 |
| ५६१७ ' | তাঁহার পুৰু দাউদ্ধা বাঙ্গালায় স্বাধীন | |
| | ব্ৰাক্তা ভইবেন | &C |

| ইণ শাল। | পৃষ্ঠ |
|---|-----------|
| ১ १९३ ज ङ्वरद्गत सामनदेमनादात्रा वाद्यानात्र | Ì |
| পরাজয় | ৩৭ |
| ১৫৭৫ গৌড়নগর মনুষ্যশূন্য হইল | 40 |
| ১৫৭৬ দাউদখাঁ পুনর্বার যুদ্দচেষ্টা করিয়া পারা- | |
| জিত হওয়াতে বাঙ্গালাদেশ দিল্লীসা <u>সু</u> ।- | |
| <i>লে</i> /র সহিত মিলিত. হয় | 60 |
| ১৫৮০ মোগলবৈন্যদিগের বিদ্রোহ্বারা অক- | • |
| वरतत वाश्वानारम्य नष्ट इहेन | 63 |
| অকবরের হিন্সদেনাপভিদারা বাহা- | |
| লার উদ্ধার | À |
| · ১৫৮২ রাজাতারল্নল্কর্ক ়বা লালাদেশের | , |
| রাজস্বনিৰূপণ - | 8.9 |
| ১৫৮৯ উড়িস্যার পাঠানেরা পুনর্বার বিদ্রোহী | • |
| হইয়া রাজা নান িস ্হলারা পরাজিত | |
| হয় | -68 |
| ১৬০৬ সেহাজির সুন্দরী নুরজেহান্কে আধির | |
| আশায় তাইার স্বানি সেরখাঁর বধার (| • |
| কুতৃব উদ্দিনকে বাহালার শাসনকর্ত্য | • |
| ক্রিলে ন | 8,9 |
| <u>বের্থীরে অপহাত মৃত্যু</u> | 89 |

| है भान | প্ |
|---|-------|
| ১৯০৮ সেক ইজলামথী বাঙ্গালার শুবাদার | |
| হইয়া ঢাকায় রাজধানী করিলেন | 8 |
| পোৰুণিসদিগের হুগলিতে বাসের | |
| বিবরণ | ঐ |
| সপ্তগুংমে বাণিজ্যের উচ্ছেদ | 09 |
| চউগুামে পোর্গিস নাবিকতঙ্গরদি- | |
| গের শক্তিবৃদ্ধি | ঐ |
| আরাকানীয়দিগের উপদ্রোহদারা সুন্দর- | |
| বনের উৎপত্তি | 89 |
| ইষ্ট ইপ্তিয়া কোম্পানির মূল | 20 |
| ইবুাহিন্থার অধীনে বাঙ্গালার সৌভা- | |
| গ্যকালে সাজেহানের উপদ্রোহ | ૯૭ |
| ১৬২ ৷ কেদাইখাঁ দশলকটাকা কর দিতে স্বীকার | |
| ক্রিয়া বাঙ্গালার শুবাদার হইলেন | £5 |
| ১৯৩১ সাজেহান মহারাজ হইয়া হুগলিস্তি | |
| পোতু গিসদিগের বাসস্থান আক্রমণ | • |
| क्रिंट चाडा मिलन | 30 |
| সাহ্যপূর্ক্তুত্গলির রকা ও ধ্বংস | હ્યું |
| ১৬৩৪ ইপরাজেরা বাঙ্গালায় বাণিজ্য করিতে | |
| जनम शाहरतन | ৬২ |

| इ॰ भाव। | श्रि |
|---|------------|
| ১৬.০৮ ইজ্লামথা শুবাদার হইয়া চ্ট্রগুমের | |
| অধিকার ও আসামদেশীয়দিগের | |
| প্রহার করেন | \$\O |
| ১৬৩৯ সুল্তান্ সা সুজা গুবাদার হইয়া ঢাকা | |
| হুইতে রাজমহলে রাজধানী দাড়ি- | |
| <i>লে</i> ন | 9 6 |
| গন্ধার স্থোতের পরিবর্ত্তন ও গ্রোড়নগ- | • |
| রের উচ্ছেদ | ঐ |
| ইণরাজেরা বালেশ্বর হুর্গলি ও পিপ্ন- | |
| লীতে কারখানাস্থাপন করেন | જ છ |
| ১৯৫৭ সাসুজা ৰাঙ্গালার রাজ্যের নুতন খাতা | |
| করেন | 3 9 |
| সুজা সাম্যুজ্যের নিমিত্তে যুদ্ধোদ্যোগে | ·• |
| পরাজিত হইয়া পলায়ন করিলেন | 97- |
| ১৬৫৯ শীরজুমলা তাঁহার অনুবর্তী হওয়াতে | • |
| তিনি আরাকানে পলায়ন করিলেন | |
| পরে সপরিবারে অপঘাতমৃত্যুতে | • |
| মারা পড়িলেন | . 40 |
| ১৯৯১ मीतज्ञूम्ला छ्वापात इहेंग्रा कृष्टवहात | |
| জ য় করেন | 93 |

| ই ~ শাল্ | श्र |
|---|------------|
| ১৬৬২ তিনি আসাম আক্রমণ করিয়া পরাজিত | |
| इहे श मित्रलन | 9,9 |
| ১৯৬২ সাইস্তর্থা শুবাদার হইয়া আরাকানদে- | |
| শীয়দিগের ও পোর্তু গিস্দিগের যুদ্ধে | |
| পর জয় করেন | 40 |
| ১৬৬৬ চন্ত্রগুমের শেষ ক্রয় | 4 |
| ১৬৬৮ ইণরাজেরা জাহাজের সহিত ত্গলি | |
| পর্যান্ত যাইতে আজ্ঞা পাইনেন | b-8 |
| ১৬৬৪ ফরাসিরা ইষ্ট ইপ্তিয়া কোম্পানিস্থাপন | |
| করেন | ঐ |
| ১৬১২ ফরাসিদিগের অনেক জাহাজ ত্গ- | |
| লিতে আসিল | खे |
| ১৬१६. अनमार्ज्यस ङ्गिनिए कार्यभाष्ट्रांशन | |
| কব্ৰে ন | F¢ |
| >७१७ मित्नगादात्रो - वाक्यानाग्न वाणिकगार्थ | |
| অাষেন | ঐ |
| ইণরাজেরা চিরকালবাণিজ্যার্থে সনন্দ | |
| পাইলেন ্ | ঐ |
| ১৬৭৯ আরঞ্জেবকত্ ক সাইস্থার প্রতি ছি- | |
| ন্দিগের নিগুহ করিতে আছে৷ হয় | 49 |

| ই শাল | পৃষ্ঠ |
|---|------------|
| ১৬৮১ বাহ্বালায় কোম্পানিতে অগ রাধী | |
| কারখানা করেন | À |
| কোম্পানির নদীমুখে দুর্গ করিতে প্র | 1- |
| ৰ্থনা | • ৮৮ |
| ই॰রাজদিগের প্রতি নবাবের মনোড | 64 10 |
| ১৬৮१ | ર્ગ . |
| करइन | * |
| ই৲রাজি নাবিকসেনাপ্রতি নিকল্স | • |
| সাহেবের অধীনে দশ্থান যুদ্ধজাহ | - |
| क चाहरम | B |
| ১৯৮৭ যুদ্ধজাহাজদারা তগলির দাহ ও ইণ | , |
| রাজদিগের সকল কারখানার আটব | |
| চাৰ্ণক সাহেৰ প্ৰথমে সুতানুট্যুতে পৰে | इ ं |
| ইঞ্জিলীতে পলায়ন করেন | 8 |
| ১৬৮৮ हे॰ बाक फिरगब मूर्याग इहे चाब उे शक्र | ম |
| - হীথসাহেবের আগমনে পুনর্বার | |
| বিপদ | 20 |
| তিনি কোম্পানির ভৃত্যবর্থ ও সম্প ত্তি | ī |
| লইয়া বাঙ্গালাপরিত্যাগ পুর্বক মা জা | জ . |
| গম্ন করেন | ঐ |
| ১৬৮৯ মাইস্তথার সন্দররাজফের শেখ | 46 |

| र~ भान | અંશ્ર |
|---------------------------------------|----------|
| ১৯৮৯ ইব্রাহিন্থা শুবাদার হইয়া ইণরাজ- | <u> </u> |
| দিগকে পুনরাজান করেন | 22 |
| ১৬৯০ ই পরাজেরা সূতানুটীতে আসিয়া কলি- | |
| কাতানগর আরম্ভ করেন | >00 |
| ১৯৯২ চার্ণক সাহেবের মৃত্যু | 202 |
| ১৯৯৫ বর্দ্ধানে শোভাসিংহের উপদ্রোহ | 205 |
| ই^রাজেরা কলিকাতায় দুর্গ আরম্ভ | |
| করেন | >08 |
| শোভাসি°্হ মারা পড়িলেন | >∘€ |
| ১৬৯৭ উপদ্রোহকারিদিগের অতিশয় বৃদ্ধি | ঐ |
| জ্বর্দ স্থাঁকভূক বিদ্যোহকারিদিগের | , |
| পরাজয় | 305 |
| ১৯৯৮ আজিম ওয়াণ শুবাদার হ ন | ঐ |
| রহিমথার যুদ্ধে মৃত্ | £0¢ ' |
| ১१०० कनिकां जांत्र भोजाग्र | 22° |
| ১৭০১ বাস্থালার দেওয়ান মুরসিদকুলিখার | |
| উপা খ্যান | ঐ |
| ১৭০৩ শুবাদারের সহিত তাঁহার বিবাদ ও | |
| মহারাজের আক্লানুসারে শুবাদারের | |
| -বাঙ্গলিপিরিত্যাগপুর্ঝক বেহারে রাব | |
| বিপক্ষ কোম্পানিব প্রায় ছয়বৎসর হিতি | 220 |

| हे॰ क | ा न | કોફ્ર |
|----------------------------|---|-------------|
| ५० ०१ | মহারাজঅরঞ্বের মৃত্যুতে আজিম- | • |
| | उषान मानु। जात निमित्व युक्तार्थ | |
| | योज। करत्रन | 228 |
| 595 0 | আজিমওষাণের পুত্র করকর দিল্লীর স- | |
| | भूषि इहे रलन | 225 |
| | मूत्रिएकृतियाँ। है॰ ताक्राः हिरात जनकात | |
| | करत्रन | ঐ. |
| <u>9</u>7976 | ই৲রাজেরা দিল্লীতে উত্তমদূতপ্রেরণ | |
| | করিয়া অনেক লভ্য পাইনেন | ঐ |
| ٩८٩ | মুর্সিদকুলিখাঁ কলিকাতার নিকটস্থ | |
| • | ०৮ गुरेम है॰ ब्राक्षिमग्रक मिर्छ वाथा | |
| | फिल्ब | 75,0 |
| 3972 | মুর্সিদ কুলিখা বাদালা বেহার ও উড়ি- | |
| | . স্যার দেওয়ান ও নাজিম হইলেন | ঐ |
| | তিনি ৰাশালার রাজস্ববিষয়ে রীতির | • |
| | পরিবর্ত্ত করেন | ১ ২৪ |
| | वाञ्चानात ताज्य ७ मिहीएठ वार्यिक कत | • |
| | (প্রেরণ | 750 |
| | তাঁহার সৈন্য ও জমিদার্দিণের প্রতি | • |
| | কঠিনতাও চরিত্র : | >29 |

| ইণ শাল | meh |
|--|-----------------------|
| ১গ২৫ তাঁছার মৃত্য | 5/8 |
| | 753 |
| ১৭২৫ উঁহোর জামাতা সুজাউদিন বাঙ্গালার | |
| শুবাদার | >00 |
| আলিবদিখার উন্নতি | ঐ |
| ১৭২৬ কলিকাতায় নগরাধ্যক্ষের বিচারস্থান | · |
| স্তাপন | ५७ २ |
| ১৭২৭ আলিব্দিখা বেহারের শুবাদার হই- | |
| লেন | >00° |
| ১१७० षारसम् हेष्टे, हेखियाकाम्भानित मृ | |
| <i>লেৎপাটন</i> | <i>></i> 08 |
| ১৭৩৬ মীরহুবীব ত্রিপুরা জয় করিয়া মুসলমানি | |
| রাজ্যে যুক্ত করেন | 306 |
| জন্ব ভ্রাযের উত্তম চরিত্র | > 00 |
| রাজবল্লভের দুশ্চরিত্র | :09 |
| কলিকাতায় ই ্রাজদিগের সুভোগ | १८ ८ |
| ১৭৩० চন্দুনগরে ভপলিক্সের উত্তম কতৃ व | ঐ |
| ১৭৩৭ কলিকাতায় মহাঝড় ও ভূমিকম্প | 60 C |
| ১৭৩৯ সূজাউদিনের রাজর তাঁহার মত্র | |
| ও তৎকমে নর্ফরাজখার নিয়োগ | >8• |
| ১৭৬০ আলিব ফিথা রাজ ছোহা হইলেন | \$ \$ ≷ |

| ই~ শ | ांव | અફ્રિ |
|-------------------|--|-------------|
| >98> | জরিয়ার যুদ্ধে সর্ফরাজখাঁ মারা পড়াতে | |
| | আলিবদিখি৷ গুৰাদার ছইলেন | \$8.0 |
| | জয়ের পর তাঁহার ন্যুত। | ঐ |
| | মুর্সিদ কুলিখাঁর অধীনে উভিস্য | 3 33 |
| | আলিবর্দিখী। উড়িস্যা তাঁহার হস্ত- | |
| | হ্ইতে নিজ ভ্রাতৃপুত্রের হত্তে অপণ | |
| | করেন | \$83 |
| | নহারাধীয়দিগের বাঙ্গালায় প্রথম উপ- | • |
| | <u>ত্ৰোহ</u> | 48 ¢ |
| | আলিবদি পরাজিত হইয়াও কাটোয়ায় | |
| | শক্তিপূর্বক পলায়ন করেন | 302 |
| | নীরত্বীব মহারাষ্ট্রীয়দিগের সহিত যুক্ত | |
| | হইয়া জগৎসেটের বার্টাইইতে দুই | |
| | কোটানুদ্রাহরণ করেন | . >48 |
| | মার্বিব ^{িও} ভাক্ষরপণ্ডিত বাঙ্গালার | |
| | পশ্চিম লুট করেন | Ğ |
| | ই ্রাজেরা কলিকাতার চন্তর্দিগে মার- | |
| | হাটাখালখনন করেন | · ঐ |
| | বর্ষাবদানে মহারাগীয়ের পরাজিত | • |

| ई० म | ों न | श्रेष्ठ |
|--------------|--|---------------------|
| 598 % | দুই প্ৰস্তুত্ৰ মারহাটালৈনা বাহা- | • |
| • | লায় আদিন | 763 |
| >988 | ভাকর পৃত্তিত পুনবার মারহাটাসৈন্যের | |
| | সহিত বাস্থালায় আসিলেন | P ? C |
| | আলিবদি শঠতাপুৰ্বক তাঁহার মন্তক | |
| | ক্ছেদ করেন | 762 |
| | ভাঁহার প্রধানসেনাপতি নুস্তাফাখার | |
| , | বিদ্রোহ | 269 |
| | মারহাউারা পুনর্বার বাঙ্গালায় প্রবেশ | |
| | করেন | 797 |
| • | নুতাকা বেহারে যুদ্ধে নারা পড়াতে নার- | |
| , | হাউারা তাড়িত হইল | १७२ |
| | নীরজেকর মারহাউাদিগের প্রতি প্রেরিত | |
| | হইয়া প্রভুর বিজোহী ও পদচ্যত | |
| \99_ | হইলেন আলিবদির ভূাত্পুত্র জিন্উদিন বি- | 75.0 |
| 7105 | দ্রোহ করিতে চেষ্টা করেন | ٨ |
| , | তিনি দুইজন বিদ্যোহী প্রধান লোককে | |
| • | আবান করেন | > 28 |
| | তাহারা তাঁহাকে মারাতে তাঁহার পারি- | |
| | ্বার, ভাহাদের হস্তগত হয় | :00 |

| है °\ म िल | મું જ |
|--|-------|
| শুবাদার তাহাদিগের সহিত যুদ্ধ করি- | |
| তে গিয়া পরাস্ত করেন | 199 |
| আউউরা বিদ্রোটী হইয়া মুরসিদাবাদ | |
| হ ইতে তাজ়িত হন ্ | 192 |
| আ লিবদি উড়িস্যাহইতে মারহাউ৷- | |
| দিগকে তাড়াইতে যা <u>ল</u> ়া ক <mark>রেন</mark> | >90 |
| প্রিয় দৌহিত্র বিদ্রোহী হওয়াতে গুরাদার | • |
| পাটনায় যাত্রা করেন | >9> |
| ১৭৫১ উভয়পকে শ্রান্ত হওঁয়াতে গুরাদার | |
| শারহাউাদিগের সহিত সন্ধি করিয়। | |
| वाञ्चालात हो छ उ छ छ जात ता जब | , |
| फि टल म | 390 |
| ১१৫৫ পक्षेत्रद्भत्रवर्गाञ्च निरादतः উ ब्रम्बर्श | |
| ক্তৃ ৰ | 793 |
| ১৭৫৬ তাঁহার দৌহিত্র সেরাজউদ্দৌলা শক্তি- | |
| মান্ হইয়া হরি়িন্ কুলিখাঁর হত্যা করেন | 768 |
| ১৭৫৬ গুবাদারের দুই ভ্রাতৃপুত্র মরিলে তিনি | • |
| স্বয়°∖ মরিলেন | 794 |
| ১११७ (সরাজউদৌলা ঐ পদ প্রাপ্ত হইলেন | 7}> |
| তিনি পিত্বাপঁত্রীর ধনহরণ করে ন | ঐ |

| ইণশান | શ્ક |
|---|-------------------|
| সেরাজউদ্দোলা কলিকাতা য় ইণ্রাঞ্জ | 4.7 |
| দিগের নিকটে দূতপ্রেরণ করেন | ১৮২ |
| তাঁহার বোধশূন্য ও জুরতম চরিত্রে ভত্র | |
| লোকেরা বিরক্ত হন · | >> 8 |
| পুর ণীয়াস্থিত শোকতজন্মের প্রতি যুদ্ধ | • |
| থেঁ গমন | ্ |
| কলিকাৃতার বড় সাহেব ভাঁহার আজা ন | 1 |
| শুনাতে তিনি কলিকাতা য় যুদ্ধার্থে | |
| আগিমন করেন | ኔኑ œ |
| কলিকাতাগুহণ ও পর্তদারা হত্যা | १५ व |
| সেরাজউদৌলা কলিকাতাহ্ইতে মুর | - |
| সিদাবাদে যাইয়া শোকভজ্জের প্রতি | 5 |
| যাত্রা করেন | さかえ |
| শোক তজঁক পরাজিত হইয়া মারা প ড়েন | १ ३०७ |
| ১৭৫৭ নাবিক্সেনাপতি ওয়াট্সন্ সাহেব ও | |
| কৰ্ণেল ক্লাইৰ সাহেৰ মাদাজহইতে | |
| , আসিয়া কলিকাতার উদ্দার করেন | 358 |
| ১१৫१ क्राइंद मास्ट्र इंगिल लूट क्रिय़। लई- | |
| লেন ' | 257 |
| স্রোজজ্জোলা যুদ্ধার্থে কলিকাতায় আ- | |
| नि र नन 🕐 | 333 |

| हे % % | મું ફ |
|--|---------------|
| তিনি পরাজিত <mark>হইয়া সঞ্জি করি</mark> লে | ান ১৯৯ |
| ইণরাজেরা চলুনগর আক্রমণ করিয়া গু | इ न |
| করিলেন | 203 |
| সেরাজউদ্দৌলা ই রাজদিগের বিপা | কে |
| যভ্যন্ত্র করে ন | 200 |
| তাঁহার আমলারা তাঁ হাকে পদচ্যত | ক- |
| রিতে লাভারাইবকে আ লা ন করে | म २६ |
| আমালাদিগের সহিত ও মীরজেক | র র |
| সহিত নিয়ম | २०६ |
| ক্লাইৰ নাহেৰ নৰাবের সহিত যু দ্ধা | ત્ યું |
| যাত্রা করেন | 2 69 |
| পলাশীর যুদ্ধ | 201 |
| মীরওজফর ্কাইবড়ারা নবার ভ্ই তে | तम ,२,७ |
| , শ্রসিদাবাদ স্থিত কোষের পশবিতর | |
| ই∾রাজদিগের পারিতোষিক | À |
| সেরাজউদে লাকে রাজমইলহইজে | |
| নাতে মীরণ ভাঁহার প্রাণ নাশ | ቖ∸ , |
| রেন | 270 |
| ২়গ৫৮ মীরজেকরের দুরাচারদারা তিনবি | |
| ছ উপস্থিত স্থা কি ন্তু ক্লা ইব তাঃ | হার_ |
| प्रनर्भ केर्युन | k 5@ |

| है भाग | ન્ર્રેફ્ર |
|--|--------------|
| ্ মহারাজের পুত্র বেহার আক্রমণ ক | |
| 'রেন • | 2,38 |
| ক্লাইব ভাঁহার সহিত যুদ্ধার্থে যাত | ា |
| করেন | 274 |
| ১৭৫২ ওলন্দাজের। বাসালায় প্রভূহার্থে নৈন | IJ |
| প্রেরণ করেন | くりか |
| ক্লাইৰ তাহাদের জাহাজহরণ ও বৈন | J - |
| দিগের পরাজয় করেন | २,२,२ |
| ১৭৬০ ক্লাইবসাহেব ইপলপ্তে যাত্রা করেন | २२ ७ |
| নহারাজের পুত্র পুনর্বার বেহার আ ফ্র | - |
| মণ করেন | ঐ |
| ইণরাজেরা ও মীরজেফরের পুত্র মীর | ମ୍ |
| তাঁছার প্রতি গম ন করেন [ি] | ২ ২৪, |
| র্মারণেরদৈ রাস্ম্য | ঐ |
| সাহ্যালন পর্তীয়পথদিয়া ঝটিবি | 5 |
| मूतनिकारक आरमन | २२६ |
| তিনি পুনৰ্বার পাটনায় যাইলে পূর | 1- |
| ণীয়ার শাসনকর। ওঁাহার সহিয | 5 |
| শিলিত হইনেন | २२,७ |
| কাঞাৰ ন চ্পৰাহেৰ অংতি পাছৰপূৰ্ব | 5 |
| ভাঁছাকৈ প্রালয় করেন | २२9 |

| है॰ भाव | পৃষ্ঠ |
|---|--------------|
| কর্ণেল কালিয়দ ও মীরণ পুরণীয়ার শাসন | , |
| কর্তার অনুসন্ধান করেন | |
| ১৭৬০. मीत्रन वजुष्पार्क मात्रा পरसम | à |
| व्यर्थाञारव मीत्ररक्षकरत्रत्र ७ है श्रीक- | |
| দিগের দুংখ | २२४ |
| বন্শিটাটসাহেব মীরকৃস্মিকে বালা- | |
| লার নায়েব করিতে স্থির ক্রিলেন | २२% |
| ১१७১ मीत्रकशिम जिनामा नतात इहालन | २ ७• |
| শীরকস্থিমের রাজনীতিঁ | २७১ |
| তিনি ই ্রাজদিগের অনধীন হইবার | |
| আশায় মুঙ্গেরে রাজধানী করিয়া | • |
| टेमन/वृक्षि केदबन | २७२ |
| মীরকসসি্ম মহারাজহইতে তিনদেশের | |
| . खवामात्री পाইलन | २ं७७ |
| ১৭৬১ তিনি রামনারায়ণের সর্ক্রাশ করিতে | |
| ই° রাজদিগের অ্নুমতি পাইয়া তাহা | |
| করিলেন | 2 98 |
| ১৭৬২ বিনামাসুলে বাণিজ্যার্থে ইংরাজদি- | • |
| . গের নীরকস্সিমের সহিত বিবাদ | २७६ |
| ঐ বিষয়ে কলিকাতান্ত সভায় বাদানুবাদ | _૨ ૭૪ |
| ১৭৬৩ ইলিস সাহের পাটনা আক্রমণকরেন | २ ७३. |

| है भाव। | erk |
|---|-------------|
| আনিয়াট্ সাহেব মারা পড়েন | ₹8• |
| শীর কণ্সিমআলির সহিত ই রাজদি- | |
| रगद युक्तनि " ह य | À |
| মীরজেফর বিতীয়বার শুবাদার হই- | |
| লে ন | ঐ |
| क्ष्प्रयुक्त कम्सिम्यानित मर्दनाम | २ 8} |
| তিনি এদেশীয় অনেকলোকের প্রাণনাশ | |
| ক ন্নেন | ২8২ |
| তাঁহার আঞ্চানুসারে সমর ইউরোপীয় | |
| वनीताकिं परिशत था १ नाम करत | ₹83 |
| ১৭৬৫ মীরজেকরের মৃত্যু | ₹8€ |
| नक्रमछिप्मोना उৎপদ প্রাপ্ত হইলেন | ₹8\$ |
| ১৭৯৫ ক্লাইব সাহেৰ বড়সাছেৰ হইলেন | Ø |
| রাজসভাপতিদিগের দুরাচার | ₹81- |
| ক্লাইব সাহেব কোম্পানির নিমিত্তে | |
| দেওয়ানী প্রাপ্ত ক্ইলেন | २ 87 |
| তিনি ভ্তাদিগের বাণিজ্য ক্রমাগত রা- | |
| খি য়া এক বা ণিজ/সভা করেন | २०० |
| ভিরেক্টরের। এ বাণিজ্য নিবারণকরি- | |
| লেন | २.६२ |

| ই॰ শাল | गुरु |
|---|---------------|
| ক্লাইব সাছেব সৈন্যবিষয়ে বায়ের | ` . |
| লাঘব করেন এবিষয়ে অনেক উগ- | • |
| পুব হয় তাহাও নিবারণ করেন | इं. ७७ |
| ১৭৬৭ ক্লাইব সাছেব ইপলপ্তে যাত্রা করেন | £9,\$ |
| ১৭৭৪ তাঁহার অপঘাত মৃত্যু | 200 |
| ' ডাকাইতি ও নিকরভূমির উৎপত্তি | 264 |
| ১१७१ क्वाइनमारइरवत्र शतिवर्ड वित्रवह वर्ष | v |
| সাহেব হইলেন | 269 |
| ১৭৭০ অতি দুর্ভিক | २ ४० |
| ১৭২২ ওয়ারেল হৃষ্টি শ বাহাসার বড়সাহেব | |
| হইলেন | ₹ ७% |
| কোম্পানিতে স্বহন্তে কর্ম চালাইতে স্থির | • |
| করিলেন | २७२ |
| ্নূতনরীতি | २७७ |
| गश्यानदाकार्थातक दिनायो कतिया किन- | , |
| কাতায় আদয়ন | २. ५8. |
| রাজাখেতাবরায়কে দোষী করিয়া পাট- | • |
| নাহইতে আনয় ন ও বিচাৱে ওঁাহার | , |
| নিদেবিতাপ্রযুক্তনোচন ' | २७६ |
| মহম্মদরেজার্থার নির্দোষিতা | २७५ |
| ই ণ্লণ্ডে কোম্পানির বিপদ | 5 43. |

| हैंग भ | वि । | अंश्र |
|----------------|---|-------|
| | পার্লিয়ামেণ্টের মনোযোগে রাজহের | |
| | পরিবর্ত্ত | ২৬৮ |
| >118 | বড় আদালতের স্থাপন | २७३ |
| | इ ष्टि॰ ननाट्य नृश्नायञात्रज्यस्तं वज् | |
| | সাহেৰ হইলেন | ₹ 9.• |
| | নুতনসভাপতিদিগের সহিত হছি৾৽৲স | |
| , | সাহেবের বিবাদ | २५२ |
| | এতদেশীয়লোকেরা হুষ্টি^সসাহে বের | |
| | নামে অভিয়েশ করেন | २१७ |
| | নন্দকুমার হণ্ডি°্সসাহেবকে দোধী করেন | २,१৫ |
| | क्रमन डेफिन नक्त्यात्त्रत नात्म कृत्रिय | |
| | স্বাক্ষরকরণবিষয়ে বড়স্থাদালতে অভি- | • |
| | যোগ করেন | 299 |
| 399¢ | नमकू गारंत्रत काँगि | ঐ |
| | ভূমিজরাজস্বের নিয়ম | २ १ ञ |
| 399b | হাল্ভে্ডাহেবের বালালাব্যাকরণ | २५३ |
| | বড়আদালতের বিচারকভাদিগের সহিত | |
| | রাজসভাপতিদিগের বিবাদ | २৮२ |
| | ৰ্ডুআদালভের বিচারকর্তারা রাজস- | |
| | ভার সকলবিষয়ে হত্তার্পণ করিতে | |
| | খোরন্ত, করিলেন | २४७ |

| हे॰ भा न | S. S. |
|--|-------|
| বড়জাদালতের পাটনায় দুরাচার | 260 |
| 🗳 আদালতের ঢাকায় ব্যবহার 🗼 | ২৮৮ |
| ১৭৭৯ কাশীযোড়ার রাজার নামে আহ্বান পত্র | २ ५० |
| বড়দাহেৰ বড়ু আদালতের ব্যাঘাত আর- | |
| ম্ভ করেন | २ २५ |
| ১৭৮ বড়আদালতে বড়সাহেবের প্রতি আ- | |
| জানপত্ৰ হয় তিনি তাহ <mark>া অমাুন</mark> ্যক- | v |
| রিলেন | २ २ र |
| বড় সাদালতের আক্রমণ্রিষ্য়ে ইণলপ্তে | |
| আ বেদ ন | À |
| পার্লিয়ানেণ্টধারা ঐআদালতের শক্তি- | • |
| ক্ষয় | ٠ کي |
| বড়ু সাদালতের প্রধান বিচারকর্ত্র সদর- | |
| দেওয়ানীতে নিযুক্ত হইছেন | ` & |
| ১৭৮ • সম্বাদপত্তের প্রথম প্রকাশ | २क्र |
| ১৭৮৫ হৃষ্টি° স সাহেব ই° লণ্ডে গ্ৰন ক্রেন | ২ ৯৪ |
| ক্লেবিলপ্ডসাহেবের উদ্যোগ ও মৃত্যু | À |
| ১৭৮৪ সরউলিয়ম জোন্স এসিয়াটিক্সোসা- | ` |
| ইটীনামিকা সভা স্থাপন করেন | 22.0 |
| হণ্ডি° স সাহেবের প্রতি ই°লণ্ডে লোকের | |
| वं)वर्गत | Ą |

| है• भाव | sis |
|---|------------|
| ১१৮७ পার্লিয়ামেণ্টদারা কোম্পানির সনক্রের | |
| - নিয়ম | くかと |
| ১৭৮৬ লাভকুৰিওয়ালিন্ শাসনকর্তা ও সেনা- | |
| পকি হইয়া আমিলেন | えつる |
| ১৭৮৮ ইশ্রভে হস্তিশ্যনাহেবের নামে অভিশ | |
| যোগ | 000 |
| ১৭৯৩ রাজস্বের চিরন্তন চুক্তি | ঐ |
| কর্তিরালিদের নিয়মগুন্থ | 909 |
| দে अञ्चानीयामानट्य तीवि | % |
| ১৭৯৮ वार्छनाति ऐन् वज्नाद्य इहेश वानि- | |
| লেন | 201 |
| ১৭৯১ শৃক্ষাপাটান আক্রমণ ওটিপুসুলতানের | |
| মৃ ত্য | 400 |
| শ্রীরামপুরে খ্রীষ্ট ধন্দের উত্তেক | ক্র |
| ১৮০০ কে উভিনিয়ন্নামক পাঠশালার স্থাপন | 377 |
| ১৮০৩ পশ্চিনদেশের জয় এবং দিলীশ্বরের | |
| বৃত্তি নি রপণ | ७५२ |
| উ ড়িস্যাজয় | في |
| ১৮০৩ গঙ্গাদাগরে সন্তাননিংকেপরোধ | ७३७ |
| ১৮-৫ লার্ড ওয়ালেনলির প্রতি ভিরেকটরদি- | |

| है भाव | ન્2 |
|--|----------------|
| গোর কুব্যবহারপ্রযুক্ত তিনি ই৲লওে | • |
| প্রত্যাগমন করেন | 10% |
| লার্ড কর্ণওয়ালিস্ বিতীয়বার বড়সাছেব | |
| ङ् रेटन न | 276 |
| গাজীপুরে তাঁছার মৃত্য | ·07# |
| তাঁহার পরিবর্তে সরজ্জ বার্বো হইলেন | ঐ |
| ১৮-০৭ লাডমিণ্ট তৎপদে নিযুক্ত হইলেন | ঐ |
| ১৮১৩ কোম্পানির নূতন সনন্দ | 959 |
| লার্ড মিণ্ট ই°লণ্ডে প্রত্যাপ্তমন করেন | 480 |
| ১৮১৩ লার্ড ময়রা ভারতবর্ষের বড়সাইেব | |
| হ <i>ইলে</i> ন | • |
| ১৮১৫ तिशीलपर्भ युद्ध | eco |
| পিনারীদিগের সভিত যুক্ত . | , (|
| ১৮১৮ এদেশীয়লোকের বৃদ্ধিপ্রকাশীর্থ উ- | |
| फा रि | ৩३.• |
| ১৮.২৩ লাভ্ছপ্তি প্ৰসাহেব বাসালাহইতে গ্ৰন | |
| করেন | १२२ |
| কানি^ সাহেবের বিবরণ | & . |
| ১৮২৫ नार्ज वागर्के विष्याद्य इंहेरनन | ₹ |
| আদ্মসাহেবলারা ছোপাথানার শ িক্ | • |
| ্হাস | ৩২ ৬ |

| নিৰ্যণ্ট | >!!* |
|--------------------------------------|-------------|
| है•\ भ ीज | બક |
| युक्तरमभीश्च युक्त | ७२७ |
| ১৮২৬ ভ্রতপুরের অধিকার | ৩২ € |
| ৮২৭ ই° রাজেরা তিমরব° শের অধীনতা- | |
| ত্যাগ করিলেন | ७२ ७ |
| ১৮২৮ লাভ উলিয়ম্বেণ্টিক বড়সাহেব হই- | · |
| (लन् भ | ৩২৭ |
| তিনি বায়লাঘবের চে ই। করেন | Ì. |
| ১৮২৯ সতীগ্মনরোধ | ७२४ |
| ১৮৩১ আদালজের শরিবর্ত্ত | |
| রামমোহ্নরায়ের ই॰লওে যাত্রা তাঁহার | |
| বাঞ্ত বাঞার অন্যথা | 600 |
| ১৮৩৩ বড়ং বণিক্সকলে নির্ধন হইলেম | ৩৩২ |
| ুকোম্পানির নূতন সনন্দের নিয়ম | 222 |
| ১৮৩৫ हे ता कि निकास उँ थमा इवृक्ति | √ 28 |
| বৈদ্যকশান্ত্রের পাঠশালাস্থাপন | <u> </u> |
| সেবি°∖সব্যাকস্থাপন | ∿ ગૄ€ |
| ভূমিজগুলুরোধের উদ্যোগ | <u>-</u> |
| বাস্পনৌকা চালাইবার চেষ্টা | 998 |
| লার্ড উলিয়ন্থেণ্টিক্ষের অধিকারের | |
| (भार | ·9·99 |
| ७३ शु ट्डत नभाखि | • |

ンコノ

822

দেশহিতিযিবিজ্ঞব্যক্তিমহাশয়দিগের প্রতি গুস্থ-कारतत विवयपूतः नत अहे निर्वापन य नञ्जाना पि-স্মরণার্থে এদেশীয় পুরাবৃত্ত লিপিবদ্ধ নাথাকাতে লুপ্তপ্রায় হইয়াছে এবং যেকোন বৃত্তান্তের মৌথিক শ্রবণমাত্র আছে তাহাতে স্থানেং এমত মিথ্যা ও ট্ৰপরীতা হইয়াছে যে সতা **নি**থ্যা নিশ্চয় করা দুঃসাধ্য হয় এব° অন্যান্যভাষায় এবিষয়ের°ষে সকল লিখিত আছে তাহাও শ্রেণীমতে ও সম্পূর্ণ-ৰূপে নাই অতএর মার্মান্সাহেব বল্পরি, খনে ই°রাজিভাবার এদেশীয় ইতিছা**স সি**°গুছ করিয়া-ছেন কিন্তু অদ্যাপি অনেক লোক ইণরাজিভাষায় অত্র থাকাতে তাঁহাদৈর উপকারার্থে জানি ঐ গুত্ত বাঙ্গালাভাষায় অনুবাদিত ,করিলাম ইহাতে ভু্ম-ৰশত বা অজ্তাপ্ৰযুক্তযদি কোন২ স্থানে লুটা হইয়া-'থাকে তাহা বিজ্ঞহাশায়রা **অনুগৃহপূ**র্কক শোধন করিবেন এবং একঅঙ্কের হানিপ্রযুক্ত সমুদার ক্রাজা করিবেন না যেহেতু হস্তপাদাদি কোন অবয়বের হানি হইলে সমুদায় শরীর ত্যাজা হয় না ইতি।।



. <u>শ</u>র্ণ∘∖ !

বাঙ্গালার ইতিহাস।

मुथ्य शबिरहण।

हिन्सू झाइ।।

কারতবর্ষের যে প্রদেশে বাঙ্গানা তারা লিখনে ও কথনে চলিত আছে তাহাকে বাজানা দেশ বলা যায়, ইহার দকিশে সনুদ্র উত্তরে এক পূর্টের অনেক পর্যন্ত ও বন আছে মার পশ্চিম প্রদেশে হিল্মুর্ম বহিষ্কৃত অনেক বন্য ও পর্যন্তীয় জাতিরা বাস করিতে ই ইহাতে প্রায় তিন কোটি মনুষ্য আছে!

বাজালা দেশের প্রাচীন ইতিহাস অত্যন্ত দুর্জের এবং এক্টানে কোনকালে হিন্দুংশি লিকা করিতে আরছ্হয় ভাহা আমরা স্থির বলিভে পারি না কিন্তু ইহা বোধ হই-তেছে যে অতি পূর্ক্কালে একাকে হিন্দু ছিল না কেবল পশ্চিমদেশস্থ পর্ক্ তীয় জাতির ন্যার এক্সাতি বৃস্তি করিত। মুসন্মানেরা যেরপে এত দেশে আহিয়া মহ- শাদীয় ধর্ম প্রচার করিয়াছেন নেইকপে ব্রাহ্মণেরা প্রত-দেশে আগমন করিয়া হিন্দধর্ম প্রকাশ করিয়াছেন। প্রবং প্রক্ষণে চলিত যে বাঙ্গালাভাষা তাহা কোন নময়ে আরম্ভ হয়ইহা স্থির বলিতে পারি না। অপর ঐ াষার মধ্যে সংক্রত আরবীয় ও পারসীক ভিন্ন অনেক কথা পাওয়া যায় অতথব বোধ হইতেছে যেইহার আদিভূত কোন ভাষা প্রাচীনেরা ব্যবহার করিতেন কিন্তু প্রক্ষণে তাহা নপ্ত হইয়াছে প্রবং বর্ত্তমান বাঙ্গালা অক্ষর প্রায় নাগরের তুল্য কেবল কোন্থ স্থলে আকৃতির কিঞ্চিৎ বৈলক্ষণ্য আছে!

বোধ হয় যে বাঙ্গালার মধে গোড় অতি প্রাচীন নগর
ছিল এব কেহ ২ কহেন যে ঐ নগর দুই সহসু পঞ্চশত
বৎসরের পূর্কে নির্মিত হইয়াছে এইহেত্ত সম্দায়
দেশকে কখন২ গৌড় বলা যায় ৷ ঐ গৌড় নগর বাঙ্গালার উত্তরা কর্মে আছে বাঙ্গালার পূর্কেদেশে সুবর্ণ
গ্রাম অথবা সোণার গাঁনামক যে স্থান তাহাতে রাজধানী
ছিল ঐ গ্রাম আধুনিক ঢাকা শহরহইতে চারি ক্রোশ
দূরে আছে অনেক কালাবিধি বাঙ্গালার ঐ অক্ষ উত্তম
কার্পাস বস্ত্র নিমিত্তে খগতে আছে ৷ অস্তাদশ শত বৎস্করের অধিক হইল ইউরোপের মধ্যদিয়াগিয়া তাহার
প্রান্ত রোম নামক মহানগরে ঐসকল বস্ত্র ব্যবহার্য গ্রহত
এবক রোমানেরা ঐ বস্ত্র বহুমূল্য কপে কল্পিত করিত

ও তাহার নাম তাহারা কাপাস কহিত বাঙ্গালা ভাষায়
যাহাকে তুলা বলা যায় এবং ইহাও সপ্রনাণ বোধ হই-.
তেছে যে এই বাণিজে নিযুক্ত নৌকা সকল ঐ বস্ত্র
ফয়ের নিমিত্ত মহানদ উত্তীর্ণ হইয়া সোগার গাঁ গমন
করিত।

বাঙ্গালা দেশের পশ্চিমস্থ ভগলির অতি নিকট উত্ত-রাণশো প্রধান নগর সাত গাঁ ছিল ও রোমানেরা তাহা জানিত এবং পুরাণেতেও সপ্তগুমি নামে নির্দেশ আছে । এবং ঐ স্থলেই সামুদ্রিক বাণিজ্য দ্রব্য আনীত হইত সং-প্রতিগৌড়ও সোগার গাঁও সাতগাঁ এই তিন নগর সম্পূর্ণ ৰূপে নপ্ত হইয়াছে !

্পঞ্চল শত বৎসর পূর্বে বাঙ্গালা দেশ মগধনামক নহারাজ্যের এক অংশ ছিল এ রাজ্য সংপ্রতি দক্ষিণ বেহার নামে খ্যাত আছে এ মহারাজ্যের রাজ্ধানী বোধ হয় পালিক্থু অথবা পাটলিপুঞ ছিল যাহাকে কেহহ পাটনা বোধ করেন। মগধরাজ্য নাশানন্তর বৌদ্ধ মতাবল্ধি পালরংশোদ্ভব অনেক রাজা ছিলেন, তাঁহারা বাঙ্গালাদেশের রাজা ছিলেন কিন্তু সমুদায় স্থান শানন করিয়াছিলেন কিনা তাহা স্থির করা যায়না। এই বংশের আদিপুরুষের রাজ্যের স্বরূপর্থক চিহু দিনাজ পুর অঞ্চলে এক বৃহৎপুক্রিণী আছে যাহাকে সকলে মহা পাল দীঘা বলিয়া থাকে। অনুমান হৃইতেছে যে পাল-

বংশীয়দিগের রাজত্বের পর বৈদ্যজাতি দেন বংশীয়েরা রাজা ছিলেন কিন্তু তাঁহাদিগের ইতিহাস অতি দুর্জ্বেয় এবং তদনন্তর আর কেহ হিন্দু রাজা হন নাই ৷

হিন্দুমতানুসারে সেন বংশের আদিপুরুষ আদিশূর তিনি ইণরার্জা ১০৬৩ শালে রাজত্ব করিয়াছিলেন অর্থাৎ এক্ষণে অউশত বৎসরের কিঞ্চিৎ নূ/ন হইবে । বাজালা দেশস্থ ব্ৰাক্ষণেরা নিজ ধর্ম্ম কম্ম না জানাতে তিনি তাছা দিগের উপয়ে অত্যন্ত বিরক্ত ছিলেন কেহ্২ কছেন যে পাল বংশীয় বৌদ্ধমতাবলম্বি ভূপতিদিগের রাজ্যকালে ব্ৰাহ্মণ সকলেরা লুপ্ত হইয়াছিলেন আদিশূর রাজাকান্য কুক্ত নৃপতির নিকটে উত্তম শাস্ত্রছ্পঞ্চ ব্রাহ্ণণ প্রাপ্তির প্রতিশ্রের দূতপ্রেরণ করিয়াছিলেন। কান্যকুক্তরাজও ৰ্তীছার প্রার্থনা যিদ্ধি করিয়াছিলেন এবং ঐ পঞ্চ বুল্ক-<u>ণেরা পঞ্চন্ত্যসমভিব্যাহারে আনিয়াছিলেন ও তাঁহা</u> দিনের সন্তানের। উত্তম কুলিন ব্রাক্ষণ হইয়াছেন আর ভীহাদের ভৃত্যবর্গের সন্তানেরা কায়স্থ ইইয়াছেন।

কেহ্ ব্রাল্নেনকৈ আদিশুর রাজার পুঞ্ বলিয়া থাকেন কিন্তু অতি অপকাল হইল পূর্মদেশে মৃথিকা খনন করিতেই তাহার স্থাহইতে এক তানুকলক প্রাপ্ত হইয়াছে যাহা ঐ বৈদ্যরাজাদিগের সময়ে খোদিত হইয়াছিল এবং তাহাতে লিখিত আছে যে ব্যাল্সেনের পিতা বিজয়নেন ছিলেন অপর আইন আকবরীতে বলে যে বলালনেনের পিতা শুক পেন হিলেন কিন্তু ইহাতে স্পষ্ট প্রমাণ আছে যে আদি শূর বল্লাল নেনের পিতানহেন কারণ কান্যকুক্ত রাজ্য হইতে আদিশূর পঞ্চ ব্যক্ষণ আনরন করেন ঐ ব্যক্ষণ দিগের সন্তানেরা যখন নানাভালে বিস্তৃত হইলেন তখন বলাননেন তাঁহাদিগের ধারাসতে শ্রেণী ও কৌলীন্য স্থাপিত করিলেন এক ব্যক্তির রাজ্যকালের মধ্যে ব্যক্ষণিদিগের এমত অধিক বংশ্কিপ্রকারে হইতে পারে অতএব আনরা স্থির করিতে পারি যে আদিশূর বল্লালা নেনের পিতা নহেন কিন্তু কোন পূর্বপুরুষ ছিলেন এবং বিজয়সেন বল্লাল সেনের পিতা ও ঐ রাজবংশের আদিপুরুষ ছিলেন ৷

নদ বালনের লপ থারণ করিয়া বলানেনের জন্ম
দিয়াছিলেন, বালনেল রাজার মধ্যে বলাননেন অতি
পরা কলশালী হইয়া পঞ্চাশত্বৎসর রাজত্ব করিয়াছিল
লেন তিনি সোণার গাঁর নিকট বিক্রমপুরে প্রায় থাকিল
তেন এবং কলাচিৎ গৌড় নগরে কার্যস্থান জান করিল
তেন বলান্দেন বালনে ও কারস্থানিকে নানাম্রোতি
বিভক্ত করিয়াছেন সে ভাগ অদ্যাপি তাঁছাদিগের মধ্যে
চলিত আছে, তাহার মধ্যে উত্তম ধার্মিক্দিগকেনিতান

কুলীন করিয়াছেন কিন্তু ঐ কৌলীন, মর্য্যাদ। তাঁহাদিপের সন্তানাদি ক্রমে রক্ষা করাতে এদেশের অতিশয় দুর-মন্তা হইয়াছে কারণ একণকার কুলীন মহাশয়দিগের পূর্বপুর্বের তুলা সন্মান আছে কিন্তু সেরপ গুণ কিছু মাত্র নাই বল্লালসেনের রাজহুসময়ে এদেশ ৫ অংশে বিভক্ত হয়।

> বরেন্দু, যাহার পশ্চিম ভাগে মহানন্দানদী দক্ষিণে পদ্যানদী পূর্বাংশে করতোয়া নদী এবং উত্তর ভাগে অন্য রাজ্য আছে।

২ বন্ধ, করতোয়াহইতে বৃদ্ধপুত্র পর্যান্ত পূর্বভাগে আছে, বাঙ্গালা দেশের রাজধানী বিক্রমপুর নামক স্থান বঙ্গের মধ্যে ঢাকার সমীপে আছে ।

ত বগুলিপি, অথবা উপদ্বীপ, ঐ দ্বীপ ত্রিকোণ ভূমি, ইহার পশ্চিমভাগে ভাগীরথীনদী পূর্ক্দিগে পদ্মা নদী এবং দক্ষিণাংশে সমুদ্র আছে।

৪ র: চৃ, যাহার উত্তর এব॰ পূর্ব্বভাগে ভাগীরথী ও পামানদী এব॰ পশ্চিম ও দক্ষিণ ভাগে অন্যরাজ্য আছে।

৫ মিথিলা, যাহার পূর্বভাগে মহানন্ধনদী ও গৌড় নেশ দক্ষিণে ভাগীরথী নদী এবং পশ্চিম ও দক্ষিণ তাগে অন্যান্য দেশ আঁছে।

ইণ্রাজী ১১১৬ লালে বল্লালসেনের রাজ্যানস্তর

তাঁহার পুঞ্জলক্ষণ সেন ঐ রাজ্যে অভিষিক্ত হইয়াছিলেন এব॰ গৌড় নগরকে উত্তমন্তপে সুশোভিত করিয়া নিজন নামানুসারে লক্ষণাবতী নাম দিয়াছিলেন। তাঁহার পরে অধুসেন রাজা হইয়াছিলেন তদনন্তর কেশব সেন সর্ব্ব পশ্চাৎ সুষেণ, হিন্দুরা কহেন যে সুষেণের পর তদেওলীয় আর কেহ রাজা হয় নাই কিন্তু মুসল্মান জাতীয় ইতিহাসকর্ত্তারা নুক্র ও লক্ষণীয় নামক দুই অধিক রাজার বর্ণনা করিয়াছেন এ বিষয়ে আমরা কিছ্ই স্থিক করিতে পারিলাম না। ই॰ রাজী ১২০০ শালে ষথন মুসল্মানেরা বাজালা দেশ আক্রমণ করিলেন তথন লক্ষণীয় অথবা লক্ষণনামক রাজার বিচার স্থান নব-ক্রিপে ছিল।

মুসল্মান কত্ ক বাহ্বালা দেশের জয়।

এক্ষণে আনরা মুসল্মানদিগের জয়বর্ণনা করি । তাঁহা দিগের আদি ধর্ম্ম হাপক মহম্মদ অবধিতাহাদের রাজ্য আরম্ভ হয় ঐ মহম্মদ ই রাজী ৬৪০ শালে লোকান্তর গত় হয়েন তাঁহার মরণের কিঞ্চিৎকাল পরে মুসল্মানেরা ইউরোপ ও আসিয়া এবং আফ্রিকার অনেক রাজ্য জয় করিয়াছিলেন এবং তৎকালে পৃথিবীর মধ্যে অতিশ্রম পরাক্রমশালী হইয়াছিলেন। ই রাজী শালের ১০০০ বং-লরের পূর্ফ্বে তাঁহারা বিন্ধু নদীর পশ্চিম সমস্ত দেশ জয় করিয়াছিলেন সিন্ধুনদীর ত্রিশক্তোশ পশ্চিমে গজ-

নেন নগর আছে তাহার রাজা নহামূদ ঐবৎসরে অলেক ্রৈনে রে সহিত ছিন্দু ছানে আগমনপূর্বক অনেক উপ-দ্রোহ ও লুট করিয়া স্বীয় নগরীতে প্রস্থান করেন। পরে হিন্দুদিগের জয় করণ অতি নহজ দেখিয়া প্রথবিশশতি বৎসরের মধ্যে দ্বাদশ বার ঐ দেলে সাদিয়া সহসুহ তদেশ বাসিদিগের প্রাণে আঘাত করত হিন্দদিগের সন্দির ও দেবতা সকল খণ্ড২ করণ পূর্কক ঐ দেশ লুট ক্ররিয়াছিলেন কিন্তু নিকুনদীর নিকটবর্ত্তি ভিন্ন অন্যকোন र्फ्न अधिकां करतन नाहे अव॰ ठाँहात ता ज्यानी उ তদবধি সিজুনদীর প্শিচ্মা°∖শে গজনেনে ছিল ৷ ওঁাহার উত্তরাধিকারিরা ক্রমে২ দুর্বল হওয়াতে হিন্দুরা প্রবন্ন হইয়া তাঁহার জিত অনেক দেশ পুনর্কার অধিকার করিয়াছিলেন।

অবৃশেষে মুসলুমান জাতীয় এক প্রধান বাজি ঐ
রাজত্ব বিনষ্ট করিয়া সিদ্ধানীর পশ্চিনাণশো এক নূতন
রাজ্য স্থাপন করিলেন ইনিই গোরীয় মহম্মদ ছিলেন
মুসল্মানদিগের ২ শতবর্ষ রাজ্য ভোগানন্তর গজনেন
রাজ্যের উচ্ছেদে গোর রাজ্য স্থাপিত হইয়াছিল ৷ ইণ্রাজী ১১৯১ শালে অতি প্রবল সৈন্যের সহিত ঐ গোরীয়
মহম্মদ ভারতবর্ষ সাক্রমণ করিতে আসিয়াছিলেন তৎকালে উত্তরাণ্শের হিন্দুরাজারা ও আজ্মের গুজরাট
দিল্লী এবণ কান্যকৃক্ত দেশের রাজারা পরস্পার বিবাদ

পরে কুতব নিজ রাজ্য বৃদ্ধি করণার্থ ইচ্ছুক হন্ট্রা বেহার দেশ জয় করিতে তাঁহার সৈন্যাধ্যক্ষ বখ্তিয়ার খিলিজীকে প্রেরণ করিলেন এবং ঐ সৈন্যাধ্যক্ষ ঐ দেশ অনায়াসে জয় করাতে কুতব বাঙ্গালা দেশ জয় করিতে তাঁহাকে আজ্ঞা করিলেন। যখন ঐ আজ্ঞা হইল তখন প্রাচীন বৈদ্যবংশোদ্ভব লক্ষণ সেনই বাঙ্গালা দেশের রাজা ছিলেন খাঁহাকে মুসল্মান ইতিহাস লেখকৈরা লক্ষণীয় বলিয়া থাকেন। এবং তাঁহার পর বাঙ্গালাতে অন্য হিন্দু রাজা হয়েন নাই। লক্ষণ সেন প্রায় নবনীথে কদাচিৎগৌড়নগরে থাকিতেন। তাঁহার পিতার মরণের

পর তিনি ভূমিঃ হইয়াছিলেন অতএব জন্মাবধি রাজা ছিলেন। যখন মুসল্মানেরা এই দেশ আক্রমণ করেন তখন ঐরাজাসান ও সদিচার দারা সর্বজন সমীপে প্রচুর পুশংসা পুাগু হইয়াছিলেন এবং তখন অশীতি ৰৰ্ষবয়ক্ষ হইয়াছিলেন ই^রাজী ১২০৩ শালে বথ্তিয়ার আক্রমণ করিতে প্রস্তুত হইয়া বাঙ্গালার মধ্যে প্রবেশ করিলেন। এই সময়ে ব্রাহ্মণেরা রাজার নিকটে গিয়া क्रिलन य भारत चित्रु क्षिण बार्ष य जूतकी জাতীয়েরা বাঙ্গালা দেশ জয় করিবে সেই জাতীয়েরা একণে আসিয়াছে অতএব মহাশয় নিজসম্পত্তি ও পরিবারের সহিত পলায়ন করুন তাহাতে রাজা উত্তর করিলেন যে আমি অতিবৃদ্ধ হইয়াছি এক্ষণে নবদ্বীপ পরিত্যাপ করিব না। তাহাতে অমাত্যবর্গ ও ব্রাক্ষণেরা বৃদ্ধ রাজার সাহায্য না করিয়া আপন্থ সম্পত্তি লইয়া উভ়িস্ট্যাতে পলায়ন করিলেন। বশ্ভিয়ারকে বাধাদিতে কোন উদ্যোগ না করাতে তিনি অনায়াসে সৈনে ক্র স্তিত বাঙ্কালার মধ্যদিয়া নবদীপে উপস্থিত হইলেন। নগরের নিকটবর্ত্তী হইয়া এক বনমধ্যে সকল সৈন্য স্থাৰ্পন করিয়া সপ্তদশ অস্থাৰঢ়ের সহিত রাজবাটাতে অ'পিন প্রবেশ করিলেন। ঐ রাজা ভোলন করিতে২ বিপক্ষের আগমন শ্রবণ ক্রিয়া, এক পশ্চাৎ দার দিয়া হইয়া নৌকারোহণপূর্বক উড়িস।দেশে

পলায়ন করিলেন কিন্তু কেহৎ বলেন যে ঢাকার নিকট বঙ্গদেশের প্রাচীন রাজধানী বিক্রমপুরে গমন করিয়া-ছিলেন নবদ্বীপস্থ লোকেরা বখ্তিয়ারের, অধীন হইলেন ও তদবধি হিন্দু রাজার শেষ হইল। ই॰ রাজী শালের ১২*০*৩ বৎসরে নবদ্বীপের পরাজয় অবধি ১৭৫৭ বৎস<mark>রে</mark> পলাশির যুদ্ধ পর্য্যন্ত সার্দ্ধপঞ্চশত বৎসর হইতে ও অধিক কাল বাঙ্গালা দেশস্থ হিন্দুরা মুসল্মানদিগের অপীন ছিলেন তাহাতে ও স্বাধীন হইতে কোন চেষ্টা করেন নাই। বশ্তিয়ার নবদ্বীপ হইতে গৌড় নগব্ধে যাত্রা করিয়া অনায়াসে তাহা,জয় করিলেন এবণ হিন্দু দিগের মন্দির সকল ভাঙ্গিয়া সেঁই তব্যদারা মসিদ নির্মাণ করিলেন। এইকপে এক বৎসরের মধ্যে সমুদায় বাহ্বালা দেশ তিনি সম্পূর্ণক্রপে পরাজয় করেন কিন্তু কোন২ লোকেরা কহেন যে সোনার গাঁপ্রভৃতি প্রথমত অধিকৃত হয় নাই অনেক ৰৎসর পর্য্যন্ত স্বাধীন ছিল ৷ এবং ইহাও বোধ হইতেছে যে সমুখন্থ কতক দেশ সম্পূর্ণকপে পরাজিত হয় নাই। বাঙ্গালা দেশ পরাজয়ের একবৎসর পরে বখ্তিয়ার সসৈন্য হইয়া আসাম দেশ জয় করিতে যাত্রা করিলেন ৷ এবণ দশদিনের খধ্যে বুক্ষপুণ্ড নদের বামপার্শে উপস্থিত হইয়া বাইসফুকুরে পাষাণময় সাঁকো নিশ্বিত করিয়া পার হইলেন সেই সাঁকো অদ্যাপি বর্ত্তমান আছে। পরে তৈনি পর্বতে আরোহণ করিয়া পরাজিত হইলেন অতএব লজ্জিত ও ভমচিত্ত হইয়া প্রত্যাগমন করিয়া বাঙ্কালাদেশ জয়ের তিন বংসর পুরে লোকান্তরগত হইলেন । এই তিন বংসর মধ্যে দিল্লী হইতে অধিক দুরে থাকাতে তাঁহার যেরপ ইচ্ছা ইইল তদনুসারে কর্ম করিলেন তিনি অন্তঃ করণে স্বাধীন হইলেন এবং আপনার নামে খুতবা পড়িলেন ও হিন্দুদিগের যে সকল ভূমি জয় করিয়া-ছিলেন তাহা আপনার খিলিজী বংশীয় ভ্তাদিগকে দান করিলেন এইরপে তাহারা এমত পরাক্রমশালী হইল যে যে জন তাহাদের মনোনীত হইত তাহাকেই বাঙ্গালা দেশের অধ্যক্ষ করিত।

বৃথ্তিয়ার লোকান্তরগত হইলে তাঁহার সৈন্যের।
তংক্ষণাৎ আপনারদিগের মধ্যে এক জনকে অধ্যক্ষ
করিলেন এবং তিনি আপনিই রাজারন্যায় মর্যাদা
প্রাপ্ত হইলেন, দিপ্লীর মহারাজ এই দমাদ শুনিয়া কতক
শুলিন সৈন্য প্রেরণ করিলেন যাহার দ্বারা বাঙ্গালাদেশ
পুনর্কার জয় করিলেন এবং আলিমর্দকে শুবাদার
করিলেন। কিন্তু কিঞ্চিৎপরেতে দিল্লীর মহারাজ
কুতবউদিন মরাতে আলিমর্দন স্বাধীন হইলেন। তাঁহার
আত্যন্ত অহংকার প্রযুক্ত খিলিজী বংশীয় প্রধান
লোকেরা তাঁহাকে প্রাণে নষ্ট করিয়া গ্যাসউদিনকে
শাসনকর্তা করিল। গ্যাস উদ্দিননানাবিধ উত্তম অউ।-

লিকা নিৰ্মাণ দারা গৌড় নগর সুশোভিত করিয়া সেখানে বিচার স্থান করিলেন তিনি ঐ দেশের নানা-প্রকার উপকার করিয়াছিলেন, বীর ভূনের রাজধানী নগর হইতে গৌড়ের পূর্বদিগস্থ দেবকোত পর্য্যন্ত দশ দিনের গমনার্হ বিস্তৃত এক পথ প্রস্তুত করিলেন এব^ ঐপথ দিয়া বর্ষাকালেও লোকের অনায়াসে গমনাগমন করিতে শব্রু হইল। তিনি বিচার করিতে কোন মতে ,পক্ষপাত করিতেন না এব॰ ঔাহার নিকটে হিন্দু ও মুসলমান্দিগের কিছু বিশেষ ছিলনা। অপার তিনি এনত পরাক্রমশালী ছিলেন যে আসাম ত্রিহত এব৲ ত্রিপুরার রাজাদিগকে নিজ করপ্রদ করিয়াছিলৈন এইৰপে দশ বৃৎসর রাজত্ব করিয়া দিল্লীস্থ মহারাজের বিদ্যোহ করাতে মহারাজ কতিপয় দৈন্যপুরণ করিলেন তাহার দারা (আলিম্দ্রন) পরাজিত হইয়া ইণরাজী শালের ১২২৭ বৎসরে যুদ্ধক্ষেত্রে পুাণ পরিত্রগ করিলেন।

তদন স্তর দশবৎসরের মধে। তিন জন অধ। ক্ল নিযুক্ত হইয়াছিলেন পরে ১২৩৭ শালে ভঘান খাঁ। শুবাদার হইয়াছিলেন। ছয় বৎসর পরে তিনি উড়িস। ায় যাত্রা করিয়া হিন্দুদিণের সহিত্যুদ্ধ করিলেন তাহাতে হিন্দুরা তাঁহাকে পরাজয় করিয়া তাঁহার, পৃশ্চাৎ২ আসিয়া তাঁহার রাজধানী গৌড়দেশ ও বীরভূমের মধে। আছে, যেনগর এতদুভয় বেষ্টন করিলেন। তাঁহাদিগৈর আঞ্জনণ হেত্ত তথান খাঁ অতিশয় কাতর হইয়া মহারাজের নিক্টে সাহায্য প্রাথনা করাতে মহারাজ কতিপয় সৈনে ব্র সহিত তিমর খাঁকে তাঁহার সহায়তা করিতে পাঠাইনেন। তিমর খাঁ বাঙ্গালাদেশ অতিশয় আনন্দজনক দেখিয়া আপনার অধীন রাখিতে মানস করিলেন তিরিধিত্তে তথান খাঁর সহিত তাঁহার এক যুদ্ধ উপস্থিত হইল হিন্দুরা দুই মুসলমান অধ্যক্ষকে পরস্পর যুদ্ধ করিতে দেখিয়া অত্যন্ত আনন্দিত হইয়াছিলেন। তিমর তথানকে প্রাজয় করিয়া আজ্ঞাকরিলেন যে আপন সম্পত্তি লইয়া এদেশ হইতে যাত্রা করহ। তিমর বাঙ্গালাদেশ দুই বৎসর শাসন করিয়াছিলেন।পরে তিনি অযোধ্যার শুবাদার হইলেন।

১২৫৩ শালে মল্লীক যজবেক বাস্থালার অধ্যক্ষ হইয়া উড়িস্যাররাজার পুতি পুতি হিৎসাকরিতে স্থির করিয়া ক্রমিক দুই যুদ্ধে জয়ী হইয়া তৃতীয় যুদ্ধে পরাজিত হইলেন এবং তাঁহার হস্তি সকল বিনম্ভ হইল মল্লীক যজবেক তথা হইতে পৌড় রাজ্যে আগমনোত্তর প্রীহুউ আক্রমণ করিয়া বহু সম্পত্তি পাইলেন ! পরে দিল্লীর মহারাজকে দুর্বল শুনিয়া আপনি স্বাধীন হইলেন। অনন্তর আসাম দেশ জয় করণার্থে যাত্রা করিয়া তথায় পরাজিত হইলেন এবং অল্লাহাতে পুগণত্যাগ করিলেন জাত্রব মৃসলমান দিগের আসাম আক্রমণ করিয়া ঘূণার

সহিত প্লায়ন দিতীয়বার হইল। মল্লীকের মরণানস্তর বাঙ্গালা শাসন করিতে দিল্লী হইতে জেলাল নিযুক্ত হইলেন। যখন জেলাল কতিপয় স্বাধীন হিন্দুরাজাদিগের জয় করিতে ব ুগু ছিলেন তখন করার শাসনকর্ত্তা আসিয়া গৌড় নগর লুঠ ও অধিকার করিলেন। এব জেলাল মুদ্ধে বিনষ্ট হওয়াতে তাঁহার শত্রুই দিল্লীতে অনেক উপটোকন পাঠাইয়া বাঙ্গালার শুবাদার হুইলেন।

১২ ११ मोल अफीन उश्वल अफ्ट माननकर्छ। হইয়া ত্রিপুরা দেশ আক্রমণ ক্রিয়া অনেক ধন ও এক শত হন্তী লুঠ করিয়া আনিলেন পরে দিল্লীর মহারাজ নরিয়াছেন এইরূপ শুনিয়া তিনি আপনি বাঙ্গালার রাজা হইলেন তৎকালে দিল্লীর মহারাজ অতিবৃদ্ধ কিস্তু জীবদশায় ছিলেন অতএব তিনি ঐ রাজবিদ্রোহি দুরা-চারিকে জয় করিতেক্রমে২ দুইপুস্তুত **দৈ**ন্যপাঠাইলেন তাহাতে সমুদায় সৈনে ৰা পলাজিত হওয়াতে মহারাজ অত্যন্ত কোধানিত হৃইয়া অধিক **रेमन। म**ं भुङ् পূर्सक ঐ শুবাদারকে জয় করিতে স্বয়°\যাত্রা করিলেন ভাহাতে তগ্রল নিজ সৈন্য সম্পত্তির সহিত উড়িস্যাতে পলায়ন করিলেন তাহাতে মহারাজ পশ্চাদুগামী হইয়া তাঁহার নিকটে কিছুদিন তাবু কেলিয়া রহিলেন। এক দি্বস, মহান্দ সাঁহ নামক অতি সাহসী এক মহারাজের

দৈন্যাধ্যক চল্লিশ জন অশান্তারে সহিত তগরলের তাঁবুমধ্যে পুবেশ করিয়া বালিনরাজার জয়হউক এই খুনিকরিয়া সম্পুথে যাহাকে দেখিলেন তাহাকেই কাটিয়া কেলিলেন কিন্তু ঐ বিজ্ঞোহি শুবাদার নিকটস্থ নদীতে পলায়ন করাতে মহাম্মদ তাঁহার অনুবর্তী হইয়া স্থোত মধ্যে তাঁহাকে নিমগুকরিয়া মন্তকছেদ করিলেন।

তগরলের সৈনে/রা পুভুর মৃত্/ শুনিবামাত্রে-সকলে পলায়ন করিল। মহারাজ অনেক সম্পত্তি লুটে পাইয়া °গৌড়দেশে আসিলেন এব° ১২৮২ শালে নিজ পুত্র নাজির উদ্দিনকে বাঙ্কালার শাসন কর্ত্তা করিলেন ইহার চারি বৎসর পরে নাজিরের পুত্র কেইকোবাদ দিল্লীর মহারাজ হইলেন কিন্তু তিনি সর্বাদা আনন্দে নিযুক্ত থা-কাতে তাঁহার পিতা তাঁহাকে এক পত্র নিখিনেন যে তিনি আনন্দ পরিত্যাগ করিয়া কর্ম্মে মনোযোগ করেন তাহাতে ঐপত্রের ফল নাছওয়াতে তিনি কিছু সৈনে/র সহিত দিল্লী যাত্রা করিলেন কেইকোবাদ ও সুসজ্জীভূত হইয়া বহিভুত হইলেন। যখন পরস্পার উভয় পক্ষের সৈনে রা দৃষ্টিগোচর হইল তখন নাজির পুত্রের সহিত সাঁক্ষাৎ করিতে পুর্থনা করাতে কেইকোবাদ তাহাতে ধন্মত হইলেন কিন্তু দুষ্টমন্ত্রি দিগের পরামর্শানুসারে এই ত্বাক্তা করিলেন যে যথন তাঁহার পিতা সি॰হাসনের নিকটে আনিবেন তখন তিন বার ভূমিও হইয়া পুণাম

করিবেন পরে ঐ বৃদ্ধ মন্ব্য তাঁহার সম্পৃথে আসিয়া ভূমিন্ত হওয়াতে তাঁহার পুত্র ঐ অবস্থা দেখিতে অসহিদ্ধু হইয়া সিংহাসন হইতে লক্ষ্ক দিয়া পিতার ঘাড়ের নিকটে পড়িয়া ক্রন্দন করিতে লাগিলেন কিঞ্চিৎ কাল পরে সাস্ত্রনা হইল। নাজিরউদিন পুত্রের নহিত অনেক দিবস বাস করিয়া তাঁহাকে উত্তমোত্তম বহু পরামর্শ দিলেন কিন্তু, যখন তাঁহার পূত্র পুনর্কার দিল্লীর সুখ তাগে নিযুক্ত হইলেন তখন সমুদায় বিশ্বৃত হইলেন এব ক্রিঞ্চিৎ কাল বিলম্বে তাঁহার নিজমন্ত্রী তাঁহাকে পানে নন্ত করিল। এই সকল দুংখের সময়ে নাজিরউদিন বাজালাতে স্বাধীন ছিলেন।

े ३२ २० माल पिल्ली ति निष्हां मान वाला के पिन नामक खक नृजन ताका हरेलन जिनि पिक्स परिमा लाक पिरा क्या कि ति हिंद कि ति हिंद निष्का महात्रा कि ति प्रा क्या कि ति हिंद कि ति हिंद कि ति हिंद के ति हिंद

श्रेतन, তाशांट पिल्लोत मश्रीताक मशामा उश्नक তাঁহার সহিত যদ্ধ করিতে যাত্রা করিলেন তাহাতে মহারাজের সোনারগাঁ। যাত্রাকালে নাজির অনেক উপ-টোকন দিয়া লাক্ষাৎ করিলেন তৎকালেও মহারাজ বাজালাদেশে অধ্যক্ষার দৃঢ়তা করিলেন নাজিরউদিন ৪৩ বৎসর বাঙ্গালাদেশ শাসন করিয়া ১৩২৫ শালে লোকান্তরগত হয়েন ৷ বাহাদূর মহারাজার সহিত ্যুদ্ধেতে অস্মূর্থ হইয়া শরণাগত হইলেন তাহাতে মহা-রাজ তাঁহার সমুদায় সম্পত্তি পুদান করণে স্বীকার করা-ইয়া পুাণে রক্ষা করিলেন পরে ১৫ বৎসর পর্য্যস্ত বাহ্নালায় দুইজন শাসনকর্ত্রাছিলেন কিন্তু যখন মহাম্মদ তগ্লক মহারাজ সকল পুজার নিকটে ঘৃণিত হইলেন তখন ফকীরউদ্দিননামক এক জন সোনারগাঁর শাসন কর্ত্রার যুদ্ধের স্জ্জাবাহক ছিলেন, সেই ব্যক্তি সৈন্য দিগের বশীভূত করিয়া বাঙ্গালার পুভু হইলেন, তিনি আপননামে খুত্বা পড়িলেন ও টাকা মুদ্রিত করিলেন কিন্তু মহারাজ অত্যন্ত কণিতাপ্রযুক্ত কিছ্ই করিতে পারিলেন না৷ ফকীরউদিন প্রায়সোনারগাঁয় থাকিতেন অনস্তর সমুদায় দেশের লোভে গৌড়দেশ জয়করিতে যাত্রা করিলেন কিন্তু পথিমধে । ধৃত হইয়া মারা পড়ি-ু तिन, ठाँशां बाजा नमूमाय पूरे वर्गत रहेशां हिन ভাঁহার পর মুবারিকআনিল রাজা হইয়া সপ্তদশমানের

পরে সমসউদিনদারা মারা পড়িলেন তাহাতে সমসউদ্দিন সমুদায়রাজ্য অধিকার করিলেন সূতরা শুসুল্মান
দিগের মধ্যে যথার্থ রূপে পুথমে তিনি বাদালার দাধীন
রাজা ছিলেন। এই রূপে ১২০০ শালে মুসল্মানদিগের
এ দেশ জয়করণ অবধি এক শৃত চল্লিশ্বৎসরপর্যান্ত
বাদ্ধালাদেশ দিল্লীর অধীনে থাকিয়া পরে দ্বাধীন হইল
এব শুত ও শাল অবধি ১৫৭৬ শাল পর্যান্ত সমুদায়ে
দুই শত এয়ন্তি শেশ বৎসর পর্যান্ত ঐ দেশ স্বদেশীয় ।
স্বাধীন মুসল্মানদিগের অধীনে ছিল পরে দিল্লীর
মোগল মহারাজ এযুক্ত অকবর শাহদারা পরাজিত
হইয়া দিল্লীরাজ্যের এক শুবা হইয়াছিল।

দ্বিতীয় অধ্যায় ।। বাহালার স্বাধীন রাজারদিগের ইতিহাস ।।

সমস্উদ্দিন সিংহাসনে স্থির হইয়াই ত্রিপুরার রাজার
সহিত যুদ্ধার্থে বাত্রা করিলেন এবং তথাহইতে অনেক
ধন ও হস্তি লুঠ করিয়া আনিলেন ! বাঙ্কালার
পূর্ব্বভাগস্থ গ্রহিউ হইতে ত্রিপুরা ও চউপুনম পর্যন্ত বনেতে অনেক হস্তি পাওয়া যাইত ৷ সমসউদিন সোনারগাঁ হইতে গৌড়ের নিক্টবর্ত্তি পেরুয়পুনিম রাজধানী লইয়া গেলেন ৷ তাঁহার রাজ্ত্ব প্রাপ্তির' দশ বৎসর পরে মহারাজ্বারা নিযুক্ত বেহার

দৈশীয় অধ্যক্ষের সহিত যুদ্ধ করাতে কেরোজনামক দিল্লীর মহারাজ তাঁহার দণ্ড করিতে **এব**ণ বাঙ্গালা দেশ পুনর্কার জয় করিতে স্থির করিয়া এক প্রস্তুত সৈন্যের সহিত আগমন করিলেন। সমসউদ্দিন নিজ পুঞ্জকে পেৰুয়া রক্ষা কৃরিতে ভার দিয়া আপনি সোনার গাঁয় প্রত্যাগমন করিলেন, মহারাজ অনায়াসে পেরুয়া জয়করিয়াসোনারগাঁ নিকটস্থ আকদল্লানামক একবৃহত্ গড় জয় করিতে গমন করিলেন, সেখানে বাহ্বালার রাজা লুকায়িত হইয়া ছিলেন।মহারাজ ঐগড় পরাজয় করিতে অসমর্থ ছইয়া বর্ষারম্ভপ্রযুক্ত সন্ধি করিয়া দিল্লীতে প্রত্যাগমন করিলেন। ১৩৫৭ শালে বাঙ্গালার রাজা দিল্লীতে অনেক উপঢৌকন প্রেরণ করিলেন ৷ শহারাজ ঐ দেশ জয়করণ দুঃসাধ্য জানিয়া উহার ষাধীনতা স্বীকার করিলেন এবং সীমা নিৰূপণ করি-লেন। ইহার পরে সমসউদিন নিশ্চিন্ত হইয়া পাটনার সম্মুখে হাজিপুর নগর নির্মাণ করিলেন যাহা এইক্ষণে মেলার নিমিত্তে খ্যাত আছে। তিনি ষোড়শ বৎসর বান্ধালায় রাজত্ব করিয়া লোকাস্তরগত হইলে তাঁহার পূত্র সেকন্দর ১৩৫৮ শালে ঐরাজ্যে অভিষিক্ত হইলেন। 'সমসউদিনের মৃত্যু সমাচার পাইয়া মহারাজ এক भुञ्च रेमना म॰ गुरुशृद्धक वाकाना परम वामितनन, পিতার রীত্যনুসারে সেকন্দর আকদল্লানামক দুর্গে

লুকায়িত হইলেন, মহারাজের সৈনে রো ইহা আক্রমণ করিলেন কিন্তু বর্ষা আরম্ভ হওয়াতে তাঁহাদের ইচ্ছা পরিত্যাগ করিতে হইল এব॰ মহারাজ ও কতিপায় হস্তি ' ভেট পাইয়া তথাহইতে গমন করিলেন। ১৩৬১ শালে পেরুয়ার নিকটে সেকন্দর আদিনা নামক এক বৃহত্ অসজিদ করিয়াছিলেন যাহার অদ্যাপি কতিপয় চিহু আছে এবণ ঐ চিহ্নদারা বোধ হয় যে সে মসজিদ অতি-· চমত্কৃত ছিলঁ। তাঁহার দুই পত্নীর মধে*।* একেতে সপ্তদশ পুএহয় স্পরেতে এক পুএ মাত্র। ঐ সহোদররহিত পুঞ তাঁহার বিমাতা তাঁহাকে নষ্ট করিতে চেষ্টা করিতেছেন, ইছা জানিয়া রাজবাটীহইতে পলায়ন করিয়া এক প্রস্তুত দৈন্য সংগ্রহ করিলেন তাহাতে তাঁহার বৃদ্ধ পিতা তাঁহার সহিত যুদ্ধার্থে নিজ সৈন্য লইয়া গমুন করিলেন, কিন্তু একযুদ্ধেতেই বৃদ্ধরাজা মারা পড়িলেন ৷ গ্যাসউদ্দিননামক পুঞ রাজসি হীসনে অভিষিক্ত হইবা মাত্র অন্য ভ্রাতারদিগের চক্ষুরুত্পাটন করিলেন, কিন্তু তাহারপর ছয় বত্সরপর্যক্ত যথার্থ বিচারদারা ঐ দৈশ শাসন করিয়াছিলেন। তিনি অতি খ্যাত্যাপন্ন পারসীক কবি হাফিজকে নিজ সভায় আহ্বান করিয়া ছিলেন কিন্তু অতিশয় দূরতাপ্রযুক্ত তিনি আসিলেন ন। । '১৩৭৩ শালে মহারাজের মরণানন্তর তাঁহার পুঞ্ তদনস্তর তাঁহার পৌএ রাজা হইলেন কিন্তু বিটোরিয়া

লগরের শুবাদার গণেশনামক এক হিন্দু ভাঁহাকে রাজ্যচূত করিয়াছিলেন। অতএব মুসল্মানদিগের নধে। এক হিন্দু রাজা হইলেন তাহাতে তাঁহার দেশস্থ মনুষ্যেরা সুত্রাণ আশা করিলেন যে তিনি তাঁহারদিগের ও হিন্দুধর্মের পক্ষে অনেক উপকার করিবেন কিন্তু মুসল্-মানদিগকে অতিশয় প্রবল দেখিয়া পাঠান জমিদারদি-গের সম্পত্তি তাঁহাকে ফিরিয়াদিতে হইল তথাপিপেরুয়া তাঁহার সর্বজাতীয় প্রজারা তাঁহার প্রতি এমত অনুরক্ত ছিল যে তাঁহার মৃরণানন্তর মুসল্মানেরা তাঁহার শরীর-কে গোর দিতে প্রার্থনা করিয়াছিলেন ৷ এবং হিন্দুরা দক্ষকরিতে চাহিয়াছিলেন তাঁহার পুএ চৈতমল রাজা হইয়া হিন্দু ধর্ম পরিত্যাগ করিলেন এবং পেরুয়া হইতে গৌড় ৰগৱে রাজধানী নাড়িয়া. উত্তমোত্তম গৃহ বনর্মাণদারা ঐ নগরকে এমত শোভিত করিলেন যে পূর্বে ২ রাজারা কেহ সে ৰূপ করেন নাই। তাঁহার আজ্ঞানুসারে অপূর্ব্ব মসজিদ স্নান্কুণ্ড, চৌবাচ্চা, সরাই পুভৃতি নিশিঁত হয় ৷ তিনি ষ্থার্থ বিচারপূর্মক শাসন করিয়া ১৪০৯ শালে লোকান্তর গমন করিলেন পরে তাঁহার পুত্র সহমদশ্মহ ঐরাজ্য প্রাপ্ত হইলেন ইহার কিঞ্চিত্কাল পূৰ্ব্বে তৈমূর অথবা তামরলেন নামক এক ব্যক্তি অতি র্হত্ এক পুত্তত মোগল সৈন্য লইয়া সিন্ধু

নদী পার হইয়া দিল্লী জয় করিলেন এব শহসু ২ লোকের পুাণ নষ্ট করিয়া আপনি মহারাজ হইয়াছিলেন ৷ কিন্তু , ভারতবর্ষে এক বত্সর থাকিয়া গমন করিলেন প্রনর্জার তাঁহার পুত্রাগমন হয় নাই। তৈমুরের উপদ্যেহপুযুক্ত मिल्ली बाज । **अपन्य विश्वक इहेन । अ**कर অধ্যক্ষেরা স্বাধীন হইলেন। মালবা, গুজরাট, থণ্ডেশ এবং জোয়ান্পুর পৃথক২ রাজ্য, হইল এই কয়েক নূতন 'রাজের মধ্যে জোয়ানপুর রাজ্য বাঙ্গালার অতিনিকট . ছিল, অতএব ইহার রাজা ইবাহিম বাঁ<mark>ফা</mark>লা দেশ আক্রমণ করিয়া অনেক লোককে বন্দি করিয়া লইয়া গিয়াছিলেন। বাঙ্কালার রাজা অহম্মদ শাহ শক্তিতে ঠীহার অযোগ্য হইয়া হিরাতের রাজা তৈমুরের পৌ**ঞ** সাহরোচের নিকটে সাহায্য প্রার্থনা করিয়া এক পত্ত পাঠাইলেন তাহাতে ঐ রাজাইবুাহিমুকে শীঘু লিখি-লেন যে যদ্যপি তিনি না নিবৃত্ত হয়েন তবে স্বয়ণ আসিয়া তাঁহার প্রাণনন্ট করিবেন তদনন্তর ইব্যুহিমের বাঙ্গালা দেশ আক্রমণ বিষয়ে আর কিছুই আমরা শুনিতে পাই-না ৷ ১৪২৬ শালে অহমদের নিরপত্য হইয়া মরাতে তাঁহার সহিত এই কুদু হিন্দু রাজভের শেষ হইল। এই রাজত্ব কেবল দৈন্ত্টনায় স্থাপিত হইয়াছিল এব ঐ সামুজে। হিন্দু ধর্ম পুনস্থাপন জনে। কিহুমাত চেষ্টা হয় নাই। কারণ তাহার পরে দিতীয় রাজা মসল্মান

ধর্মাক্রান্ত হইয়া অনেক হিন্দু পুঁজাদিগকে স্বীয় ধর্মাব-লম্বি করিয়াছিলেন।

১৪২ ৯ শালে মুসল্মান কুলীনেরা নাজির শাহাকে রাজা করিলেন তিনি একত্রিশবৎসর রাজত্ব করিয়া ছিলেন। তাঁহারদারা গৌড়নগরের চত্তর্দিগে একগড় হয় **এব**ণ অতিসুদৃশ্য গোপুর (কটক) হয় এতদ্যতিরিক্ত আর কিছুই স্মরণীয় নাই তদনস্তর তাঁহার পুঞ্জ বাবেক্ শাহ রাজা হইলেন তিনিই ঐ সকল আদিসিনিয়া দেশস্থ ও কাফ্রি ভৃত্যদিগকে রাজসভায় প্রথম আনয়ন করেন যাহারা পশ্চাৎ এরাজেটর বিস্তর অপকার করিল তিনি সপ্তদশ বৎসর রাজত্ব করিয়া লোকান্তরগত হইলে তাঁহোর পুঞ্জ সপ্ত বৎসর রাজত্বের পরে নিরপত্য মৃত ইইলে কুলীনেরা ফতেশাহকে রাজা করিলেন। এই রাজ্যকালে আবিদিনিয়ানেরা অতি অহঙ্কত ও শক্তি-মান্ হইল অতথব রাজা তাহাদিগকে শাসন করিতে চেষ্টাকরাতে তাহারা তাঁহাকে প্রাণেনষ্ট করিল ৷ তাহার পরে প্রধান যণ্ড (অর্থাৎ খোজা) রাজা হইয়া সুলতান্ শাহজাদা নাম পাইলেন আটমাস পরে মল্কআন্দিল নামক এক জন অতি ক্ষমতাপন্ন আবিসিনিয়ান জাতীয় বিনি প্রধান সৈন্যাক্তিক ছিলেন, রাজাকে মারিয়া স্বয়**ং** 'বাহ্বালার রাজা হইলেন। তিনি গৌড় নগর মধ্যে অনেক নূতন গৃহ নির্মাণ করিয়াছিলেন কিন্তু তাঁহার

ওতাঁহার পুত্রের রাজ্যসমৃদায়ে চারি বৎসরের অধিক হয় নাই তাঁহার পুত্রের পরে মজুকর শাহনামক এক অতিদুরাঝা রাজা হইয়া সকল পুজার নিকটে ঘৃণিত হওয়াতে তাঁহার উজীর হিষনশাহ যিনি তৎকালে মকার নায়েব ছিলেন, রাজার বিপক্ষ হইয়া রাজধানীতে তাঁহাকে বেগ্নকরিলেন তাহাতে রাজা বহিভূত হইয়া যুদ্ধকরাতে গৌড়নগরের নিকটে রণস্থানে বিশ্শতি সহসু মনুষ্য মারাগেল এবশ তাহার মৃধ্যে স্বয়শ রাজাও মারাপড়িলেন —

নৈয়দ হস্থিন সাহ ১৪৮৯ শালে বাজালার রাজা হইলেন তিনি বাঙ্গালার যাবদীয় রাজার মধ্যে নিশ্চিতৰপে অতিশয় পরাক্রমশালী এবণ ভবিষ্য-**দক্তা মহান্মদের ব°াশাদ্রব ছিলেন। তিনি যখন** প্রথম বাঙ্গালায় আসিলেন তখন অতি ফুদ্র পদে ছিলেন কিন্তু গাঁদপুরের কাজি ভাঁহার উভিত্ব বংশ জ্ঞাতহইয়া তাঁহার সহিত আপন কন্যার বিবাহ দিলেন তিনি ক্রমে২.প্রধান মন্ত্রী হইয়া অবশেষে বাঙ্গালার রাজা হইলেন। যেযুদ্ধে তাঁহার প্রভৃ মজু-ফর সাহ মরিলেন সেই যুদ্ধের পারে হয়িন তাঁহার বৈন দিগকে -গৌড়নগর লুট করিতে আছা দিলেশ কিন্তু কতিপয় দিনের পরে নিবৃত্ত হইতে আফাদিলে ' ও তাহারা বা শুনাতে তিনি বারহাজার লোক হত্যা

করিলেন। তিনি রাজ্য প্রাপ্তইইয়া রাজসভা শুধরিতে স্থির করিয়া প্রথমত ঐ সকল পুছরি দিগকে বহিকৃত করিতে চেষ্টাকরিলেন যাহারা সর্জান রাজ্যকুর্যিতে সাহায্য করিত পরে আবিসিনিয়ান দিগের বহিভূত করিতে উদ্যোগ করিলেন। তাহারা উত্তরহিন্দৃত্বান হইতে তাড়িত হইয়া দক্ষিণে গিয়া সিদ্ধিস্ নামে খ্যাত্যাপন্ন হইল।

এই প্রকারে রাজকল্মের নিয়ম করিয়া চত্ত বিংশক্তি বৎসর পর্য্যন্ত সদিচার পূর্ত্তক শাসন করিলেন। তিনি পণ্ডিতলোক্দিগের অত্যন্ত উত্সাহ বৃদ্ধিকরিয়া ছিলেন। তিনি বাহ্বালার অতি নিকটবর্ত্তি আসাম দেশের কিয়দ শ ও উড়িস গ আক্রমণ করিয়াছিলেন। তাঁহার রাজ্যকালে জোয়ান্পুরের স্বাধীন রাজাদিগের শেষবন্ত্ৰী হুসংআপন রাজ্য হইতে তাড়িত হইয়া ৰাজালায় বস্তি করিতে প্রার্থনা করিলেন তাহাতে ঐ রাজা তাঁহাকে রাজপুত্রের উপযুক্ত মাসিক স্থির করিয়া দিলেন দিল্লীর মহারাজ হুসঙের অনুবর্ত্তী হ্ইয়া বান্ধালার নিকটে আসিলেন তাহাতে তাঁহার স্ভিত ঐ রাজার সন্ধিহইল এবণ ঐ সন্ধিদার৷ বেহার खित्र**र्**षे मत्रकात ५ मात्रन **এ**ই कथक **ए**न्स महाताकक দত্ত হওয়াতে তিনি বাঙ্গালা দেশ আক্রমণ করেন নাই : ১৫২০ শালে হয়িন মরাতে তাঁহার

নম্বরিত সাহ রাজাহইলেন তাঁহার রাজ্যকালে কাবল হইতে সূলতান বেবর আসিয়া দিল্লাজয় করিয়া ১৫২৬ শালে ভারতবর্ষে মোগল রাজ্য স্থাপন করিলেন নম্বরিত বেহু⁺র জয় করিলেন এব∿ দিল্লীরাজ্য হইতে বহিষ্ঠ মহারাজ মহাম্মদ লদিকে সাহয় করাতে বৈবর তাঁহার সহিত যুদ্ধার্থে আগমন করিলেন তাঁহাতে বাঙ্গালার রাজা বিকেচনা পূৰ্ব্ৰক অধীনতা স্বীকার করিলেন ৷ তিনি রাজ-.বাটীরখোজাদিগের প্রতি অতি নিগুরতা প্রকাশ করাতে তাহাদিগের দ্বারা হত হইলেন। তিনি গৌড় নগরে ঐ উত্তম স্বৰ্ণয় মস্জিদ করেন,যাহা অদ্যাপি সোনা মন্জিদ নামে খ্যাতআছে । তাঁহার পুঞ মহম্দসাহ রাজা হইলেন কিন্তু অতি প্রসিদ্ধ সের সাহ ওাঁহাকে . পরাজয় করিয়া রাজ্যচ্যুত করিলেন। -

বাঙ্গালায় এপর্যান্ত যত মুসল্যান দিগের বর্ণনাকরা
গিয়াছে সেসকল অপেক্ষা সেরসাহ অতি প্রধান শনুষ্য
ছিলেন পুর্রে তাঁহার নাম ফরিদ ছিল পরে এক সিংহের
সহিত একাকী যুদ্ধকরিয়া তাহার সম্ভক ছেদন করাতে
তাঁহার নাম সেরহইল ষের অর্থাৎ সিংহ ৷ তিনি
গাঠানজাতীয় ছিলেন, তাঁহার পিতামহ কর্মাকাংক্রী
হইয়া ভারতবর্ষে আসিলে দিল্লীর মুহারাজ বেললি লদ্দী
তাঁহাকে নিযুক্ত করিয়াছিলেন। তাঁহার পিতা অবশেষে
বেহার দেশের মধ্যে সাসরম জেলার শাসন্কর্তা হইয়া

ছিলেন । পিতার মরণানন্তর, সের পৈতৃক সম্পত্তি পাইয়া আগুবন্ধুদিগের বাধা প্রযুক্ত দুইবার হারাইলেন ্ঐ সময়ে বেবর দিল্লীর মহারাজ হওয়াতে সের তাঁহার সভায় প্রবিষ্ট হইয়া রাজার সহিত বহুকাল রহিলেন অতএব পরিশ্রম পূর্মক মোগল দিগের ব্যবহার ও শক্তি শিক্ষাকরিয়া পরে দেখিলেন যে মোগলদিগকে সহজেই ভারতবর্ষ হইতে বহিকৃত করাযায় এবণ বিবেচনা করিলেন যে তিনি ইহা করিতে পারেন ৷ সের রাজসভা ত্যাগ করিয়া বেহারে গমন পূর্বক নিজবুদ্ধি ও চেষ্টা ছারা সেখানকার শাসন কর্ত্ব প্রাপ্তহইলেন ইতিমধ্যে সি॰ হাসনচ্ত মহারাজ সেকন্দরলদির পুঞ মহামদ বেহারে আসাতে তথাকার কুলীনেরা তাঁহাকে রাজা ক্রিলেন। সের তাহাতে বাধাদিতে অসামর্থ্য পুযুক্ত দিল্লীর মহারাজ বেবরের পুঞ হ্মাযুনের স্হিত যুদ্ধার্থে তাঁহার অধীনহইমা যাত্রা করিলেন। যথন সৈনে রা যুদ্ধকরিতে লাগিল তখন তিনি মোগল দিগের পকে হইয়া তাহাদিগের জয়ী করিলেন ত্নাযুন গুজরাটে যাওয়াতে সের বেহার অধিকার করিয়া বাঞ্চালা পরাজয় করিতে যাত্রার্থে উদেটাগ করিলেন তাহাতে বাঙ্গালার রাজা অত্যন্ত ভীত হইয়া ১৫৩१ माल গোওয়াদেশে পোর্তুগিসদের নিকটে সাহায্য প্রাথনা করাতে তথাকার প্রধান স্মধক

তাঁহার সাহায্যার্থে ন্য় খান যুদ্ধ জাহাজ পুরণ করি-লেন কিন্তু তাহাদের আসিতে অতিশয় বিলম্ব হইল। খুবিষ্টিয়ানেরা অন্ত্রধারণ করিয়া বাঙ্গালাদেশে এই : সময়ে পুথমে আসিলেন। সেরের আগমনে বাহ্ন-লার রাজা মহামদ গৌড়নগরের মধে। লুকায়িত হইয়া রহিলেন কিন্তু খাদ্যদ্রব্যের অতিশয় অপুত্তল হওয়াতে নৌকায় আরোহণ পূর্বক পুথমত হাজিপুরে পলা-়য়ন করিয়া' সেস্থান হইতে চুনারে গমন করিলেন সেরের আগমনে গৌড়স্থ স্কল লোকে তাঁহাকে দার পুলিয়া দিলেন কিন্তু হুমায়ুন তাঁহার সহিত যুদ্ধার্থে আসাতে তাঁহাকে সানরমদেশে পলায়ন করিতে হুইল 'এব॰ ঐ সময়ে তিনি ধূর্ত্তা করিয়া রতাস অধিকার করিয়াছিলেন ঐ স্থান এক উচ্চ পর্কতের উপরিস্থিত যেস্থান হইতে শোশনদ স্পাষ্টৰূপে শূশ্যহয় একং ঐ স্থানকৈ ভারতবর্ষের মধ্যে এক দৃঢ় গড় বলাযাইত। যথন রতাসে থাকিয়া সের সবল হইতে ছিলেন তখন গৌড় দেশ লুট করিতে ভ্মায়ুন. তিন মাস যাপন করিলেন ৷ পরে বৃষ্টি আরম্ভ হওয়াতে সুতরাণ তাঁহাকে দিল্লাতে প্রত্যাগমন করিতে হইল । প্রত্যাগমন কালে 'মহারাজের যে পথে অবশ্য যাইতে হইবে সেইপথে নদীর তীলে সের মিজ সৈন্ স্থাপন করিয়া

ভাঁহার আগমন রোধ করিলেন,। মহারাজের সৈনে রা তিন মাস পর্যান্ত নিক্তম হইয়া তাঁবুতে রহিয়া অগুসর 'হইতে বা পশ্চাৎ গমন করিতে অসমর্থ হইল। অব-শেষে ত্মাযুন সেরের নিকটে সমাচার পাঠাইলেন, যে যদি সের পথ ছাড়িয়াদেন তবে মহারাজ বাঙ্গালা ও বেহার দেশ তাঁহাকৈ দিবেন। সের তাহাতে সম্মত স্ইয়া কোরানস্পর্শ করিয়া শপথ করিলেন যে তিনি মোগলদিগের অপকার করিবেন না কিন্তু সেইদিন রাত্রি কালে যখন বিপক্ষেরা নিজ তাঁবুতে সুখভোগ করিতে *ছিল তথন সের হঠা*ৎ স্বরায় উপস্থিত হইয়া তাহা-দিগের অষ্টসহসু মনুষ্যকে নষ্টকরিলেন কেবল মহারাজ কতিপয় বন্ধবর্গের সহিত পলায়ন করিলেন ৷ ১৫৩৯ শালে এই ঘটনা হইয়া ছিল ৷ সের তৎক্ষণাৎ সত্তরে গৌড় দেশে আসিয়া আগমনোত্তর দিনেই বান্ধালা ও বেহার দেশের শ্লাজকীয় শক্তি গুহণপূর্বক রাজা হুইলেন। এক বৎসর পর্য্যন্ত রাজকন্মের নিয়ম করিয়া পঞ্চাশং মহ্সু পাঠান সমভিব্যাহারে মহারাজের প্রতি আক্রমণ করিতে যাত্রা করিলেন। কনজের নিকটে একযুদ্ধেই মহারাজ পরাজিত হইবাতে সের দিল্লীর মহারাজ হইলেন এব ় তাঁহার নাম সের সাহ হইল। , যুদ্ধস্থান হইতে সের বাঙ্গালায় আসিয়া বহু**অ**ংশে বাহালাকে বিভক্ত করিলেন। তিনি এমত উত্তমৰূপে

রাজ হ দৃঢ় করিয়া ছিলেন যে তাঁহার রাজত্ব কালপর্য্যন্ত বিরোপের রোধ হইয়াছিল। ১৫৪১ শালে তিনি আগুায় গিয়া মহারাজের পি°্হা**সনে আরোহ**ণ করিলেন। ১৫৪৫ শালে এক গোলা ফাটিয়া পড়াতে তিনি মারাপড়িলেন তিনি পঞ্দশ বংসর রাজ্যের্নিনিত্তে যুদ্ধ করিলেন কিন্তু পঞ্চবৎসর মাত্র ভোগ করিয়াছিলেন। তিনি গত হইলেও অনেক সুখ্যাত কর্মারহিল। বাঙ্গানার অন্তর্গত নোনারগাঁ হঁইতে সিন্ধুনদার তারপর্যসন্ত সহসুকোশ দুরহইবে কেবল সর্ক্র সাধারণ উপকারের নিমিত্তে ইহার মধে /২ প্রতি আড়ায় এক২ সরাইনির্শাণ করিয়াছিলেন এবং এক২ ক্রোশ অস্তরে এক২ কূপ খাত করিয়া ছিলেন। এব° আজ্ঞা করিয়া ছিলেন যে প্রতি সরাইতে . ষেকোন জাতি হউক সকল পথিক দিগের রেবা তাঁহার নিক্ন ব্যয়ে হইবে এবং নানাবিধ বৃক্ষশ্রেণীদ্বারা ঐ পথ সুশোভিত করিয়াছিলেন। ভারতবর্ষের[°] মধে*।* প্রথমে তিনিই যানের ডাক করিয়াছিলেন ভাঁহার রাজ্যকালে রাজপথে ডাকাইতি ছিলনা। সাসরাম গুানৈ অর্দ্ধ কোশ দীর্ঘে ও অর্দ্ধকোশ বিস্তারে এমত এক দীর্ঘিকার মধ্যে অতি চমৎকৃত তাঁহার গোরস্থান আছে। তাঁহার মদ্জিদকে ভারত্রষীয়প্রধান অউালি-'কার মধ্যে গণনা করা যাইতে পারে কিন্তু এক্ষেণকার রাজত্বের অধীন হওয়াতে ক্রেয়ে২ নষ্ট্রইতেছে।

সেরসাহের মৃত্যুর পরে মোগল কর্তৃক বাহালা দেশ **ज**र्म भर्य प्रस्तु २०८० भान इहेट २०१७ वरमत भर्य प्रस 'একত্রিশ বৎসরের মধ্যে ঐ সি॰ছাসনে চারিজন রাজা হন সেরের প্র সেলিম নিজ কুটুম্ব মহামাদখাসুরকে বাজালাদেশের অধ্যক্ষ করিলেন তিনিও প্রভুর জীব-फ्रमार्भिग्रं ख अधीन थाँकिया भारत साधीन इहेलन बदः জোয়ান্পুর অঞ্চলে অনেক্২ স্থান জয়করিয়া ১৫৫৫ শালে মহারাজের সৈন্যাধ্যক দারা পরাজিত হইলেন ৷ ভাঁহার পুএ বাহাদূর সাহ তাঁহার পশ্চাৎ রাজাহইয়া দিতীয় বৎসরে দিল্লীর মহারাজের সহিত যুদ্ধার্থে যাত্রাকরিয়া মুক্লেরদেশে এক যুদ্ধে তাঁহাকে পরাজিত क्रिया नष्टक्रितलन । उपविध मृज्यकान পर्याख वाङा-দুরের বাজালা ওবেহার দেশের রাজত্বে দৃঢ়তাহওয়াতে সচ্ছন্দতাৰূপে শাসন করিয়া ১৫৬০ শালে তিনিমৃত হইলে তাঁহার ভূতি। রাজা হইয়া তিন বৎসর পরে গৌড়ে থাকিয়া লোকান্তর গত হইলেন ৷ তাঁহার পুঞ যদ্যপিও অতি বালক ছিলেন তথাপি ঐ সিণ্হাসনে जकता ठाँ हां के ताजा कतियान, किन्न किश्विष् कांन পরে তাঁহার প্রাণে আঘাত হইল। কার্সানি ব শীয় সলিমান নামক একজন খ্যাত্যা পন্ন পাঠান ১৫ ৯৪ শালে ঐ সিৎহাসন আক্রমণ করিয়া মহারাজের প্রতি যথার্থ মর্য্যাদা ও আঁদ্মীয়তা প্রকাশ করিতে নানা প্রকার

বর্মূল্য উপটোকনের সহিত একজন নিজলোক প্রেরণ করিলেনএই সুন্দর উপায়দ্বারা সলিমান্ বাঙ্গালা দেশ ন নির্বিরোধে রাখিয়া অন্যান্য স্থান জয় করিতে শক্ত হইলেন।

ইহার পূর্ব্বে উড়িস্যার রাজারা তাঁহাদিগের রাজ্যের সীমা বাঙ্কালা পর্য্যন্ত আনিয়া ছিলেন এবং তমিমিত্তে উড়িয়ারা অহুকার করিয়াপাকে যে তাহাদের রাজ্য 'একবার ভাগীরথীর তীরবর্ত্তি ত্রিবেনী পূর্যান্ত বিস্তৃত হইয়াছিল ৷ ১৫৫০ শালে মুকুন্দদেব নামক একজন তৈলক্ষা উড়িস্যার সি°ংহাসনে আকৈ হইলেন কি**স্ত** তিনিই ঐ দেশের স্বাধীন রাজার শেষ ছিলেন এব^ তিনি অতিশয় সাহসী ও গুণবান্ ৰূপে বর্ণিত আছেন তাঁহার রাজ্যের প্রথমকালে সাধারণ লোকের উপকাঁর জনক কর্ম অথবা কাল্পনিক ধর্ম স্থাপিতহয় অন্যান্য অউালিকার মধ্যে তিনি ত্রিবেনী তীর্থে এক মন্দির ও এক ঘাট নির্মাণ করেন ঐস্থান তাঁহার রাজ্যের উত্তর मोगा हिल । वाकालान बाका मिनगान छे छिमा कन्न করিতে স্থিরকরিয়া মুকুন্দদেবকে আক্রমণ করিতে এক প্রস্তুত সৈন্য পাঠাইলেন ৷ কিন্তু তাঁহার প্রথম উদ্যম নিমুল হওয়াতে কালাপাহাড় নামক তাঁহার অভি ভয়ানক সৈন্যাধ্যক্ষকে তথায় পাঠাইলেন্ ৷ এতদে্শীয় লোকেরা কহেন যে তাঁহার লৌহময়জয় ঢকার ধুনিতে

एत्वित्रपुष्ट फिरगंत रुख्यमाणि विरुद्धांन पृदत विकिश्व হুইয়াছিল। তিনি ব্ৰাহ্মণের কুলে জন্মিয়াছিলেন কিন্তু গৌড় নগরের কোন ধবন রাজের কন্য তাঁহার প্রতি কামান্তরা হওয়াতে তিনি মুসল্মান হইয়া ঐ কন্যাকে বিবাহ করিলেন এবং তলিনিত্তে ইতিহাসে বর্ণিত নিষ্ঠুর যেসকল হিন্দুদিগের অপকারি ব্যাক্তিরা ছিল ভাহাদিগের মধ্যে তিনি প্রধান হইলেন.৷ তিনি নিজ প্রভার কারণ এক প্রস্তুত পাঠান অস্থানঢ় সৈনে/র পহিত উড়িস্য প্রবেশ করিয়া তথাকার রাজাকে পরাজয় করিয়া ঐ দেশের স্বার্থানতা একেবারে নষ্ট-করিলেন । মুসল্মান ইতিহাস লেখক দিগের মতে ইহা ১৫৩৮ শালে হয় কিন্তু উড়ি ग/ার লিখনানুসারে ১৫৫৮ শালে হয়। কালাপাহাড় প্রতিজ্ঞা করিলেন যে উড়ি-স্থার মধ্যে কেবুন ছিন্দুধর্মের চিহ্নও রাখিবেন না তিনি অতিশয় ক্রোধ পূর্বক ব্রাহ্মণ দিগের অপকার ক্রিলেম ও সকল দেবালয় ভথ এব বিগুছ সকল **নষ্টকরিলেন্। এব[৲] সকল অপেকা তাঁহার ক্রোধ** জগ্নাথের মূর্ত্তির প্রতি বিশেষত হইল ৷ ইহার পূর্জে দুইবার যথন ভিন্নদেশীয় শত্রা উড়িস্য আক্রমণ ৰুরিয়াছিল তখন তথাকার প্রোহিতেরা ঐ বিগুহ ৰ্লইয়া পৰ্বতে পলায়ন করিয়াছিলেন কিন্তু যখন কালা-.প্রাহাড় মনিরের দিকটে আসিলেন তখন পুরোহিতেরা

তাঁহাদের ঈশ্বরকে আচ্ছাদিত করিয়া একশকট দারা চিল্কনামক দীর্ঘিকার তীরে একগর্ভে পুতিয়ারাখি-লেন। তত্রাপিও ঐ বিজয়ী ঐ বিগুছ লইতে প্রতিজ্ঞা করিয়া অনেক অনুসন্ধানের পরে ঐ গুপ্ত স্থান জানিতে পারিয়া ঐ বিগুহকৈ খননকরিয়া তুলিলেন যাঁহাকে উড়িয়ারা খ্রীজিউ কহেন পরে কালাপাছাড় পুরীয়নখেঃ সকল বিগুছ ভথকরিয়া একহস্তিপৃষ্টে জগলাথকৈ গলা-তীরে আনিয়া অধিক কাষ্ঠ সংগ্রহ পূর্বক একচিতা নির্মাণ করিয়া তাহাতে অধিদিয়া ঐ বিগুহঁকে তন্মধ্যে निः क्लिश कतितन। উशत निकरेष्ट्रिं धक्राकि थे मक विगुरुक अधिरुहेट आकर्यन कतिया नहीमस्था ক্লেপকরাতে যেমন ঐ অর্দ্ধ বিগুহ স্থোতমধ্যে ভাসিতে২ চলিল জগনাথের এক দৃঢ়ভক্ত তাহার পশ্চাৎ বৰ্ত্তী, হইয়া যখন বিরল দেখিলেন তখন উহার মধ্যহইতে ঈশ্বরীয় ভাগ অর্থাৎ বিষ্ণুপঞ্জর লইয়া সত্ন-পূর্বক উড়িস্যায় উপস্থিত হইলেন। অতথ্য গজপতি ও গঙ্কাব পৰীয় রাজারা যে স্বাধীনতা এমত দীর্ঘকাল পর্য ক্রিয়াছিলেন তাহা একেবারে নষ্টহইল ৷ কালাপাহাড়ের জয়ের পরে এক বিশ্শতি বৎসর ঐ অরাজক ছিল পরে উড়িয়ারা একণকার পূর্দ রাজের পূর্বপুরুয়কে ঐ সি°হাসনে স্থাপিত: कतितन । किन्न वे परम मूगन्मान पिरगतं मुन्नूर्भ निक

থাকাতে ঐ রাজা কেবল ফমিদার মাত্র হইলেন। ১৫৭৩ বৎসরে সলিমান্ লোকান্তর গতহন। মহারাজ অকবরের অতিবৃদ্ধিশাল সামর্থ্যথাকাতে তিনি কদাচ ৰাধীন রাজা হইতে পারেন নাই তিনি দিল্লীতে অনেক **উপঢৌকন** প্রেরণকরিয়া আপনি অতিকৃতক্ক প্রজা ইহ। ৰীকার করিয়াছিলেন এব তরিনিত্তে তাঁহাকে তদ্দেশ অধিকারে রাখিতে অনুমতি হইয়াছিল। ওাঁহার পুঞ मार्डेम थाँ। वे नि॰ शार्यन व्यादताइन क्रिया प्रिथित्नन (स ভোশ্বারে অধিক ধন আছে এব॰ তাঁহার সৈন্য তৎ-কালে ১৮০,০০০ ছিল এব॰ জনশ্রুতি দারা অবগত হওয়াযায় যে তাঁহার ২০,০০০ কানান ছিল তিনি অাৃপনার শক্তি পরীক্ষা করিতে নিকটস্থিত মহা-রাজের সৈনে/রপ্রতি আক্রমণ করিয়া যুদ্ধ আরম্ভকরি-লেন। মহারাজ অকবর এই বৃত্তান্ত অবগত হইয়া জোঘান্পুরের , অধিপতি · মোনাইমথাকে একপ্রস্তত সৈন্যের সহিত বাঙ্গালা ও বেহার দেশে পাঠাইলেন। তাদর্মল্ নামক এক হিন্দু রাজা তুঁংহার অধীনে সৈন্ঞা-ধ্যক ছিলেন। দাউদখাঁ। পাটনায় স্থিতিকরাতে মহা ় রাজের সৈন্যাধ্যক্ষের। উহাবেগ্ধন করিলেন এব॰ অক-বুর আপনি ওাঁবুতে, আসিলেন পরে হাজীপুর হইতে বিপক্ষের সৈন্যেরা খাদ্যদ্রব্য প্রায় এমত দেখিয়া অগ্রে এ স্থান আক্রমণ ক্রিয়া নিজ অধীন করিলেন যাহারা

উহার রক্ষক ছিল তাহার৷ সকলে মারাপড়িল ৷ উহার 🖰 गर्था शुक्षान रेमनाक्षाक ७ हित्तन। मकत मृতवाकि দিসের শরীর এক নৌকায় আরোপণ করিয়া 🗟 পুধান **বৈন্যাধ্যক্ষের মস্তকের সহিত দাউদর্খা**কে ভীতকরিতে তাঁহার নিকটে পুেরিত হইন তাহাতে তিনি যথার্থ ৰূপে ভীতহইয়া ক্ৰতগামি নৌকায় আরোহণ করিয়া ৰা**জ**ালায় পলায়ন করিলেন পাটনা সুতরা° মহারাজের • হস্তগত হইল । মহারাজ তেরিয়াগলিদার। সনৈনে। যাত্রাকরিলেন যেপথ দাউদের সৈনে বা হাজীপুরের রক্ষক দিগের মত হইবার ভয়ে পরিত্যাগ করিল। দাউদ এইনূতন উপদ্রোহ শুনিয়া আপনার ধন ও সৈন্যের সহিত উড়িস্যায় পলায়ন করিলেন তথায় অকবরের যোগলসৈন্য দিগের সহিত দাউদের পাঠান সৈন/দিগের ঘোরতর যুদ্ধ হইল তাহাতে শোগলদিগের পক্ষেত্র হুইল। কিন্তু দাউদ কটকে পুলায়ন করিয়া নৰ্ক্তভাবে জয়ের আশা রহিত হইয়া মহারাজের অনুগুহ পুার্থনা করিলেন মহারাজ ও অনুগুহ করিলেন তাছাতে তিনি মোগল দিগের তাঁবুতে আসিয়া পুন-र्यात कनाठ अकरत्वत शुठि विक्रमान्त्रग कतित्वन না এইনত পুতিজ্ঞা পত্তে স্বাক্ষর কুরিয়া নিজমুদারিত করিলেন এব এইসন্ধিদারা তাঁহার সম্পত্তি সকল উড়িস্যায় রাখিতে মহারাজ অনুমতি করিলেন।

মোনাইমথা মহারাজের সৈন্যের সহিত গৌড়মগরে আসিয়া স্বয়ণ তথায় বাস করিতে মানস করিলেন। ১৫৭৫ শালে কোন অজ্ঞাত কারণ বশত অতিশয় মরকউপস্থিত হইল পুতিদিন সহসু২ মনুষ্য মরাতে অবশিষ্টেরা গোর দিতে অক্ষম হইয়া সকল শব নদীতে নিঃক্ষেপ করিতে লাগিলেন তাহাতে এমত দুর্গন্ধ হইল যে ক্রমে পীড়াব্ন বৃদ্ধিহইল এবং এই পীড়াতেই তথাকার অধ্যক্ষ নহা-শয় মারাপড়িলেন এইনগর তদবধি মনুষ্যশূল্য হইয়া সহসু বৎসর ভারতবর্ষের মধ্যে অতিচনৎকৃত নগর ছিল উহার দৈর্ঘ ও বিস্তার অন্যান্য অপেকা অধিক ছিল এব৲ উহার মধ্যে অতি উত্তযোত্তম অউালিকা ও নানা পুকার পন ছিল এব॰ উহাতে একশত রাজ। ক্রমে২ বসতি করিয়া ছিলেন আর উহা এক পরমসুখ ভোশের স্থান ছিল কিন্তু এক বৎসরের মধ্যে সকল ভূমিসাৎ হইয়া একেণে ব্যাঘু বানর পুভৃতির বাসস্থান হইয়াছে অতিদৃঢ়ভর পা্ষাণ্ময় অউালিকার মধ্যে দুই এক অদ্যাপি আছে কিন্তু ইষ্টকানিৰ্মিত গৃহসকল ভশ্ব'করিয়া মুরসিদাবাদের অউালিকা নির্মাণ হয় এবং য়ে বৎসরে বাহ্বালাদেশের ঐ অতিপ্রাচীন ও অতিউত্তম ताकथानी निर्मन्य। इहेल (महेव ९ मद्र छेश फिल्ली द्रो एक । द्र এক অাশ হইল ॥

নোনাইমখাঁর মৃত্যুর পরে বাললা দেশ অতিঅনিয়-মিত হওয়াতে দাউদর্থা **শপথ** ভ**রু করি**য়া **অত্র** পুহণ পূর্মক মোগলদিগকে বাঙ্গালা হইতে বহিষ্ড করেন পরে পঞ্চাশত্ সহসু অশ্বারাট সৈন্য সংগ্রহ ক্রিয়া রাজমহলে স্থিতিক্রিলেন ৷ অক্বরের সৈন্য সকল চন্তর্দিক্ হইতে একত্র হইয়া ঐ স্থান বেষ্ঠন করিল তাহাতে পাঠানেরা সাহস পূর্বক আত্মরক্ষা করিল .কিন্তু তাহাদের অধ্যক্ষেরা ক্রমে২ মারাপড়াতে তাহারা ভীতছইয়া পলায়ন করিল ৷ দাউদ শোগল সৈন্র-ধ্যক্ষদিগের হস্তে পড়াতে তাহারা তাঁহার মন্তকচ্ছেদ করিয়া অকবরের নিকটে পাঠাইল। দাউদের মৃত্যুত য়ে রাজশেণী যাধীন হইয়া এইদেশ দুইশত ছত্ত্ৰিশ ৰ্থসর পর্যান্ত শাসন করিতে ছিল তাহা **একেবারে** নির্বাণ হইল এবং পাঠান দিগের শক্তিও দাউদের সহিত বিনষ্ট হইল ৰক্তিয়ার খিলিজি থেবৎসব্ধে গুথম বান্ধালাজয় করিলেন ভদবধি মোগল দিগের পুনর্জয় পর্যন্ত তিন শত পঞ্চাশত্বৎসন্নের ও অধিক হুইবে পাঠানেরা বাহ্বালায় অতিশয় বলবান ছিল ৷ ১৫৭৬ শালে বাঙ্গালা ও বেহার দেশ মোগল রাজ্যের এক অপশহইল। পাঠানেরা যে চারি শত বংসর বাঙ্গালায় ছিলেন তাহাতে এইৰূপে ব্ৰাজকৰ্ম নিৰ্বাহ হুইয়া **ছিল । রাজা অথবা পুথান অধ্যক্ষ নিজরাজ** হের

নিমিত্তে কোন বিশেষ পুদেশ গুহুণ করিতেন। অন্যান্য পুদেশ ও হিন্দুদিণের হইতে বলাৎ গৃহীত সম্পত্তি সকল ভাঁহার সেনাপতি দিগের দত্তহইত তাঁহারা ঐভূমি নিজহ অধীন ব্যক্তি দিগের মধ্যে বণ্টন করিতেন ঐসকল ভূমিহইতে যে কর উৎপন্নহইত তাহাহইতে সেনাপতিদিগের নিয়মিত সংখ্যক সৈন্য রক্ষা করিতে হইত এবং তাহাদের নিজহ ব্যয়করিতেহইত অব-শিষ্ট রাজার কোষে প্রেরণ করিতেহইত ছিন্দু জনি-দারেরা আপনহ ভূমি হারাইয়া অত্যন্ত দুঃখদারিত্র ভোগ করিতেন এবং সর্মদা পাঠান দিগের নিমিত্তে সম্পত্তি আহরণ করিতে নিযুক্ত থাকিতেন।

তৃতীয় অধ্যায়

দাউদর্থী পরাজিত হইলে মহারাজের সৈন্যাধ্যক্ষ বেহার দেশজয়করিয়ারতাসের দৃঢ় গড়দখল করিলেন এবশ মৃতরাজার সম্পত্তি আটককরিতে একপ্রস্তুত সৈন্য উড়িস্যায় প্রেরিত হইল পরে তাহারাই কুচ্-বেহারের রাজাকে করদিতে বাধ্য করিলেক

ইহার কিঞ্ছিৎকাল পরে বড় দুর্দশা উপস্থিত হইল মোগল সেনাপতিরা পাঠান দিগের সম্পত্তি হরণ করিয়া তাহাদিগকে দূরীকৃত করিল অকবর রাজস্ব আদায় কারণ এক উত্তমরীতি করিতে ইচ্ছুক হইয়া নূতন সম্পত্তি ভোগা মোগলদিগের আন্থানক্ষিয়াভোগাব- শিষ্ট ভাঁহাকে দিভে আজা করিলেন এবং যাহারা রাজস্ব আহরণ কারক হঁইয়া জমিদারের তুল্য ব্যবহার করিত তাহাদিগকে ক্রমে২ পরিবর্ত্ত করিতে স্থির করিলেন ইহাতে মোগলেরা অসন্মত হইয়া মন্তর্ক মুগুন করিয়া খেদপূর্মক নৃতন প্রাপ্ত সম্পত্তি রক্ষাকরিতে স্থির করিল অতএব অকবরের নিজ ত্রিশ হাজার অশ্বা-ৰাঢ় সৈনে ৰা একেবারে তাঁহার বিপক্ষ হইয়া যুদ্ধকেত্রে উপস্থিত হইল এব৲ বাঙ্গালার ব্লাজধানী বেষ্টন করিল অবণ ঐ কারণবশত বেহারস্থিত মোগলেরা তদ্দেশ গুহণার্থে অন্তথারণ করিল এইদ্বপে ১৫৮০ শালে সমুদায় বান্ধালা ও বেহার পুনর্কার মহারাজা হইতে পৃথক হইল ৷ এই রাজবিদ্যোহের দারা অকবরের ৰ্শিণ্ছাসন কম্পিত হইল। ঐ বিদ্যোহিরা তাঁহার শিজ সৈন্য ও নিজ জাতি ছিল একারণ সর্বতি কৃতঘুতা সন্দেহ করিয়া তিনি কোন আপনারু লোকের উপর নির্ভরকরিতে পারি**লেন না এই সন্দিপ্ত বিষয়ে** তার<mark>ল্</mark>মল নামক এক হিন্দু রাজাকে দৈন্যাধ্যক্ষকরিয়া একপ্রস্তুত রাজপুতজাতীয় হিন্দুসৈনে র সহিত ঐ বিপক্ষদিগের দেশসকল পুনর্কার জয়করিতে পাঠাইলেন। তিনি অতিসাহস পূর্বক কর্মকরিতে লাগিলেন তিনি নিজ .সৈনে ্র সহিত বেহারদেশে প্রবেশ করিয়া তথাকার হিন্দুজমিদার দিগকে বিদ্যোহকারি দিগের কার্ণ খাদ্য

দ্রব্য আহরণ করিতে অস্বীকার করাইলেন তাহাতে বিদ্রোহকারি দিগের মধ্যে অনেকেই আপনার দিগকে তাঁহার সহিত যুদ্ধে অত্তন্য জানিয়া ঐ দেশ পরিত্যাগ করিলেন।

কিন্তু তাঁহার অধীন মুসল্মান্ কর্মকারকেরা তাঁহার পুতি অতি শয় ছনিঃ না হওয়াতে সৈন্য সকল একত্র রাখা রাজা অতি দুঃসাধ্য জানিলেন ইতি মধ্যে দিল্লীর উজির উপদ্যেহ কারিদিগের অনেককে আস্থান কত্নিয়া তাহাদিগের হইতে প্রাপ্য যে অবশিষ্ট ধন তাহাদিতেকহিলেন ইহাতে ঐ রাজার আর অধি-ক অসন্তোষ হইল- অতএব তিনি মহারাজের নিকটে ইহা নিবেদন করাতে মহারাজ প্রধান মন্ত্রিকে পদচুত্র কারলেন ৷ এই সময়ে অকবরের রাজকীয় কর্ম সকল এমত ক্ষীণ হইল যে যেসকল বৃদ্ধলোকেরা তাঁহার কর্ম ত্যাগ করিয়াছিশেন তিনি তাঁহাদিগের বাটীতে গিয়া তাঁহাদিগকে পুনর্বার রাজসরকারে আনীতে প্রার্থনা করিলেন । আজিম খাঁ বেহারের শাসন কর্ত্ত। হইয়। বিদ্যুেছ কারিদিগকে বিনয় দারা ফিরাইতে চেষ্টা করি-লেন। তাহাতে কলোদয় না হওয়াতে অকবরকে রাজকর্মের দুরবস্থা জানাইতে তিনি আগুায় আসি-লেন ৷ হিন্দু ও মুসলমান উভয় আছ্ঞাদায়কেরা মিল-পূর্বক কর্মা করিতে অক্ষম ইহা জানিয়া মহারাজ রাজা

তারল্মলের পরিবর্ত্তে আজিম খাঁকে বাঙ্গালার শাসন
কর্ত্তা করিলেন এবং তৎকালে যে সকল সৈন্যেরাঅনিযুক্ত ছিল তাহাদিগকে তাঁহার সহিত যুক্ত হটুতে আজ্ঞা
করিলেন ৷ ঐ নূতন শুবাদার উপদ্যেহ কারিদিগের
মধ্যে পরস্পার হিংসা উত্থাপন করিয়া একে২ সমুদায়কে দুর্বল করিতে পারক হইলেন কিঞ্চিৎকাল পরেই
তৃন্ধানামক নগাঁর তাঁহার অধীন হইল পরে ১৫৮২ শালে
সমুদায় দেশ পরাজিত হইল এবং বিবাদের ও শেষ'
হইল ৷

রাজা তারল্মল বোধহয় সৈন্য দিগের আছা
দানে রুদ্ধ হইয়া ভাগুরে স্থিত হয়েন কারণ তাঁহাকে
সর্বদা সকলে দেওয়ান তারল্মল বলিতেন ১৫৮২ শালে
তিনিই বাঙ্গালার জমিদারির নূতন শ্রেণীবন্ধ করিয়া
ছিলেন মোগলরাজ্যের অধীমে বাঙ্গালার-রাজ্যের স্থিন
রতা প্রথমেপ্র হিন্দু রাজাদারা হইয়াজনেক বৎসর পর্য্যন
ন্ত প্রবলছিল। বাঙ্গালার সকল খোলাশা ও দ্ত ভূমির
খাজানাকে ওয়াসিল তুমর জ্মা কহাযাইত কেবল এই
একদেশ হইতে প্রায় এক কোটী সাতলক্ষ টাকা খাজানা
আদায় হইত।

যদ্যপিও বাজালাদেশ পরাজিত হইল তথাপি নির্বিরোধ হইল না উড়িস্যায় পাঠানেরা বার-স্থার রাজবিদ্যেহী হইত ১৫৮০ মালে অকবর মান-

সিণ্ছনামক একজন খ্যাত্যাপন্ন রাজপুতকে বাঙ্গালা ও বেহার দেশের শাসনকর্ত্তা করিলেন ঐ মানসিংহের ভগিনীর সহিত রাজপুত্র সেলিমের বিবাহ হয় যিনি পরে জেহান্ধির মহারাজ হইলেন । মানসি হ শাসন কত্রি প্রাপ্তহইয়া পাঠান দিগের সহিত যুদ্ধার্থে যাত্রা করিলেন পাঠান দিগের প্রধান কত্তলগাঁ এই সময়ে মরাতে তাহারা ভগ্নোৎসাহ হইয়া সন্ধি প্রার্থনা করিল পিরে তাহার। মহারাজের নামে মৃদু। মৃদ্ভিত করিতে স্বীকার করিলে মানসি°\হ তাহাদিগের সম্পত্তি তাহা-দিগকেই দিলেন কিন্তু তাহারা ঘই বৎসরের মধ্যে বিদ্যেহী হইয়া জগনাথের মন্দির বেষ্টন করিল भानिनि॰ इ व्यविवास थे प्रतम शिशा मूवर्ग तिथानिनीत তীরে এক যৃদ্ধ করিলেন তাহাতে পাঠানেরা স-স্পূর্ণ রূপে পরাজিত হইয়া পুনর্বার সন্ধি প্রার্থনাকরি-ল তাহাতে এইৰূপে সন্ধি হইল যে তাহারা তাহাদিগের সমুদায় হুন্তী ও রাজস্ব দিবে ১ মানসিপ্ছ তথা হইতে প্রত্যাগমন করিয়া রাজনহলে রাজধানী করিলেন ঐ নগর পূর্বকালে, রাজাদিগের ও শাসন কর্তাদিগের আবাস স্থান ছিল কিন্তু নুসলনান দিগের আগমনাবধি ্ অপহেলা প্রযুক্ত নষ্ট হুইয়াছিল ইহা একণে পুনবার উজ্জুল ও খ্যাত্যাপন্ন হইল । ঐ রাজা 'এক উত্তম পুরী নিশাণকরিয়া তাহার চত্তদিগে ইইকা ও পাষাণদারা

দুর্গ করিলেন পরবৎসরে উড়িস্যার পাঠানেরা তৃতীয় বার রাজবিদ্যেহী হইয়া এক প্রস্তুত সৈনে৴র, সহিত বাঙ্গালার মধ্যে তৎকালেও প্রধান বাণিজ্যেরস্থান সাতগাঁ আক্রমণ করিয়া অনেক অর্থ লুটকরিয়া লইল কিন্তু মহারাজের সৈন্য আসিবামাত্রে অধীনতা,স্বীকার করিল ১৫৯৫ শালে কুচবেহারের রাজা মহারাজের প্রজাত্ব স্বীকাঁর করাতে তাঁহার/নিজ কুটুম্বেরা তাঁহাকে একদুর্গমধে। রুদ্ধকরেন তাহাতে তিনি মানসিংহের সাহায্য প্রার্থনা করাতে তিনি সদৈনে, তথায় যাত্রা করিয়া ঐ দেশকে করপ্রদ করিলেন ফোগুল দিগের কুচ .বেহারে এই প্রথম গমন হইল ৈ ১০১১৮শালে অক-বর দেকানে যুদ্ধার্থে যাত্রা করিতে স্থির করিয়া মান-সি॰হকে তাঁহার সহিত যাইতে আজ্ঞাকরিলেন । উঁড়ি-স্যার পাঠান দিগের মধ্যে তৎকালে প্রধান গুরুমান ইহা°শুনিবামাত্রে পুনর্বার যুদ্ধক্ষেত্রে দৃশ্যহইলেন তিনি মহারাজের সৈন্যদিগের জয় করিয়া বাঙ্গালার অনেক অংশ জয়করিলেন মান্সিংহ অতিত্রায় সে/র পুরে শত্রুদিগের নিকটে আসিয়া তাহাদিগকে ছিমভিন্ন করিলেন। মানসি হ পঞ্চদশ বৎসর পর্যান্ত যথার্থ ৰূপে ও জ্ঞানপূৰ্বক বাঙ্গালা শাসন করিয়া ১৬০৪ শীলে নিজকর্ম • ত্যাগ করিতৈ চাহিলেন প্রবৎসরে তাহার প্রভু ঐ মহান্ অকবর মৃত হুইলেন এবং জেহা-

জির তৎসি হাসনে উপবিষ্ট হইলেন এই সময়ে মানসি ই ঐ রাজ্যের প্রজার মধ্যে অতিশয় বলবান্ ছিলেন । তিনি অর্থ দারা স্বজাতীয় ও স্বদেশীয় অতি সাহ্রসা ২০ হাজার রাজপুত সৈন্য রাখিয়াছিলেন এবং তাহারা তাঁহার কর্মে নিতান্ত রত ছিল অতএব এই রাজ্যের হিন্দ দিগের মধ্যে তিনি সকলের প্রপ্রান ছিলেন মানসি ই যদ্যণিও নূতন মহারাজের শ্যালক ছিলেন তথাপি তিনি ইহাঁহইতে অত্যন্ত ভীত হইয়া ভাবিবিপদ নিবারণার্থে তাঁহাকে রাজসভা হইতে বাহ্বালায় প্রেরণ করিলেন ।

আট মাসের মধ্যে জেহান্তির তাঁহাকে পুনরাহ্বান করিয়া অতিসুখ্যত সেরখাঁকে নপ্ত করিতে কহিলেন তাহাতে মানসিণ্ছ এমত কর্মে সাহায়্য করিতে—মন্বীকার করাতে কুতুব উদ্দিনকে বালালার শাসন কর্ত্তা করিলেন সেরমেহরলের প্রী-নিস্মা ভারত বর্ষের মধ্যে তৎকালে অতি পরমা সুন্দরী ছিলেন এবং তাঁহার স্বামী সেরও অতিউচ্চপদস্ত্ ভদুলোক ছিলেন । এই বিবাহের পূর্ম্বে যুবরাজ জেহান্তির এরমণীর দর্শনে মুগ্ধ হইয়া পিতা অকবরের নিকটে প্রার্থনা করিয়াছিলেন যে এরমণীর বিবাহের সম্বন্ধের অন্যথা করিলে তাঁহার সহিত বিকাহ হইতে পারে কিন্তু মহারাজ নিজ্ব পুলের নিমিত্তে ও অবি-

চার করিতে অস্বীকার করাতে ঐ সৃন্দরী সেরের পত্নী হইলেন । তাঁহাকে নঙ্ট করিতে জেহাঙ্কির যে সকল চেষ্টা করিয়াছিলেন সেরের অত্যন্ত সাহস ওবল দারা নেসকল অন্যথা হইয়াছিল সের রাজসভায় নিজ রক্ষা অসম্ভব ভাবিয়া পত্নীর সহিত বাদ্বালীয় আসিয়া বর্দ্ধমানের প্রধান হইলেন অকবরের পরলোক ,হইলে জেহাদির ভারত বর্ষের প্রভু হওয়াতে ঐ সুন্দরীর কারণ তাঁহার পূর্ব্বাপেকা অতিশয় বাসনা হইল সকল আপদ ভোগ করিতে হইলে ও তিনি ঐ নারীকে গুহণ ' করিবেন ইহাস্থির করিয়া কুতুবকে বান্ধালার গুবাদার করিয়া পাঠাইলেন যে তিনি সেরের মৃত্যু যাহাতে হয় এমত করিবেন কুতুব বর্দ্ধমানে স্মাসাতে সের দুইজন অশ্বাৰঢ়ের সহিত তাঁহার অভ্যর্থনা করিতে বছিরা-গমন করিলেন ঐ শুবাদার মর্য্যাদা পূর্বকে তাঁছার সম্বর্দ্ধনা করিয়া হস্তীর উপরে আরোহ শকরিলেন ৷ এক জন পিয়াদা যাহার প্রতি পূর্বে উপদেশ ছিল শুবা-मारत्र प्र भारत्र अथ अभिश्राह्य अहेकथा विवश তাঁহাকে আঘাত করিল ইহাতে অতিশয় গোল-যোগ উপস্থিত হইল সের দেখিলেন যে তাহারা তাঁহার প্রাণ নষ্ট করিতে চাহে একারণ সাহার্সা ব্যক্তির ন্যায় মরিতে স্থির করিলেন । যেমন তাঁহার জ্রী অতিশয়, সুন্দরীছিল তেমনি তাঁহাকে সকলে ভারতবর্ষের মধ্যে

অতিশয় বলবান্ জানিত। তিনি সাহস পূর্বক ঐ হস্তী
আক্রমণ করিলেন এবং শুবাদার তথাহইতে নাচে
পড়াতে তিনি তাঁহাকে দুইখণ্ড করিয়া কাটিয়া ফেলিলেন অন্য পঞ্চজন ভদুলোক তাঁহাকে আক্রমণ করিতে
আসিয়া ঐ লগ হইলেন অবশিষ্ঠ লোকেরা চন্তর্দিগে
বেষ্টন,করিয়া দূর হইতে তাঁহার প্রতি তার ও গুলীক্ষেপ
করাতে তিনি ক্ষত বিক্ষত শরীর হইয়া অবশেষে
পড়িলেন তাঁহার পত্নী তাঁহার মৃত্যুতে থিদ্যমানা না
হইয়া শীঘু জেহাক্রিরের ভার্য্য হইলেন পরে সর্ক্রেলিকে সুবিদিত নুরজেহান নাম ধরিয়া অনেক বৎসর
পর্যান্ত তাঁহার সহিত ঐ নারী ভারত বর্ষের রাজ্য
শাসন করিলেন 1

১৯০৮ শালে সেক ইজলাম খাঁ বাঙ্গালার শুবাদার হইয়। রাজধানী দক্ষিণে আনিয়া ঢাকাশহর নির্মাণ করিলেন কারণ বাঙ্গালার নদীর ধারে পোর্ভুগিস জাতীয় নাবিক তক্ষরেরা অতিশয় দুঃখ দায়ক ছিল। ভারত বর্ষে বাণিজ্যার্থ সমুদু দারা ইউরোপিয়ান্ দিগের মধ্যে প্রথমে পোর্ভুগিসেরা আইলেন। ১৪৯৬ বৎসরে বেঙ্কোডিগমা নামক সামুদ্কি সৈন্যাধ্যক জাহাজদারা উত্তমাশা অন্তরীপ বেষ্টন করিয়া ভারত বর্ষের পশ্চিম তীরে কালিকতনামকনগবে প্রথমে উপস্থিত হইলেন। পোর্ভুগিসেরা তথায় বাল

ণিজে*৷* বহুলাভ দেখিয়া ধারাবাহী *জাহাজ* পাঠাইতে नाशित्नन व्यवस्थिय द्यान शाहेशा मूर्ग निर्माण कित-লেন তাঁহারা লঙ্কা উপদ্বীপ জয় করিয়া পূর্ব্বসমৃদ্রের প্রথমে আগমন অবধি পঞ্শত বৎসর পর্যান্ত তাঁহারা বাঙ্কালায় আইসেন নাই এমত বোধ হইতেছে কিন্তু কোন সময়ে তাঁহারা প্রথমে হুগলিতে বসতি করিয়াছেন তাহা সহজৰপে নিশ্চয় করা্যায় না কিন্তু ১৫৯৯ শালে তাঁহারা যে দুই গিরিজা তথায় নির্মাণ করেন তাহার একটা দেবত্রকরযুক্ত ছিল ইহাতে বোধ হয় যে ইহার কিঞ্চিৎ পূর্বকালে তাঁহারা তথায় ্বসতি করিয়াছিলেন্ তাঁহাদের আবাসস্থান অতিদৃঢ়-ৰূপে বেষ্ঠিত ছিল চতুর্দিগে ভিত্তির উপরে কামান সকল সঙ্জিত ছিল এব° তাহাতে ইউরোপিয় গোল্নাজ অনেক নিযুক্ত ছিল । তাঁহাদিগের শক্তি ও বাণিজ্যেতে এদেশে তাঁহাদিগের অধিক সমাদর জন্মিয়াছিল এই সময়ে সগুগুমে রাজকীয় ৰাণিজ্যস্থান অতিউজ্জ্বল ছিল ইহার তুল্য বাণিজ্যের নগর বাহ্বালায় আর ছিল না পোর্তুগিসেরা ইহার অতিনিকটে গোলিন কিয়া গোলানামক স্থানে বস্ত্ৰিত করিতেন এই স্থান অন্য দেশীয় লোকের বাণিজ্ঞার। বৃদ্ধিশীল হইয়া পরে হগলি নামে খ্যাত হইল !

পোর্ত্তগিসেরা সপ্তগ্রাম হইতে বাণিজ্যের অনেক অংশ আকর্ষণ করাতে ঐ নগর অতিশীঘু ক্ষীণ ছইতে ঁ লাগিল এব॰ ঐ নগরের ক্ষয়ের প্রতি অন্য কারণ পশ্চাৎ লিখাযাইতেছে। অতিপূর্ত্তকালে ভাগীরথীর প্রধান শাখা ঐ নগরের ভিত্তির নীচে দিয়া আম্তা ও তমোলোক হইয়া সমৃদুে যাইত এবং বোধ হয় ঐ সময়ের কিঞিৎ পূর্কে সপ্তগু নম এ নদী শুক হইতে , আরম্ভ হইল এব ৯ ইহার প্রধান স্বোত, হুগলির খাল দিয়া বহিতে লাগিল যেখানে অদ্যাপি আছে। চুঁচ-ড়ায় ওলনাজদিগের মধ্যে অনেককাল পর্য্যস্ত এক জন-**শ্রুতি ছিল যে এই নদী পূ**র্জকালে ইহার পশ্চাৎভাগ **रिया চলিত একণে যেৰপ সন্মুখে আছে এরপ ছি**ज ন। ইহার কারণ সত্য মিথ্য যাহা হউক ইহা নিশ্চিত বটে যে সগুগুমি ক্ষীণ হইতে আরম্ভ হইল এব । ইহার নাশবারা ছগলি বৃদ্ধিশীল হইল। কতিপয় ভুমণকারী পোর্ভগিসেরা চউগুাম ও আরাকান দেশে ১৬০০ শালে বসতি করিয়া তদেশীয় রাজাদিগের কন্মে নিযুক্ত হইল তাহারা সমুদ্রের কন্মে অতি বিজ্ঞ ও অতি সাহসী ছিল একারণ প্রতিবাসিদিগের অতি-শ্বয় দুঃখদায়ক হওয়াতে ১৯০৭ শালে আরাকানের্ রাজা আপন রাজা হইতে তাহাদিগকে বহিদ্ত क्तिरा मानम क्रिया चारनकरक थाए। नष्टे कतिरलन

অবশিষ্টেরানয় দশ খান কুদ্র নৌকায় পলায়ন করিয়া সন্দূৰিপ উপদ্বীপে উপস্থিত হইল পরে তাহারাই নাবিক তক্ষর হইল ৷ যোগল শুবাদার যে সকল পোর্ত্ত গিসদিগের নিকটে পাইলেন তাহাদিগের প্রাণ দপ্ত করিয়া নাবিক তক্ষরদিপের অনেষণে স্বয়ণ যাত্রা করিলেন্ দক্ষিণ সবা-জপুরে তাহাদিগকে নোঙ্গর করিয়া থাকিতে দেখিয়া এক 'নৌগুদ্ধ করিলেন কিন্তু তাহাতে মো<mark>গলের</mark>া সম্পূৰ্ণৰূপে প্ৰাজিত হইল পোৰ্ভ গিসেরা জয়পূৰ্বক পুনর্বার সন্দীশে আসিরা গঞ্জালিসকে তাহাদিগের ইসন্যাধ্যক্ষ করিলেক যিনি মোগল ইসন্যদিগকে আক্র-মণ করিয়া আঘাত করিলেন এবং প্রতি হিংসা করিতে .ভাহাদিগের সহসু ব্যক্তিকে প্রাণে নষ্ট করিলেন গঞ্জা-লিস হঠাৎ এক শক্তিমান্ রাজা **হইলেন তাঁহার** অধীনে এক সহসু ইউরোপীয় সৈন্য গু দুই সহসু এত-দেশ বুয় সৈন্য ছিল আর দুইশত অশ্বান্ত **সৈন্য** ও অশীতি জাহাজ ছিল। পদ্যানদীর সন্মুখে যে সকল উপদ্বীপ ছিন তাহা তিনি সকলি অধিকার করিলেন তাঁহার নিকটবন্তি প্রধানলোকেরা তাঁহার সহিত বন্ধুত্ব প্রার্থনা করিতে লাগিলেন ১৬১০ শালে আরা-কানের রাজা তাঁহার সহিত নিল•করিয়া উভয়ে জর ও ভূমি উভয ঘারা বান্ধালা দেশ আক্রণ্করিতে ঐ-ক্ষত্য করিলেন তাঁহাদিগের মিলিভ সৈন্যেরা ভুল্যা.

ও লক্ষ্মীপুর আক্রমণ করিয়া অধিকার করিল। কিন্তু অতিবলবৎ এক প্রস্তুত মোগলদিগের সৈন্য যুদ্ধার্থে যাত্রা করিয়া আরাকানের সৈন্যদিগকে সম্পূর্ণকপে পরাজিত করিল। পোর্ত্তগিসদিগের কামানযুক্ত নৌকা দারা সমুদ্রতীরে রক্ষা করিতে অপছেলা হও-য়াতে মোগলেরা চউগুামপর্য্যন্ত তাহাদিগের পশ্চাৎ-বর্ত্তী হইয়া ছিল। এই সকল উপদ্রোহের নিমিত্তে বোজালার শুবাদার রাজ্থানী ঢাকায় লুইয়া যান যে তিনি ঐ আক্রমণকারিদিগকে তথা হইতে তাড়াইতে পারেন। আরাকান্দিগের পরাজয়দারা ও শুবাদা-রের সতর্কতাদারা পূর্বদেশে বিরোধ রহিত **হ**ইল কিন্তু পশ্চিম দেশে তৎক্ষণাৎ নূতন বিরোধ উপস্থিত হইল। চিরবিরোধী উড়িস্যাস্থিত পাঠানের। তাহাদি-গের পূর্ব্ব প্রভূরপুত্র ওসমানের অধীনে পুনর্কার বাঙ্গাল। দেশ আক্রমণ করিতে স্থির করিলেক ঐ শুবাদার প্রথমে তাহাদিগকে কারণ দেখাইতে এক দূত প্রেরণ করিলেন। ঐ দূত গিয়া কছিলেক যে পাঠানেরা প্রায় চারিশত বৎসর পর্য্যন্ত বাঙ্গালা শাসন করিয়াছেন কিন্তু পরমেশ্বর একণে ঐ দেশ মোগলদিগকে দিয়া-ছেন ও যদি তোমর। পুনর্বার যুদ্ধকরছ তবে আপনার দিগের সর্বনাশ আপনারাই করিবে। অহ**কারী** প্রস্থান আপন, অধীনে বিপশতি সহসু পাঠান দেখিয়া

যুদ্ধ করিতে স্থির করিলেন মোগলের। সুবর্ণরেখার তীর পর্যান্ত অগুসর হইল তথায় অতিসাহসপূর্ত্ত এক যুদ্ধ হওয়াতে পাঠানের। সম্পূর্ণকপে ছিন্নভিন্ন হইল। এই যুদ্ধ ১৯১১ শালে হয় এবং বাঙ্কালা উদ্ধার করিতে তাহাদিগের এই উদ্যম শেষ হইল পরে পাঠানেরা নির্বিরোধী হইয়া ঐ দেশের প্রধান২ গ্রামে বাস করিলেন তাঁহাদিগের এক্ষণে অসংখ্যক সন্তানেরা পাঠান নামে খ্যাত আছেন।

শুবাদারদারা পোর্ভুগিস ও আরাকানদেশীয়েরা পরা-জিত হংলে পরেগঞ্জালিস আরাকানজাহাজসকলের কর্ত্তাদিগকে আপন জাহাজে আহ্বান করিয়া বিনাপ-ক্লাথে প্রাণদণ্ড করিলেন তদনন্তর তিনি তাহাদিগ্নের সমুদায় জাহাজ লইয়া কিনারা দিয়া লুঠ করিতেই চলিলেন পরে আরাকানের শহর অধিকার করিতে চেষ্টা ক্রিলেন কিন্তু তাহাতে পরাজিভ ইইলেন। সারা কানের রাজাএই বিশাসঘাতকতাতে ক্রোধাবিষ্টহ্ইয়া তাঁহার নিকটে যে গঞ্চালিসের ভাগিনেয় প্রতিভূ ছিল তাহাকে পোর্ভগিসদিগের চক্ষুর্গোচর হয় এমত এক উচ্চ পর্কতোপরি ফাঁসি দিলেন এই সময়ে গঞ্জালিস গোঁয়া-বাসি পোর্ত্তগিসদিগের যে শাসনকর্ত্ত। ছিলেন তাঁহ্-কৈ পত্র লিখিলেন যে একণে অনায়াসে আরাকান জর্ম করা যাইতে পারে তাহাতে তিনি তৎক্ষণাৎকতিপয়

নৌকা প্রস্তুত করিয়া আরাকানের নিকটে পাঠাইলেন তাহার আজ্ঞাদায়ক গঞ্জালিসের অপেক্ষা না করিয়। নদী মধ্য দিয়া যেখানে আরাকানীয়েরা সূরক্ষিত ছিল সেই স্থানে, উপস্থিত হ্ইলেন গঞালিস তাঁহার সহিত পরে মিলিয়া উভয়ে একত্র হুইয়া আরাকান নগর আক্রমণ করিলেন কিন্তু তাহাতে বিলক্ষণ আঘাত পাইলেন পোর্ত্তিসদিগের নাবিক সৈন্যাখ্যক্ষ ও দুই লোক মারাপড়িল এবং অবশিষ্ট তাঁহার *গোকেরা প*র্লায়ন করিল এই পরাঙ্গলেতে গঞ্জালিসের সর্কাশ হইল ভাঁহার পুতি সকলের বিশান একে-বারে ভথহইল তিনি সদ্যাপে আসিলেন কিন্তু তাঁহার অনুবর্ত্তিরা তাঁহাকে পরিত্যাগ করিলেক। আরা-কানের রাজা তাঁহার অনুসন্ধানে এক পুস্তুত সৈন্য ও ক্তিপয় তোপ লইয়া সন্মীপে উপস্থিত হইলেন এবং তদেশ ও তাহার নিকটস্থ তীর সকল অধিকার করিয়া ইতস্ততঃ নর্কতি ক্রিলেন পরে শহর ও গ্রান সকলে অধিপুদান করিয়া তত্ত্তিত্ত লোকদিগকে দান করিয়া আনিলেন ইহা উত্তম কারণ বশত বোধ *হই-*তেছে যে এই ও ইহার উত্তরোত্তর আরাকানীয়দিগের ष्रेशापुर्राट्ट मुन्दबरत इय थे सात शूर्वकात व्यानक ধনী ওপরিশুর্মা লোকের রুসতি ছিল। যে সকল মূত্রা ়**থননে পা**ওয়া যায় ও অনেককালের বৃহৎ অউালিকা**র**

স্থায়িভাগ এবং যে সকল উত্তয়েত্ম সরোবর ঐ বন মধ্যে দৃষ্ট হয় তাহাতে বিলক্ষণৰূপে জানা যাইতেছে যে তথায় পূর্বকালে বসতি ছিল কিন্তু যথন মনুষ্য রহিত হইল তথনি বনময় হওয়াতে বন্য জন্তু সকলের বসতিস্থান হইল।

১৯১৮ শালে মহারাণী নুরজেহানের ভগিনীপতি ইবাৃহিম থাঁ বাঙ্গালার শুবাদার হইলেন এবং তাঁহার অধিকার কালেই ইংরাজেরা এদেশে বাণিজ্য আরম্ভ করিলেন।

১৬০০ শালে ইলিজাবেথ নামে ই॰ লণ্ডের রাণী
পূর্বদেশে বাণিজ্য করিতে লাগুনের কতিপয়
রণিক্দিগকে এক অনুমতি পত্র দেন ইউ ইণ্ডিয়া
কোম্পানির মূল এই যে কোম্পানিতে ভারতবর্ষর
এই মহারাজ্য একণে শাসন করিতেছেন। পূথ্মত
তাঁহারা সুরতে এক কারখানা স্থাপনা করিলেন তথা
হইতে বাণিজ্যার্থে আগুায় গমন করিলেন তথকালে ঐ
স্থানে মহারাজের বসতি ছিল। পরে বেহারদেশে বহু
মূল্য বাণিজ্য ত্রব্য অনেকং আছে ইহা শুনিয়া ১৬২০
শালে তাঁহারাদুই জন পুতিনিধি পাটনায় পাঠাইলেন
যে সকল দুবা ঐ পুতিনিধিরা ক্রয় করিতেন তাহা
তরণিদারা এই নদী দিয়া আগুায় পাঠাইতেন পরে
তথাহইতে ভূমিপথে সুরতে প্রেরিত হইত এবং সে

স্থানে জাহাজেরদার। ইপলপ্তে পুস্থাপিত হইত দূর দেশ বহনজন্য ব্যয় এমত অধিকবোধ হইল যে তাঁহার। এনপা বাণিজ্যের মানস শীঘুপরিত্যাগ করিলেন।

ইবুাহিমের অধিকারের পুথম পঞ্চ বৎসর বাঙ্গা-লায় নির্বিরোধ ও সৌভাগ্য হইল আনামদেশীয়েরা ও আরাকানদেশীয়েরা দূরীভূত হইয়া ছিল এবং উড়িস্যায় পাঠানেরা সম্পূর্ণৰূপে পরাজিত ইইয়া ছিল বাণিজ্য পুনবার উজ্জ্বহইতে, লাগিল ঢাকার 'বস্ত্ৰ এব° মালদার রেসম সম্পূর্ণৰূপে উত্তমহ**ইতে** লা-গিল ইতিমধ্যে এক দৈবঘটনায় এই দুর্ভাগ্যদেশ পুন-র্বার দুংখে মথ হইল জেহাঙ্কিরমহারাজের তৃতীয় পুত্র সংজাহান দেকানদেশে এক দ্যোহনিবারণার্থে প্রেরিত **ক্**ইয়া সুসিদ্ধ হইলেন জেহাঙ্গির তৎকালে তাঁহাকে অতিশয় সুেহ কুরিতেন তাঁরার পত্নী ঐ সর্জবিদিতা নুরজেহান ইচ্ছা করিতেন যে মহারাজের চতূর্থ পুত্র মহারাজের পরে রাজা হ্য়েন যে রাজকুমার তাঁহার পূথম স্বামী সেরনামক পাঠানছারা জাতা কন্যাকে বি-বাহ করিয়া ছিলেন। মহারাণী সাজাহানেরসৌভাগ্য নষ্ট করিতে চেষ্টা করিলেন ঐ রাজক মার বুঝিলেন যে তাঁ-হার ভ্রাতা<mark>রা জীকদশা</mark>য় থাকিতে তিনি আত্মচেষ্টা 'ব্যতিরেকে কদাচ রাজা প্রাপ্ত হইবেন না অতএব অতিশয় চেষ্টা করিতে স্থির করিলেন ইতিমধ্যে পার-

সীকেরা হঠাৎকার রাজ্য আক্রমণ করাতে তাঁহাদিগের সহিত যুদ্ধার্থে তাঁহাকে দেকানহইতে যাত্রাকরিতে
আক্রাহইল সে আক্রা না মানিয়া তিনি স্পষ্টকপে
বিদ্রোহা হইয়া দিল্লীর প্রতি যাত্রা করিলেন এবং
অহঙ্কার পূর্কক পিতার নিকটেযেস্কল দাওয়াকরিলেন
তাহাতে জেহাদির তাঁহার সহিত যুদ্ধার্থে যাত্রা
করিলেন এক যুদ্ধ হওয়াতে সাজেহান পরাজিত
হইয়া পুনর্কার দেকানে পলায়ন করিলেন। তাঁহার
জেগ্রুতা নর্মদানদী পর্যন্ত তাঁহার পশ্চাৎ যাওয়াতে
তিনি হঠাৎ কিরিয়া বাঙ্গালায় যাত্রাকরিয়া উভি্স্যার
লখ্যদিয়া বর্দ্ধনানে উপস্থিত হইলেন।

শাজেহান বর্দ্ধানে আসিবামাত্রে হুগলিছিত পোর্ত্তিসিদিগের শাসনকর্ত্তা মাইকেল রিদ্রিপেস তাঁহাকে আফানকরিলেন এবং ঐ রাজ্কুমার যুদ্ধার্থে তাঁহার নিকটে গোলনাজের সাহায্য প্রার্থনা করাতে তিনি অতিশয় মনোযোগপূর্বক তাঁহার সহিত মিষ্টা-লাপ করিলেন কিন্তু মাজেহান তাঁহার পৃতিজ্ঞারকা করিতে পারিবেন না এমতং মনে বুঝিয়া ঐ শাসন-কর্ত্তা তাঁহাকে সাহায্য দিতে অম্বীকার করিলেন রাজকুমার এবিষয় মনে রাখিলেন এবং যখন দিল্লীর সিংহাসনে আরাত হইলেন তখন এই নগরকে তাঁহার পৃতিহিৎসা ভোগ করাইলেন! সাজে-

হান একেণে বাস্থালায় উত্তীৰ্ণহইয়া রাজমহলে উপ-স্থিত হইলেন তথাকার শুবাদার ইব্যুহিম তাঁহার পশ্চাঁৎ যায়ী হইয়া এক যুদ্ধকরিলেন তাহাতে তিনি পরাজিত হইয়া মারাপড়িলেন ঐ বিজয়ী পরে ঢাকায় গিয়া তথা চার কোষ হইতে চল্লিশলক মূদা লইয়া তদেশীয় কম্মের নিয়মকরিয়া দিল্লীর প্রতি যাত্রা করিলেন পথিনধেয় ক্রমে২ মুঙ্গের পাটনা এবণ রোতস অধিকার করিলেন এবং নিরাপদে রাখিতে ্রোতসে তাঁহার পরিবার প্রেরণ করিলেন পরে বারাণসী গমন করিয়া শুনিলেন যে মহারাজের সৈন্য ভাঁহার সহিত যুদ্ধার্থে আসিতেছে একারণ তণ্সনদীর তীরে भिक्रदेयना ऋाशन कतिलान ज्थाश अक कांगिकारि 'যুদ্ধ হওয়াতে সাজেহান সম্পূৰ্ণৰূপে পরাজিত হইলেন এব্ ে যে পথদারা তিনি বাঙ্গালায় আসিয়াছিলেন সেই পথিদারাযেপর্য্যন্ত তিনি দেকানে গমন না করিয়াছিলেন দেইপর্যান্ত তাঁহার পশ্চাৎ২ মহারাজের সৈন্য গন্ন করিয়াছিল তথাহইতে তিনি পিতাকে এক খেদপ্রকা-শক পত্র লিখিলেন তাহাতে তাঁহার অপরাধ নার্জ্জন হইল তিনি যে দুইবৎসর পর্য্যস্ত নিজঅর্ধানে বাঙ্গালা েদেশ রাখিয়াছি**ধেন তাহার কোন চি**ত্র রহিল না 1 ্সাজেহানের উপদ্রোহ নিবারণের পরে খাঁনেজাদ খাঁ শুবাদার নিযুক্ত হইলেন তাঁহার অল্প শাদন কালের

মধ্যে অন্যকোন বিষয় লিখনের যোগ্য নাই কেবল তিনি বাইশলক মৃদা রাজস্ব দিল্লীতে প্রেরণ করেন অনেক বৎসরের পরে এইটাকা প্রেরণ হয় কারণ আরাকানদেশীয় দিগের ও পোর্তু গিসদিগের, উপদ্রোহ দারা ও রাজকু সারের বিদ্রোহ দারা সমুদায় রাজস্ব ব্যয় হইয়াছিল বাজালাদেশ এমত নির্লাভ হইল যে ১৬২৭ শালে কেদাই থাঁ এই নিয়মে শুবাদার হইয়া বাজালায় প্রেরিত হইলেন যে তিনি প্রতিবৃৎসরে পঞ্চলক্ষ নগত টাকা মহারাজকে ও পঞ্চলক্ষ মহারাণীকে প্রেরণ করিবেল।

চতূর্থ অধ্যায়।

াত্তহান নহারাজ হইলেন এবং তিনি তৎক্ষণাই কিন্দ্র নহারাজ হইলেন এবং তিনি তৎক্ষণাই কিন্দ্রিল বাহ্বালার শুবাদার করিয়া পাঠাইলেন তাঁহার ঐ কর্মে নিযুক্ত হওনের পরে দুই এক বংসরের মধ্যে মহারাজকে লিখিলেন যে কতিপার ইউরোপীয় পৌডলিকেরা অর্থাৎ পোর্ত্তানিকেরা যাহাদিগকে বানিজ্যার্থে হুগলিতে থাকিতে অনুজ্ঞা হইয়াছে আপনাদিগকে সুরক্ষিত করিয়া অতি অহকারী হইয়াছে তিনি আরো লিখিলেন যে যেসকল নিকা তাহাদিগের কার্খানায় যায় তাহা হইতে তাহারা মাসুলগুহণকরে ও নদীর সক্ষুণ্ধে সকলনোকা

হইতে লুটকরে এবং সপ্তগাম হইতে বাণিজা আকর্ষণ করিয়া আপনারদিগের হস্তগত করিয়াছে ও তাঁহাকেও কর্তব্যক্রে ব্যাঘাতকরে । মহারাজ স্বরণ করিলেন যে মাইকেল র্দ্রিগেস বর্জনানেতে তাঁহাকে যুদ্ধোপ-যোগিদ্রব্য প্রদানকরেন নাই এবং পোর্ত্তগিস দিগকে তাঁহার রাজ্যহইতে বহিচ্ছ করিতে শুবাদারের প্রতি আছাকরিলেন।

কসিম থাঁ ১৬৩১ শালে পের্রগিস আক্রমণ করিতে এমত গুপ্তভাবে উদের্গা আরম্ভ করিলেন যে আহারা উহাঁর কলুনা বোধকরিতে পারেনাই । তিনি এইদেশের ভিন্ন২ স্থানে ক্তিনপ্রস্তুত টেসন্য সংগৃহকরিলেন সেরপুরে কিম্ব। যথা-र्थकर्ण जीतामणूरत नहीत छेलरत नोकाबाता वकनीरका করিলেন ১৬৩২ শালে মহারাজের সৈনোরা ভ্গলি নগরের চন্তর্দিগে বেষ্টনকরিল তিনমাস ঐ রপবেষ্টনের পরে পোর্ভগিদেরা লক্ষটাকা করদিতে স্বীকারকরিল কিন্তু তাহা এপকে ভুচ্ছকরিল গোওয়াহইতে সাহয় পুণিগুর আশায় পোর্ভ গিলেরা দঢ়তাপূর্ত্তক রক্ষাকরিল এবণ বন্দুকেরদার। মোগল দিগকে অতিশয় বিরক্ত ্করিতে লাগিল অধশেষে ঐ স্থানে উপদ্রোহ করিতে নোগলেরা সক্ষমহইয়া উহারনীচে এক শোড়ঙ্ককাটিয়া वाक्रम्बाजा পোড़ाইতে द्वितकतितन यथन थे भर्ड

প্রস্তুত্ত তথন উহাতে অগ্নিপ্রদান করিয়া ঐ দুর্গ ও তৎস্থিত লোক দিগকে পোড়াইয়া মারিলেন এই ৰূপে এক মহৎ অপকার করিয়া মোগলেরা উহার মধ্যে ভাবেশকরিয়া নির্দায়ৰূপে তাহাদিগকে নষ্ট, করিলেন। জাহাজদারা অনেকে পলারন করিল এব ১কথিত আছেষে একবৃহৎ জাহাজছিল তাহাতে দুইসহসু মনুষ্উঠিব পরে উহার প্রতি মুসল্মানেরা আক্রমণ করাতে তাহার কর্ণার অধীন না হইরা নিজ অজ্ঞাগারে অখি প্রদান করিয়া পোড়াইয়াকেলিলেন ৷ অন্যান্য অনেক জাহাজে তাহাদিগের নিজলোকেরা ও অনেকজাহাজে শত্রুরাঅশ্বিদিল এব°এসকল জাহাঁজ নদীতে ভাসিতে২ .নৌকার সঁকোকে পোড়াইল। ছোটোয় বড়োয় তিন শত হইতে অধিক হইবে যেসকল নৌকা ঐ নগব্ৰের প্রান্তভাগে নোঙ্গর করিয়াছিল তাহারমধ্যে তি<mark>ন থানি</mark> মাত্রকাপাইল। ঐ জয়িরী ঐ স্থান লুটকরিয়া তাঁহাদি-গের গিরিজা ও দেবমূত্তি প্ব॰ সকরিলেন। সহসু পোত্ত-शिरमङ्गा थे *विष्ठे*त्न महित्नन थव^र खीलूङ्य उ तानक বালিকা সমুদায়ে চারি সহসু চারি শত বন্ধ হইলেন পুরোহিতেরা রাজসভায় প্রেরিত হইলেন এবং পরম ্সুন্দরীর। সাজেহানের দিল্লীর অন্তঃপুরে পুেরিতহুইব ছ্গলিনগর এইপুকারে লোগলদিগের হ্সতত হইরী। ৰাঙ্গালার মধে। রাজকীয় বাণিজ্ঞ ভান হইল এব

সপ্তগুনা হইতে সরকারি দপ্তরখানাও কাগজপত্র আনীত হইল এবং ঐ স্থান পঞ্চদশশত বৎসর পর্যান্ত সৌভাগ্য ভোগকরিয়া অবশেষে পল্লিগ্রামের দুরবস্থায় মগ্রহইল। একজন ফৌজদার অথবা সৈন্যাধ্যক্ষ হুগলিতে নিযুক্ত হুইলেন এবং তাঁহার দোষবিষয় বিচার করিতে ভার থাকাতে তদবিধি বিচারস্থানে যাহাতে দোষের সম্বন্ধ আছে তাহাকে ফৌজদারী বলাযায়। ঐ ১৯৩২ শালে কসিম্থা শুবাদার মর্রিলেন।

হুগলি ধৃ^৬,সহওনের দুই বৎসর পরে ই°রাজেরা সমৃদ্রদারা বাঙ্গালায় বাণিজ্য করিতে মহারাজ হইতে অনুজ্ঞাপত্র পাইলেন। ইহা কেবল বোটন সাহেবের মহাত্মাবারা সম্পন্ন হয়। ১৯০৪ সালে মহারাজ সাজেহান দেকানদেশে তাবুতে ছিলেন তৎকালে তাঁহার এক কন্যা বস্ত্রে অধিলাগাতে অত্যস্ত ৰূপে দক্ষ হইয়াছিলেন একারণে সুরতে ইণরাজদিণের কারখানায় তাঁহাদিগের চিকিৎসকের সাহায্য প্রার্থ-নায় সম্বাদ প্রেরিত হইল কোম্পানির এক জাহাজের চিকিৎসক বোটন সাহেব তথায় প্রেরিত হইয়া সম্পূর্ণ ৰূপে রাজকন্যাকে সুস্ত্করিয়া আনন্দিত হইলেন। পরে ঐ কৃতজ্ঞ মহারাজ তাঁহাকে কহিলেন যে তিনি এে পুরস্কার পূর্থনা করিবেন তাহাই পুাপ্ত হইবেন তাহাতে ঐ মহাশয় আপনার নিনিত্তে কিঞ্চিমাত্র

'পূার্থনানাকরিয়া এইমাত্র যাতঞা করিলেন যে হুণরাজ জাতিদিগকে মাসুল ব্যাতিরেকে বাঙ্গালায় বাণিজ্য করিতে ও কারখানা স্থাপনা করিতে অনুক্রা করুন মহারাজ তাহা তৎক্ষণাৎ স্বীকার করিলেন! কিন্তু তিনি পোর্ভগিসদিগের বিষয়ে দেখিয়াছেন যে উরো-ইপীয়লোকদিগকে এদেশের মধ্যে বসতি করিতে দিলে কিন্নপা বিপদ হইতে পারে একারণ বালেশ্রের নিকটে পিপ্পলী গ্রামে তাঁহাদিগকে কারখানা ক্রিতে স্থির ক্রিয়। দিলেন ঐ স্থলে ই রাজেরা ১৬৩৪ শালে পুথন জাহাজ নোঙ্গর করিলেন যাহারা একণে ভারতব্যীয় এই মহারাজ্য শাসন ়করিতেছেন । বোটনসাহেব অনুজ্ঞাপত্তের সহিত এই দেশের মধ্যদিয়া আসিবার কালে অনায়াসে দ্রব্য-ক্রয়ের নিয়ম করিয়া আসিলেন ই°রাজেরা পিপ্পলীতে কার্থানা করিলে চারি 'বৎসর পরে ওলনাঞ্জেরাও তথায় কারখানা স্থাপন।করিতে অনুজ্ঞা পাইলেন ।

১৬৩৮ শালে ইজ্লাম খাঁ মুপমেদীনামক একজন
প্রাচীন ও বিজ্ঞ মনুষ্য বাঙ্গালায় শুবাদার
হইলেন। তাঁহার অধিকারের প্রথম বর্ৎসরে
চট্টগুনিস্থিত আরাকানের রাজ্যর নায়ের মুকুট রায়
পুভুর বিদ্রোহাচারী হইয়া ঐ স্থান মোগলদিগকৈ
পুদান করিলেন ঐ স্থান পূর্জকালে ত্রিপুরার স্থাধীন

রাজ্যের এক **অ°শ** ছিল পরে মুসলমানেরা জয় করিয়া ছিলেন কিন্তু মোগল ও পাঠানদিগের পর-স্পার বিরোধকালে। ইহা আরাকানরাজের হস্তগত ছইয়াছিল এ বৎসরে যিনি তথাকার অধ্যক্ষ নিযুক্ত হইলেন তাঁহার নামানুসারে ঐ স্থানকে ইজলামাবাদ বলাযায়। এ সময়ে আনামদেশের রাজা বৃক্ষপুত্র নদে পঞ্চশত নৌকা প্রস্তুত করিয়া তদারোহণদারা প্রতিগ্রাম ও নগর দুট করিয়া সুোতোবং বেগে বাঙ্গালায় উপস্থিত হইলেন। বাঙ্গালার শুবাদার কানান যুক্ত যুদ্ধার্থ নৌকার সহিত তাঁহার অগ্রে বিগুহার্থে গমন করিলেন। আসামীয়েরা তাঁহার শক্তিতে পরাজিত হইলেন তাঁহাদিগের জাহাজে অ্থিপ্রদান করাতে কিয়ৎ লোক তীরে আসিয়াছিল কিন্তু তাঁহাদিগের চারিসহসুলোকেরাপ্রাণ হারাইলেন। ইজলাস খাঁ তাঁহাদিগের স্কদেশ পর্যান্ত পশ্চাৎগানী হুইয়া পঞ্চদশ দুর্গ অধিকার করিয়া অনেক লুটকরিয়া लहेरान । हेक्नाम भात अधिकात अकवरमदात अधिक ছিলনা কিন্তু এই অল্প কালের মধ্যে ঐ ৰূপে মুসল্-মানেরা কুচবেহার আক্রমণ করিয়াছিলেন। 🥺

সূল্তান্ সাসুজা

্ ১৬৩৯ শালে মহারাজসাজেহানের দিতীয়পুঞ সুল্তান্সুজা চত্তবিশ্রশতি বর্ষবয়সে বাঙ্গালার শাসন

কর্ত্রা হইয়া প্রায় বিপশতি বৎসর পর্য্যন্ত অতি-বিবেচনাপূর্বক এইস্থান শাসন করিলেন। কোন ভবিষ্যৎ বিবেচনাহারা বেহার দেশ স্বতন্ত্র রাজ্যাপশ কৃতহইল। সুজা প্রথমত রাজধালী ঢাকা হুইতে রাজ-महत्व जानित्तन ७ धे छान् नानाश्रकात छेउस অট্টালিকাদারা সুশোভিত করিলেন। ঐ স্থানের রকা-কারণ যেপকল উপায় মাসনিপ্ছ করিয়াছিলেন তাহা ইনি বদ্ধিত করিলেন কিন্তু অনন্তর বৃৎসরে অথি नागिया ঐ नगरदत উত্তবোত্তম অপশ नष्टेश्हेन এবং গন্ধার ্যোভ অন্যদিগে বহিতে লাগিল ঐ স্থোত পূর্বে গৌড়নগরের ভিত্তির নিকট দিয়া যাইত কিন্তু তেৎকালে অতিবেগে রাজমহলের ধার্দিয়। যাইতে আরম্ভহইল এব॰ ঐ নগরের অনেক অটালিকা সুেত নিমথকরির ৷ গৌড়নগর হইতে রাজসভ। পূর্ব্বেই স্থানান্তর হইয়া ছিল সম্পুতি নদীসমন্ত্র নই হওয়াতে তৎস্থান একেবারে বন হ*ইল* অপ্নিও নদীদারা রাজমহল নগরের যে ক্ষতি হইয়াছিল তাহাশুধরিবার কারণ নাসুজা অতিশয় যতুকরাতে ঐ নগর পূর্কাপেক্ষা উত্তন হইল ৷

সূজা রাজমহলে আসিলেপরে বোটনসাহেব তাঁহার সম্বর্জনা করিতে তথায় গমন করিয়াছিলৈন। তৎকালে একজনরানীর অতিশয়পীড়াহইয়াছিল বোটনসাহেবের সুখ্যাতি ভারতবর্ষের সর্মত্র বিস্তঃগ্ হওঁয়াতে সুঁজা ঐ

পাড়ার ব্যাবস্থা করিতে তাঁহার নিকটে প্রার্থনা করি-লেন ৷ এবিষয়েও বোটনসাহেব সুসিদ্ধ হওয়াতে তিনি রাজসতায় অতিশয় প্রিয় হইলেন এব॰ এতদেশের শানসকর্ত্রা মহাশয় বালেশ্বর ত্গলি ও পিপুলী এই তিন স্থানে কারখান। স্থাপন করিতে ইণরাজ দিগকে তাঁহাছারা অনুমতি করিলেন। আটবৎসর পর্যান্ত ঘতিবিশ্বাসপূর্বক সূজা বাঙ্গালাদেশ শাসনকরিলেন পরে ভাঁহার পিতা হি॰সা ও ভয় প্রযুক্ত ভাঁহাকে পুসরাজান করিয়া কাবল দেশের শাসনকর্ত্তা করিলেন। কিন্তু দুই বৎসরের মধ্যে তিনি পুনর্কার বাঙ্গালার শাসনকর্ত্তা হইয়া নয়বৎসর পর্য্যন্ত উত্তমরূপে শাসন ফরিলেন তাঁহার অধিকারকালে এদেশ অতিঅসম্ভব সৌভাগ্যযুক্ত হইয়াছিল। ইহার কারখানা সকল উন্নতি-শীল হইল বাণিজ্য পুনর্জার বিস্তৃত হইল ইউরোপিয়া-নেরা অতি বৃহৎ পরিমাণে স্বর্ণ ও রজত আনয়ন ক্রিলেন যাহারদারা রাজনহলের রাজসভা দিল্লীস্থরাজ-পভার প্রতিরূপ হইল উত্তমরূপে রিচার হইতে লাগিল এব॰ ও শুবাঁদার বিনয় ও ধৈর্য্যদার। সকলপ্রজার প্রিয়পাত্র হইলেন এইরূপ সৌভাগ্য ও নির্বিরোধে ায়বৎসর গতহইল এদেশের এরণ অবস্থা অনেক শতবৎসর পর্যান্ত হয় নাই 1

অতংপরে এই আনজ লক্ষণ একেবারে যদ্ধ ও দূংখে মথ

ভ্ইল ৷ এইদুঃখের সময় বর্ণনার পূর্ব্বে আমাদিগের বল! উচিত হয় প্রায় ১৬৫৭ শালে সাসুজা এতদেশের রাজ-যের নূতন খাতা করিলেন মোগলদিগের রাজ্যকালের মধ্যে প্রথমত ১৫৮২ শালে দেওয়ান তার্ল্মল রাজক-রের নিয়ন করেন তাহাতে এক্কোটী সপ্তলক্ষ টাকা জনাবন্ধী হয় ইহা আমারা পূর্ব্বে বর্ণনা করিয়াছি। তদন-ন্তর ঐ রাজ্যের ক্রমে২ বৃদ্ধি হইয়া সাসুজার নূতন খাতায় এককোটি একত্রিশ লক্ষ টাকা হইল অতএব পঞ্চসপ্ততি বৎসরের মধ্যে প্রায় চত্তর্বি শতি লক্ষ মুদ্রা অধিক হইল। উড়িস্যা কুচবেহার ও ত্রিপূরা নূতন জিত এই তিন স্থান হইতে ও মুদ্রালয় হইতে চত্তর্দ শলক্ষ উং-প্রম হয় এব॰ যেসকল পুরাতন ভূমির কর তারল্মল ভির করিয়াছিলেন তাহার দশ লক্ষ মুদা বৃদ্ধি হইল। এই এক কোটী একত্রিশ লক্ষ মূদ্রা হইতে নাবিক যুদ্ধার্থ ও বিচারার্থ সমুদায় রাজকীয়ব্যয়ে চর্শ্চরা-রি^শংলক মুদ্রা হইলেই যথেষ্ট হইত অতএব বাঙ্গালা হইতে ব্যয়াবশিষ্ট সপ্তাশীতি লক্ষ' মুদ্রা উৎপন্ন হইত । ইহার ত্রিশ বৎসর পূর্বে যথন ফেদেই খাঁ দশ ৃলক্ষ মুদ্রা দিল্লীতে প্রেরণ করিতে স্বীকার করিয়া শুবাদার হইয়াছিলেন তাহা স্মরণ করিলে বোঁধ হইবে যে এদেশের অবস্থা অতিপ্রবৃদ্ধা হইয়াছিল এইৰপা বৃদ্ধি গুবাদারের উত্তমক্পে রাজকীয়কর্মসম্পাদন হইতে

ও বিশেষত ইশ্রাজ ও ওলনাজদিগের বাণিজ্য ছইতে হইয়াছিল।

১৬৫৭ শালে দিল্লীর মহারাজ সাবুজার পিতা সাজেহান আশারহিত পীড়ায় মগ্ন হওয়াতে ভাঁহার চারি পুত্রেরা প্রত্যেকে, ঐ সিপ্ছাসন লইতে সচেষ্টক হইলেন। সুজাবোধ করিলেন যে যদি ভাঁহার জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা দারা মহারাজ্য প্রাপ্ত হয়েন তবে তিনি উহাঁকে বদ্ধ রাথিবেন বা নউ ক্রিবেন এইজন্যে ঐ সি৲হাসন আপনারপ্রাপ্তির কারণঅতিশার চেষ্টাকরিতে স্থিরকরি-লেন।এবিষয়ে তাঁহার বিলক্ষণ উপায় ছিল। তাঁহার অধিক নাহসী দৈন্য ছিল এবং কোষ পরিপূর্ণ ছিল এবং আপ-নিও সকল প্রজাদিগের প্রিয় ছিলেন। তিনি সর্ববিদিক করিলেন যে তাঁহার পিতার পরলোকপ্রাপ্তি হইয়াছে তাহাতে যে সকল বিপরীত লিপি পাইতেন সে সকল তাঁহার ভ্রাতা কৃত্রিম করিয়াছেন এই নপ পুকাশ করিতেন ৷ তিনি সসৈন্য হইয়া বারাণসী যাত্রা করি-লেন। দারা তাঁহার দহিত যুদ্ধার্থে নিজপুত্র সলিমান ও জ্য়সি হনানক রাজপ্ত সৈন্যাধ্যক্ষকে পাঠাইতে নিশ্চয় করিলেন কিন্তু জয়িসিংহের প্রত্থানের পূর্বে মহারাজ তাঁহাকে আভানকরিয়া কহিয়াছিলেন যে তিনি যুদ্ধ নিবারণকনন তিনি স্বয়ণ ভ্রাতাদিগের বিরোধ ভঙ্গ করিবেন। যখন সূজা বারাণসীর নিকটস্থনদী

পার হইবার কারণ এক সম্ভরণনির্গাণ করিতে ছিলেন তৎকালে তাঁহার ভ্রাতার সৈন্যেরা অপর তীরে উপ-স্থিত হইল জয়সি∿হ তৎকণাৎ স্জার নছিত কথোপকথন আরম্ভ করিয়া পিতা ও ভ্রাতার সহিত বিরোধোদ্যমে তাঁহার নিবৃদ্ধিতা দুশাইতে লাগিলেন সূজা তাঁহার হেতুবাদ দারা এমত বুঝিলেন যে নির্বি-রোধে বাহ্নালায় প্রত্যাগমন করিতে প্রতিজ্ঞা করি-লেন কিন্তু যুবঁরাজ সলিমান যুদ্ধার্থে ব্যগু হইয়া জয়-সিংত্রে অগোচরে নদীর যে অংশে অপ্স জল আপনি অনুসন্ধান করিয়াছিলেন সেই স্থানু দিয়া রাত্রিযোগে নিজ সৈন্য পার করিলেন এব^ সুজারপ্রতি আক্রমণ ক্রাতে সৈন্যদিগে**র অস্ত্রশক্**দারা সুজা সত্ক হইয়া তৎক্ষণাৎ নিজ হস্তিতে আরোহণ করিলেন কিন্ত তাঁহার সৈন্যেরা অকষ্মাৎ অসম্ভবভীত হইয়া পলায়ন করিল তিনি তাহাদিগকে সুশৃজ্ল করিতে অনেক চেষ্টা করিলেন কিন্তু নে সকল বৃথা হওয়াতে অবশেষে তাঁহাকে পলায়ন করিতে হইল প্রথমত পাটনায় পরে মুঙ্গেরে আসিলেন সলিমানঐন্থান আক্রমণ করিতে তরা করিলেন কিন্তু মরদ্ও আরঞ্জেব এই দুই পিতৃব্যের স*হি*ত যুদ্ধার্থে তাঁহার পিতা তাঁহাকে আ≅ান করিলৈন আরঞেব দারাকে পরাজয় করিয়াবৃদ্ধ মহারাজ সাজেহানকে কার্ং-গারে রাখিয়া ষয় পদিলীর সিপ্হাসনে আরু হইলেন 1

আরঞ্জেব 🔌 রাজ্য অধিকার করিয়াছেন এই সম্বাদ সাস্কার বজুবিত তুলা হইল কারণ তিনি তাঁহাকে অতিদুজ্জের জানিতেন তথাপি এবিষয়ে আনন্দপ্রকাশ করিতে তাঁহার নিকটে বাজালায় অধ্যক্ষতার ভিরতা পু।র্থনা করিলেন তাহাতে তাঁহার ভ্রাতা উত্তর করিলেন যে তিনি পিতার কেবল কর্মাধ্যক হইয়াছেন স্বতএব সাসুজার নিমিত্তে নুতন নিয়োগ আবশ্যক ভ্য় না সেযাহাহউক সাসূজা ভাুতার ধূর্তাদারা বঞ্চিত হইবার উপাযুক্ত ছিলেন না তিনি উত্তমকপে জানি-তেন যে আরঞ্জেব মহারাজ হইলে কোনমতে তাঁহার মঙ্গল নাই একারণ মহারাজপদপ্রাপ্তির নিমিত্তে পুনর্কার যুদ্ধকরিতে স্থিরকরিয়া ১৬৫৯ শালে একপ্রস্তুত রিপুল দৈন্য সংগুহপূর্জক হিন্দুস্থানে যাত্রা করিলেন। সুজার সৈন্যদিগের মহারাজের সৈন্যের সহিত কজ্ৰাতে সাক্ষাৎহইল যুদ্ধের পূর্ব্রাত্রি আরঞ্জেবের অনেক সৈন্য ভাঁহার ভাুতার পক্ষে আসিল তাহাতে যদি সূজা সৈন্যাধ্যক্ষতা ব্যবহার করিতে পারিতেন তবে তাঁহার জয় হইত পরদিন যৎকালে তাঁহার সৈনোরা যুদ্ধকরিল প্রথমত জয়ী হইল এবং স্জার হস্তী আরঞ্জে-বের অতিনিকটে আনাতে উন্মাদপূর্বক এক যুদ্ধ হইল ভাহাতে মহারাজের হন্তী ক্ষতবিক্ষত হওয়াতে তিনি উহা পরিত্যাগ করেন এমত সময়ে তাঁহারসৈন্যাধ্যক

শীরজুন্লা কহিলেন ওহে আরঞ্জেব তুমি আসনহইতে অবতরণ কর তাহাতে নহারাজ তৎক্ষণাৎ হস্তার গতিরোধ নিমিত্তে পাদবন্ধন করিতে আজ্ঞাকরিলেন এব॰ অবতরণ করিয়া স্বয়• যুদ্ধকরিতে লাগিলেন সুজার সৈন্যেরা অক্ষম হইয়া তাঁহাকে পথপ্রদান ক্রিল ইতিনধ্যে সুজার হন্তী অকর্মণ্য হওয়াতে তিনি অতি দুঃসন্য়ে তাহাহইতে অবরোহণ করিয়া অস্থোপরি আরোছণ করিলেন তাঁহার , সৈনোরা প্রভুর অদর্শনপ্রয়ক্ত ইতস্তত পলায়ন করিল সুতরা ১ তিনি একাকী প্রথমত পাটনায় ত্থাহইতে মুঙ্গেরে প্রস্থান করিলেন আরঞ্জেবনিজ পুঞ্জ মহামদ ও সৈন্যা-ধক্য মীরজুমলাকে সুজার অনুসন্ধানে প্রেরণ করিলেন এবং আছে৷ করিলেন যে তাঁহাকে গুহুণ না করিয়া কোননতে না নিবৃত্ত হয়েন তাঁহারা আসিয়া মুচ্ছের বেগ্রন কুরিলেন তৎকালে পুজার সৈন্যের। পুনর্কার তাঁহার নিকটে আসাতে ঐনগর তাহাদিগের বেষ্টন অধিককাল নহিতে পারে এমত দৃঢ়তর রক্ষাকরিলেন কিন্তু নীরজুন্লা গুনিলেন যে সারগতি পর্কতদারা বাঙ্গালায় পুবেশ করিতে আর এক পথ আছে এক-রণ এক পুস্তুত দৈন্য সেইদিগে প্রের্গ করাতে তাহারা শীঘু পুশন্ত ভূনিতে বিন্ডীর্ণ হইল।

স্জা এই অবস্থা অবগত হইয়া তথাকার রকা পরিত্যাগ

ক্রিয়ারাজমহলে প্লায়ন পূর্ব্বক ছয়দিন আত্মরক্ষা করি-নেন পরে অতি অন্ধকৃত পুবল বায়ুযুত রাত্রি স্যোগে নিজ সৈন্যদিগকে নৌকায় আরোপন করিয়া নদীপারে তদা পুস্থান করিলেন দেই রাত্রি অবধি বৃষ্টি আরম্ভ হওয়াতে মারজুন্লা দেখিলেন যে রাজমহলের নিকটে বর্ষাকাল পর্যান্ত দৈন্যদিগকে তাঁবুতে রাখিতে হইল **এইকালে সুজা निজ रेमना वृक्षि क्रिलन এব॰ अर्थ** দারা অনেক ইউরোপীয় গোলনাজ সংগৃহ করিয়া সুসিদ্ধির আশা করিলেন মহারাজের পুঞ মহম্মদ সুজার কন্যার সৌন্দর্যাদ্বারা যুগ্ধ হইয়া নিজবৈন্য পরি-ভাগে করিয়া ভাঁহার পক্ষে যুক্ত হইলেন মীরজুম্লা দূরহুইতে এই সদ্ধাদ শুনিয়া বোধকরিলেন যে সমূদায় ইবন্য রাজকুনারের সহিত গিয়া থাকিবে তিনিশাসু তাঁবুর নিকটে আসিয়া দেখিলেন যে সনুদায় বিশ্খল হইয়াহে কিয়দ্রণশ শত্রুপক্ষে যাইতে পুস্তুত হইতেছে অপরা°শ বহুদ্রব্য লুটকরিতেছে কিন্তু তাঁহার আগমনে সমুদায় সুশৃগ্বল হুইল তিনি সৈন্যদিগকে কহিলেন যে বালক রাজপুএ নিব্দিতাপুযুক্ত পিতার কোংধর বিষয় হইলেন । তিনি বর্যাবসানে তাঁহার সহিত যুদ্ধার্থে স্থির পুত্রিজ্ঞ হইয়া নৌকা সংগৃহ করিতে 'আছে। করিলেন । মহাম্মদের আগননে সুজা অতি সন্তুষ্ট হইয়া রাজকুনার কুনারীর বিবাহ ঘটা-

পূর্বক সম্পন্ন করিলেন তাহাতে সমুদায় রাজসভা স্থের। আনন্দিত হইলেন অনস্তর নদী কিঞিৎ গুৰু হওয়াতে মীরজ্মলা সুতীতে অপজল সন্ধান করিয়া 🗬 স্থানদিয়া নিজবৈন্য পার করিয়া তন্দার উপস্থিত হইলেন সূজা অবোধপূর্বক যুদ্ধের আপদে মথ হইতে স্থির করিলেন একারণ তিনি সম্পূর্ণৰূপে পরাজিত **ছইলেন ও তাঁহার বিষয়কর্ম দক্**ল একেবারে নম্ভইল পরে তিনি ও ওঁ৷হার জামাতা ঢাকায় পলায়ন করিলেন ষ্মতএব বিনা বাধায় মীরজুম্লা তব্দায় প্রবেশ করিয়া। প্রথমত তথাকার রাজকর্ম স্থির করিলেন অনম্ভর ঢাকায় গমন করিলেন তথায় সূজা পাফদশ শত মন্-ধ্যের অধিক সংগৃহ করিতে পারেন নাই তৎকালে তিনি জগতীয় ঘৃণাসুদ হওয়াতে মক্কাতীৰ্থে গিয়া যাবজ্জীব ভার্চনায় যাপন ক্রিতে স্থির করিলেন চম্বা-রি° শং জন তাঁহার মিজ পরিবার ও অবশিষ্ট সম্পত্তি হস্তির উপরে লইয়া ত্রিপুরা দেশ হইয়া চউগ্রামে উপস্থিত হইলেন তথায় তিনি দেখিলেন .যে নক্কায় গমনোদ্যত কোন নৌকা নাই এব॰ অতি ভয়ানক সময় পুযুক্ত সমূদে, নৌকা থাকিতে পারেনা .অথচ শত্রা ভাঁহার প্রতি আক্রমণ করিতেছে অতএব আরাকান্ধে পলায়ন ব্যক্তিরিক্ত অন্য কোন উপায় ছিল না এই পুয়ুক্ত তথাকার রাজার নিকটে আপনার আগমনের, সম্বাদ

জানাইতে এক দূত প্রেরণ করিলেন তাহাতে ঐ রাজা তাঁহাকে বন্ধবৎ ব্যাবহার করিবেন এই উত্তর পাঠাই-লেন তিনি সপরিবারে সুখপূর্ম্বক আরাকান নগরে রহিলেন এব॰ তথাকার লোকেরা প্রথমত তাঁহার প্রতি দয়ালুৰূপে ব্যবহার করিয়াছিল অল্পদিনপরে রাজাতীহার প্রতি তাচ্ছল্য প্রকাশ করিয়াছিলেন অবশেষে ভাঁহার কন্যাকে বিবাহ করিতে প্রার্থনা করাতে সুক্রা অতিক্রোধ-পূর্ব্দক উত্তর করিলেন তাহার তাৎপর্য্য এই যে তিনি নান্ডি-কের সহিত বিবাহ্দারা তিমর বংশের অপমান করি-বেন না ইহাতে রাজা ঐ হতভাগ্য রাজাকে আক্রমণ ক্রিতে সৈন্য প্রেরণ ক্রিলেন সুজা জীবনের শেষ পর্যান্ত অতিশয় সাহসপূর্বক আত্মরকা করিলেন তাঁহার পারিষদ লোকের অধিকাশশ নষ্ট হইলে পরে তিনি এক গুৰুতর কিপ্ত পাষাণদারা আহত হইলেন এব তৎক্ষণাৎ ভাঁহাকে গুহণ করিয়া নিরন্ত করিয়া বন্ধন করিল অনন্তর এক জুড ডোঙ্গায় আরোপণ করিয়া নদীমধ্যদিয়া বাহিয়া চলিল এবং তথায় ঐ নাবিক ভোহ্নার ছিপি খোলাতে সুজাঁ ও ডোহ্না মথ হইল অন্য নৌকাদারা নাবিক লোকেরা গৃহীত হইল পরে প্যারী-বানুনামা সুজার পর্তার সহিত সাক্ষাৎ করিতে রাজা যাওয়াতে ঐ সাধ্বী কুলমিন্দ। নিবারণার্থে আগনউদরে অন্তাঘাত করিয়া পুাণত্যাগ করিলেন এবং ভাঁহার

দুই কন্যা নিজহন্তবারা প্রণত্যাগ করিলেন কিন্তু কনিষ্ঠ কন্যাকে রাজা বলপুর্মক বিবাহ করিলেন তাহাতে ঐ জ্রো ক্রেম২ ক্ষাণ হইয়া মরিলেন এবং রাজা সুজার দুই পুঞ্কে জলে নিমপ্প করিয়া মারিলেন এইরপে হতভাগ্য সূজা সমূল সশাখ নপ্ত হইলেন যিনি বাঙ্গালায় এমত প্রিয় ছিলেন যে মুসল্মান শাসন কর্তাদিগের মধ্যে কোন ব্যক্তি সেরপ হয়েন নাই যখন তাহার পিতাবৃদ্ধ মহারাজ কারাগারে থাকিয়া এই দুর্ঘটনার সম্বাদ্ধ পাইলেন তখন কহিলেন যে এই দুর্ঘটনার সম্বাদ্ধ প্রক্রেক রক্ষাকরিল না যাহারদারা তাহার পিতামহের দেয়ে উদ্ধার হইত।

শীরজুন্না এইনপে শাসুজাকে নষ্ট করিয়া বাজানার শুবাদার হইলেন যেসকল উপদ্রোহ আমরা বর্ণনাকরিয়াছি তাহার মধ্যে অনেক নিকটস্থ রাজারা বিদ্যোহাটারী
হইয়াছিলেন তাহার মধ্যে কুচবেহারের রাজা স্বাধীন হইয়া
অসাম দেশের কিয়দংশ আক্রমণ করিয়াছিলেন এবং
বুক্ষপুত্র নদ পর্যান্ত এক পুস্তুত সৈন্য পাঠাইয়া ঢাকা
শহর লুট করিরাছিলেন ১৬৬১ শালে শীরজূন্না এই
সকল অপকার শোধন করিতে তাহার দেশে গমন
করিলেন তথাকার রাজা বনমধ্যে পলায়ন করাতে
মীরজুন্লা ঐ রাজধানী অধিকার করিয়া আলম্গীর
নগর এইনামে তাহার পুরাতন নাম পরিবর্ত্ত করিলেন

কিন্তু ঐ পরিবর্ত্ত বহুকাল স্থায়ী হইল না মীরজুম্লা অতি ভক্ত মুসল্মান ছিলেন তিনি আপন যুদ্ধান্ত্ৰদারা অতিপুসিদ্ধ নারায়ণের বিগুহ ছেদ করিলেন এবং ঐ মন্দিরের ছাতের উপরি অনেক মুসন্মান দিগকে আন্তান করিয়া ভজনা করিতে কছিলেন পরে কুচবে-হার শাসন করিতে যেজনকে নিযুক্ত করিলেন তাহার পুতি এইৰপ উপদেশ করিলেন যে তিনি হিন্দুদিগের ্মন্দির ভগ্ন-করিয়া তাহার পরিবর্ভে যস্জীদ নির্মাণ করিবেন ৷ অন্যান্য বিষয়ে ঐ শুবাদার অতি সদ্বিচার করিতেন তাঁহার সৈন্যেরা লুটকরিলে তাহাদিগের দপ্ত করিতেন এইনপে পুজাদিগকে তাঁহার অধীনে সৃস্থ রাখিতে চেষ্টাকরিলেন এবণ রাজার পুত্র বিক্যুনারায়ণকৈ মুপন্মান হইতে পূৰ্ত্তি দিলেন। পৰ্কতীয় দেশব্যতীত সমূদায় কুচবেহার বাজালার একঅ**ংশ করিলেন এবং** তথাকার রাজশ্ব দশলক মুদ্রা নির্দ্ধারিত করিয়া চত্তর্দ শ শত অ্থাক্ত ও দুইসহসু বন্দৃকধারি দৈন্য তথাকার রক্ষার্থে রাশিয়া আসাম*দেশ* জয় করিতে পুস্থান করিলেন।

বৃদ্ধপুত্র নদপর্য্যন্ত পুস্থান করিতে খাদ্যদুব্য ও অন্ত্রাদি নৌকায় আরোপণ করিয়া রঞ্চমূর্ত্তিতে ঐ নদ পারহইয়া এক নৃতন পথ নির্মাণ করিয়া সলৈন্যে স্থলঐপথদিয়া চলিলেন সেপথের চিহ্ন অদ্যাপি আছে। এইরূপে গমন অভিক্লেশকর হুট্ল এবং সমস্তদিনে

অর্দ্ধকোশ বা এককোশের অধিক ছইত নাও আসাম দেশীয়েরা মধ্যে২ সৈন্যদিগকে পথে বিরক্ত করিত এব॰ নৌকাসকল আকর্ষন করিতে বৈনা দিগের অত্যন্ত ক্লেশকর হইত কিন্তু,মীরজন্না তাহাদিগের সহিত সমান পরিশুম করাতে 😙 পুায় সর্বাদা সমস্তদিন পদবুজে গমন করাতে <mark>টেসন,মধ্যে কোন কথার উত্থিতি হয় নাই অবশেষে</mark> মোগল সৈনের। সিম্নাই উপস্থিত হইলেন যেখানে কুদুপর্কতোপরি একদুর্গে বি শতি সহসু মন্য্য ছিল ও যেস্থান যুদ্ধোপয়োগি অনেক নৌকাদারা যুর-ক্ষিত ছিল আসামদেশীয়েরা রাত্তিমধ্যে তথাহইতে প্রলায়ন করিলেন অনম্ভর ঐশুবাদার গরগাঁনামক রাজধানীতে উপস্থিত হওয়াতে তৎস্থান অনা-য়াসে তাঁহার হস্তগত হইল তথাকার রাজা পর্জতো পরি পলায়ন করিলেন এবং অনেক পুধানলোঁকেরা মোগলদিগের সহিত সন্ধিকরিতে শপথ করিলেন অতএব মীরজুম্ল্। সাহসপুর্কক মহারাজকে লিখিলেন যে তিনি চীনদেশপর্যান্ত পথ করিয়াছেন ও আগা-মিবৎসরে পেকিননগরের ভিত্তিতে মুসল্মানদিগের জয়পতাকা স্থাপন করিবেন মহারাজ জেঙ্গ্রিস্থার ন্তল্য তাঁহার জয়বিবেচন। করিয়া সভোষপূর্বক ভাঁহার বিজয়ি সৈন্যাধ্যক্ষকে সূত্র, খ্যাতি দিলেন

কিন্তু অতঃপর এক দৈবদুর্ঘটনা উপস্থিত হইল ১৬৬২ শালে অতিশয় বর্ষা আরম্ভ হওয়াতে বুক্ষপুত্রের সকল চর জলপ্লাবিত হইল একারণ অশ্ব দিগের আহারের অতিকষ্ট হওয়াতে অশ্বাদ্য সৈন্য **সক্র নির্থক হইল তথাকার রাজা পর্কতের গুপ্ত-স্থান হইতে বহিভুত হইয়া মুসল্মানদিগের আহার** রোখের চেষ্টাকরিতে লাগিলেন এবং নিবির্মধ্যে একমরক উপস্থিত হইয়া অনেকলোক সংহারকরিল। যাহারা অগুসর হইয়াছিল ও যাহারা পশ্চাৎছিল উভয়েই তুলাৰূপে মরিভেলাগিল। এই দূরবস্থায় বর্ধা-**কান যাপন করিয়া বর্ষাবসানে পুনর্কার সহসীহইয়া** শঙ্কিগকে তাড়নকরিনেন পরে রাজা সন্ধিপুার্থনা **ৰ্বর**তে মীরজুম্লা আনন্দপূর্কক তাহা স্বীকার করি-লেন কারণ তিনি স্বয় প্রীড়িত হইয়াছিলৈন ও ওঁা-হার সৈনে/রা অবাধ্য হইয়াছিল। এইসংক্ষতে খাসামদেশীয়েরা বিশশতি সহসুতোলক সুবর্ণ লক্ষ-তোলক ন্রৌপ্য ও ঢম্বারিণশৎ হস্তী দিলেন এবণ ঐরাজা মুসলনান রাজার একপুত্রের সহিত নিজকন্যার বিবাহ দিতেও বার্ষিক করদিতে স্বীকার করিলেন কিন্তু হিন্ইতিহাস বেভারাকহেন যে শীরজুম্লার সৈন্যের। मम्भून्बर्भ भराष्ट्रिक इंडशाल विनि ममूमाय काम-क्रश ज्याजगरमगीब्रं मिशक मिश्रे हिर्लन।

এইসময়ে মীরজুমনাকুচবেহারে যে অধ্যক্ষকে রাখিয়া-ছিলেন তিনি পুকাদিগেরপুতিঅতিশয় কঠিনতাকরাতে সকলপুদ্রারা পুাচীন রাজাকে আখানকরিল যেঁ তিনি তাহাদিগের শাসনকর্তা হউন তাহাদিগের প্রার্থনার তিনি সমত হইয়া বৰ্ত্তমান শাসনকৰ্তা নিৰ্বিরোধে পু-স্থান করেন এইপুার্থনায় এক ন্মুদূত প্রেরণ করিলেন তাহাঁতিনি সুষীকারকরাতে এরাজাও প্রজারা নোগল দিগেরপ্রতি স্বাক্রমণ করাতে সুতরাণ তাঁহাদিগের. প্রায়ন করিতে হইল মীরজুম্লার পুত্যাব্যন অপেকা করিয়া ভাঁহারা গোয়াহাটীতে রহিলেন যখন তিনি গর্নীহেইতে তথায় আসিলেন তথন ভাঁহার সৈনে/রা 🛋 নত পীড়িত ছিল যে দশজনের মধ্যে একজনও কর্ম-যোগ্য ছিল না তথাপি তাহাদিগের মধ্যে অতি বল-ৰান্ বৈন্য ও কভাদিগকে কুচবেছারে পাঠাইলেৰ এব^ অবশিষ্টের নভিত স্বয়^ ঢাকায় আসিলেন পারে তথায় তাঁহার কালপুাগ্তি হইল। তিনি অতিমহৎ ও শক্রিমান্ ছিলেন নিজভাগ্য স্বয় বন্ধিত করিয়াছি-লেন ভাঁহার বিচার সকলৈ যথার্থবলিত ও প্রজাবি-গের প্রিফড়িলেন আর যেসকল ইউরোপীয় লোকদি-গের সহিত তিনি কথন২ বিবাদ করিয়াছিলেন তাঁহা-রাও ভাঁহার নিশিত্তে ক্ষেদ করিয়াছিলেন এবং নহা-রাজ বিনি তাঁহারদারা রাজত্ব প্রাপ্ত হইয়াছিলেন

তাঁহার মৃত্যুশুবণে অত্যন্ত শোকাবিষ্ট হইলেন। পঞ্চম অধ্যায়

মারজুম্লার মরণানন্তর আরঞ্জেব সাইস্থাঁকে বাঙ্গালার শুবাদার করিলেন তিনবৎসরকাল দুই অন্য
শুবাদার ভাঁহারকর্ম করিয়াছিলেন তদ্তির ১৬৬২
শাল অবধি ১৬৮৯ শাল পর্যান্ত তিনি বাঙ্গালা
শাসন করিয়াছিলেন। এই সময় বিলক্ষণবর্ণনার আবশাক কারণ এইকালে মোগল রাজ্যাধিকারীও ভিন্ন
দেশীয় বণিক্দিগের মধ্যে বিশেষত যেস্থানে এক্ষণে
কলিকাতানগর আছে ঐস্থানে সাইস্থাঁর অপিকারের শেষে পুথমত বানকরিলেন যেসকল ইণ্রাজ্ঞ
লোক ভাঁহাদিগের মধ্যে অনেক বিবাদ হয়। সাইস্থ
শী পুসিদ্ধ নুরজেহানের ভগিনীপুত্র ছিলেন।

১৯৬৩ শালে তাঁহার পদপুাপ্তিকালে ইন্ট ইপ্তিয়া কোম্পানি মাদুঁজের শক্তান্দারে বাঙ্গালায় প্রথমে কারখানা স্থাপন করিলেন এবং বালেশ্বর ও কাশীয়াজারে ইহার স্বৰণ কারখানা স্থাপনকরিতে উপদেশ করিলেন। ১৯৬৩ শালের প্রথমে কাশীয়াজারে কারখানা হয় যেমহাশয় সেধানকার কর্মাধ্যক্ষ ছিলেন তিনি এদে-শীয় ভাষা শিক্ষাকরিয়াছিলেন তাঁহার নাম মার্-সাল ১৬৭৪ শালে তিনি সংফৃত হইতে শ্রভাগবতের কিয়দংশ ইংরাজী করিয়াছিলেন ইংরাজলোকের মপ্যে প্রথমে তিনি এইপাঠ্য ভাষা শিক্ষাকরিয়াছি-লেন।

সাইস্তর্থা প্রথমত আরাকানদেশে মনোযোগ করি-লেন তথাকার রাজাদেখিলেন যে সুল্তান্সুজার প্রার-নাশে ওমোগলের। বিরক্ত হ্**ইলেননা এব**ং আসাম্ দেশে নীরজ্মলার দুর্ভাগ্য শুনিয়া অতিশয় সাহগী হইলেন তিনি নিরাশুর ইউরোপীয় লোক যাবৎ প্রাপ্ত হইলেন নিজ কুর্মার্থে সংগুহ করিলেন এবং তাহা-দিগের সহার্য্যবার। পদ্যানদীর সম্মুখস্থ উপদ্বীপ আক্র মণ করিয়া ঢাকানগরের দার পর্যান্ত লুটকরিলেন ঐ **নগরস্থিত লোকেরা মগেরনামে ভীত হইত বর্ণিয়র** .দানক তৎকালে ভারতবর্ষ নিবাসী একজন ইউরো-পীয় ঐকপে আরাকান ও চউগুাম বর্ণনা করিয়াছেন ৷ গোয়া কচিন মালাকা প্রভৃতি স্থান হইতে যেসকল নিরাপুর পোর্তুগিসেরা আরাকানে আপুয় লইয়াছিল তাহারা ইউরোপীয় দিগের মধ্যে অতিফুদুলোক ছিল আরাকানের রাজা মোগলহইতে আত্মরকার্থে তাহা-দিগকে নিযুক্ত করিলেশ তিনি তাহাদিগকে চুউ-গুমে বাসস্থান দিলেন এব॰ ইতন্ততো ভুনন ়করিয়া বাহ্বালা দেশ ়লুট করিতে সাহস দিলেন এইৰপে তাহারা সন্দু নাবিকতক্ষর হইল বিশ পচিশ ক্রেশ পর্যন্ত নদীদারা আসিয়া সকলগুন

নুট করিত ও দথা করিত এবং পুজাদিগকে দাস করিয়া লইয়া যাইত কিঞ্চিং মূল্য পাইলে বৃদ্ধব্যক্তি দিগকে পরিত্যাগ করিত যুব। দিগকে লইয়া নৌকার দাঁড়ীকরিত এবং অপেনারা যেরপ খুল্পিয়ান্ছিল সেইনপ খুল্পিয়ান্ তাহাদিগকে করিত তাহারা এবিষয়ে অহঙ্কার করিয়াছিল যেখুল্পিয়ান করিতে যে মহাশয়ের। নিতুক ছিলেন ভাঁহারা দশবং-সরে যাবং খুলিগ্রান করিয়াছেন তাহারা একবংসরে তাবং করিয়াছে।

নাইস্তথা অতিবৃদ্ধিনান্ ও পরাক্রমশালী ছিলেন তিনি অনিম্থে এক পুস্তুত বছর ও ৪০ সহসু দৈন্য সংগুই করিয়া আরাকান দেশীয়দিগের সহিত যুদ্ধার্থে যাত্রা করিলেন তাঁহার নাবিক দৈনোরা উপদ্বিপ হইতে তাহাদিগকে দূরীকৃত করিল এবং লন্দাপ অতি সুরক্ষিত ছিল তথাপি অবশেষে তাঁহার হস্তগত হইল পরে যেসকল পোর্ভ-গিনেরা চউগুনি রক্ষাকরিত তাহাদিগকে আরাকা-নের কর্মা ত্যাসকরিয়া মোগলদিগের অর্থান হইতে আহ্বান করিলেন এবং ভয়প্রদর্শন করিলেন যে যদি তাহারা তাহার আক্রা লম্ভ্রনকরে তবে তাহা-দিগকে ভাত্তবর্ষ হইতে নিমূল করিয়া বহিদ্ত করিনেন। এজা তিরা ছগলিতে যেপুকার ক্রেশভোগ করিয়াছিল তাহারা তাহা স্বরণ করিয়া শুর্বাদারের পুস্তাবে সন্মত হইল পরে সবল ব্যক্তিরা তাঁহার সৈন্য মধ্যে নিবিষ্ট হইল এবং অবশিষ্টেরা বাল বনিতা সম-ভিব্যাহারে ঢাকাহইতে ছয়ক্রোশদূরে একস্থানে রহিল ঐস্থান তদবধি এপর্য্যস্ত ফিরিস্থি বাজার খ্যাতআছে ৷

সাইস্তথাঁ ভূমিচর সৈন্যের সহিত ফেনানদীর তীর পর্যান্ত অগুসুর হইলেন যে নদী পূর্ব্বকালে বাঙ্কালার ঐ দিগস্থ সীমা ভূিল আরাকানদির্গের সৈন্য নদীদিয়া আ-. সিন কিন্তু যখন তাহারা মোগলদিগের অশ্বার্চু সৈন্য অধিক দেখিল তথন সহর হইয়া পলায়ন করিল। ঐসম য়ে মোগলদিগের নাবিক সৈনেএরা আরাকানীয়দিগের . তিনণত যুদ্ধার্থনৌকার সহিত যুদ্ধকরিয়াজয়পুাপ্তই-ল এবং তৎক্ষণাথ চউগুান আক্রমণ করিল তৎস্থান যদ্যপিও স্রক্ষিত ছিল তথাপি তাহার রক্ষকেরা যুদ্ধ-নৌকা সকল ছিন্নভিন্ন দেখিয়া ভগ্নোৎসাহ হইয়া'ঐন-গর পরিত্যাগ করিল মোগলেরা তাহাদিগের পশ্চাৎ বর্ণী হইয়া দুই সহসূলোক আয়ত্ত করিয়া নিজদাস করি লেন। ইহ। কথিতআছে থেকুদ্ৰ ও বৃহৎ দাদশ শতহূই-তেও অধিক কামান ঐদুর্গমধ্যে প্রাপ্ত হুইল কিন্তু যেথন ্পাপ্তির আশাভিন তাহা কিঞ্মাত্ত দৃশ্য হইলনা। এই ৰূপে ১৬৬৬ শালে চউগুন্ন নগর ও তৎপুদেশ আরাকা-নীয় দিগের বিহন্ত হুইয়া বাঙ্গালার এক অংশহইল।

जार्रेडची ১৬११ माल शर्याञ्च मूमिकिशूर्कक अपन শাসন করিয়া আগুরি গুবাদারীকর্মে নিযুক্ত হইলেন। ভাঁহার অধিকারের প্রথনত ইউরোপীয় বাণিজ্য বাহ্বালায় উন্নতিশীল ভিল ইউরোপিয় দিগের প্রতি তিনি বন্ধুজব্যবহার নাকরাতে তাঁহার। তাঁহাকে নিন্দ। করিতেন কিন্তু কদাপি তাঁহার দোষ দেখাইতে পারেননাই ৷ মোগলের। **ননেহ প্রাকৃতি কিবলে জাহাজের সহিত** ছগ-লি পর্য্যন্ত দিতেন না তাঁহাদিগের নদী মুখে নোঙ্করকরিয়া থাকিতে হইত এবং তথাহইতে স্লুপদারা দুব্য আনয়ন ও প্রেরণকরিতে হইত ইহা-তে অত্যন্ত অসুসার হওয়াতে তাঁহারা নাইস্তখাঁর নিকটে আবেদন করিলেন যে জাহাজের সহিত একে-বারে কারখানায় যাইতেপারেন তিনি তাহাতে অন্-ছ্তা করিলেন একারণে কোর্ট আবডিরেটরেরা ১৯৬৮-শালে অনেক ভাড়াটে কর্ণধার করিতে আজ্ঞাকরি-লেন একণকার নাবিক বিধাদের আদি এইছিল। ১৬৬৪ শালে ফরাদীরা কলবর্টনামক সক্ষম মন্ত্রির উপদেশক্রমে এক ইষ্টইস্ভিয়া কোম্পানি করিলেন ১৬৭২ শালে কতিণায় ফরাসীর নৌকা ভ্গলিডে আসিয়া উপস্থিত হইল চন্দুনগরে বাসের সময় এই আমার। স্থির করিতে পারি। তিনবৎসর পরেঅর্থাৎ

১৬৭৫ শালে ওলনাজেরা হুগলিতে কারখানা স্থাপন করিতে অনুমতি পাইলেন ইহার পূর্বের তাঁহারা কেবল वारनश्वत ছिलान किथिएकानशत्त इशनिए र्नहोत्र ভাঙ্কন আরম্ভ হওয়াতে তাঁহার৷ হুগলি হুইতে এক কোশ দূর চুচ্ড়াগ্রামে বাসকরিতে আজ্ঞা পাইলেন ১৬৭৬ শালে দিনেমারেরা বাঙ্গালাতে আসিয়া বাণিজ্য করিতে অনুজ্ঞা পাইলেন যদ্যপিও ওাঁহারা ভ্গলিডে বাণিজ্য করিতে, পারিতেন ইহান্টির বটে তথাপি তাঁ-হাদিগের প্রধান কারখানা বালেশ্বরেই ছিল। এইরূপে সাইস্তর্থার অধিকার কালে ইউরোপীয় দিগের বাণিজ্য পূর্বকাল অপেকা অতিবিপুন হইল। স্বাইস্তর্থা যে পর্য্যন্ত বাঙ্গালা শাসন করিয়াছিলেন তাৰৎ কাল ইউরোপীয়দিগের বন্ধ ছিলেন এমত নহে যখন তি-নি স্থানান্তর কৃত হইলেন তখনও তাঁহাদিগের মঞ্লচেষ্টা করিয়া, ছিলেন যখন এক নূতন শুবাদার আসিতেন ই%-রাজ দিগের তখনি নূতন আজ্ঞাপত্র লইতে হইত এবং তাহাতে অধিকক্লেশ-ভোগ করিতে হইতও প্রতিবারে নোগল কম্ম প্রিক্ষদিগকে অধিক অর্থদান করিতে হইত যখন সাইস্তর্থী বাঙ্গালা হইতে যাত্রাকরিলেন তখন ই্^রাজী কারখানার কর্ত্য বাণিজসর্থে চিরস্তন আজ্ঞা প্রার্থনায় ভাঁহার সহিত মহারাজের নিকটে এক

দূত প্রেরণ করিলেন ইহা অধিক ক্রেশে কেবল

সাইস্তথার দারা পুাপ্ত হইল যখন ইহার সম্বাদ আনিল ইপরাজেরা তাহার পুতি অতিশয় আদর পুকাশ. করিতে তিনশতকামান করিলেন।

১৬৭৮ শালে আরঞ্জেব তাঁহার তৃতীয় পুত্র মহাক্ষদ আজিমকে বাঙ্গালার শুবাদার করিলেন এইসময়ে আ-সাম দেশীয়েরা পুনরায় পূর্বদিগে বিরক্ত করিতে লা গিল নূতন শুবাদার তাহাদিগের সহিত্ যুদ্ধার্থে গমন করিতে স্থির করিয়া ই^রাজ ও ওলন্দাজ় দিগকে যদ্দো-পযোগি মনুষ্যদিতে কহিলেন তাহাতে ভাঁহায়াক্ষমা পুর্থেনা করিয়া মনুষ্যের পরিবর্ত্তে অধিক মুদ্রাদিতে স্বীকার করিলেন রাজকুমারও সম্মত হইলেন পরে তি-<mark>লি আসামে উপস্থিত হওয়াতে রাজার সৈনে/রা তাঁহার</mark> শব্দুখ হইতে পলায়ন করাতে তিনি বোধকরিলেন যে তদেশ সম্পূর্ণ রপে পরাজিত হ'ইল এবপ আরাকান দে শীর্দিগের সহিত যুদ্ধার্থে পিতার অনুদ্ধ। প্রার্থনা করি-লেন তৎকালে আরঞ্জেবের নূতন যৃদ্ধকরিবার উচিত স-ময় ছিলন। তিনি হিন্দু দিগের প্রতি কোধানিত হইয়া প্রধান লোকদিগের সহিত তথা রাজপুতান র মারহাউার প্রধান শিবজীর সহিত যুদ্ধে নিএক ছিলেন অতএব পূজকে লিখিলেন যে তিনি অবিলয়ে তাঁহার নিকটে উপৃস্থিত হইবেন তাহাতে মহামদ আজিন ঢাকাহইতে পঞ্বিপশতি দিনে বারাণসীতে উপস্থিত

হইলেন তৎকালে এমত শীঘুগমন অতি আঁশ্চার্য্য বোধ হইত

माहेख थै। ১७१२ भारत शुनर्वात वाक्रानात खरामात হইলেন i আরঞ্জেব হিন্দদিগের নিগুহ্করিতে তাঁহার নিকটে আক্সাপাঠাইলেন যদ্যপ্তিও তাঁহার স্বভাব অতি নমু ছিল তথাপি হিন্দুদিগকে নষ্ট করিতে তিনি ৰাখ্য ইইলেন , আগমন মাত্রে যেসকল লোকেরা হিন্দ ধর্মব্যাখ্যা করিতেন তাঁহারদিগের কর নিয়ম করিলেন তাঁহার ভূত্যবর্গেরা ভ্গলিতে ইউরোপীয় লোক্হইতে সেইৰপ করপ্রার্থনা করিল কিন্তু ওলন্দাজেরা ওই রা-জেরা তাহানিবারণ করিলেন নবাবের ব্যবহারের নিমত্তে কতিপয় পারসীক অশ্ব উপঢৌকন দেওয়ান্ডে তিনি সম্ভুষ্ট হুইলেন ৷ ঐ সময়ে অনেক হিদ্দদিগের মন্দির নষ্ট করিতে লাগিলেন এবং শ্রীযুক্ত মল্লীক্চন্দ্ রায় অতিপ্রধান হিন্দুছিলেন বলপূর্কক অর্থলইবার কারণ তাঁহার পাদে বৈড়াদিলেন এইসকল কর্মদারা আরঞ্জেব ও তাঁহার নামেব অতি ঘৃনিত হইলেন্ । বাঙ্গালায় কোম্পানির বাণিজ্য তৎকালে বড়উত্তম হই-য়াভিল চিরকান বাণিজ্য করিতে মহারাজ হুইতে অনুক্রা প্ত্র পাইয়াছেন একারণ কেট্র আব ডিরেকটরেরা বাঙ্গা-লার মাদ্রাজ দেশীয় অধীনতা মৃক্তকরিতে স্থিরকরি-লেন ১৬৮১ শালে ভাঁহারা এক অপরাধীন কারখানা

নির্মাণ করিলেন ও হাজেস সাহেবকে তাহার প্রধান কর্ত্তাকরিলেন এবং তাহার সহিত বিংশতি পদাতিক ও একজন আফ্রাদায়ক রক্ষার্থে পাঠাইলেন ভারত-বর্ষে ইংরাজ দিগের সেনাগমন এই প্রথমে হইল পরে ক্রমেথ দুইলক পর্যান্ত সংখ্যা হইয়াছিল ইহার পূর্বে জাহাজ সকল প্রথমে মাদ্রাজে আজ্ঞালইয়া বাঙ্গালায় আসিত কিন্তু অতঃপর তন্তাতিরেকে গঙ্গাদিয়া আসিতে লাগিল এবং সর্বাণ্ট্রে এক জাহাজে, ত্রিংশত্কামান থাকিত।

এই সময়ে অন্যান্য গুপ্ত বণিক্ দিগের উপদ্রোহদারা কোম্পানিতে অতি বিরক্ত হইয়াছিলেন ইপলশ্বের রাজা কোম্পানিকে যে আক্রাপত্র দিয়াছিলেন তাহাতে তাহাদিগের লোক ব্যতীত অন্য কোন ব্যাক্তির পূর্ব দেশে বাণিজ্য করিতে ক্ষমতা ছিল্ল
না কিন্তু এখানে বাণিজ্যদারা অধিকলাত হওয়াতে অন্যান্য বলিকেরা ঐ আক্রা অন্যথাকরিতে ক্রমিক চেষ্টা করিয়াছিলেন এবং কোম্পানিকে ক্রচ্ছ করিয়া ভারতবর্ষে বাণিজ্য করিতেন এইসকল উপদ্রোহ নিবারণার্থে অনেক চেষ্টাইয়াছিল কিন্তু সফল কিছুই হইল
না অবশেষে কোর্ট্ণ আব ছিরেকটরেরা দেখিলেন যে তাহাদিগের গঙ্গায় প্রবেশ নিবারণ হইলেই বাঙ্গালায় বাণিজ্য নিবারগ্রহিতপারে একারণ গঙ্গার মুখে দুর্গ

নির্মাণ করিতে নবাবের আক্রাপ্রার্থনা করিতে ভগরি স্থিত কর্তাকে জানাইলেন কিন্তু সাইস্থাঁ বুঝিলেন य हेश हहेटन ममुनाय ननी छाहानिरभद अंशीरन থাকিবে একারণ অস্বীকার করিলেন। ঐসময়ে বেহারে অনেক উপদ্যেহ উপস্থিত হইল তাহাতে পাটনা স্থিত যে কোম্পানির নিযুক্তলোক তাঁহারপুতি এমত সন্দেই হইল যে তিনিই এবিষয় উত্থাপন করিয়াছেন **बहेबारी है** ना कृतिरगत शुक्ति नंगार वत दिखल इल-য়াতে মহারাজ যে বার্ষিক তিন সহসু মৃদ্যু গুলু নির্দ্ধা-রণ করিয়াছিলেন তাহার পরিবর্ত্তে তিনি আক্রা করিলেন যে কোম্পানির সকল দুব্যে শতকরা সাদ্ধ তিন্মূদু ৷ শুল্কদিতে হুইবে য**খন নবাবের এই অহি**-তেচহা বিদিত হইল তখন তাঁহার ভূতোরাইণরাজ দিগের বিরক্ত করিতে আরম্ভ করিল কাশাম্বাজারের ফোজদার কোম্পানির নিযুক্ত জাব চার্ণক সাহেবকে অকারণে সাদ্ধলিক মৃদু৷ পাঠাইতে আজ্ঞাকরিলেন যেমুদু৷ কোম্পানিরা তত্ত্ববায়দিগের নিকটে ধারি-তেন এব ৷ ত্রিচ বাবি ৷ শথ সহসুমূদু৷ অধিকদিতে আজ্ঞা করিলেন তিনি তাহাতে অস্বাকার করিয়া নবাবের নিকটে অভিযোগ করিলেন এব ৵তাঁহার ভূত্যদিগকে উৎকোচ পুদান করিলেন কিন্তু বিকল ইইল। নবাব এই সকল বিষয় মহারাজের নিকটে এমত স্পাষ্টৰপো

জানাইলেন ৷ যে তিনি ই° রাজদিগের উপরি অত্যস্ত জুদ্ধ হইনেন এইৰপে তাঁহাদের বাণিজ্ঞা সর্বতোভাবে বিশৃখল হইল তাঁহাদিগের জাহাজ সকল অর্দ্ধেক হুইতেও অপভার লইয়া পুত্যাগমন করিল এইবিবাদ দারা ওলন্দাজ দিগের,নিজবাণিজ্য বৃদ্ধি করিতে অনেক উপকার হইল এই সময়ে তাঁহারা চুচুড়ায় বসতি সূর-ক্ষিত করিলেন ১৯৮৭ শালে ঐদুর্গ স্মাপ্ত 'হইল তাহাতে চারি বরুজ ছিল এবং এতদেশীয় কোন আক্রমণে ভয় ছিল না ঐ দুর্গের নাম গস্তাবস রহিল ওল-ন্দাজেরা ঐ স্থানে দৃঢ়তর রাজকীয় কর্মের নিয়ম করিলেন কিন্তু তৎকালে ইণ্রাজেরা বাঙ্কালায় থাকিতে পাংরেন কিনা এমত সন্দিধা হইলেন ৷ চুচুড়ার অধীনে গুলনাজ দিগের আর দুই স্থান ছিল এক বরনগর অপর ফল্তা ফল্তাতে প্রায় তাঁহাদিগের জাহাজ নেছির করিয়া থাকিত।

অতঃপর ই কাজেরা দেখিলেন যে তাঁহাদিগের
দুই গতি আছে এক বাণিজ্য ত্যাগ করুন অথবা
শক্তিপ্রকাশ করুন ইহার শেষ বিষয়ে স্থিরপ্রতিজ্ঞ
হইয়া ই কাণ্ডের রাজা দিতীয় জেন্সের নিকটে
প্রার্থনা করাতে তিনি বাঙ্গালার নবাবও তাঁহার
প্রভূ মহারাজ আরঞ্জেবের সহিত যুদ্ধ করিতে অনুমতি দিলেন নিকন্সন্ নাম্ক নাবিক নৈন্যাধ্য-

ক্ষের অধীনে দশখান যুদ্ধজাহাজ প্রেরিত হইল তাহাতে চ্য়শত সৈন্যছিল এব ১ ঐ কর্তার প্রতি আছে৷ ছিল যে কোম্পানির ভৃত্যগণ ও সম্পত্তি জাহাজে লইয়া চউগ্রামে যাইবেন ও তৎস্থান আক্রমণ করিয়া সুরক্ষিত করিবেন এ কারণে তাঁহার সহিত দুইশত কানান প্রেরিত হইয়াছিল তাঁহার প্রতি অপর আজ্ঞা ছিল যেমোগুল দিগের চির্ন্তনশত্র আরাকানের রাজার সহিত সন্ধি করিবেন হিন্দুজনিদার দিগের সান্ত্রনা করিবেন ও কর আদায় করিবেন এবণ মুদু লয় স্থাপন করিবেন ফলত রাজ্য আরম্ভ করিবেন। কিন্তু এই সকল বাসনা বিপব্নীত হইল ইণ্রাজদিগের হি-ন্দুস্থান শাসন করিবার সময় অদ্যাপি উপস্থিত হয় নাই এব॰ তাঁহাদিসের মানস অন্যথাকরিতে সকল বিষয়ের ঘটন। হইন 1 সমৃদু, মধ্যে একঝড় উপস্থিত হইয়া ভূঁ।হা-দিগের নৌকাসকল ছিন্ন ভিন্ন করিল'এবণ বিপরীত বায়্দারা কতিপয়পোত আসিতে অক্ষম হইল কিন্তু কতিপয় জাহাজ গঙ্কায় উপস্থিত হইয়া হুগলি গমনো-माउ इहेन **७व॰ हेहां वि वर्**त्यनान शृद्ध मामु। कछि<u>ञ</u>् কর্ত্তা মহাশয় তথায় চারিশত পদাতিক প্রেরণ করিয়! ছিলেন এইসকল সমৃত্র ও ভূমিতে উপক্রমদারা নবাব অতিশয় ভীত হইলেন একারণ তিনি ইণ্রাজ দিগের **সহিত মীল করিতে সচেষ্টক হইয়া মধ্যস্তা** দারা ভাঁহা-

দিগের যে বিষয় প্রাপ্য হয় তাহা দিতে স্বীকার করি-লেন কিন্ত তাঁহারা ষষ্টিলক মৃদু৷ প্রার্থনা করিলেন এইনপ সন্ধ্যিপ্রভাব কালে এক দৈবঘটনাদারা সমুদায় তাঁহাদিগের কর্ম দুষ্পরিণাম পাইল।

১৬৮৯ শালের ২৮ আক্টোবর ত্গলির বাজারে তিনজন ইণরাজদিগের পদাতিক নবাবের দৈনোর **সহিত বিবাদ করি**য়া বিশেষ ৰূপে , প্রহৃত হ**ই**ল তাহাতে ভাহাদিগের সাহায্যার্থে কতিপয় সৈন্য প্রেরিত হইল এবণ তৎপরে অপর এক প্রস্তুত প্রেরিত **ङ्हेल व्यवस्थिय मगूनाय है^वाको टेमनानिरगत गगरन ন**গরের বহিস্থিত নবাবের সৈন্য সকল আহূত হওয়াতে বিলক্ষণ যুদ্ধ হইল। ষষ্ঠিজন মোগল সৈন্য ষ্ঠারাপড়িল এব^ অনেকের কোন২ অবয়বে আঘাত इहेन । এই युक्त मभरत्र नाविक टेमना। भाक निकल्मन् জাহাজ হইতে নগরমধ্যে কামানাঘাত করিতে লা-গিলেন তাহাতে পঞ্চশত অউালিকা ধৃ^স হইল তাহার মধ্যে এক কোম্পানির গুদাম যাহাতে ত্রিশলক মৃদুার ্দুব্য ছিল তাহাও নষ্ট হইল এই সকল ঘটনায় ফৌজ-দার অতিশয় ভীত হইয়া যাহাতে যুদ্ধ নিবারণ হয় এমত **চেষ্টাকরিলেন** তাহাতে **ই**ণরাজেরা সম্মত হইয়া তাঁহার সাহায্যদারা ভাঁহাদিগের সোরা সকল নৌকায় আরো-পুণ করিলেন এবং এ ফৌজদার মহারাজ হইতে যে

পর্যান্ত কোন আছা প্রাপ্ত নাহয়েন তদবধি ইণরাজ দিগকে পূর্বিৎ বাণিজ্য করিতে অনুমতি করিলেন দবাব এই সকল সম্বাদ অবগত হইয়া পাটনা মাল্দা ঢাকা এবণ কাশীমাজার এই কয়েক স্থানে শাখা-স্থাপ কারখানা রোধ করিছে আছা করিলেন প্রবণ এতদেশ হইতে ইণরাজদিগকে বহিষ্ঠত করিতে ছগলি নগরে, পাদাতিক ও অধার্ক্ত বৈন্য প্রেরণ করিলেন

*ভ্*গলিস্থিত অধিকৃত আপনার প্রাণ**শকা**য় **২০ডিসেম্বর** কোম্পানির সম্পত্তি লইয়া বরনগরস্থিত ওলনাজ দিগের কারখানা হইতে দুইক্রোশ দক্ষিণেস্ভানটি নামক গ্রামে পরায়ন করিলেন যেস্থানে একণেকলি-কাতা নগর হইয়াছে ঐযাসের মধ্যে তিনজন নবাবেল্প মন্ত্রী ত্গলিতে আসাতে চার্নক সাহেব তাঁহাদিগের সহিত সম্পুতি করিতে তথায় গমন করিলেন এক সঁন্ধি দারাই শরাজ দিগের পূর্ববিৎ লভ্যপ্রাপ্ত হইল কিন্তু নবা-বের মানস ছিল যে উপযুক্ত সময় পাইয়া কোম্পানিকে একেবারে নউকরিবেন ১৬৮৭ শালে ফিবুয়ারি মাসের পূথমে ইণরাজদিগকে তাড়াইতে হুগ্লিতে অনেক .সৈন্য আসিল চান্ক সাহেব সুতামুটীতে ও আয়ুরকা না দেখিয়া তৃৎস্থান পরিত্যাগপূর্বক সকল নিজলোক ও সম্পত্তি জাহাজে. नहेश्रा हेक्षिनीट याजाकदितन

অব প্রমনকালে তানার দুর্গধ্ প্র করিয়া মোগলদিগের জাহাজ গুহণ করিলে।

নদীমুথে ইঞ্জিলী উপদ্বীপ এমত কুৎসিত স্থান ছিল যে ই০রাজ দিগের কোনমতে মনোনীত নহে ঐস্থান নিমু জলময় ও দীর্ঘত্ণদারা আচ্ছাদিত ছিল এবং তথায় একবিন্দু উত্তম জল ছিল না তথাপি চার্ণক সাহেব সেই স্থানে ছাউনি করিয়া দুর্গকরিলেন তাহাতে তিনগংবের মধ্যে অন্ধেক সৈন্য নারাপড়িল মোগল সৈন্যাধ্যক তাঁহার অনুবর্তী হইয়া তৎস্থানে নানামতে আক্রমণ ক্রিলেন কিন্তু প্রতিবারে পরাভূত হইলেন তথাপি **ই**৽রাজ দিগের সৌভাগ্যাশা এমত মস্ণ হইল যে গ্রী-স্মুক্ষালের মধ্যে তাঁহাদিগের বাঙ্গানা পরিত্যাগ করিতে ছইবে এইরপ বোধহইল ইতিমধ্যে শুবাদার সন্ধি প্রস-ছ করিতে দূতপ্রেরণ করিলেন চার্ণক সহেব আদন্দ পূর্বে-ক তাহাতে সন্মত হওয়াতে ১৬৮৭ শালের ১৬আগষ্ট এক সংক্ষি নিষ্পত্তি হইল তাহারদারা এদেশের স্থানে২ কারখানা রাখিতে ই॰রাজদিগের প্রতি অনুমতি হইল এবং তাঁহাদিগের ভাগুার ও জাহাজাদি মেরামত করি-বার কারণ উলুবেড়ে দত্ত হইল এব॰ শতকরা সাড়েতিন টাকা করিয়া কর দিতেন তাহা রহিত হইল। আর চার্ণক সাহেব যে সকল মোগল দিগের জাহাজ গুহণকরিয়া ছিলেন তাঁহাকে ও'তাহ। প্রতিদান করিতে হইল ঝটিতি

ই॰রাজদিগের উত্তযাবস্থা হইবার কারণ পশ্চাৎ বর্ণিত হইতেছে । বাঙ্গালায় বিপদ আরম্ভাবধি কোর্ট আব ডিরেকটরেরা বলপূর্ব্বক সমুদায় নিষ্পত্তি করিতে স্থির করিয়া সুরতস্থিত অধ্যক্ষেরপ্রতি তথাকার কারখানা ত্তলিয়া মহারাজের সহিত সমূদ্রে যুদ্ধ আরম্ভ করিতে আজ্ঞাকরিলেন ৷সুরতে কোম্পানির কারখানা তৎক্ষণাৎ রহিত হইল ভারত वर्षित जीति रागकन काशकर्षिन ও आगिरजनाशिन কোম্পানির লোকে তাহা বলপূর্বক গুহণকরিতে লাগিল সুরত হইতে ধার্মিক মুসলমানেরা জাহাজ দারা মকাতীর্থে গমনকরিতেন অতএব মোগলদিগের যুদ্ধার্থ জাহাজের প্রধানকর্ম তীর্থযাত্রিদিগের রক্ষাই ছিল কিন্তু ইণরাজেরা ঐস্থান রক্ষাকরিয়া *নমু*ছে_ই প্রাধান্য পাইয়া তংপথ রোপকরিলেন ৷ অতএব আ-রঞ্জেব নিজ দর্প থর্জ করিয়া ইণ্রাজদিগের সহিত'স-ক্ষিকরিতে বাধ্য হইলেন সন্ধি সমাপন হ**ইলে চা**র্ণক-সাহেব ইঞ্জিলীহইতে উল্বেড়ে তথাহইতে সুতানুটী আসিলেন

কিন্তু নবাবপূর্অবৎ দুরাচার অবিলয়ে আরম্ভ করিলেন তিনি তাহাদিগকে হুগলিতে আসিতে আজ্ঞাকরিলেন এবং সুতানুটীতে পাষাণ কিয়া ইপ্তকা দারা গৃহনিশাণ করিতে নিষেধকরিলেন তাঁহারদিগে- র দুবা লুটকরিতে নিজসৈনাের প্রতি ইঞ্চিত করিলেন তথা ষয় চার্ণকসাহেব ছইতে এমত অধিক মৃদুা প্রা-র্থনাকরিলেন যেতিনি নবাবকে সন্তেষকরিতে অক্ষম ছইলেন এবং সৈন্যা ভাবপ্রযুক্ত বাধাদিতেও অক্ষম ছইলেন অতএব নবাবের সান্তনার্থে ও স্তান্টীতে ক্রমাগত বাসের অনুজ্ঞার্থে নিজসভার দুইজনকে ঢা-কায় পাঠাইলেন বহুক্রেশপূর্কক তাঁহারা মনোবাঞ্চা পূর্ণকরিলের এমত সময়ে তাহার্দিগের ব্যাপার পুন্বার অক্ষক্তহইল।

কোর্ট আবডিরেকটরেরা ত্গলির সম্বর তথা বৈন্যদিগের ইঞ্জিনীতে পনায়ন শূরণ করিয়া অধিক লৈন্যপ্রেরণ করিলেন তাঁহারা প্রতিক্রাকরিলেন য়ে অদি তাঁহারা দুর্গ ও মুদ্রালয় স্থাপন করিতে না পা-तिन् তবে বাণিজ্য गाठनशृर्सक একেবারে এতদেশ ত্যাগ করিবেন অতএব কাপ্তানহাথ সাহেবের সহিত দুইপোত পাঠাইলেন তাহার একেতে চত্তঃষণ্ডিকামান ছিল তাঁহার প্রতি এমত আমক্স। করিলেন যে যদি ব্রাঞ্জিতফলপ্রাপ্ত নাহয়েন তবে সমুদায় ভৃত্যবর্গ লইয়া মাদুজে প্রস্থানকরিবেন কাপ্তান হীথ সাহেব অতিষেক্ষানুযায়ী*হি*লেন সাত্মবাসনামত ভিন্ন করি-তেন না ১৬৮৮ শালের আক্টোবর মাসে তিনি বাঙ্গা-লায় আসিয়া :কোম্পানির ভত্যবর্গকে সরকারি

সম্পত্তি লইয়া জাহাজে আরোহণ করিতে আছা করিলেন পরে ৮ নবম্বর বালেশ্বরে জাহাজ চালাইলেন চাৰ্কসাহৈৰ ভাঁহার অতিজ্ঞা নিবারণার্থে বিবিধ চেষ্টা করিলেন কিন্তু তিনি তাহা শুনিলেন্ না যখন তিনি বালেশ্বরেরপথে উপস্থিত হইলেন তথাকার শুবাদার দুইজন কোম্পানির কর্মাধ্যক্ষকে প্রতিভূষ্ক-পে আটক করিয়া রাখিলেন যদ্যপিও এই দুইজন বন্ধী ছিলেন এব॰ দুইজন নায়েব ঢাকায় নবাবের হস্তগত ছিলেন তথাপি হীথসাহেব ২৯ নবম্বর বালেশ্বরে সৈন্য অবতরণ করিয়া ঐস্থান লুট করিলেন ঐদিবসে তথাকার শুবাদার ঢাকায় নবাবের নিকটে নায়েবেরা -যে সন্ধি স্থির করিয়াছিলেন তাহার প্রতিৰূপ পত্র পাইনেন যাহাতে স্থির ছিল যে মোগলদিগের আরা-কান দেশ আক্রমণ করিতে ইপরাজেরা সাহায্য করি-বেন। হीথ নাহেব তদেশ লুটকরিয়া চউ গ্রামে চলিলৈন এব॰ যেৰূপ তিনি আশা করিয়াছিলেন তাহাতে অধিক দুর্ঘটনা দেখিলেন অতএব ই রাজেরা যে সকল দুঃখ ভোগকরিয়াছেন তাহা ঢাকাস্থ নবাবকে লিখিতে সন্মত হইলেন কিন্তু ঐবেচ্ছানুয়ায়ী মহাশর , পত্ৰ প্ৰব্নিত হইলে উত্তরাগমন অপেকা না ক্রিয়া সকল জাহাজ আরাকানে চালাইলেন তথায় উপস্থিত হইয়া রাজার নিকটে সম্বাদ পাঠাইলেন ্যে যদি

তিনি তাঁহার রাজ্যে ই রাজদিণের বসতি করিতে দেন
তবে ই রাজেরা নোগলদিগের আক্রমণ করিতে
তাঁহার সহিত যুক্ত হইবেন তাহার উত্তর চত্তদর্শন
দিবস পর্য্যন্ত না আসাতে হীথসাহেব অধৈর্য্য হইয়াযে
পঞ্চদশ পোত তাঁহারছিল তাহাতে শাসনকর্ত্তা ওসমুন্দায় লইয়া মাদুছিল গমন করিলেন ! ই রাজেরা
অতদেশে ব্যণিজ্য আরম্ভ করিলে পর প্রায় পঞ্চাশ
বৎসরপরে এইবপে তাঁহাদিগকে বাঙ্গালা পরিত্যাগ
করিতে হইল ৷ মাদুছল ও বোম্বেদেশ অতি সুর্ক্ষিত
থাকাতে তৎস্থান ব্যতিরেকে নিজরাজ্যমধ্যে মহারাজ সমুদায় ই রাজদিগের কারখানা নপ্তকরিতে
প্রতাহাদের দুব্য আটক করিতে আক্রাকরিলেন ৷

নবাবসাইন্তথাঁ মহারাজার আজ্ঞাপ্রতিপালনার্থে বাঙ্গালা স্থিত কোম্পানির দুব্য সকল আটক করি-লেন এবং কথিত আছে যে ঢাকাস্থিত দুইকর্মাধ্যক্ষের পায়ে বেড়ি দিলেন কোন২ গুল্থে এমত লিখিত আছে যে এই সকল বিষয় তাঁহার অজ্ঞাতসারে কোন নায়েবে করিয়াছিল ৷ অনন্তর সাইন্তথা বার্দ্ধক্য প্রযুক্ত বাঙ্গালার অ্যথক্ষতা কর্ম পরিত্যাগ করিতে প্রার্থনা করিলেন ৷ যদ্যপিও তিনি ইংরাজদিগের প্রাহ্ত কঠিন ব্যবহার করিয়াছিলেন তথাপি এদেশীয় লোকের অতি প্রিয়পাত্র ছিলেন ৷ তাঁহার রাজ্য কালে একটাকায় অষ্ট মোন চাউল বিক্রীত হওয়াতে এইসুখনায়ক সময় পুজাদিগের চিরম্মরগীয় করিবার কারণ ঢাকানগরের দার উচ্চকরিয়া তদুপরি একমুদ্ভিত পউক স্থাপিত করিলেন তাহাতে লিখিত ছিল যে এমত সুলভ শস্য না করিতে পারিলে কোন ভবিষ্যৎ নবাব এনগর সংখ্যে পুবেশ করিতে পারিবেন না

ষষ্ঠ অধ্যায়

১৬৮৯ भारत हेर्नाहिम थैं। अ कर्ष्य नियुक्त इहै-লেন দিল্লীর নিকটে এক খাল করাতে যে ভালি মর্দ্রনের নাম স্গাঁয় তুল্য হইয়াছিল ইবুাহিম ভাঁহার পুত্র ছিলেন তিনি অতি নমুতাপূর্বক অপক-পাতে বিদার করিতেন কিন্তু যুদ্ধবিষয়ে চতুরতা নাথাকাতে অতিদুর্গম বাঙ্গালার অধ্যক্ষতা কর্মের উপযুক্ত ছিলেন না তাঁহার অগুগত শুবাদার যে দুই ইণরাজ দিগের নায়েবকে কারাগারে রাখিয়া ছিলেন তিনি প্রথমত তাঁহাদিগকে মুক্ত করিতে চেষ্টা করিলেন তথাপি ইণরাজ ও মোগলদিগের মধ্যে বিবাদ নিবৃত্ত হইল না ই রাজেরা সমুদেু পুভুত্ব পাইয়া ভারত বর্ষ ছইতে যে সকল নৌকা যাত্রা করিত তাই। সমুদায় বলক্রচেস গুরুণ করিতেন অক

এব পুনর্বার মকাতীর্থে গমন রুদ্ধ হইল সূতরাণ আরঞ্জেব অনেক সন্ধি পুস্তাবের পরে ই^রাজ দিগের পূর্ব অপকার বিষ্ণৃত হইয়া তাঁহাদিগকে পূর্ব্বৎ বাস দিতে স্থির করিয়া বোম্বের শাসন কর্ত্তার সহিত এক সন্ধি করিলেন এবং ইব্যাহিম খাঁ যখন ৰাহ্মালায় নিযুক্ত হইলেন তৎকালে তাঁহার পুতি ই৲রাজ দিগকে আহ্বান করিতে উপদেশ ়করিলেন অক্লএব ঐ মহাশয় মাদ্রাজে চার্ণক সাহে-বকে মহারাজের অভিপ্রায় অবিলম্বে লিখিলেন এবং পূর্ব্বদোষ না দেখিয়া অনেক ভাবি মঙ্গল করিতে পুতিজ্ঞা করিয়াছিলেন চার্ণকসাহেব ঐ লিখনানুসারে সমৃদায় ভৃত্যবর্গের সহিত ১৬৯০ শালের ২৪ আগষ্ট **শুভান্টীতে জাহাজ হইতে অবতরণ করিলেন আ**মরা ঐ দিবস অবধি কলিকাতা নগরের উন্নতি গণন। করিতে পারি । পরবৎসরে দিল্লাহইতে মহারাজের আজ্ঞা আদিন যে ইণরাজেরা যে সকল অপরাধ করি-য়াছেন তাহার ক্ষমার্থে তাঁহারা অতি ন্মুতাপূর্বক আবেদন করিয়াছেন অতথব মহারাজ তদনুসারে পুজাদিগের পুাতাহিক অনুগুহমধ্যে ওাঁহাদের কমা করিলেন এইকপে ভিন সহসুমুদ্রা বার্ষিক করপুদানে বাণিজ্য করিতে ই রাজেরা নূতন অনুক্রা পাইলেন অনন্তর বাসস্থান সুরক্ষার নিমিত্তে ব্যগুত্ইলেন কারণ

ভাঁহারা দেখিলেন যে তদ্যতিরেকে আপদ মোচন নাই অপর কোর্ট আবডিরেকটরেরা পুধান অধ্যক্ষের পুতি আজ্ঞা দিয়াছিলেন যে একদুৰ্গ নিৰ্শাণাৰ্থে অনুমতি লইতে চ'বারিশশৎ সহসু মুদ্রাপর্য্যন্ত দিবেন এবশ কহি-য়াছিলেন যদি একদুর্গ ও মুদ্রালয় স্থাপন করিতেনা পারেন তবে বাঙ্গালার কর্মের বাহুল্য করিতে তাঁহাদিগের যতু নাই কিন্তু মোগলদিগের রাজ-নিয়মানুসারে সন্দেহ পুযুক্ত হণরাজদিগুকে তদুভ-য়ের একেও অনুমতি হইল না। কলিকাতা নগরোপ-ক্রমের দুইবৎসর পরে চার্ণকসাহেব লোকান্তর গমন করিলেন এসিয়া দেশের মধ্যে ইউরোপায়দিগের পুধান নগর কলিকাতার সৃষ্টিকর্ত্তা ঐ মহাশয় এক্ষণে ঐ নগরের বড় গিরিজার অঙ্কন মধ্যে নিখাত আছেন ঐৰপ বারাকপুরের উন্নতির আদিকারণ তিনি ছিলেন অতএব তাঁহার নামানুসারে অদ্যাবধি এদেশীয়লো-কেরা ঐস্থানকে চানক বলিয়া থাকেন।।

অতঃপর নির্বিবাদে কর্ম চলিল বাঙ্গালায় বাণিজ্য যদ্যপিও সংক্ষিপ্ত তথাপি দৃঢভাবে ছিল এই সময়ে কোম্পানিরা দেখিলেন যে যাবৎ তাঁহারা অতিক্ষ্দ সুতানুটী গ্রামমধ্যে বদ্ধ আছেন তাবৎ কোন কর্ম ক্রিতে পারিবেন না ১৯৯৪ শালে ঐস্থানের মাসিক রাজস্ব একশত ষষ্টি নুদার অধিক ছিল না অতএব

তাহারা নিকটবর্ত্তি কতিপয়গ্রাম প্রাপ্ত হইতে এবণ তথা হইতে রাজস্ব উৎপন্ন করিতে নিতান্ত ইঙ্গুক হইনেন **কারণ তাহা হইলে অ**ধিক রক্ষার সম্ভাবনা করিতে পারেন। ইতিমধ্যে কাপ্তান কিড্সাহেব কোম্পানির **অধীনত৷ ব্যতিরেকে** ভারতবর্ষে বাণিজ্য করিতে **অনেক ভদ্ৰনোকদারা পুেরিত হইয়া নাবিক** ভক্ষ**র** হইলেন এবং মকাগমনোদাত অনেক তার্থ ধাত্রির সহিত দুইখান মোগলদিগের জাহাজ বলপূর্ত্তক গুহণ করিলেন ইহাতে মহারাজ অতিশয় কোধানিত হইয়া কোम्भानि ও अन्। हे तो छ ति क् मिर्गत मास्य विस्मय জ্ঞান না করিয়া সমুদায় কোম্পানির কারখান। আক্র-মণ করিতে এবং তাঁহাদের বাণিজ্য রোধ করিতে আছে। করিলেন বাঙ্গালার শুরাদার ইবাহিম খাঁ। কলিকাতায় ভদ্রলোকদিগকে রক্ষাকরিয়া গুপ্তভাবে ক্রমাগত বাণিজ্য করিতে অনুগতি করিলেন।

১৯৯৫ শালে এক দৈবঘটনারারা ই°রাজেরা ও অপর ভিন্নদেশীয়েরা নিজ২ মানস সম্পূর্ণ করিলেন অর্থাৎ আপন২ কারখানা সূর্ফিত করিলেন যে মানস সিদ্ধি করিতে উৎকোচদারা ও বিনয়বারা অনুজ্ঞা হয় নাই। বর্দ্ধনান অঞ্চলে ক্রেম্ব ও বেন্দেহ নামক দুই গ্রামের অধিপতি শোভাসি°হস°জক একহিন্দুজমিদার তথা-কার রাজার সহিত অকৌশন হওয়াতে বিদ্যোহাচারী ছইয়া উড়িস্যান্থিত পাঠানদিগের প্রধান রহিমর্থাকে তাঁহার সহিত যুক্ত হইতে আহ্বান করি**লেন অনন্তর** তাঁহাদিগের সৈন্যেরা পরস্পর নিলিত হইয়ারাজার সহিত যুদ্ধ করাতে রাজা পরাজিত **হইয়া মারাপ**-ড়িলেন তাঁহার সম্পত্তি ও পরিজন ঐ উপদ্রোহ-কারিদিগের হস্তগত হইল তাঁহার পুত্র জগৎরায় ঢাকায় পলায়ন করিয়া নবাবের নিকটে আবেদন করাতে তিনি ঐবিদ্যোহাচারিদিগকে জয়করিতে তিন সহসু লোকের সহিত তথায় গমন করিতে যশোহরের কৌজদারের প্রতি আজ্ঞাকরিলেন। ইবুাহিমের দুর্বল শাসনকালে এতদেশের রাজত্বকর্মের নিয়ম ছিল না কারণএমত অপ্সদৈন্যও অতি ক্লেম্পে সংগৃহীত হইল ঐ সৈনোর। হগলিতে উপস্থিত হইয়া শতুদিগকে দেখিবামাত্রে ভীত হইয়া পুনর্জার নদী সম্ভরণ পূর্ব্বক পলায়ন করিল ঐমহৎও নানা বিধধন যুক্ত নগর শীঘু উপদোহকারিদিগের হস্তগত হইল।

ওলনাজ ও ফরাসীরা তৎক্ষণাৎ এবং ইণরাজেরা কিঞ্চিৎপরে শুবাদারের পক্ষে হইলেন। যথন এই উপ-দোহ আরম্ভ হইল তাঁহারা নিজহ সম্পত্তিরক্ষার্থে অর্থ দারা কতিপয় পাক সংগৃহ করিলেন এবং কারখানা রক্ষাকরিতে শুবাদারের অনুমতি প্রার্থনা করিলেন তিনি তাঁহাদিগকে আত্মরক্ষা করিতে অমুক্তা দেওয়াতে তাঁহারা তদনুসারে ষহবাসস্থান দুর্গ করিলেন ইহার
পূর্বে চ্চুড়ায় ওলন্দাজদিগের কারখান। দুর্গবারারক্ষিত
হইয়াছিল এবং তৎকালে উত্তমরূপে শুধরান হৈইল
কলিকাতায় ইংরাজের। সুতানুটাগাুমের সুরক্ষার্থে
যাবৎ সর্বতোভাবে দুর্গ নির্মাণনাহয় তাবৎ পর্যাপ্ত
প্রত্যেক জনকে দিবারাত্রি পরিশ্রম করাইলেন এইরপে
লাল দীঘা ও গঙ্কার মধ্যস্থানে প্রাচীন দুর্গ নির্মিত হয়
প্রায় বিংশতি বৎসর হইল তাহার চিহ্ন দূরীকৃত
হইয়াছে ১৬৯৫ শালে ইংরাজেরা রক্ষোপযোগি দুর্গ
করিয়াছিলেন পরে মোগলেরা সন্থাদ না পয়েন এমত
শুপ্তভাবে ক্রমেহ নৃত্নহ যোগ করিলেন।

'ঐ উপদোহকারিরা হুগলি আক্রণ করিয়া অতি
সাহসা হইয়াদেশ লুট করিতে চন্তদিগে সৈন্য পাঠাইলেন্ হত ভাগ্য প্রজারা দলে২ চুচ্ডায় উপস্থিত হইয়া
জাশ্রয় প্রাপ্ত হইল এই সকল উপদোহের শেষ করিতে
ওলনাজেরা দুই খান যুদ্ধ জাহাজ হুগলিতে প্রেরণ
করিলেন ঐ জাহাজে এমত গোলা বর্ষণ করিল যে
বিদ্যোহাচারিরা ত্রায় তৎস্থান পরিত্যাগ করিয়া
সপ্তগ্যানে পলায়ন করিল। শোভা সিংহ নবদ্বীপ লুট
করিতে তথাহইতে রহিমখাকে প্রেরণ করিলেন।

বর্দ্ধানের যে স্কল লোক বন্ধ হইয়াছিলেন তাহার মধ্যে ঐ রাজার এক প্রম সুন্দরী কন্যাকে শোভাসিংহ আন্মভোগার্থে রাথিয়াছিলেন অতএব রহিমর্থা যাত্রাকরিলে পরে তিনি ঐ সুখভোগ করিতে স্থির করিলেন কিন্তু তিনি তাঁহাকে আলিছন করিবা মাত্রে ঐ বালিকা এক তীক্ষ ছুরিকা বহিষ্ত করিয়া অণ্ডে তঁহার উদরে নিমগু করিয়া পশ্চাৎ নিজোদরে প্রবিষ্ট করিলেন ঐ আঘাতে শুভিসিৎহ শীঘু পুাণত্যাগ করাতে সকলু উপদ্রোহকারিরা রহিমখাঁকে পুথান করিলেন তাহাতে তিনি এক দেশ হইতে অপর দেশ অনন্তর অন্য দেশ ক্রমে২ জয় করিতে লাগিলেন তাঁহার উপদ্রোহ শ্রবণ ব্যতিরেকে শুবাদার এক দিন যাপন করেন নাই তথাপি এবিষয়ে তাঁহার চৈতন্য হইল না যথন তাঁহার ভৃত্যেরা যুদ্ধ করিতে উপরোধ করিতেন তিনি তাঁহাদিগকে উত্তর করিতেন যে যদি শত্র দিগকে কিছু না বলাযায় তাহারা স্বয়^ ছিন্ন ভিন্ন হইবে যদি যুদ্ধ করাযায় তবে পরমেশ্বর সৃষ্ট জীব সক-লের হিৎসা করিতে হয় এই ৰূপ তাঁহার আলস্যদারা তাহাদিগের সাহসবৃদ্ধি হওয়াতে এক প্রস্তুত সৈন্য মুরসিদাবাদে উপস্থিত হইয়া তথাস্থিত মোগল দিগের পঞ্চ সহসু সৈন্যকে পরাজিত করিয়া ঐ নগর লৃট কুরিল অপর এক প্রস্তুত সৈন্য কলিকাতায় আসিল কিন্তু তৎক্ষণাৎ তাড়িত হুইল। ১৯৯৭ শালের মার্চ মাদে তাহারা রাজ**নত্ন অধিকার** করিয়া মাল্দা

গমনকালে বিপুল খনযুক্ত ই নাজ দিগের কারখানা লট করিল এইসময়ে তাঁহারা যে দেশ অধিকার করিয়াছি-লেন তাহার বার্ষিক রাজস্ব ষষ্ঠি লক্ষ মুদ্রা ছিল এব প তাঁহাদের দ্বাদশ সহসু অখার্কাট ও ত্রি শেৎ সহসু পদাতিক ছিল।

এই অদ্ভুত ঘটনার সম্বাদ যথন প্রথমে মহারাজ আরঞ্বের নিকট উপস্থিত হইল তিনি সুতরাৎ অত্যন্ত কোধানিত হ**ইলেন এব**ৎ অবিলম্বে নিজ পৌত্র আজিম ওষাণকে শুবাদার করিলেন ও ইবু!-হিমকে আছা করিলেন যে তাঁহার সাহসীপুত্র জব-र्मं अं कि टेमना मकल पिर्यन अ अं किमान् टेमना।-**খ্যক তৎক্ষণাৎ সৈন্য স**ংগুহ করিয়া বিদ্যোহকারি-দিগের অনেষণার্থে ভগবান্গোলা পর্য্যন্ত আসিলেন প্রথমদিনে শত্রু দিগের কামান সকল বিকল করিলেন দ্বিতীয়দিনে যুদ্ধ করিয়া তাহাদিগকে সম্পূর্ণৰূপে পরা-জিত করিলেন তাহাতে রহিম খাঁ তাড়িত হইয়া মূর-সিদাবাদ হইতে প্রথমত বর্দ্ধনানে অনস্তর উড়ি-স্যায় পলায়ন করিলেন জমিদারেরাপুনর্কার মোগল **फिरिशत शिक्क, इहेरलन अठवर फिर्म निर्दित्राध इहे-**বার উপক্রম হইল।

নূতন শুবাদার আজিম ওবাণ পাটনায় আসিয়া জবর্দস্ত থাঁর সাহসিক কর্ম শুনিয়া বিবেচনা করিলেন

যে তাঁহার করিবার কারণ কিছ্ই অবশিষ্ট থাকিবে না একারণ যুদ্ধের আপদে পুনর্বার নথ হইতে তাঁহাকে বারণ করিলেন জবর্দস্ত খাঁ বুঝিলেন যে এই আঁজা হিৎসা প্রযুক্ত হইয়াছে একারণ কর্ম পরিত্যাগ করিতে প্রার্থনা করিলেন তাহাতে তিনি তৎক্ষণাৎ স্বীকার क्रिलिन क्रवर्ष्य थै। निक अनुवर्जी ও अधीन श्रीय ৮ বহ'সু সৈন্য আপনার সহিত লইলেন এই সকল বাঙ্গালাস্থিত সৈন্দ্যের সারভাগ সমন করিলে বোধহয় এদেশের রক্ষা প্রায় ছিল না আজিম ওয়াণ বর্দ্ধমানে আসিয়া স্থিতি করিলেন, এবং জনিদারদিগের ও অপর লোকের সহিত সম্পুীতি করিলেন। রহিম থাঁ। জ্বর্দস্তকে লৌহবৎ কঠিন জ্ঞানে যেরূপ ভয় করি-তেন রাজপুত্রকে রেসম তুল্য কোমলজ্ঞানে ঐৰপ তুচ্ছবোধ করিলেন অতএব রাজসভা যে সময়ে আনন্দ ভোগে মথ ছিল তৎকালে তিনি হুগলি ও নদীয়া ল্ট করিয়া বর্ত্মানের অতি নিকটে উপস্থিত হইলেন ৷ আজিম ওষাণ বর্দ্ধমানে আসিলে ই॰রাজেরা ষ্টান্লি সাহেবকে তাঁহার নিকটে নায়েব পাঠাইলেন তাঁহার অভিপ্রায়ছিল যে কলিকাতার নিকটস্থাুাম্ ও গোবিন্দ পুর গুহণ করিতে আজ্ঞাপায়েন একারণ রাজপুত্রের উপায়নার্থে এক সহসূত্রশ্নুদা এবং তাঁহার দেওয়া-নের নিগিত্তে ৮ শতটাকার বনাত লইলেন। আজিম

खियालं यानम किवन वर्ष मः गुरु वाजितिक हिन ना व्याध्य छेपाछोकन विना कांत्र श्रीक कांन व्यन् गुरु किति छा कि हैं शाकि मिरात नार्यविक मसामत्र मूर्यक गुरु कितिया वर्ष नहेलन १७२৮ मालित क्वाहिसारम खेमकन ज्याक्य किति व्याध्यामितन या व्यादन खक्त नगत हहेगा ए भत्र वर्ष मा किति व्याविक (तक्ष तित्र विकास नगत हरेगा ए भत्र किति व्याविक हात्र म्याहिय मारा कितिया विकास विवास कित्य मारा नार्या कितिया नार्या नार्या

রহিন খাঁ পুনর্কার যুদ্ধকেত্রে আসিয়াছেন ইহা শুনিয়া রাজপুত্রের অবিলম্বে তাঁহার সহিত যুদ্ধার্থে গমন উচিতছিল কিন্তু তিনি তাহানাকরিয়া এক দূত পাঠাইলেন যে দূত ভাঁহার নিকটে কহিল যে যদি তিনি যুদ্ধ পরিত্যাগ করিয়া আপনার কর্ম দেখেন তবৈ রাজপুত্র তাঁহাকে ক্ষমাকরিবেন তাহাতে ঐ বিৰুদ্ধাচারী উত্তর করিল যে যদি তাঁহার প্রধান মন্ত্ৰী খাওয়াজা আনবাশকে পাঠান তবে তিনি অধীন ভ্ইবেন রাজপুত্র অপ্রবৃদ্ধিপ্রযুক্ত তাহাই করিলেন বিদ্যোহাচারির তাঁবুতে ঐমন্তির আগমনকালে অতি সমান হইল কিন্তু প্রস্থানকালে তিনি খণ্ড২ৰূপে কাটা পড়িংলন অনস্তর রহিম খাঁ দেখিলেন যে রাজ-পুত্রের কোমতে গুড়াশা নাই একারণ যখন তিনি

সুরক্ষিত নাথাকেন এমত পনয়ে তাঁহার সৈন্য আক্র-মণ করিতে স্থির করিলেন এক প্রস্তুত বৃহৎ পাঠান टेमना आक्रिम अवात्पत्र टेमनाञ्चान आक्रमण कंत्रिन ভয়প্রযুক্ত তিনি দিরদারোহণ করিবামাত্রে অতি প্রচম্বরূপে তাঁহার প্রতি আক্রমণ করিল।যদি হামিদ খাঁনামক একজন সেনাপতি চত্তরতা প্রকাশ না করিতেন তৃবে তিনি নিশ্চিতৰপে মারাপড়িতেন হামিদ থা উল্লেম্বরে কহিলেন যে আমিই রাজপুত্র রহিমখাঁর সহিত বাহ্যুদ্ধ করিতে প্রার্থনা করি তাহাতে এক ভমুল যুদ্ধ করিয়া অবশেষে হাণিদখাঁ শতুর মস্তকচ্ছেদ করাতে তাঁহার সৈন্যেরা প্রভুর নাশ দেখিয়া চত্তদিগে পলায়ন করিল ঐ উদার হামিদ এই কৰ্মে পারিতোষিকস্বৰূপ এক উপাধি পাইয়া কৌজদার্রাকম্মে নিযুক্ত হইলেন। আজিম ওয়াণ কিছ ক ল বৰ্দ্ধনানে থাকিয়া এক নূতন বাজার কঁরিয়া আজিমগঞ্জ তাহার নাম রাখিলেন তথা হুগলিতে শতকরা মুসলমানদিগের সান্ধর্ট হিন্দুদিগের পঞ্চ ও খুী প্রিয়ানদিগের সাদ্ধ তিন মুদ্র। মাসুল স্থির করি-लन हे° बाटक बा कि ख विनय्ना विक कि एनन न। का बन তাঁহার। মহারাজের আজানুসারে তিন সহসু মৃদু। বার্ষিক শুক্ক দিতেন অপর কথিত আছেযে তিনি ঐরণ স্বজ শুল্ক স্থির করিয়াছিলেন।

এই সময়ে কলিকাতায় ই রাজদিগের বাসস্থান
দীর্ঘণ্ড পরিপাটী হইয়াছিল তাঁহারা যেতিন গামের
সনন্দ পাইয়াছিলেন ঐতিন গাম নদী তীরে সাদ্ধ ক্রোশ
দীর্ঘ এব পজা কোশ বিস্তৃত ছিল নিজহ সম্পত্তি
রক্ষার নিমিত্তে এতদেশীয় অনেক ধনি হিন্দলোকের।
তথ্যানে আসিয়া গৃহনির্মাণকরিয়া বাসকরিতে উপদিষ্ট হইয়াছিলেন তাহাতে হুগলিস্থিত ফৌজদার
সন্দিশ্ধ হইয়া ভয় প্রদর্শনার্থে ঐ নুতন্ নগরে একজন
কাজি রাখিতে স্থির করিলেন কিস্তু এক উপঢ়ৌকনদার।
ভাঁহার মানস ফিরিল।।

আমরা একণে মুরসিদকুলি খাঁর বর্ণনা করি তাঁহার
আর একনাম ছিল জাকর খাঁ তিনি মুরসিদাবাদ
নগর নির্মাণ করিয়াছিলেন এবং মুসলমানদিগের যে
সকল শুবাদার বাঙ্গালায় আসিয়াছিলেন সকল
আপেকা শক্তিমান ছিলেন তিনি এক দরিদু ব্যাক্ষণের
পুত্র ছিলেন হাজি সফিয়ানামক একজন মুসলমান
বণিক্ তাঁহাকে বাল্যকালে ক্রয়করিয়া রুদ্ধ করিলেন
এবং ইম্পাহান দেশে লইয়া উত্তমন্ধপে বিদ্যাব্যবহার প্রতৃতি শিক্ষা করাইলেন ঐউপকারিব্যক্তির
পরলোক হইলে জিনি দেকানদেশে গিয়া বেরারের
দেওয়ানের নিকটে কর্মে নিযুক্ত হইলেন তথায়
তিনি কর্মোপিয়েণি জ্ঞান ও বুদ্ধিমন্তা এমত প্রকাশ

করিলেন যে মহারাজ আরঞ্জেব সুখ্যাতি শুনিয়া তাঁহাকে হাইদুাবাদের দেওয়ান করিলেন তিনি তৎকম্পেও অতি বিশ্বাদের পাত্র হইয়া ১৭০১ শালে বাস্থালার দেওয়ান হইলেন অকবরের রাজ্য অবধি আরঞ্জেবের ও তাঁহার পূর্ব্বত্তি মহারাজদিগের রাজ্য কালে বাঙ্গালায় নাজিম ও দেওয়ান এই দুইজন পর-স্পার দমনে থাকিবেন এনিমিত্তে তাঁহাদিগের দপ্তরখানা সতন্ত্র হইয়াছিল ৷ বৈন্যবারা দেশরক্ষাকরণ বিরোধ ভঙ্গ করণ এবং কোন নিয়মকরণ এই সকল কম্ম লাজিমের কর্ভব্যছিল দেওয়ান সমুদায় রাজস্ব আদাস্ব ও ব্যয় করিতেন নাজিম আত্মবেতন ও সৈন্যদিগের -ব্যয় দে ওয়ান হইতে পাইতেন কিন্তু তনিমিত্তে তাঁহাকে অনুক্রা লিখিয়া পাঠাইতে হইত।দেওয়ান নাজিন হইতে কুদু কমা করিতেন কিন্তু তথাপি অতি সমুান্ত हिएलन ।

নুরসিদকুলি খাঁ কর্মপ্রাপ্তি কালে রাজসভা ঢাকায় থাকাতে তথায় গমন করিলেন এবং রাজস্বের অতিশ্য় অনিয়ম থাকাতে শুধরিবার কারণ যথেষ্ট চেষ্টা-করিলেন তিনি রাজকীয় ধন ব্যয়ে এমত সাবধান, ছিলেন যে রাজকুমার ও তাঁহার সভাস্থলোকেরা যাবৎধন প্রার্থনা করিতেন তিনি তাব্ৎ কোনমতে দিতেন না একারণ রাজপুত্র তাঁহার. হস্ত হইতে মুক্ত

ছইবার চেষ্টা করিলেন। একদিবস দেওয়ান সভায় যাইতেছেন এমতকালে রাজপুত্রের কতিপয় সৈন্য নিজ২ বেভনের আপত্তি করিয়। তাঁহার পথ রোধ করিল তিনি শিবিকা হইতে অবরোহণ করিয়াকোষ হইতে অসি বহিষরণপূর্বক ভৃত্যদিগকে বর্মরোধ ভঙ্গ করিতে আজ্ঞাকরিলেন সৈন্যেরা তাঁহার দৃঢ় প্রতিক্ষা দেখিয়া ছিন্ন ভিন্ন হইল। দেওয়ান রাজবাটী উপস্থিত হইয়া রাজপুত্রের সন্মুখে ক্হিলেন যে এই কুমন্ত্রণার মূল কারণ তিনিই হইয়াছেন অনন্তর ছোর। ধ্রিয়া কহিলেন যে যদি তুমি আমার প্রাণ প্রার্থনা কর আমি যুদ্ধকরিতে প্রস্তুতআছি নত্তবা এমত কর্ম অধর কদাচ করিবে না। রাজপুত্র মহারাজের কঠিন হ্বভাব জানিয়া অতি ভীত হইলেন এব^ কহিলেন यে তিনি এবিষয়ে কোন দোষী নহেন কিন্তু দেওয়ান্ তাহাতে বিশ্বাস না করিয়া এই বিষয় বিস্তারিতরূপে লিখিয়া মহারাজের নিকটে পাঠাইলেন মহারাজ রাজপুএকে এমত কঠিনৰূপে লিখিলেম যে যদি তিনি দেওয়ানের শরারে কিয়া সম্পত্তিতে হস্তক্ষেপ করেন তবে তিনি যুথোচিত দণ্ড ভাগী হইবেন এবং মহা-রাজ তাঁহাকে বাঙ্গালা পরিত্যাগ করিয়া বেহারে বাস করিতে আজা করিলেন অতএব তিনি রাজ মহলে গমন করিলেম কিন্তু তথাকার বায়তে শরী-

রের পীড়া হওয়াতে ১৭০৩ শালে পাটনায় গমন করি-লেন এবং তাঁহার নামদারা তদবধি ঐ স্থানের নাম আজিমাবাদ হইল।

গণতশত বৎসরের পরে পার্লিয়ামেণ্ট নানক সমাজ দারা এক নৃতন ও বিপক্ষ কোম্পানি ভারতবর্ষে বাণিজ্য করিতে উদ্যত হইলেন তাঁহাদের নাম ইংলিম কোম্পানি রহিল এবং পুরাতন কোম্পানি লাগুন কোম্পানি নামে বিদিত হইল । ঐ নূতন কোম্পানিরা ভারতবর্ষের নানা স্থানে এবং হুগ্লিতে অধ্যক্ষ পুরণ করিলেন এইলপে উভয় কোম্পানির মধ্যে এমত শত্রুতা হইল যে উভয় পক্ষের মধ্যে ইংলগ্রীয় রাজসভাকে উভয় পক্ষের মিল্ করিতে হইল । ঐ উভয় কোম্পানি তদববি উত্তর কালে ইউনাইটেড ইউইপ্রিয়া কোম্পানি নামে কিদিত হইল ।।

১৭০৩ শালে মুরসিদখাঁ এক বৎসরের রাজস্বের হিসাব পরিকার করিয়া মহারাজের সন্মুখে দেখাইতে দেকানে গমন করিলেন আরপ্তেব সিংহাসনোপবিষ্ট হওনাবিধি বাঙ্গালা ও বেহার দেশে কদাচ এমত অধিক উৎপন্ন হয় নাই অতএব দেওয়ানের চত্তরতা দারা তিনি অতিশয় সম্ভুষ্ট হটুয়া তাঁহাকে বাঙ্গালা ও উড়িস্যার নায়েব নাজিম করিলেন এবং অতি সমুমজনক এক পরিচ্ছদ প্রদান করিলেন তাহাতে আজিমওযাণ অতি ক্ষুণ্ণ হইলেন কিন্তু তিনি মহা-রাজের স্বভাব জানিতেন একারণ সূত্রাণ সমত হইলেন ৷৷

১৭০৭ শালের২১ ফিব্রুয়ারি মহারাজ আরঞ্জেব একাধিক নবতি বর্ষ বয়ক্ষ হইয়া লোকাস্তর গমন করিলেন তাঁহার জীবদশায় মোগলদিগের রাজা वृक्षिमान रहेश जनविध दुव रहेर जात्र इहेन তিনি তিন পুঞ্জের মধ্যে আপন রাজ্য বিভাগ করিয়া দিয়াছিলেন আজিমওষাণের পিতা জে/ পুএ ছিলেন মহারাজের মৃত্যুর পরদিনে তাঁহার ্দ্বিতীয় পুঞ আজিম সাহ সি°্হাসনে আরোহণ করিয়া দিল্লী গমন করিলেন আজিম ওয়াণ পিতা-মহের পীড়া শুবণ করিয়া অবিলম্বে রাজ্যের নিমিত্তে বিবাদ করিতে বাঙ্গালা পরিত্যাগ করিলেন তিনি এক প্ৰস্তুত সুশিক্ষিত সৈন্য ও স্বয়ং ন গৃহীত স্বষ্ট কোটি মুদ্রা সমভিব্যাহারে লইলেন। যখন তিনি শুনিলেন যে তাঁহার পিতামহের পরলোক হইয়াছে ও পিতৃব্য একাকী রাজ্য ভোগু করিতে প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন তখন পিতাকে সি^হাসনে স্থাপন করিতে দৃঢ়প্রতিচ্চ হই-লেন তিনি প্রথমত আগ্রা অধিকার করিলেন এব

वाकाना इंदेर्ड वार्षिक ब्राज्य बक कार्डी सूना पिली ঘাইতে ছিল তাহা পথিমধ্যে আটক করিলেন অনম্ভর আরঞ্জেবের প্রথম ও দিতীয় পূত্রের সৈন্যেরা আগ্যুর **নিকটে জাজোর বিস্তৃত ভূ**নিতে যুদ্ধকরিল তাহাতে . আজিম সাহ ও তাঁহার দুই পুত্র সম্পূর্ম রূপে পরাজিত হইয়া যুদ্ধকেতে মারা পড়িলেন ঐ বিজয়ী বেহাদর সাহ নাম গ্রহণ করিয়া সি^হাসনে, আরোহণ করিলেন ঐ দিনের বিজয় কেবল আজিম ওযাণের চেষ্টা দারা সম্পন হওয়াতে তাঁহার পারিতোষিকস্বৰূপে পিতা তাঁহাকে পুনর্বার তিন দেশের শুবাদার করিলেন ७व॰ यूत्रिम कृतिथाँ एक वाकानाय नाराव दाथि উপদেশ করিলেন রাজকুমার ভবিষ্যদক্তার সন্তান माय्य पर्भोय पूरे वक्षु पिशत्क **উচ্চ করিতে এই সময়** পাইয়া সায়দ আব্দুল্লা খাঁকে এলাহাবাদের ও সায়দু হস্নিন্থীকে বেহারের শাসন কর্ত্তা করিলেন।

১৭১২ শালে বেহাদর সাহ পঞ্চবৎসর রাজত্ব করিয়া লাহোরে পঞ্চত্ব পাইলেন তাঁহার পুত্রেরা তৎকালে তাঁহার নিকটে তাঁবুতে প্রত্যেকে রাজ্যের নিমিত্তে বাসু হইলেন এবং সহমানে নিশান্তি করিতে অশক্ত হইয়া যুদ্ধের দারা এবিষ্ট্রের সমাধা করিতে স্থির করিলেন যে যুদ্ধ হইল তাহাতে আজিন ওষাণ এক-প্রদে অপরপক্ষে সক্ষা ভ্রাতারা হইলেন এ নদ্ধে

আজিন ওষাণ পরাজিত হইলেন এবং যে হস্তির উপরে তিনি আরু ছিলেন ঐ হস্তা এক কামা-নের গোলায় আহত হইয়া প্রদুর সহিত রাবী নদীতে মশ্ম হওয়াতে উভয়ের প্রাণ নষ্ট হইল। মোই-শউদিন আজিন ওষাণের একপুত্রকে নষ্ট করিয়া জেহান্দর সাহ নাম গুহণ করিয়া দিল্লীর সিংহাসনে উপবিষ্ট হইলেন। বাঙ্কালার ইতিহাস বর্ণনার পূর্কে দিল্লী সংক্রান্ত বিষয় সমাপ্ত করি।

১৭০৭ শালে যখন আজিম ওযাণ পিতার সহিত যুক্ত হইতে এতদ্দেশ পরিত্যাগ করেন তখন আপ-নার পুত্র ফরক্ষরকে অধিকৃতস্বৰূপে বাঙ্গালায় রাখিয়া গিয়াছিলেন ঐরাজকুমার পরবৎসরে মুরসিদাবাদে গিয়া রাজকীয় কম্মে মনোযোগ না করিয়া শুবাদা-রের, সহিত সৌহাদ্যপূর্বক পঞ্চবৎসর বাস করি-লেন পরে ১৭১২ শালে বেহাদর সাহ ও তাঁহার পুত্রের মৃত্যু হইলে ফরকর দিল্লীর রাজ্যপ্রাপ্তি বিষয়ে মুরসিদ কুলিখার সাহায্য প্রার্থনা করিলেন এনবাব তাহা অস্বীকার করিয়া সহজে বাঙ্গালা পরিত্যাগ ক্রিতে পরামর্শ দিলেন ফরক্ষর পাটনায় উপস্থিত হইয়া এক সরাইতে রহিলেন ভাঁহার পিতাহইতে উন্নতি পাইয়াছিলেন যে সায়দ হস্থিন আলি তৎ-কালে তিনি বেহারের শুনাদার ছিলেন ফরকর

সেই পিতার পুত্র হইয়া তাঁহার নিকটে সাহায্য প্রার্থনা করিলেন হিশ্বন আলি জেহান্দর সাহের শক্তিতে ভাতহুইয়া তাহা অস্বাকার করিলেন ফরক্ষর তাঁহাকে অনুসূহ করিয়া একবার দর্শন দিতে প্রার্থনা করাতে তিনি তাহা অস্বীকার করিতে নাপারিয়া ঐসরা-ইতে আসিলেন ফরক্ষর তাঁহাকে এক বিরলগৃহে লইয়া কহিলেন যে লাহোরের যুদ্ধের পরে তাঁহার পিতৃব্য তাঁহার জ্যেষ্ঠ ভ্রাতাকে ও কনিষ্ট ভ্রাতাদিগকে বিনাপরাথে মারিয়াছেন অতএব মৃত্যু কিয়া বন্ধন ব্যতিরেকে ঐ মহারাজ হইতে তাঁহার অন্যকোন আশা নাই। এইকপে রাজ্যপ্রাপ্তির কারণ হাস্তিন • আলির সাহায্য প্রার্থনা করিলেন কিন্তু তাঁহার প্রার্থনা ছার। হ্স্লি:নর মানস ফিরিলনা ইতিমধ্যে কর-ক্ষরের বালিক। কন্যা তিরক্ষরিণীর পশ্চাৎ ুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুু আসিরা তাঁহার পাদে পড়িল এব॰ পিতা ও তাঁহার পরিবারের প্রতি দয়৷ পুর্থেনা করিল এবণ তাঁহার পিতানহের নিকটে যে উন্নতি প্রাপ্ত, হইয়াছেন তাহা স্মরণ করিতে কহিল ৷ এবণ অপর নিবেদন করিন যে তিনি ঐ ভাবিবক্তার সন্তান খাঁহার আছে। আহে যে কদাচ কৃতোপকার ভুর্নিবৈনা অতএব সে আ-জ্ঞায় কিব্ৰপে মনোযোগ নাকরিবেন এই আবেদনকালে আক্রিম ওয়াণের পাত্নী বহিগনিন করিয়া বিনয় করিতে লাগিলেন এব° যবনিকামধ্যে অপর রমণীরা উচ্চৈঃ ষরে ক্রন্দন করিতে লাগিলেন। হস্নিন আলি এই সকল মায়ারোপ করিতে অক্ষম হইয়া কর্করের প্রতি বদন করিয়া কহিলেন আনি জীবন পর্য্যস্ত তোমাকে দিতেপারি অতএব তোমার কর্মে তাহা নিম্ম করিলাম। হস্তিন প্রদিনে তাঁহাকে পাট-নায় লইয়া হিন্দস্থানের মহারাজ বলিয়া ঘোষণা করিলেন আলাহাবাদের শুবাদার সায়দ আবদুল্লা এ বিষয় গুনিয়া চমৎকারজ্ঞানপূর্ত্তক তাঁহার উপকা-রির পুত্র ফরক্ষরের পক্ষে সাহায্য করিতে ভ্রি করিলেন এইৰপে দুইভাই তাঁহাকে সিংহাসনে স্থাপান করিতে সচেষ্টক হইলেন ইতিমধ্যে বাঙ্গালার বার্ষিক কর আলোহাবাদে উপস্থিত অওয়াতে সায়দ আবদুল্লা আটক করিলেন সায়দ ফরক্ষর রাজ্য প্রাপ্ত হইলে অনেক বৃদ্ধির সহিত দিতে স্বীকার করিয়া পাটনাস্থিত বণিক্লোক হইতে বহুধন ঋণকরিলেন এই উপায়নারা তিনি বারাণদীযাত্রা করিলেন এবং তথায় ঐৰপ নিয়মদারা বণিক্লোক হইতে কিয়ৎ মুদ্রা লইলেন অনন্তর নৈন্য বৃদ্ধি করিতে২ আলাহা-বাদে উপস্থিত হ্ইলেন তথায় আবদুল্লার সহিত মিলিত হইয়া দুইভু¦তায় পঞ্বি°্শতি সহসু অখা-ৰাঢ় ও একপ্ৰস্তুত গোলনাজ সংগ্ৰহ করিলেন পরে

১৭১৩ শালের জানুয়ারি মাসে জেহান্দর সাহের ও
ফরক্ষরের সৈনে/রা আগুার নিকটে যুদ্ধআরম্ভ করিল
সমস্ত দিন ব্যাপিয়া যুদ্ধের পর জেহান্দর সাহের
সৈনে/রা সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হওয়াতে কিঞ্চিৎ
পরে তিনি স্বয়্রণ মারা পড়িলেন এবণ ফরক্ষর সুতরাণ
সর্বত্তে মহারাজনপে বিদিত হইলেন মুরসিদ কুলিখার
সহিত যদি বিরোধ করিতে বিশিষ্ট হেন্ত ছিল তথাপি
পূর্ব্ব পুাপ্তকর্মে নিযুক্ত রাখিলেন মুরসিদ পূর্ব্বগত তিন
মহারাজের নিকটে যেরপে বার্ষিক কর পাঠাইয়াছিলেন ইইার নিকটেও সেইনপে পাঠাইলেন ।।

নুরসিদকুলিখাঁ সামুদ্রিক বাণিজ্য দারা বাঙ্গালার অতি উন্নতি দেখিয়া মোগল দিগকে এবং আরবীয় দিগকে ঐ বাণিজ্য করিতে উৎসাহানিত করিলেন এবং ভিন্ন দেশীয় বিশেষত ইংরাজলোক দিগের কারখানা সুরক্ষিত দেখিয়া কর্ষানিত ছিলেন একারণ স্বাজিতে স্থিরতর হইবা মাত্রে ইংরাজেরা রাজকুমার সূজা হইতে ও মহারাজ আরগ্রেব হইতে যে নকল সুযোগ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন তিনি তাহা অমান্য করিয়া এতদেশীয় লোকের ন্যায় শুলক বা পুনঃ২ উপায়ন পুদান করিতে জ্বাজ্ঞা করিলেল এই আপত্তিতে ইংরাজেরা কুদ্ধ হইয়া দুইজন পুধান ভ্তা ও এতদেশীয় কুমন্ত্রণায় পটি আরমানিদেশীয়

খুজা সরহান্দ নামক একজন এবং ভাঁহাদগের চিকিৎসক স্বৰূপ উলিয়ান হানিলটন সাহেব এই চারি জনকে দিল্লীস্থ মহারাজের নিকটে দৌত্যকর্ম করিতে প্রাঠাইলেন তাঁহারা যে সকল উপায়ন দ্রব্য সমভিব্যাহারে লইলেন সে বত্মূল্য এব দুর্লভ তাহার মূল্য পুায় তিনলক মুদ্রা ছিল কিন্তু ঐ আরমানি দেশীয় মহাশয় দিল্লীতে সম্বাদ পাঠাই-লেন যেতাঁহারা দশনক টাকার ত্রব্য লইয়াচলিলেন তাহাতে তাঁহাদের যেতে দেশ দিয়া যাইতে হইবে তত্তৎস্থানের শাসনকর্নিদিগের প্রতি নিজ২ লোক দারা তাঁহাদিগকে নিক্তিরগে পাঠাইতে মহা-রাজ ফরক্ষর আক্সা করিলেন। সায়দ বংশীয় যে দুই ভুতা ফরক্ষরকে সি°হাসনে স্থাপন করিয়া-ছিলেন তাঁহারা তৎকালে রাজসভায় অতি প্রধানপদ-স্তিত ছিলেন কিন্তু মহারাজ তাঁহাদিগ ছারা যাদৃশ উপকৃত হইয়াছেন তাদৃশ সমূম করিতেন না রাজ সভায় খোজা হিনুন্নানক আর একজন মহা-রাজের প্রিয়পাত্র ছিলেন তাঁহাকে মহারাজ খান দৌরান অর্থাৎ অর্থব্যয়ের কত্রিপদে নিযুক্ত করিয়া-ছিলেন ঐ দূতেরা রাজসভায় উপস্থিত হইয়া নিয়সিত মন্ত্রিদিণের নিকটে নিবেদন না করিয়া ঐ মহা-भरमञ्ज निक्रें निर्वित्न कित्रमाहित्तन ॥

যখন ঐ দূতেরা বাজালা ও পশ্চিম দেশ দিয়া অতি প্রাগলভাপূর্কক গমন করিলেন তখন বাঙ্গা-**मात खेवामात्र जाँशमिश्यत भुजि वेर्यानि** इ**रे**लन তাঁহাদের মানস ইণরাজ দিগকে তাঁহার কর্ত্ত হইতে মোচন করিবেন তিনি ইহাজানিয়া ঐ মানস বিফল করিতে পুতিছ্কা করিলেন এবণ যদি এক দৈব ঘটনা না হুইত তবে ঐ পুতিছ্কা সফল করিতেন রাজপুত বংশীয় রাজা অজিত সিংহন্নামক এক হিন্দুরকন্যাকে মহারাজ বিবাহ করিতে সম্মত হই-লেন ঐ কন্যাও দিল্লীতে আনীত হইল ইতিমধ্যে মহারাজের দৃঢ়তর পীড়া হইল কোন বৈদ্যেরাউপ-শন করিতে না পারাতে সুতরাণ বিবাহ তৎক:দো রহিত হইল পরে খোজা হয়িনের পরামশানুসারে ই রাজি চিকিৎসক হামিল্টন সাহেব আহূত হুইয়া মহারাজকে সুস্থ করিলেন তাহাতে মহারাজ চিকিং-সকের ইচ্ছানুসারে পারিতোষিক দিতে স্বীকার করি-লেন ঐ মহাশয় বটন সাহেবের উত্তম রীতির অনু-যায়ী হইয়া যে নিমিত্তে এই দুতেরা আগমন করি-য়াছেন তাহাই মহারাজের নিকটে প্লার্থনা করি-লেন মহারাজ তাহা করিতে স্বীকার করিনেন কিন্তু বিবাহোৎসবে ছয়মাস যাপন হওয়াতে তক্মধ্যে তাহাদের নিবেদনপত্র শুত হইল না। ইপরাজদিগের

প্রার্থনা ছিল যে কলিকাতান্থিত অধ্যক্ষের স্বাক্ষরিত ছাড়পত্তে যে২ দ্রব্য নির্দিষ্ট থাকিবে তাহা এতদে~ শীয় ভৃত্যেরা রোধ বা অনুসন্ধান না করেন এব^ মুর-সিদাবাবস্থিত মুদ্রালয়ে তিন দিন কোঁম্পানির টাকা মুদ্রিত হইবে যেসকল এতদেশীয় বা উইরোপীয় লোকেরা ইপরাজদিগের ঋণী আছেন তাঁহারা কলি-কাতাস্থিত অধ্যক্ষের অধীনতায় আসিবেন এবং কলি-কাতার চন্তর্দিগে অষ্টত্রিশশৎ গ্রাম রানগর ইশরা-জেরা ক্রয় করিতে পারেন। মন্তিরা এই সকল প্রার্থ-**নায় প্রথমত অনেক আপত্তি করিলেন কিন্তু** অব-শেষে সকলি দত্ত হইল ই রাজদিগের আগমন কালে তাঁহারা কথিত হইলেন যে ঐ সনন্দে কেবল উজির স্বাক্ষর করিয়াছেন তাহাতে তাঁহারা পুনঃ২ প্রার্থনা করিলেন যেমহারাজ স্বাক্ষর করেন কিন্তু ঐ বিষয় নিষ্পাত্তির কারণ তাঁহাদিগকে দুইবৎসর অপেকা করিতে হইল এবং যদি সুরতভ্তিই বাজ দিগের অ্ধ্যক্ষ তথাকার কারখানা ত্যাগ ক্রিয়। বোম্বে পলায়ন না করিতেন তবে বোধ হয় ঐ সনন্দে মহারাজের মূদ্রা দুর্লভ হইত । মন্ত্রিরা ঐ বৃত্তান্ত অব-গত হইয়া পুনর্কাপ্প যদি ইপরাজেরা মোগলদিগের জাহাজ ও ভৌর্থযাত্রি দিগকে রোধ করেন একারণ ভৌত হইয়া হরায় সম্পন্ন করিলেন।

ঐ দূতেরা ১৭১৭ শালে সুসিদ্ধ হইয়া প্রত্যাগমন করিনেন মূরসিদকুলিখাঁ। তাঁহাদের সুসিদ্ধিতে জুদ্ধ হ**ইলেন**়। ইণরাজদিগকে যে অষ্টত্রিণশৎগ্রামের অনু**জ্ঞা** দত্ত হইয়াছিল তাহা কলিকাতার দক্ষিণ নদার উভয় তীরে পঞ্জোশ বিস্তৃ ছিল সুতরাণ ইণরাজদিগের ঐনদীর কতৃ বি ও সামুদ্রিক বাণিজ্যে প্রভুষ হইতে পারে মরসিদ ঐসনদের অন্যবিষয় দিতে সমত হই-নেন কিন্তু ভূমি বিষয়ে বাধা করিতে উদ্যত হইয়া সকল জনিদারকে লিখিলেন যে যদি তাঁহারা এক**অঙ্গুলি** ভূমি ইণরাজদিগকে প্রশান করেন তবে যথোচিত मधनाधी इहेरवन अहेक्स्प अमूनाय **आमा विकल**े ছইল কিন্তু অন্যান্য বিষয় যাহা প্ৰাপ্ত<mark>হইল তাহাতেও</mark> বিস্তর উপকার হইল ৷ দুতদিগে<mark>র প্রত্যামনেরপর</mark> এতদেশীয় ও ইউরোপীয় কলিকাতাস্থিত ল্যেকেরা এক প্রকার স্বাধীনতা প্রাপ্ত হুইলেন ঐস্বাধীনতা স্থানা-স্তরস্থিত লোকেরা অক্তাত **ছিলেন চত্তর্দিগ হইতে বণি**-কেরা তথার আসিয়া বাসগৃহ ও দপ্তরখানা নির্মাণ ক্রিলেন অবিলদ্ধে প্রায় তিন লক্ষ মোন জাহাজে বোঝাই হইল এইৰূপে কলিকাতা ভারতবর্ষের নধ্যে হনৎকৃত বাণিজ। স্থান হইল।

১৭১৮ শালে দিল্লী হরাজসভাদারা মুরসিদ কুলিখাঁ। বেহার বাদালা ও উড়িস্যা এই তিন দেশের নাজিয় ওদেওয়ান কৃত হইলেন আকবরের অধিকারের পর সোগল রাজ্যমধ্যে এমত শক্তি কোন ব্যক্তি পুাপ্ত হন নাই। পরবৎসর হতভাগ্য ফরক্ষর কোন নিষ্কর্ব্যক্তি দারা মারাপড়াতে মহম্মদ সাহ মহারাজ হইলেন নূতন মহারাজের রাজ্যপুাপ্তিকালে যেরূপ করিতে হয় নাজিম তদনুরূপ উপায়ন ও বার্ষিক কর পুরেণ করিয়া নিজকর্মে দৃঢ়ীকৃত হইলেন।

তিনি অষ্টাদশ বৎসর পর্য্যন্ত বিনারাধায় বাঙ্গালা শাসন করিয়া রাজস্ব আদায় বিষয়ে উপযুক্তরপো রীতি পরির্ভন করিয়াছিলেন তৎকর্মে নিযুক্ত যে সকল প্রাচীন জাইগিরদার ছিলেন তাঁহাদিগের অধিকাণশকে তিনি পদচ্যুত করিয়াছিলেন তিনি এ-তঁদেশকে ত্রয়োদশ চাকলায় বিভক্ত করিয়াছিলেন তাহার মধ্যে দুই চাক্লা উড়িস্যার অন্তর্গত ছিল এব^ পঞ্চ চাকলা গন্ধার পশ্চিমভাগে অপর ছয় চাকলা পূর্ব্বভাগেছিল এই সকল বৃহৎ অণশমধ্যে কুদ্রহ জমিদারী ভাগ ছিল এই ৰপক্ষুদ্ৰ ও বৃহৎ বিভাগের রাজস্ব আদায় করিতে জনিদার নিযুক্ত করিয়াছিলেন৷ দিনাজপুর নবদ্বীপ রাজসহাই পু্ভৃতি স্থানের হিন্দু রাজা সকল তাঁহার ছরা কৃত হইয়াছেন তাঁহাদিগের পূর্বপুরুষের পুথমত ভিন্ন২ চাকলার পুদেশ হইতে द्वाक्य, जामात्र कतिराज नियक हित्तन शांत करगर

धनवान् ७ मेक्डियान् इहेत्तन व्यवस्थय थे व्यक्षिकात्र পৈতৃক বলিয়া ক্ৰমাগত হইল এইৰপে ১৭২৫ শালে রামজননামক এক ব্রাহ্মণের হস্তে রাজসহাই অপিতি হইল প্রায় ঐসময়ে রামনাথনামক এক কুদ্র কিন্তু ক্ষমতাপন্ন জমিদারের নিকতে দিনাজপুর বিন্যস্ত হইল রঘুরামনামে এক ব্রাহ্মণের নিকটে নবদ্বীপ সন্পিত হইল। বীরভূম ও বস্তুপুরে সেৰপ হইল না সের সাহের মহিত যে পাঠান বংশীয় মুসলমানের! আসিয়াছিলেন ওাঁহাদিগের সন্তান এক জেনের হস্তে বীরভূম নিক্ষিপ্ত হইল •তিনি সরকারে অতি অপ রাজস্ব দিতেন কারণ তথাকার পাশ্চাত্য পর্ব-ভীয় দস্যুদিগকে নিবারণার্থে ভাঁছার একপ্স্তুত টেসন্য রক্ষা করিতে হইল। বসম্ভপুর ক্ষুদ্রপর্কতময় ও ক্লেশজনক স্থান ছিল একারণ যে পরিবারে সহসু বৎসর হইতে অধিক কাল পর্য্যন্ত তৎস্থান শাসন করিয়াছিল তাহাদিগের হস্তেই দত্ত হইল। নবাব পুায়. হিন্দু দিগকে রাজস্ব আদায় করিতে নিযক্ত করিতেন কারণ তাঁহারা সূবোধ ও উত্তম হিনাবী ছিলেন ৷

 এই সকল বিষয় জমিদারদিগের হস্তগত করিব'র পুর্বে তিনি নিজলোকয়িরা উত্তমর্পে অনুসন্ধান করিলেন এবং তাঁহাদিগের বিবরণছারা করের পরি- বর্ত্ত করাতে প্রায় একাদশ লক্ষমূদ্রা অধিক পাই~ লেন। ১৭২২ শালে তাঁহার রাজম্বের খাতাসমাপ্ত হুইল মোগলদিগের এতদেশ জয়ের পর্ঞ খাতা তৃতীয় হইল এবণ তাহাতে এককোটী দ্বিচন্বারিণশৎ **लक अक्षे भोठि मह्मु गूजा निर्फिष्ठ इहेन এ**व॰ मभू-দয় হইতে ত্রয়ন্ত্রিংশংলক্ষ অপেকা কিঞ্চিৎ অধিক রাজকীয় কর্মার্থে অর্থাৎ দেওয়ানী ফৌজদারী ও জলস্থিত সৈন্যরক্ষা <mark>এই সকল বিষ্</mark>য়ে ব্যয় হইত এব॰ যেস্থান হইতে এই ধন উৎপন্ন হইত তাহাকে জাইগিরবলা যাইত। ব্যয়াবশিষ্ট বাঙ্গালরে উৎপত্তি ১০৯৬০০০ মুদ্রা ছিল এবং যে সকল স্থান হইতে এইঅর্থ উৎপন্ন হইত তাহাকে খন্সাবল। যাইত। মুরসিদকুলি খাঁ প্রতিবৎসর এইধন যথাৰূপে দিল্লীস্থ মহারাজের ভাণ্ডারে প্রেরণ করিতেন অতএব যে কেহ মহারাজ হউন তিনি এইতিন প্রদেশের শুবাদার ছিলেন। সমৃদায় নগদ টাকা নিয়ম মতে বৎসর অতীত হইব। মাত্রে দুইশত বা অধিক গো-শকটে নিবিষ্ট করিয়া দবাব স্বয়ণ ও মন্ত্রিরা মুরসিদাবাদ হইতে কিয়দ্র পর্য্যন্ত রক্ষক্ দিগের সহিত যাইতেন পরে একজন নায়েব কোষাধ্যঞ্চের নিকটে অপিত হইত যিনি তিনশত অশাৰ্চ ও পঞ্জত পদাতিকের সহিত फिलीए**ज नरे**या यारेएजन **এ**हेकाला **পঞ্চদশ বৎসর ও**

নয় মাস কালের মধ্যে তিনি যে প্রায় সার্দ্ধ যোড়শ কোটীমুদ্রা লিল্লীতে প্রেরণ করিয়াছিলেন তাহার লিখন অদ্যাপি আছে ।

দেশরক্ষার্থে ও রাজস্ব আদায় করিতে যেসকল বৈন্যছিল। তাহা দুইনহসু অশ্বাক্ত এব॰ চারিসহসু পদাতিক হইতে অধিক নহে তাঁহার পূর্ব নাজিম নিজ রক্ষার্থে তিন সহসু অস্থাকঢ় সৈন্য রাখিয়াছি-লেন কিন্তু তিনি তাহাদিগকে বিদায় করিয়া বৎসরে দশ লক্ষ মুদ্রা রক্ষা করিলেন তিনি সমূদায় হিসাব আপনি দেখিতেন কোন জনক এবিষয়ে বিশ্বাস করি-তেন না। রাজস্বের আদায়ে তিনি অতি কঠিন ছিলেন ঐসকল ক্ষুদ্ৰ বা বৃহৎ রাজ্যা পশে যে সকল জমিদা-রেরা নিযুক্ত ছিলেন ভাঁহারা কেহ এক টাকা ব:কী রাখিতে সমর্থ হইতেন না তাঁহার শক্তিতে সকলে এমত ভীতছিল যে একবার সম্বাদ দিবানাত্রে সান্-দায় বকেযা আদায় হইত যদি কোন হিন্দুলোকেরা শঠতা করিত তিনি তাঁহাদিগকে সপরিবারে মুসল-মান করিতেন এব রাজস্ব আদায় করিতে যেসকল ভ্তোরা নিযুক্ত ছিল তাহারা প্রজারপুতি অতিশয় <u>, কুরতা প্রকাশ করিত কিন্তু ঞ্বিষয়, তাঁহার জ্ঞান</u> পূর্বক ছিল কিনা তাহাতে সন্দেহ হয় যে জমিদার দিগের বকেয়া থাক্নিত তাহাদিগৈর প্রতি নাজিয়

শহন্দনানক একব্যক্তি নানা পুকার ক্লেশ জনক কর্ম করিতেন কিন্তু ক্রু রতা বিষয়ে নবাবের দৌহিত্রী পতি সায়দরেজার্থা সর্বোৎকৃষ্ট ছিলেন তিনি রাজ-ষের আদায় কারণ এক পৃক্ষরিণী খনন করিয়া বিষ্ঠা মূত্র ও নানাপ্রকার অতিদুর্গন্ধ দ্রব্যদারা পরিপূর্ণ করি-লেন যে জনিদার্দিগের কর বাকী থাকিত তাঁহাদের গলায় রজ্জু দিয়া ঐস্থান মধ্যে টানাটানী করিতে আজ্ঞা করিতেন এবং ঐ মহাশয় প্রিহাস পূর্বক তৎস্থানকে বৈকৃষ্ঠ কহিতেন।

মুরসিদকুলিখাঁ। সপ্তাহে দুইদিন বিচার করিতেন তাঁহার বিচার এমত পক্ষপাত বিহান ছিল যে হিন্দু স্থান মধ্যে সৃখ্যাত হইল তিনি একমাত্র জ্রী বিবাহ করিয়াছিলেন এবং কদাচ পুরীমধ্যে যপ্ত রাখেন নাই তিনি সর্বাদা দুর্ভিক্ষ নিবারণে সযত্ন ছিলেন একারণ কদাচ ধান্যাদি স্থানাস্তর করিতে দিতেম না স্থায় মুসলমান শাজে নিপুণ ছিলেন এবং বিদান লোকদিগের উৎসাহ বৃদ্ধি করিতেন তাঁহার স্থভাব সর্বালোকের প্রতি দানশীল ছিল এবং তাঁহার ব্যবহার মঠতাশুন্য ছিল তিনি অতি সামান্য ত্রব্য আহার করিতেন কদাচ সুন্ভোগে রত্ত্ইতেননা কেবল তাঁহার জ্রীবন বিষয়কর্মে সর্বতোভাবে নিমগ্রছিল।

১৭২৪ শালে জীবনের শেয়াবস্থা বুঝিয়া অতি

সুদৃশ্যরপে নিজ গোরস্থান নির্মাণ করিতে আক্স করিলেন। তিনি যে পদ স্বয়° ভোগ করিলেন ঐপদে নিজ দৌহিত্র সর্করাজখাঁকে স্থাপন করিতে যথেষ্ট চেষ্টাকরিলেন কিন্তু ঐ বালকের পিতা সুজাউদ্দিনখাঁ যিনি তৎকালে উড়িস্যার শাসনকর্ত্তা ছিলেন স্বয়ৎ শুবাদারী প্রাপ্ত হইতে শ্বশুরের চেষ্টা বিফল করিতে উদ্যোগ করিলেন তাহাতে তাঁহার পর্যবন্ধু দিল্লী-স্থিত একপ্রধান মন্ত্রী মুরসিদকুলিখাঁর পরলোক হইলে তৎকর্ম তাঁহাকে দিতে মহারাজের আজা করাইয়া ওঁহোর যতু সফল করিলেন ৷ মূরসিদকুলি-খাঁ পরবৎসরে ই৲১৭২৫ শালে লোকাস্তর গত হইলেন .তিনি চ্তুর্বিপশতি বৎসর বাঙ্গালা শাসন করিয়াছিলেন তন্মধ্যে অষ্টাদশবৎসর তাঁহার উপরি কর্তৃত্বকরিবার লোক ছিল না সুজাউদ্দিন নবাবের শারীরিক কু শলসম্বাদ প্রতিদিন প্রাপ্ত হইবার কারণ মুরসিদাবাদে দূত স্থাপন করিয়াছিলেন যখন শুনিলেন তাঁহার ব্যাধি হইতে মুক্ত হইবার আর সম্ভাবনানাই তৎকালে তিনি মুরসিদাবাদে আসিতে যাত্রাকরিলেন এবং পথিমধ্যে ৰবাবের মৃত্যু সম্বাদ ও <mark>মহারাজ হইতে তৎকর্মে</mark> ,নিযোগ পত্র পাইয়া তরাপুর্কক মুরসিদাবাদে আসিয়া দেখিলেন যে তাঁহার পুত্র এ গদী অধি-কার করিতে প্রস্তুত হইয়াছেন কিন্তু যখন ঐ

ধালক জানিলেন যে তাঁহার পিতা দিল্লীস্থ রাজসভার
সাহায্য প্রাপ্ত হইয়াছেন তখন বিবেচনা পূর্মক ঐ ইচ্ছা
পরিত্যাগ করিলেন সুজা উদ্দিন সুতরাণ ১৭২৫ শালে
বাঙ্গালার নাজিম ও দেওয়ান হইলেন। মুরসিদ কুলিখাঁ।
যদিও ইণরাজদিগের প্রতি ঈর্যানিত ছিলেন ও তাঁহা
দিগের বাঞ্চার ব্যাঘাত সর্মদা করিতেন তথাপি
তাঁহারা কোর্ট আব ভিরেকটরের প্রতি যে প্র
লিখিয়াছেন, তাহারারা বোধহইতেছে যে তাঁহারা
ভাঁহার মৃত্যুতে অতি দুঃ খিত হইয়াছিলেন।।

সগুম অধ্যয়।

সূজাউদিন তুরকীয় খোরাসান বংশোদ্রব ছিলেন তাঁহার জন্ম ভূমি দেকান দেশান্তর্গত বুরহান পূরছিল তিনি বাল্যকালে মুরসিদ কুলিখাঁর সহিত সৌহার্দ্য করিয়া তাঁহার কন্যাকে বিবাহ করিলেন যখন মুরসিদ বাঙ্গালার দেওয়ান হইলেন তখন জানতাকে উড়িস্যায় নায়েব পাঠাইলেন অনন্তর মিরজা মুরসিদ নামক এক জন সূজার কুটুম হাজি আহম্মদ ও মিরজা মহাম্মদ আলি এই দৃই পুত্রকে সূজার নিকটে রাখিলেন তাঁহারা দৃই ভূতা বিশেষত মিরজামহম্মদ্যালি বাঙ্গালার ইতিহাস মধ্যে অতি সুখাত হইলেন ঐ ব্যক্তি মুরসিদ কুলি খাঁর মৃত্যুর পরে পঞ্চদশ বৎসর পর্যান্ত আলি বিদ্ গাঁনা সূহ্ণ করিয়া রাজকীয় শক্তি প্রাপ্ত হইয়াছিলেন

তাঁহারা দুই ভ্রাতাসরকারি কর্মে নিযুক্ত হইয়া মকীয় ক্ষমতাপ্রযুক্ত সূজার নিয়ম সকল সর্বজন মনোনীত করিতেন।

মোগল রাজ্যের নিয়ম ছিল যে সরকারের কোন লোক যাবদ্ধন সঞ্চয় করিবেন তাঁহার মুত্যু হইলে সমুদায় মহারাজগামি হইবে অতএব সুজা মৃতগুৰাদার তাঁহার শ্বশুর যাবৎসম্পত্তি রাখিয়া ছিলেন সম্দায় গুহণকরিয়া একষষ্ঠি লক্ষমুদ্রা দিল্লীতে প্রেরণ করিলেন বে†ধ হয় ততুল্যধন আপনি ও রাখিলেন এইবৃহ্থ উপায়নদারা মহারাজ তাঁহার শুবাদারী কর্ম দৃঢ়তর করিলেন কিন্তু বেহারদেশে , অপর একজন শুবাদার করিলেন । সুজা নিজপুঞ সর্ফরাজর্থাকে বাঙ্গালার দেওয়ান করিলেন এবং রায় আলমচাঁদনামক একহিন্দুকে রায়রায়াদ উপাধি দিয়া তাঁহার নায়েব করিলেন অনন্তর সমুদায় ভাবিশ্যক কার্য্য বিবেচনা করিবার কারণ এক সভা স্থাপন করিলেন তাহাতে হাজিআহমদ নিরজা মহামদ আলি আলমচাঁদ এব মহারাজের বণিক্ জগৎ সেট এই কয়েক জন ছিলেন। তিনি দয়াপূর্মক রাজত্ব ় করিতে আরাম্ভকরিলেন তাঁহার- পূর্ব্বগত গুবাদার যে সকল জমিদার দিগকে বাকী প্রযুক্ত বন্ধ রাখিয়া-ছিলেন তিনি তাঁহাদিগকে মুক্ত করিলেন। এইরপ নম

স্বভাব থাকিলেও তিনি প্রথম বৎ সরে বাঙ্কালার ও উড়িস্যার রাজস্বহইতে এককোটা অষ্টাধিক চত্বারি \-শৎলক্ষ মুদ্রা দিল্লীতে প্রেরণ করিতে সমর্থ হইলেন কিন্তু উহার মধ্যে তাঁহার শ্বশৃরের ধন অবশ্যই ছিল।

मूर्निए म मृज्य वक वर्मत शास ११२७ माल বিচারার্থে মাদ্রাজে যে ৰূপ নগরাধ্যক্ষের বিচারস্থান ছিল সেই ৰূপ কলিকাতায় হইল তাহাতে ইণরাজ জাতীয় একজন নগরাধ।ক ও কতিপয় মণ্ডল ছিলেন। যৎকালে ঐ ৰূপ ধর্মাধিকরণ মাদাজে স্থাপিত হয় তৎকালে কোর্ট আব ডিরেকট্টর দিগের ইচ্ছা ছিল যে কতিপয় তদেশীয় ও পোর্ভগিস এব^ আরমেনিয়ানেরা তাহাতে নিযুক্ত থাকেন কিন্তু তাঁহারা সকলেই ঐ কর্ম অস্বীকার করিলেন। এব॰ কলিকাতান্ত ঐ অধিক রণের বিষয়ে তাঁহারা যে২ উপদেশ করিয়াছিলেন তাহার মধ্যে আছি করিলেন যে উহার আড়ম্বরী সহজ **क(প) স°क्छ इहेर्द नडुद। अधिक दिल इ इहेरल** यथार्थ বিচারেও ঘূণা হইবে ॥

সূজাউদিন মুরসিদের ন্যায় পরিমিতাচার ত্যাগ করিলেন তিনি অতি আড়ম্বরীতে ওসুভোগেরত ছিলেন মুরসিদ কুলিখার পুরী অতিক্ষুদ্র বোধ করিয়া তিনি এক নুতন উজ্জল পুরী নির্মাণ করিলেন এবং তুলারপে অখারা ও পদাতিক সৈন্য পঞ্চ সহসু হইতে পঞ্চ বিশ্শতি সহসু করিলেন কিন্তু তথাপি তাঁহার শাসন

। প্রথমত এনত বিবেচনাপূর্ত্তক ও ধার ছিল যে সকল
লোক কহিতেন যে তাঁহার সৌভাগ্য উপযুক্ত বটে ।

তাঁহার পদপ্রাপ্তির দুই বৎসর পরে বেহারের শুবাদার দোষী হওয়াতে পদচ্যুত হইলেন এব ১ ঐ শুবা পুনর্বার বাঙ্কালার সহিত মিলিত হইল সূজ। উদ্দিন নিজপুত্র সর্ফরাজ খাঁকে ঐ শুবায় নিযুক্ত করিতে ইচ্ছুক ছিলেন ,কিন্তু তাঁহার পত্নী পুত্রকে বিদেশে পাঠাইতে অস্বাকার করাতে মিরজা মহামদ আলি তথায় পুেরিত হইলেন স্বালিবর্দির্থা নামে তিনি _সুবিদিত ছিলেন এব•৲ তৎ সভায় তাঁহার ত্তল্য,ক্ষমতাপন্ন জন কেহ ছিলেন না তিনি তদবধি ১৭৪০ শাল পর্য্যস্ত একাদশ বৎসর ক্রমিক বেহার শাসন করিলেন। প্রথমত পাটনায় আসিয়া দেখিলেন রাজকীয় কর্ম সকলি নিয়ম শূন্য হইয়াছে জমিদারেরা অবাধ্য হইয়াছেন ও চত্তর্দিগে দস্যুরা দেশ লুটকরিতেছে অত এব অতিসাহসী আবদুল করিমখাঁর অধীনে এক পুস্তুত পাঠান সৈন্য সংগুহ করিলেন পরে তাহাদের সাহায়্য দারা ও যে সৈন্য তিনি **অানিয়াছিলেন** ত্বাহাদের সাহায্য দারা দেশের সুনিয়ম করিলেন তিনি জনিদার দিগ হইতে অধিক মুদ্রা আদায় করিয়া সৈন্য বৃদ্ধি করিলেন পরে যখন সম্পূর্ণকপে চেষ্টা সিদ্ধি হইল

তথন আবদুল করিমথাঁর অতিশয় অহঙ্কার হওয়াতে তাঁহার প্রাণদণ্ড করিলেন এবং কথিত আছে যে এই কর্মবারা অবাধ্য ব্যক্তিরা ভীত হওয়াতে তাঁহার শক্তি দৃঢ়তর হইল ৷

श्राप्त वह नमरत्र व्याष्ट्रियात मध्य निमत्रनश्च निवानि কতিপয় বণিক্ লোকেরা পূর্বদেশে বাণিজ্য করিতে ইচ্ছুক হইয়া আন্তেন্দদেশে ইষ্টইণ্ডিয়া কোম্পানি স্থাপনাকরিতে জর্মনিস্থিত মহারাজ হইতে আজ্ঞা পাইলেন তাঁহারা বাঙ্গালায় অনেক জাহাজ প্রেরণ ক্রিয়া বহুলাভজনক বাণিজ্য আরম্ভ ক্রিলেন কিন্তু তাহাতে ইণরাজেরাও ওলন্দাজেরা হিণসক হইয়া এতদেশ হইতে তাঁহাদের মূলোৎ পাটন করিতে চেষ্টায় 'রত হইলেন ঐ নূতন বণিকেরা চন্দুনগরের বিপ-রীত পারে বাঁকী বাজার নামক এক স্থানে দুর্গ করি-লেন পরে ১৭৩৩ শালে তাঁহারা বাঙ্গালা হইতে তাড়িত হইলেন এবং তাঁহাদের দুর্গভগ্ন হইয়া সম-ভূমি হইল।

সুজা উদ্দিন মুরসিদ কুলিনামক জামাতাকে ঢাকা
অঞ্চলের নায়েব নাজিম করিলেন তিনিও মীরহুবীব
নামক একজনকে নিজ দেওয়ান করিলেন ঐজন
পারসীকের অন্তর্গত সেরাজ দেশে জাত এব হগলিতে দালালীকর্ম করিতেন তিনি লিখিতে বা পড়িতে

कानिजन ना किन्न उँ ८क्षे वृक्तिकी विलन यथन •তিনি ঢাকায় নিযুক্ত ছিলেন তৎকালে ত্রিপুরার ৰাধীন রাজার ভাতৃপুত্র পিত্বোর সহিত বিরোধ করিয়া একজন মুসলমান জনীদারের নিকটে আশ্রয় नहरनम अ अभिमात छै। शास्त्र भीत श्वीदात निकरि সোপরোধ করিলেন তাহাতে দেওয়ান ত্রিপুরা জয় করিতে উত্তম অবসর বুঝিয়া এক প্রস্তুত সৈন্যের সহিত বুদ্ধপুত্র নদ পার হইয়া রাজ। সতর্ক হইবার शृर्ट्स थेरमरम थरवम कतिलान त्राजा गूजता भर्स्स ज মধে। পালাইন করিলেন মীরছ্বীব তাঁহার ভাুত্-পুত্রকে ঐসিশ্হাসনে স্থাপিত করিয়া তথাকার রাজ-ষের অধিকাণশ বাঙ্গালার শুবাদারকে দিতে প্রবৃত্ত कतिलन अताका अञिপूर्वकानाविध बाधीन इहेबा-ছিল কিন্তু তদবধি মুসলমান রাজ্যে যুক্ত হইল পর বং-नत मूत्रनिष्कु नि উড়ি गात नार्यं खनापात इंदेंश শীরত্বীব দেওয়ানকে সমভিব্যাহারে লইলেন ভাঁহার নিয়মদারা তদেশের বায় হাুসওরাজ**য**়ব্দি **হই**ল এতৎ পূর্বগুবাদারের অধিকার কালে ক্র্দার রাজার অপকার করাতে তিনি জগনাথ বিগুহ,লইয়া উড়ি-স্থার সীমা তিল্ক দীঘী পারে গিয়াছিলেন তাহাতে তীর্থ যাত্রিকেরা যে প্রায় নয় লক্ষ্মুদ্রা কর দিতেন তাহা রহিত হওয়াতে রাজ্যের নূ/নতা ইইন মুরসিদকুলি

ও তাঁহার দেওয়ান প্রথমতঃ উড়িস্যায় গিয়া রাজা হইতে ঐ বিগুহ আনিয়া পুরীতে স্থাপন করিলেন তাহাতে তার্থ যাত্রিকেরা পূর্মবৎ তথায় আসাতে ঐ কর উৎপন্ন হইল।

मूর्निদ কুলির উড়িস্যায় পরিবর্ত্তকালে সুজাউদিন তাঁহার পুত্র সর্করাজখাঁকে গালিবআলি নাম দিয়া চাকার নায়েব করিলেন এবং জস্বস্তরায়কে তদ্দে-শের দেওয়ান করিলেন ঐ ক্ষমতাপন মহাশয় পূর্ব নাজিম মুরসিদকুলিখার নিকটে থাকিয়া তভ্লা দয়ালু দানশীল ও কম্মে মনোযোগী হইয়াছিলেন তিনি সকল দোষ নিবারণ করিলেন এব^ তাঁহার নৈপুণা দারা ঐ দেশ ধনযুক্ত ও উজ্জ্ল হইল এব॰ অপক্ষ-পাতে বিচার হওয়াতে জস্বস্তরায়ের ও তাঁহার প্রভুর চরিত্র সমুদায় দেশে সুখ্যাত হইল।ইহাপুর্বে উক্ত আছে যে যখন সাইস্তথাঁ ঢাকায় পাকিয়া বাজালা শাসন করিয়াছিলেন তৎকালে ঢাকায় অষ্টমন চাউল করিয়া চিরস্মরণাথে নগরে দার নির্মাণ করিয়া তাহাতে লিখিয়াছিলেন যে এতদপেকা চাউলের ন্যুনমূল্য না করিয়া কোন ব্যাক্তি দার খুলিবে না জস্বন্ত রায় তাহা করিয়া সর্ক্ত সাধারণের প্রতি ঐ দার খুলিতে আজ্ঞাকবি लन। जन छत्र श्वापात मूर्का छिप्तिन वार्षाका श्रयक কর্মে অধিক মনো্যোগদিতে অক্ষম হওয়াতে তাঁহার

পুত্র সর্করাজ অধিক মনোযোগ করিতে লাগিলেন , তিনি অধিকবিবেচনা নাকরিয়াগালিব আলিকে ঢাকা-হইতে আহ্বান করিয়া মরদআলি নামে এক জন বালক কুটস্বকে তৎকর্মে প্রেরণ করিলেন ঐ মরদক্ষালি রাজ বল্লভকে সহিত লইয়া নিজ পেসকার করিলেন তাঁহারা অতিশয় দৌরাত্ম্য করাতে জস্বস্তরায় ঘৃণা পূর্মক তৎ কর্ম পরিত্যাগ করিয়া মুরসিদাবাদে আসিলেন। মরদ আলির ও রাজব্লভের দমনাভবি হওয়াতে তাঁহারা শানাপ্রকার দৌরাস্ব্য করিয়া দেশের দুর্দশাকরিলেন। मूका डेफ्टिन द्वाकाकात्न जिल्लामा वर्षा । है॰ त्राक कत्रांत्रि ও उनमार्कित्रां निर्वित्रार्ध रह्धन উপাৰ্জ্জন করিলেন তাঁহারা মহারাজ হইতে ও পূর্ব গত গুবাদার হইতে যে ক্ষমতা প্রাপ্ত হইয়াছিলেন, তিনি তাহাতে কোনবাধা করেন নাই কেবল এক বিবাদ ঘটিয়াছিল যে ভ্গলির কৌজদার ইপরাজ দিগের একথান রেসমের নৌকা আটক করাতে তাঁহার৷ কিয়ৎ পদাতিক প্রেরণ করিয়া তাহা উদ্ধার क्रितिन बहे विषय श्वरामात्रव निकटि महर অপকার বলিয়া নিবেদন করাতে কলিকাতায় ও অন্যান্য কার্থানায় এতদেশীয় য়ে সর্কল লোকেরা খাদ্য দ্রব্য আহরণ করিত তিনি তাহাদিগকে তৎকর্মে নিষেধ করিলেন ইণরাজদিগের সতরাণ

অংথিক মুদ্রা দান করিয়া তাঁহার ক্রোথ নিবারণ করিতে হইল। ঐ সময়ে ই রাজদিগের বাণিজ্যের অতিশয় বৃদ্ধিহইন কিন্তু উত্তমৰূপে নিৰ্বাহ না করাতে বৎসরে শতকরা অষ্ট মুদ্রা লভ্য হইল কিন্তু ত্তলন্দাঞ্চ দিগের শতকরা পঞ্জিশতি মুদ্রা লভ্য হইল কোম্পানির অধ্যক্ষেরা নিজ২ বাণিজ্যে এমত রত ছিলেন যে তাঁহাদের প্রভুর লভ্য বিষয়ে কিঞ্মাত্র মনোযোগ করিতে পারিতেন না কলিকাতান্থিত প্রধান অধ্যক্ষদিগের মাসিক বেতন তিনশত টাকার অধিক ছিন নাকিন্তু তথাপি তাঁহারা অতিশয় সুহভাগে নিরত *ছিলেন* তাঁহাদের নিজ বাণিজ্যের লভ্য হইতে ঐবিষয়ের ৰিপত্তি হইত **ন**ৰ্নপুধান ও অনেক তাঁহার অধীন *র*্যক্তিরাও ছয়**অখের শকটে আ**রোহণ করিতেন এবং তাঁহাদের ভোজন কালে নানাবিধ বাদ্য হইত অত্ঞৰ কেটি আৰ্ডি:রকটর দিগের ঐসকল ভূত্য দিগের পুতি তদবস্থায় থাকাপুথুক্ত তিরকার করিয়া লিখিতে হইন। ১৭৩০ শালহইতে ১৭৪২ শালপৰ্য্যন্ত চন্দ্রনগরে করাসি দিগের কারখানার অধ্যক্ষ ডপলি-ক্ন ছিলেন পূর্ণত অধাক সকল অপেকা তিনি অতি গ ৷ বিষয় বৃদ্ধি করিয়া ছিলেন ঐঅধ্যক্ষতা প্রাপ্তির পুরের তিনি স্বয় মহু বণিক্ হিলেন এবং আপনার সাহস্বারা বাণিজ্য বৃদ্ধি করিয়াছিলেন এবং প্রায়

দাদশ নিজ জাহাজ দারা ভারতবর্ষের নানাস্থানে বাণিজ্য করিতেন তাঁহার অধ্যক্ষতা কালে চন্দু নগরে দুই সহসূ ইষ্টকানয় নির্নিত হয় এবং বাঙ্গা-লার করাসিদিগের অতিশায় প্রভুষ বৃদ্ধি হয়।।

১৭৩২ শালের ১১ আক্টোবর রাত্রিফানে ভাগীর-থীর মূথ অঞ্চলে অতিশয় ঝড় হয় নদীর শতকোশ পৰ্য্যন্ত বিৰক্ষণ অন্ভৰ হইয়াছিৰতাহাতে কলিকা-তাস্থ লোকদিণের অসম্ভব ক্লেশ ভোগ করিতে হইল এব॰ তৎকালে দৃঢ়তর ভূকম্প হইবাতে ঐ নগরের অপরিনিত হানি হইল দুইশত গৃহ নষ্ট হইয়াছিল ও অতি চনৎকৃতগিরিজার চূড়া ভথ না হইয়া ভূমিমধ্যে মথ ্ছইল। জাহাজ সূল্প ও নৌকা সমুদায়ে প্রায় বি॰ শতি সহসু নষ্ট হইল নদীব্তিত নয়খান ই∿রাজদিগের,জাহ্⊦-জের মধ্যে অষ্টথান নাবিক লোকের সহিত নষ্ট হইল দুইনহনুখনি নৌকা সকল বৃক্ষোপরি উৎক্রিপ্ত ইইল এব পদী হইতে এক কোশ পর্যান্ত দূরে কিন্ত হইয়া ছিল প্রায় তিন লক্ষপ্রাণী নউ হইল নদীর জল স্বাভাবিক অবস্থা হইতে ষড্বি॰শিঙি হস্ত উচ্চ হইয়াছিল এই पूर्धराज्ञाताच्छत भारत्य श्राप्त जननुक्ष प्रजिक इहेन তাহাতে কলিকাতাস্থিত শাসন কৰ্ত্ৰা অতি উদ্যক্ত হইয়া विज्ञानिक निक्ष विज्ञानिक লেন তাহাদের রাজস্ব ক্ষমা করিলেন ভাবিকমের আশার অণ্ডে ধন প্রদান করিলেন চাউলের মাসূল নিবৃত্ত করিলেন এব সরকারি ধন হইতে অনেক খাদ্য দ্রব্য ক্রয় করিয়াদীনদিগকে বিতরণ করিলেন।

সুজাউদ্দিন চন্তদ্রশাবৎসর পর্য্যস্ত রাজত্ব করিলেন बे कान अञ्जिमोजागा युक्त हिन जिनि यथार्थ विठात उ দয়া ওদাতৃত্বের মূর্ত্তি স্বৰূপে বর্ণিত আছেন।যে সকল ৰ্যক্তিদিগের অপকার করিয়াছেন এমত বৃঝিলেন তিনি মৃত্যুর পুর্ব্বে তাহাদিগছইতে ক্ষমা প্রার্থনা করি-লেন তিনি নিয়মানুসারে এক কোটি হইতেও অধিক মুদ্র। দির্ল্লাতে পাঠাইতেন একারণ কর্মে স্থিরতর ছিলেন তিনি আপনার শেষাবস্থা দেখিয়া নিজপুত্র সর্ফরাজ খাঁকে আন্থান করিয়া প্রতিক্তা করাইলেন *থে* তিনি হাজি আহমদ ও জগত্সেট ও রায়রায়ান এই কয়েক ব্যক্তির পরামর্শ শুনিবেন। অনন্তর রাজত্বকর্মে নিথুক্ত করিলেন ৷ মোগল দিগের এতদ্দেশ ক্রয়ের পর প্রথমত ঐ শুবাদার নিজ উত্তরাধিকারী স্থির করি-লেন ঐ সময়ে পারসীকদেশীয় নাদির সাহ ভারতবর্ষ আক্রমণ করাতে সমুদায় মোগলরাজ্য স্বসূলে কম্পিত হইল অতথব মহারাজ গৃহকর্মে অতিশয় বাগু হইয়া দুর দেশীয় কর্মে মনোযোগ করিতে অক্ষম হইলেন ১৭৩৯ শালে সুজাউদিন লোকান্তর গতহইলেন ॥

সর্করাজখাঁ বিনা ৰাধায় সিংহাসনে উপবিষ্ট

স্ইয়া স্বপদের দৃঢ়তা প্রার্থনায় দিল্লীতে দূত প্রেরণ করিলেন অৎকালে নাদিরসাহ ঐ হতভাগ্য নগর জয়করিয়া অবশিষ্ট রাজস্ব প্রার্থনায় বাঙ্গালাতে পত্র পাঠাইলেন সর্ফরাজর্থা সুজাউদ্দিনের নামের পত্র পাইয়া রাজকর পাঠাইলেন ও ঐ বিজয়ির নামে মুদ্রা মুদ্রিত করিতে আজ্ঞাকরিলেন তাঁহার পিতা যে রায় আলমটাদ ও জগৎ সেট ওহাজি আহম্মদ এই মন্ত্রিদিগকে সোপরোধ করিয়াছিলেন তিনি তাঁহাদের রাখিয়া ছিলেন কিন্তু স্বয়^ বিষয় কর্ম অপেকা সাধনায় অধিক রত ছিলেন হাজি আহাম্মদের ভ্রাতা আলিবদিথি তৎকালে বেহারের শুবাদার ছিলেন ূঁএব^ এ তিন দেশে তাঁহার ভ্রন্যশক্তিমান্লোক কেছ ছিল না দুর্ভাগ্য প্রযুক্ত বাঙ্কালার শুবাদার হাজি আহ্-ঋদের পরিবারের বিদেষী তিন চারি ভদ্রলোককে বিশ্বাস করিলেন তাঁহারা তৎপরিবারের বিদ্রোহার্থে কুমন্ত্রণাদারা প্রভূকে ক্রুদ্ধ করিলেন পরে ঐ শুবাদারের ব্যবহারদারা আলি বর্দ্দি ও তাঁহার পরিবারেরা স্পষ্ট-ৰূপে দেখিলেন যে তাঁহারা আর তাঁহার কৃপা প্রাপ্ত হই-বেন না অনন্তর সর্করাজর্থী অবিলম্বে হাজিকে বিরক্ত করিতে আরম্ভ করাতে তিনি নিয়মপূর্ব্বক পাটনায় ভ্ৰাতার নিকটে সমুদায় স্বস্থাদ পাঠাইলেন এবণ জগৎ-সেটও তাঁহাহইতে স্বতন্ত্র হইলেন কারণ সর্করাজখাঁ

কাম্কতা প্রযুক্ত একদিন জগৎসেটের পরম সুন্দরী পুত্র বধুকে দেখিতে প্রতিজ্ঞা করিয়াছিকেন এইৰূপে ঐ পরাক্রমশালি পরিবারের সকলেই ভাঁহার রাজছের বিপক্ষ হইলেন এব তৎকালেই তিনি হাজিআহম্মদের পরিবারমধ্যে এক বিবাহ ভঙ্ক করিয়া ঐ কন্যাকে নিজপুত্রের সহিত বিবাহ দিতে চেষ্টা করিলেন অনন্তর তাঁহাকে রাজ্যচূ্যত করিতে ষড়যন্ত্র इहेन जानिवर्षिया एरियलन य यावर नत्कतालया রাজত্ব করিবেন তাবৎ তাঁহার পরিবারের পক্ষে রক্ষা নাই অতএব তৎপদ স্বয়ণ প্রাপ্তক্ইবার কারণ দিল্লীতে সুযোগ করিতে লাগিলেন তিনি সর্করাজখার সমুদায় সম্পত্তি ও বার্ষিক কর হইতে অধিক কোটি মুদ্রা প্রেরণ করিতে স্বীকার করিলেন নাদিরসাহ ভারতবর্ষ হইতে গমন করিলে দশনাস পরে তথা সূজাউদ্দিনের মৃত্যর ত্রয়োদশ মাস পরে তিনি মহারাজ হইতে সনন্দ পাইলেন পরে ভোজপ্রে যুদ্ধছলে বৈন্য সংগ্ৰহ করিলেন অনন্তর পদাতিকেরা কিয়দূর গমন করিলে তিনি সেনাপতিদিগকে একত্র আহ্বান করিয়া সুসলমান দিগকে কোরাণস্পার্শ পূর্বক ও হিন্দু দিগকে ग्रह्माकन अर्म शूर्यक माराथ कड़ाइतन त्य ভাঁহার৷ অন্তিমকাল পর্যন্ত ধনেপ্রাণে ভাঁহার পক্ষে থাকিবেন এইৰূপ দিব্যু নিষ্পন্ন হইলে তিনি কহিলেন যে

তাঁহার পরিবারের প্রতি যে অপকার কৃত হইয়াছে তাহার প্রভাপকারার্থে তিনি মুরসিদাবাদে গমন ক্রিবেন তৎক্ষণাৎ সৈন্যদিগকে বাঙ্গানায় গমন করিতে আছে৷ হইন আলি বর্দি তৎসময়ে শুবা-দারের নিকটে পত্র পাঠাইলেন যে তাঁহার পরিবার যে কয়েক জনের অপনান হইয়াছে তাঁহাদের স্থানা-ন্তর করিতে তিনি আসিতেছেন কিন্তু তথাপি তাঁহার আক্রাবহ প্রজাই আছেন আলিবর্দি তাঁহার সহিত যুদ্ধার্থে আসিতেছেন এই সম্বাদ শুনিয়া সরকরাজ চমৎকৃত হইলেন এবণ অতিবিলম্বে তাঁহার সৈন্যেরা একত্র হইয়া রাজধানী ছইতে অনতিদূর জরিয়াতে য়াত্রাকরিল তাঁহার বিপক্ষ যত অগুসর হইতেছিলেন তত পুরঃ২ লিথিতেলাগিলেন যে যদি তিনি চারিপাঁচ প্রিয়লোক ত্যাগকরেন তবে তিনি তাঁহার অতিবশীভূত প্রজা থাকিবেন কিন্তু যখন অস্ত্রধারি প্রজার আজ রাজাকে শুনিতে হয় তথন রাজ্য ত্যাগ করিতে হয় যদি তাঁহার নূতন বক্র। মৃত্যুভয়ে বিপরীত পরামর্শ **না দিতেন তবে সরকরাজ এমত দ্র্বল ছিলেন যে তিনি** ঐ বিদ্যোহাসেরির আজ্ঞা শুনিতেন অনন্তর উভয় পক্ষীয় সৈন্যেরা পরস্পার দৃষ্টিগোচের হইবামাত্রে এক ভয়ানক যৃদ্ধ করিলেন দৈবাৎ এক বন্দ্কের গুলিদারা প্র্ফরাজ যুদ্ধকেত্রে মারা পড়াতে তাঁহার সৈন্যেরা

প্রায়ন করিল আলিবন্দি ক্রমে২ মুরসিদাবাদে আসিয়া তাঁহার প্রমোপকারির সি৲হাসনে আরোইণ করিলেন ঐজরিয়ার যুদ্ধ ১৭৪১ শালে জানুয়ারিমাসে হইয়াছিল ৷৷ অষ্টমঅধ্যায় ৷

আলিবদিখা যথন বাজালা বেহার ও উড়িস্যা **এই তিনদেশের শুবাদার হুইলেন তথন পঞ্** যৰ্ষ্টি বর্ষ বয়ক্ষ ছিলেন তিনি মহারাজের বাঙ্গালার রাজত্ব পাইলেন ইহা কেবল নামমাত্র কিন্তু নিজ অন্তবলদারা যথার্থকপে পাইলেন ৷ নদিরসাহের আক্রমণদার। মহারাজ্য এমত নষ্ট হইয়াছিল যে তৎকালে দিল্লীস্থ সি^হাসনে ছিলেন যে দুৰ্বল মহাস্মদ সাহ তিনি যদি অপর গুবাদার নিযুক্ত করিতে ইচ্ছা করিতেন তথাপি তাঁহার সেৰপ করিতে উপায় ছিল না সে যাহা হউক বাস্থালার পরম সৌভাগ্য ছিল যে এমত मक मन्या नर्जाक्षाक इहेरतन जिनि युक्त उनकि अहै উভয়রাজকর্মে বিশশতি বর্ষ অপেক্ষা অধিক কাল নিযুক্তছিলেন এব শস্ত্রণায় ও যুদ্ধশক্তিতে ভল্যুক্পো পারগ ছিলেন আমরা এক্ষণে যেসকল দুঃখদায়ক সময়ের বর্ণনা করিব তাহাতে তদ্রপ মনুষ্যেরি আবশ্যক হয়।

তিনি মুরসিঁদাবাদে আসিয়া সরফরাজখাঁর পরিবার, ও অনুগত লোকদিগকে প্রাণে আঘাত নাকরিয়া অতিশয় সুেহ করিতে লাগিলেন। মুরসিদক্লিখাঁ।

বিবেচনা করিয়াছিলেন যে তাঁহার মরণোভর মুদ্রা রত্নও অপার অস্থাবর ধন মহারাজ গুহুণ করিবেন একারণ নিজ পরিবারের উপকারার্থে কিয়ৎ স্থাবর ক্রুয় করিয়া স্থনামে লিখিয়া রাখিলেন ভাঁহার মর-োত্তর যথন যাবৎ সম্পত্তি দিল্লীতে প্রেরিত হইন তখন ঐ সকল স্থাবর তাঁহার জামাতার অধিকারে ছিল তাঁহার লোকাস্তর হইলে তৎপত্নী সর্ফরাজের মাতা প্রাপ্ত হইলেন আলিবনি । ঐ धत তাঁহার সম্পূর্ণ অধিকারণ রখিয়াছিলেন এবং তাঁহাকে এমত সমুম করিতেন যে কদাচ অনুজ্ঞাব্যতিরেকে তাঁহার সম্বাধ ুবসিতেন না এইৰূপা সুবোষপুর্ব্বক ব্যবহার করিয়া শত্র দিগের সাস্ত্রনা করিয়াছিলেন। এবং যে এক কোটি দিল্লীতে পাঠাইতে স্বীকার করিয়াছিলের তৎসমেত কিয়ৎ উপায়ন ও সর্করাজখার সম্পত্তির কিয়দ°শ প্রেরণ করিলেন এইনপে মহারাজকেশ্বপক্ষে রাখিলেন তাঁহার নিজ পুত্র ছিলনা নিজ ভ্রাতা, ছাজি আহমদের তিন পুত্রের সহিত তিন দুহিতার বিবাহ দিয়াছিলেন তাঁহাদিগের জে/ৡনয়াইস মহাব্দ ঢাকার অধ্যক্ষ হইলেনও কনিষ্ঠ জিনউদিন বেহারের .শুবাদার হইলেন তাঁহার পুত্রকে আলিবদি নিজ উত্ত-রাধিকারিত্র রূপে পোষ্ঠপেত্র করিয়া সেরাজ উদ্দৌলা

দাম দিলেন এব॰ মধ্যমকে উড়িস্যা জয় ছইলে তথা-কার শুবাদারী দিতে স্বীকার করিলেন ।

সুজাউদিন তাঁহার জামাতা মুরসিদকুলির হস্তে উড়িস্যা নিঃক্ষেপ করিয়াছিলেন তাঁহার সহিত মীরহুবীব নামক দক্ষ মন্ত্রী ছিলেন। তিনি আলিবদির পরম সৌভাগ্য হওয়াতে অধীন হইতে চেষ্ঠিত ছিলেন কিন্তু তাঁহার ভার্য্য ও সাহসী জামাতা বাখর আলি বিপরীত প্রামশ দিলেন তাঁহারা সর্ফরাজের মৃত্যু-জন্য প্রতাপকার করিতে ও বহুধনযুক্ত বাঙ্কালা প্রাপ্তি-কারণ চেষ্টাকরিতে অতিশয় অনুরোধ করিবেন তিনি তদনুসারে যে সন্ধিস্থির হইয়াছিল তাহা ভগু করিলেন আলিবর্দি ইহা শুনিয়া তাঁহাকে অবিলয়ে উড়িস্যা ত্যাগ করিতে আজ্ঞা করিলেন তাহাতে মুরসিদ সকল সেনাপতিদিগকে একত্র করিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন তাঁহারা তাঁহার পক্ষে থাকিবেন কি না প্রধান <mark>সেনাপতি আবেদ আলি কহিলেন যে তিনি তাহা</mark>-দিগের পুভুভক্ততায় বিশ্বাস করিতে পারেন অনস্তর **দৈন্য সকল বাহ্বালায় যাত্রাকরিয়া বালেশ্বর** উত্তীর্ণ হইল এবণ অতি দুর্ভেদ্য স্থান দেখিয়া শিবির করিল তদনন্তর অপলিবদি বার সহসু সৈন্য লইয়া তাঁহার সহিত য্দ্ধার্থে গমন করিলেন যদি মূরসিদ कूनि विविद्याशृक्षंक थे पूर्णमध्या थाकिएन ज्व

আলিবর্দি কে অবশাই লজ্জার সহিতপুত্যা গমনকরিতে হইত কারণ তাঁহার খাদ্যদুব্যের অপুত্তল হইতে ছিল কিন্তু তাঁহার জামাতা বাথরআলি যুদ্ধার্থে উত্তেজনা করাতে সৈন্য সকল বহির্গত হইয়া[`]যুদে নিযুক্ত इहेन हे जिमश्रा थे बार्यम्यानि विश्वीनशां जर्म्यक পুভুকে ত্যাগ করিয়া আলিবর্দির নিকটে আসাতে তিনি সম্পূর্ণ ৰূপে জয়করিতে শক্ত হইলেন মুরসিদ কুলি যুদ্ধস্থল হইতে পলায়ন করিয়া সমুদ্রতীরে উপস্থিত হইলেন এবং তথায় দৈবযোগে এক সুরত দেশীয় বণিক্-কে জাহাঞ্চে আরোহণ করিতে দেখিয়া তিনি বন্ধুবর্গের সহিত তাহাতে আরোহণ করিয়া মাসুলিপাটামে চলিলেন কিন্তু তাঁহার পত্নী ও অপর পরিবার ও ধন কটকে থাকাতে অতিশয় উদ্বিগু ছিলেন কিন্তু রতিপুরের হিন্দুরাজা ভাঁহার সৌভাগ্যকালে যে অনুগুহ পাইয়াছিলেন বিপৎকালে ও তাহা বিষ্ণরণ হইলেন না আলিবর্দ্দি কটকে আসিবার পূর্ব্বে তিনি নিজনৈনে।র সহিত তথায় উপস্থিত হইয়া ঐ উপকারির পরিবার ও সম্পত্তি লইয়া নিরাপদে দেকানদেশে গিয়াছি লেন ঐ স্থানে শুবাদারের গমন সৃদ্ধাবনা ছিল না আলিবদি একমাস কটকে থাকিয়া রাজকীয় কর্মের নিয়ম করিলেন পরে দিতীয় ভাতৃপুত্র. সায়দ আহ-श्मरक शामनकर्छ। क्रिया गुर्तिमानारे आध्यम क्रिन

লেন কিন্তু ঐ বালক কুমন্ত্রণায় রত ছইয়া সকল কর্মা নত করিলেন এক দুষ্টমভাব ককীর তাঁহাকে বশা করিয়া কুপথ গামী করিলেন তাহাতে প্রজারা আক্রান্ত ছইয়া অন্তির ছইল। মির্জাবাখর এতাবৎকাল পর্য্যন্ত নিরবলম্বে ভূমণ করিতেছিলেন যদি কোন বিষয়ে রাজ-কর্মের খালন হয় তবেই সুযোগ করিবেন তিনি এই সময়ে দূতদারা প্রজাদিগের মন প্রদীপ্ত করাতে ঐ লগরে এক রাজবিদ্রোহ উপস্থিত ছইল তাহাতে প্রজারা মির্জাবাখরকে আন্তান করিয়া সায়দ আহা-আদকে কারালয়ে রাখিলেন সুতরাণ উড়িন্যায় আলি-বর্দ্দির অধিকার নই ছইল।

তিনি এই বিপরীত ঘটনা শুনিয়া চমৎকৃত হইলেন এবিং শোধ করিলেন যে দেকানের শাসনকর্তা নাজিম উলমূল্ক গুপুভাবে মির্জাবাথরকে সহায্য দিয়াছেন অতথ্য যে সৈন্যের সহিত প্রদেশ জয় করিয়াছিলেন তাহার তিনগুণ সৈন্য লইয়া ত্রাপূর্যক তদেশের সীমাপর্য্যন্ত আগত হইলেন তথায় আসিয়া যে ব্যক্তি তাহার ভাতৃপুত্রকে উদ্ধার করিবে তাহাকে লক্ষ্ম দিতে স্থীকার করিলেন অনন্তর মহামদীতীরে মির্জাবাথর ও আলিবর্দ্দি যুদ্ধকরাতে আলিব্দি পুনর্বার জয়ী হইলেন মির্জাবাথর সায়দ আহম্মদকে এক শকটোপরি রাখিয়া শুক্লবন্ত্র দারা বেইন করিয়া পঞ্চ

শত বর্ষাধারিলোক তাহার চত্তদিগে নিসুক্ত করিয়া । ছিলেন এব॰ তাহাদিগের পৃতি আছে। ছিল যে যদি যুদ্ধে পরাজয় হয় তবে তাহারা অভাঘাতদারা তাঁহাকে নষ্ট করিবে ঐ লোকেরা আক্সাবাক্য শুবন মাত্র করিয়াছিল যখন সায়দআহাম্মদ শকট হইতে অবরোহণ করিলেন তথন কোন জন কোন অপক্র করিল না একজন মোগল তাঁহাুকে হত্যা করিতে ঐ भकटि निग्क शाकिया श्रयः गाताशिष्णाहितन । আ'লিবদিখি আননাশ্রসমেত তাঁহাকে কতিপয় দিবস যাপন _°করিলেন পরে তাঁছার ্মাতাপিতার আনন্দার্থে মুর্সিদাবাদে পাঠাইলেন ভাঁহার সহিত সৈন্যের কিয়দ শে ও পাথেয় দ্রব্যাদি অনেক পাঠাইলেন অনন্তর এক নূতন শুবাদার তুথাফ স্থাপন করিয়া স্বচ্ছন ৰূপে পঞ্চসহসু অখাৰঢ় <u>টসন্য ও সেনাপতিদিগের সহিত মৃগয়া করিতে</u>২ পুত্যাগমন করিলেন ৷

যেসকল দুর্ঘটনা বাঙ্কালায় অনেকশত বংসর
পর্যন্ত ছিল তাহা এইসময়ে ঘটিবার উপক্রম হইল
প্রায় শতবংসর পূর্ফো মারহাউারা তাঁহাদের চত্তর্দিক্
জয় করিয়া ভারতবর্ষের পশ্চিম প্রদেশে নূতন সামাজ্যা স্থাপন করিয়াছিলেন যে সকল দেশ, অধিকারে
রাখিতে না পারিতেন তাহা সর্বাদা লুটকরিতেন এবং

কিছকাল পূৰ্ব্বে তাঁহারা এৰপ লুট না করেন একারণ নিকটস্থ জমিদারেরা রাজস্বের চত্তর্থাপশ দিতে স্থা-কার করিয়াছিলেন বাঙ্গালাদেশে তদবধি ভাঁহা-দের আক্রমণ হয় নাই কিন্তু অনন্তর তাঁহার৷ ঐরপ করিতে স্থির করিলেন। আলিবর্দি অপসহচর লো-কের সহিত যখন নেদিনীপুর নগরে উপস্থিত হইলেন তৎকালে নাগপ্রের রাজ। রঘুজীর সেনাপতি ভাকর পণ্ডিতের -অধীনে পঞ্চবিৎশতি অশ্বাক্ত্মারহাট্টার সৈন্যহটাৎ তৎস্থানে আসিল শুবাদারের এমতদুর্ঘট-নার উপযুক্ত আহরণ কিছ্মাত্রছিল নাতিনি সৈনে র কিয়দণশ বিদায় করিয়াছিলেন এবণ অনেক অণশ. মরসিদাবাদে গিয়াছিল কেবল কতি সহসূ অশ্বাক্ত গুপদাতিক সমভিব্যাবহারে ছিল তিনি তৎক্ষণাৎ শিবির ভঞ্ক করিয়া ত্তরাপূর্ত্তক বর্দ্ধনানে যাত্রাকরি-লেন কিন্তু তিনি এক দিগদিয়া তথায় উপস্থিত হইবা মাত্রে মারহাউার। অপর দিক্দিয়া ঐস্থানে আসিয়া অ্থি প্রদান করিলেন অনন্তর তাঁহাদিগের সেনাপতি সমাদ পাঠাইলেন যে দশলক মুদ্রা পাইলে তাঁহার। কান্ত হয়েন কিন্তু শুবাদার এৰপ নিয়মে সন্ধি ভচ্ছ করিয়া ঐ অপ্প গৈন্য সংগৃহ করিয়া মারহাটাদিগের প্রতি আক্রমণ করিলেন মার্হাটারা চর্তুদিগে বেষ্টন করিয়া তাঁহার তাঁবুও পাথেয় দ্রব্য অপহরণ করি-

লেন ঐ যুদ্ধে তাঁহাকে সৈন্যহুইতে পৃথক হুইয়া কতি-পয় অনুযায়ির সহিত রাত্তিকালে মাঠমধ্যে বিশ্রাম করিতে হইল ঐদিবস তাঁহার প্রতি তাঁহার প্রধান সেনাপতিদিগের যেৰূপ সাহায্য করা উচিত ছিল তাঁহার। তাহ। করেন নাই ইহাতে তিনি তাঁহাদিগের প্রতি কৃতঘুতা সন্দেহ করিয়া সন্ধি নিমিত্তে পরদিন সার-হাটাদিগের নিকটে দূত প্রেরণকুরিলেন ভাস্করপশুিত ঐ দূতকে কহিলেন যে তোমার প্রভু একলে সমুদায় পাথেয় দুব্য হারাইয়াছেন এবং তাঁহার নৈন্যেরা ও সেনাপতির। অসন্তুষ্ট ৽ হইয়াছেন অতএব তিনি ়রুদাচ আমার হস্তহইতে ম্কুহইবেন না যদি তিনি এককোটীমুদ্রা ও সমুদায় হস্তী পুদান করেন তবে তিনি ভারতব্যের মধ্যে এক প্রধান রাজা একারণ আঁহার প্রাণ রক্ষা করিব। আলিবর্দ্দি এইরূপ আপত্তিতে জুদ্ধ হট্য়া কহিলেন যে যাবৎ তিনি জীবদ্দশায় থাকিবেন এরপ অপয়শঃ প্রকাশক কর্ম্ম কদাচ করিবেন না কিন্তু তাঁহার অবস্থায় কোনমতে মঙ্গল ছিল নাতাঁহার শত২ **ঠৈন্যেরাশত্রপক্ষে যাইতেছিল এব∾ সেনাপতিরাও** শিথিল হইয়া মারহাটাদিগের সহিত্সন্ধি করিতে চেষ্ঠিত ছিল অতএব এইদুর্ঘটনায় আলিবর্দ্দিকে সূতরা নত হইতে হইল তিনি রাত্তিকালে বালক দৌহিত্র সেরা**জ** উদ্দৌনার হস্ত ধ্রিয়া অন্যলোক ব্যতিরেকে পদবুল্

প্রধানসেনাপতি মুস্তাফাখাঁর তাঁবুতে চলিলেন তাঁহাকে আহ্বান করিয়া কহিলেন ওহে বান্ধব শ্রবণ কর আমি জানি তোমার অসন্তোধ হইয়াছে যদি আমার জাবন প্রার্থনা কর তবে একণে তাহা গুহুণ কর এবং আমাকে ও আমার দৌহিত্রকে একেবারে নষ্ট করিয়া ভয় হইতে মুক্ত হও যদি তুমি প্রাচীন বন্ধতা কিছু স্মরণকর তবে পুনর্কার আমার সহিত মিলিত হও ও চল একত্রে মারহাউাদিগের সহিত যুদ্ধ করি ইহাতে মুস্তাকা অন্যান্য অসম্ভুষ্ট সেনাপতি দিগকে আহ্বান করিলেন ও তাঁহারা একে২ সকলেই শপথ করিবেন যে তাঁহারা জীবনান্ত পর্যান্ত তাঁহার পক্ষে থাকিবেন পরদিন প্রাতঃকালে আলিবর্দি শত্রুদিগের মধ্যদিয়া পথ করিয়া কাটো ন য়ীয়ে ফাইতে প্রতিহ্বা করিলেন এবণ তাঁহার। সমস্ত দিন অ্পেথ যুদ্ধ করিতে২ চলিলেন রাত্রি হইলে মার-হাউরো পুনর্কার নৃতন আক্রমণ করিলেন মীরছ্বীব আহত হইয়া তাঁহাদের হস্তে পড়িলেন এবং আলি-বৰ্দি তাঁহাকে অতিশয় ঘৃণা করাতে তিনি তাঁহা-**क्तित्रं कर्य्य नियुक्त इहेश व्यन्तक वर्श्वत वाक्राना**त দুঃখন্তনক হইয়াছিলেন শুবাদারের দৈন্যেরা অতি ক্রেশে একত্র থাকিয়া পরদিন পুনর্বার যাত্রা করি-লেন কিন্তু যুদ্ধ ব্যতিরেকে এক অঙ্গুলি গমন করিতে পারেন নাই তাঁহাদের তাঁবু,ওপাথেয় দুব্য কানান

धन्क उ थामापुरा किङ्हे हिन ना ताबिकाल यथनं শত্রা ত্যাগু করিত তথন বৃক্ষমূলে শয়ন করিতেন কিন্তু শত্ৰপক্ষের অশ্বাৰাত সৈন্যেরা চত্তদিগে বেষ্টিত থাকাতে 'তাঁহাদের সুস্থতা প্রায় ছিন না খাদ্য ভ্রব্যের অভাবপ্রযুক্ত তাঁহারা প্রমূল ভক্ষণ করিতেন সাত জন ভদুলোকেরা তিন পোয়া তপুল পাইয়া পরম সুভোগ বোধ করিলেন অনস্তর কাটোয়া দৃষ্ঠিগোচর হওয়াতে তাঁহারা বোধ করিলেন যে তথায়ু বিশ্রাম उ अधिक थामामुंना भाहरतन किन्न जाकत भूर्व्स ह তাঁহার অশ্বাত্কত বৈন্য পাঠাইয়া অগ্নিদানপূর্বক তৎ-ञ्चारनत गृशामिमक ७ ममा नष्टे कतिया क्रितन। ञानि-বৈদি তথায় উপস্থিত হইয়া আবশ্যক দ্রব্যের কারণ মুরসিদাবাদে লেখাতে তথাহইতে অধিকুদ্রব্য • আসিল।

ঐ স্থানে শুবাদারের এইনপ ব্যবহার দারা শারহাউারা চমৎক্ত হইল এবং অনুমান করিল যে অপর
বহুবিধ উপযোগি দুেব্যের সহিত সৈন্য আসিবে
তাহাতে তিনি অতিভয়ানক হইবেন অনন্তর ১৭৪২শাবের বর্ষাকাল উপস্থিত হইলে ভান্ধরপম্ভিত
তাহার প্রভুর নিকটে প্রত্যাগমন, করিতে নিশ্চম
করিলেন কিন্তু তাহার নূতন বন্ধু মীরহুবীব বান্ধালা
পারিত্যাগের পূর্বে আর কিঞ্চিৎ,অধিক লইতে ইচ্ছক

ছিলেন অতএব কতিসহসু অশাৰ্ঢ় সৈন্যের সহিত একদিবসে কাটোয়া হইতে মুরসিদাবাদে য ইলেন আলিবর্দি তাঁহার পশ্চাৎ২ আসিলেন কিন্তু তিনি व्यानिवात शूर्व्य मीत्र ह्वीव नगरतत विहर्मम सुष्ठे করিয়া ঐ ধনী বণিক জগৎ সেটের বাটীছইতে প্রায় দুইকোটী টাকা লইয়া পলায়ন করিলেন তাঁহার অদর্শন প্রযুক্ত নারহাউ৷ সেনাপতি বর্ষাগমনে ভীত হইয়া বীরভুমিপুর্যান্ত গমন করিয়াছিলেন মীরছ্ৰীব তথায় তাঁহার নিকটে উপস্থিত হইয়া পুনর্বার কাটোয়ায় আসিতে উত্তেজনা করিলেন তৎস্থান ঐ ঋত্তপর্য্যস্ত প্রধান সেনাপতির আবাস হইল আলিবদি ভাগীরথীর পুর্ব্বপারে রহিলেন এব । মুরসিদাবাদ নিবাসি ব্যক্তির। , खत्रकाग्न मन्दिथा रुहेग्ना शक्राभात्त निज्ञ र मन्त्रां जि প্রেরণ করিলেন শুবাদারের পরিবার মধ্যে অনেকেই সেইদ্রপ করিলেন মীরত্বীব মারহাউাদিগের সহিত আসিয়া ভগলি লুট করিলেন এবং বালেশ্বর হইতে রাজনহন পর্যান্ত দেশ নিজ্ঞাধীন করিলেন তিনি কলিকাতার নিকট আসাতে ইপরাজেরা দুর্গ মেরা-মত করিলেন এব॰ শত্রহইতে উত্তমন্তপে রক্ষিত হইবার নিমিত্তে অ্যাবামের চত্তর্দিগে এক খাল খনন করিলেন যে খাল একণে অদৃশ্য হইয়াছে তথাপি তাহাঁর নান মারহডাখাল জ্বন্যাপি আছে।।

অনন্তর শুবাদার মারহাউাদিগের দূরীকরণার্থে অঞ্জ তেই ধকরিলেন তিনি নৃতন সৈন্য সংগ্রহ করিলেন এবং গোলনাজদিগকে নিয়ম মতে ব্লাখিলেন এই সকল উদ্যোগের মধ্যে বাকী রাজস্বের আদায় কারণ দিল্লীহইতে দূত আসিন আলিবদি মহারাজকে লিখি-লেন যে মারহাউারা এদেশের তৃতীয়া শশ অধিকার করিয়াছে এব^ তাহাদের নিবারণার্থে যে সৈন্য রক্ষা করিতে হইল তাহার বায়নিমিত্ত অব**শিষ্টরাজ**ন্মের আবশ্যক হয় অতএব স্বাভাবিক কর পাঠাইতে তিনি অশক্ত ৷ মহারজ অনুসন্ধানদ্রারা দেখিলেন যে উহা সত্য বৃটে একারণ অযোধ্যার শুবাদারের পুতি আছ্ঞা করিলেন যে তদেশে সাহায্যার্থে তিনি অগুসর হইবেন কিন্তু তিনি পাটনায় আসিয়া এমত লক্ষ্য পুকাশ করিনেন যে আলিবর্দ্ধি তাঁহার আগমন অপেকা প্রত্যাগমনে অধিক আনন্দিত হইলেন। মহারাজ মারহাটাদিগের পুরান সেনাপতি বাল্যজিরায়কে লিখিলেন যে তিনি বাঙ্গালায় গিয়া নাগপ্রের মারহাউাদিগকে দূর্রাকরেন নভবা অন্যান্য দেশের চন্তর্থা শে তাঁহাকে দিতে সমর্থ হইবেন না৷

আলিবদি দৈন সংগৃহ করিয়া বর্ষাপ্রসানে কাটোয়ায় যে স্থানে মারহাউারা ছিলেন তথায় চলিলেন তিনি রাত্রিযোগে নৌকাসন্তরণদারানদী পার হইয়া পুভাত- কালে শত্তদিগের পুতি আক্রমণ করাতে তাহারা সম্পূর্ণৰূপে পরাজিত হইল এবং পুথমক পাশ্চাত্য পর্বতে অনস্তর মেদিনীপুরে পলায়ন করিল আলিবদি তাহাদের বিশ্রাম করিতে না দিয়া ক্রমাগত অনুবর্ত্তী হওয়াতে তাহারা বালেশবে অনস্তর ছিলু দীঘীপার হইয়া সর্বতোভাবে এতদেশ হইতে বহির্ভূত হইল।৷

কিন্তু তাঁহার নুতন উপদ্রোহ ঘটিল তিনি বিজয় পূর্বক, মুরসিদাবাদে আনিয়া দেখিলেন যে দুইপ্রস্তুত নুতন মারহাউাদিগের সৈন্য ঐ নগরের নিকটস্থদেশ সকল লুটকরিতেছে সেনাপ্তি ভাকরের উপদেশানু-সারে নাগপুরের রাজারঘুজী একপ্রস্তুত নূতন সৈন্যের সহিত এতদ্দেশ আক্রমণ করিতে আসিতেছিলেন অতএ্ব -আলিবদিখী যখন উড়িস্যায় তাঁহার সেনাপতির পুতি আক্রমণ করিতেছিলেন তখন ঐমহাশয় স্বয়^ অন্যদিক্দিয়া বাজালায় আসিয়া রাজধানীর অতি নিকটে শিবির করিয়াছিলেন এব েবাল্যজিরায় মহা-রাজের প্রার্থনায় নাগপুরের মারহাউ। দিগকে তাড়না ক্রিতে আসিলেন কিন্তু আলিবদ্দি তাঁহার সাহায্য নাপাইলে অধিক সম্ভুষ্ট হইতেন তিনি ভগলপুর উত্তীর্ণ হ্ইলে আলিবদ্দি ভাঁহার সহিত সাক্ষাৎকরিতে চলিলেন অতিবন্ধতা পূর্বক পূথম দর্শনের পরে শুবাদার রঘুজাকৈ তাড়াইতে ঐনূতন ৰজুর সাহায্য প্রার্থনা করিলেন

কিন্ত বাল্যজী রায়ের বাঙ্গালা রক্ষাকরা ব্যতিরেকে লুট করিত্রে' মানস ছিল অতএব তিনি কছিলেন যে বেহার দেশীয় রাজষের চত্তর্থা°শ আনি অনেক বৎস-রাবধি পাইনাই তাহা দেহ তাহাতে তিনি যাবৎপ্রাপ্য কহিলেন শুবাদারকে তাহা সমৃদায় দিতে হইল কিন্তু তিনি পুাগুহুইলেও অন্য মারহাঊাদৈন্যের সহিত যুক্ষার্থে গমন করিলেন না আলিবদিকে সুতরাণ একাকী याइट इहेन अन्भार बचुकी वानाकोत महि खनामा-রের সন্ধি শুনিয়া শিবির ভঙ্গকরা উচিত বুঝিলেন পরে আলিবদির আগমনগাত্রে তাঁবু ভঙ্গ করিয়া পর্কতোপরি পলায়ন করিলেন বাল জী এই পলায়ন শুনিবামাত্রে ঐ স্বদেশীয় বৈশন্যের অনুসন্ধানে শীঘু আসিয়া সম্পূর্ণ-ৰূপে পরাজয় করিলেন তাঁহারা যে সকল দ্রব্য লুট্ট করিয়াছিলেন তাহা তাঁবুমধ্যে ছিল সকলি তাঁহার হস্তগত হইল তাঁহারা হরায় এতদেশ হইতে পলায়ন ক্রিলেন বাল্যজী স্বদেশীয় মারহাউাদিগের ঐ ধন পুঞ্ছইয়া ও আলিবৰ্দি হইতে চত্তৰ্থাণশ প্ৰাপ্ত হইয়া স্বদেশে গমনের উচিত সময় বোধ করিলেন।।

১৭৪৪ শালের বর্ষাকাল গত হইলেই ভান্ধর পণ্ডিত সবল বি°শতি সহসু সৈনে/র সহিত বাঁদালা আক্রমণ করিতে প্রেরিত হইলেন তাঁহার পুতি আছা ছিল যে গত বৎসরে শুবাদার বাল্যজীকে যাবৎ ধন দিয়াছেন

যদি তাবৎ তাঁহাকে দেন তবে তিনি ক্ষা স্ত হইবেন আলি-বর্দ্দি পুনঃ২ আক্রমণদারা ক্রান্ত হইয়া স্থির করিলেন যে ধূর্ত্তাপূর্কক শত্রনাশ করিবেন নিজ সেনাপতি মুস্তাকার্থার নিকটে কহিলেন যে তিনি এই পুতারণায় সাহায্য করেন তিনি পৃথমত অশ্বীকার করিলেন কিন্তু অবশেষে তাঁহাকে বেহাররাজ্য পুদান করিতে স্বীকার ক্রাতে তিনি সমত হইলেন অনন্তর আলিবর্দি তাঁহা-কে ও অপ্র সেনাপতিকে মারহাউ, দিগের নিকটে পাঠাইলেন তাঁহার৷ ভাকর পণ্ডিতকে কহিলেন যে যদি তিনি একদিবস শুবাদারের সহিত সাক্ষাৎ করিতে গমন করেন তবে তাঁহার প্রার্থনীয় প্রান করিবেন তিনি লোভদারা অন্ধ হইয়া তাহা:তই সন্মত হইলেন স্থাকাৎ করিবার দিবসে তাঁবুর চত্তদিগে অস্ত্রধারী মনুষ্য স্থাপিত হইল ভাকর ও তাঁহার পুধান সেনা-পতিরাদুরাচার শঙ্কাকরিয়া খরুপাণি হইয়া আলি-বর্দির তাঁবতে আসিলেন তাঁহারা আসিবামাত্রে আলি-বর্দ্দির্থী সিশ্ছাসন ছইতে গাত্রোত্থান করিয়া তিন্বার কহিলেন মহাসাহসিক ভাক্ষর কোন মহাশয় অনন্তর তিनि निर्फिष्टे इंहेवामाख উटेकः इति कहिलन बहे দস্যুদিগকে নষ্ট কর তাঁহার লোকেরা অস্ত্র লইয়া তং-় ক্ষণাৎ মারহাউাসেনাপতিদিগের উপরি পড়িন ভাঁহারা প্রাণরক্ষার্থে বত্যত্ন করিলেন কিন্তু অবশেষে

পরাজিত হইয়া পুত্যেকে কাট। পড়িলেন তথায় এই ব্যবহার দেখিয়া মৃস্তকার্থা নিজ সৈন্য লইয়া কাটোয়ায় মারহাজা সৈন্যের নিকটে চলিলেন এবং শুবাদারকে তাঁহার অনুবর্তী হইতে উপদেশ করিলেন কিন্তু তিনি ভাক্ষরের মন্তক দেখিয়া চক্ষুরানন্দ না করিয়া যাইতে ইচ্ছুক ছিলেন না তাহা নিষ্পন্ন হইলে তিনি মৃস্তাকার সাহায্যার্থে চলিলেন কিন্তু কাটোয়ায় উপস্থিত হইয়া দেখিলেন যে শত্ররা পলায়ন করিয়াছে কারণ সেনাপতি দিগের মৃত্যু শুনিবামাত্রে তাহারা ত্রায় মদেশে প্রস্থান করিয়াছিল 11

নবম অধ্যায়

অনন্তর শুবাদার বিশাম পাইলেন কিন্তু তাঁহার
নিজ শিবির মধ্যে অতি ভয়ানক শত্র উপস্থিত হইল
প্রপর্যন্ত মৃন্তাকার্থা তাঁহার প্রধান মন্ত্রী ছিলেন প্রক্ তাঁহার সাহসদারা তিনি বাঙ্গালার রাজ্যপ্রাপ্ত হইয়াছিলেন ও মারহাউাদিগকে পরাজয় করিয়াছিলেন কিন্তু ভদনন্তর মুস্তাকা প্রজাস্বরূপে আর থাকিতে পারিলেন না জমিদারদিগের কোন প্রার্থন করিতে হইলে শুবাদারকে না বলিয়া তাঁহার নিকটে নিবেদন করিতেন তাহাতে শুবাদার বোধ ক্লরিলেন যে তাঁহার ভূত্য তাঁহার প্রভু হইয়াছেন মুস্তাকা বেহার দেশের রাজ্য দান প্রতিক্ষা শীঘু সম্পন্ন করিতে কহিলেন

শুবাদার তাহা না দিবার মানস করিলেন তিলি স্মর1 করিলেন যে বেহারদেশের উপায়্যারা তিনি স্বয়^ **नत्रकत्राक्रत्क प्रथम क्रिया वाक्राना** छत्य. क्रिया**र्ह्म নেইৰপ মুস্তাফাও** তদ্দেশমাত্ৰে সম্ভুষ্ট না 'থাকিয়া বাঙ্গালা পুহণে ইচ্ছা করিবেন অতএব উভয়পকে ইর্যা উপস্থিত হইন মৃস্তাফা অন্ত্রধারী সৈন্য ব্যতিরেক কদাচ রাজসভায় যাইতেন ন। অনন্তর স্পষ্টৰূপে ইচ্ছা প্রকাশ করিলেন যে ভিনি গুরাদারের কর্ম পরিত্যাগ করিবেন ও তাঁহার পূক্তপ্রাপ্য প্রার্থনা করাতে হিসাব ना पिथियारे मध मन लक्ष्मण। एउ रहेद भारत जिनि শুবাদারের সেনাপতিদিগকৈ পুভুত্যাগ করাইয়া ঐ রাজ্য তাঁহাদিগের মধ্যে বিভাগ করিতে উদ্যম কুরিলেন কিন্তু তাঁহারা আলিবর্দির সহিত নিত্রতা রক্ষা করাতে তিনি **অষ্টসহসু অ**শ্বানচ় ও তাব**ং** পদাতিক লইয়া রাজালা পরিত্যাগপূর্বক রাজমহল এট করিয়া মৃঙ্গের অধিকার করিয়া পাটনায় শিবির করিলেন তথাকার শুবাদার জিনউদিন য়ে অপ্রটেমন্য নংগুহ করিতে ক্ষম হইলেন তাছার সহিত যুদ্ধার্থে আসিলেন কিন্তু মুস্তাফাও নগর গুহণ করিতে পারিতেন যদি তাঁহার হস্তী না আহূত হইত তিনি হস্তীহইতে অবরোহণ করাতে দৈন্যেরা প্রভূকে নাদেখিয়া ভীত ও আহত इहेबा भनावन कितन किन्छ नथि मिन्पर्या छ पूर्वे नित्न

মধ্যে ক্রমিক দ্বন্দু হইল অষ্টমদিবসে মুস্তাকা ঐ নগরে পুনর্জার আক্রমণ করিলেন তাহাতে তাঁহার নয়নে এক বাণ বিদ্ধ হওয়াতে তথাহইতে অযোধ্যারাজে এ প্রায়ন করিলেন !৷

মৃস্তাকা যখন প্রভুর বিদ্রোহ করিতে স্থির করি-য়াছিলেন ত্ৎকালে বাঙ্গালা আক্রমণার্থে তাঁহার সাহায্যকরিতে মারহাউাদিগকে আন্থান করিয়াছিলেন রঘুজী তাহাতে ইচ্ছাপুযুক্ত তাঁহার সেনাপতি ভাস্কর পশ্তিতের মৃত্যুর প্রতিহি°মাকারণ ও অধিক লুট পাইবার কাঁরণ ক্রোধে দক্ষপ্রায় হইলেন অতএব এক প্রস্তুত অধিক সৈন্যের সহিত বাঙ্গালায় প্রবেশ •করিয়া মুরসিদাবাদের নিকটে আসিলেন আলিবর্দি মুস্তাকার অনুসন্ধানে গিয়াছিলেন কিন্তুমারহাউাদিপের আগমন গুনিয়া সত্তরে ফিরিয়াজানিলেন মুস্তাফাও বেহারে অসিয়া নূতন বন্ধুদিগের সহিত মিলিত **इहेट উদ্যোগ করিলেন অতএব শুবাদার দুই শত্র** আয়াতে অতিশয় বিপত্তিতে পড়িলেন তিনি নিজ জামাতা জিনউদ্দিনকে উপদেশ করিলেন যে মুস্তাকার প্রতি মনোযোগ রাখিবেন ও তাঁহ্রার বাঙ্কালার ় আগমনরোধ করিবেন অনস্তর কালবিলয়ার্থে রঘুজী এদেশ আক্রমণ না করেন এতদর্থে দূত প্রেরণ করিলেন তাহাতে রঘুজী অহকারপূর্কক উত্তর করিলেন যে

তাঁহার দুংখের মূল্য তিন কোটী টাকা দিতে হইবে শুবাদার তাহা একেবারে অস্বীকার না করিয়া দুইমাস পর্য্যন্ত আশায় রহিলেন ইতিমধ্যে জিনউদিন মৃস্তাকার সহিত যুদ্ধ করিয়া তাঁহাকে মারাতে তাঁহার সৈন্যের। ছিন্ন ভিন্ন হইল।।

শুবাদার এই জয়শ্রবণে এক শত্রু হইতে আপনাকে মুক্ত দেখিয়া মারহাউাদিগের নিকটে অহঙ্কারপূর্ত্তক উত্তর পাঠাইবাতে উভয়পক্ষে বর্ষাবসালে যুদ্ধ করিতে প্রস্তুত **হইলেন পরে অনে**কবার যুদ্ধ হইল তাহাতে রঘুজী ক্ষয় পাইলেন এব শ শুবাদারের সেনাপতি সমসেরখাঁ ও সরদারখাঁ এই দুইজনের বিশ্বাস ঘাতকতা -**না থাকিলে রঘুজী বন্দীহ্ইতেন!** কাটোয়ায় এক নিষ্পা-**ভিকারি যুদ্ধ হওয়াতে মারহাউারা সম্পূ**র্ণরপে পর†জিত হইল তাহাদের অনেক লোক মারা পড়িল এবণ অবশিষ্ট लांकिता स्राप्तर्भ शनायन कतिन समस्त सानिवर्षि যে দুই সেনাপতিরা মারহাউাদিগের সহিত মিল করিয়াছেন এমত বুঝিলেন ঐ বিশ্বাসঘাতকদিগকে বিদায় করিলেন তাহারা ছয় সহসু অনুগতলোকের সহিত বেহারের অন্তঃপাতি দুর্বন্ধনামক স্থানে গমন করিল। অতঃপর যৈ অপ্সকাল বিরোধ শূন্য হইল जन्माक्षा खतामात्र जाँहात पूरे मिहिब जिन छेपितनत পুঞ্জিরে বিবাহ ঘটাপূর্বক স্বাপ্ত করিলেন।

কটক অঞ্চলে তৎকালেও মারহাট্টাদিগের অধিকার *ছিল* আলিবদি তথাহইতে তাহাদিগকে তাড়াইতে প্রতিক্সা করিয়া উত্তম সেনাপতি মীরজেকরকে যুদ্ধার্থে পাঠাইলৈন জেফর মেদিনীপুরে গিয়া সুভোগে রত রহিলেন এব॰ শত্রা আগমন করিলে তিনি বর্জমানে আসিলেন কিন্তু ঐবৈন্যের এক সেনাপতি আউউল্লার্থা যুদ্ধ করিয়া তাঁহাদিগকে পরাজয় করিলেন কিছুকাল পূর্বাবধি এক মহন্ত তাঁহাকে গুঁবাদার হইবার আশা দেওয়াতে তিনি এই বিজয়দারা তাঁহার প্রভুকে পদচ্যত করিতে যড়মন্ত্র করিলেন মীরজেফরকে বেহার দেশ দিতে স্বীকার করিয়া তাঁহার পক্ষে আনিলেন কিন্তু ঐ সেনাপতি উত্তম বন্ধদিপের পরামর্শদারা ঐ মান্য ত্যাগ করিলেন আলিবদি (এইবিশ্বাস্থাতুক্তঃ শ্রবণনাত্রে ত্রাপূর্ত্তক তথায় গিয়া মীরজেফর ও আউউল্লার্থা উভয়কে কর্মহইতে বিদায় করিয়া দিলেন এবং এই দুই সেনাপতি ও কিয়দংশ সৈন্য হ্ৰাস হইলেও তিনি যুদ্দদারা মারহাউাদিগকে দমন করিয়া ১৭৪৮ শালের বর্ষাকালের পূর্ব্বে মুরসিদাবাদে আসিলেন

অনন্তর নূতন বিশ্বাসঘাতকতা উপস্থিত হইল তাহার ভ্রাতৃপুত্র বেহারের শাসনকর্তা জিনউদিন কিঞ্চিৎপূর্ফে রাজধানীতে আসিয়ারাজসভার সৌন্দ্র্যা-

দারা মোহিত হইয়াছিলেন তিনি ভুতাদিগের অক্ষ-মতা ও পিতৃব্যের বার্দ্ধক্য স্মরণ করিয়া রুঝিলেন যে অস্প চেষ্টাদার৷ বাঙ্গালায় শুবাদার হইতে পারিবেন অতএব তিনি আলিবদিকে লিখিলেন যে দৃইসেনা-পতি সমদেরখাঁ ও সদারখাঁকে তিনি বিদায় করি-য়াছেন তাহারা দূর্বঞ্বেত ক্রমিক সৈন্যবৃদ্ধি করি-তেছে অতএব তাহাদের পরাজয় অথবা রাজসরকারে নিয়োগ ক্রাউচিত 'তাহাতে যদি তাঁহার আজ্ঞা হয় তবে তাহাদিগকে তাহাদের অন্গত লোকের সহিত সৈন্যমধ্যে নিবিষ্ট করেন ওঁ৷হার মান্স ছিল যে সৈন্যবৃদ্ধি করিয়া সি হাসনের নিমিত্তে বিবাদ করেন ইহাতে শুবাদার অনিচ্ছা পূর্ব্বক সম্মত হইলেন। ,জিনউদ্দিন ঐ সেনাপতি দিগকেনিজকমে প্রবেশার্থ আৰু ন করিতে তিন প্রস্তুত দূতপুরণ করিলেন অনন্তর সন্ধি নিয়ম স্থিরহইলে তাঁহারা বহুদৈন্যের সহিত গঙ্গাতীর পর্য্যন্ত আসিলেন এবং ঐ শাসনকর্তাকে নদীপার হইয়া তাঁহাদের সহিত সাক্ষাৎ করিতে অনুরোধ কর তে তিনি যাইলেন ও তাঁহারা তাঁহাকে সমাদরপূর্বক গুহণ করিলেন এব তিনি তাঁহাদিগের ও তাঁহাদের দৈন্দিগের পার হইবার কারণ নৌকা আহরণ করিতে আছো করিলেন অনন্তর ঐ শাসন ক্রন্তার নিকঁটে একবার ঐ সেনাপতিদিগের সাক্ষাৎ

করিতে যাইবার দিন স্থির হইল কিন্তু তাঁহার পুতি তাঁহাদিগের বিশ্বাসনাথাকাতে তিনি কেবল গৃহস্থিত ভূত্যের সহিত থাকিয়া তাঁহাদিগের গুহণ করিতে স্বীকার করিলেন প্রথমদিনের সাক্ষাৎকার নির্বিরোধে হইল দ্বিতীয়দিনে ক্রমে২ তাঁহাদের সৈন্যদারা রাজ পুরী পরিপূর্ণা হইল এব শাসনকর্ত্তার নিকটে যে সেনপৈতিরা আসিয়াছিলেন তাঁহাদিগের তিনি তামূল বিতরণ করিতে লাগিলেনু ইতিমধ্যে তাঁহাদের একজন একাঘাতে তাঁহাকে মারিয়াকেবিলেন পুরী মধ্যে তৎক্ষণাৎ রাজবিদ্যোহের ঘোষণা হওয়াতে তাঁহার ভৃত্যেরা কৃপাণপাণি ছইয়া বহির্গত হইলেন কিন্তু ঐ বঞ্চক দিগের নিবারণ করিবার সময় উত্তীর্ণ হইয়াছিল তাঁহারা তক্মধ্যে নগর অধিকার করিয়া, ছिলেन ।

সমসেরখাঁ পুরীলুট করিয়া মৃতশাসন কর্ত্তার পিতা হাজি আহমদের অন্বেধণার্থে লোক প্রেরণ করিলেন ঐ বৃদ্ধের নিমিত্তে এক ক্রতগামি অশ্ব প্রস্তুত হইয়াছিল তিনি তাহালারা পলায়ন করিতে পারিতেন কিন্তু ধন ও জ্রীলোকদিগকে পরিত্যাগ করিতে অসমর্থ হইয়া বিলম্ব করাতে দুরাচারিরা তাঁহাকে আটক করিল অনস্তর সপ্তদশ দিবস পর্যন্ত ধন প্রকাশার্থে তাঁহার অতিশয় যন্ত্রণাকরাতে তিনি অবশেষে দুংখে প্রাণত্যাগ করিলেন পরে বিদ্রোহ কারিরা প্রায় সগুতিলক টাকার

মর্ণ ও রপ্য পাইলেন এবং তিনি যন্ত্রণায় কাতর হইয়া
ক্রমে২ যে সকল গুপ্ত হান প্রকাশ করিয়া ছিলেন তাঁহারা
বাটার সেইসকল স্থান খনন করিয়া বল্ল না ক্রমিন ইলেন
জিন উদ্দিনের পত্নী ঐ বঞ্চক পাঠানদিগের হত্তে পড়িকেন এই সকল লুট দ্রব্যবারা তাঁহারা সৈন্য বৃদ্ধিকরিয়া
চল্লারিংশৎ সহ্যু অস্থাবাঢ় ও তাবৎ পদাতিক সৈন্য
আছ্রাধীনে প্রাপ্ত হইলেন ।৷

আলিবর্দির্থা যথন শুনিলেন যে তাঁহার ট্রাতা ও ভ্রাতৃপুত্র মারাপড়িয়াছেন ও তাঁহার" কন্য বন্দী হইয়াছেন এবং বেহারদেশ নইহইয়াছে তথন অতিশয় শোকাবিষ্ট হইলেন পাটনায় এইনপ ঘটনার কালে তাঁহার পুরাতন শত্র মার হাউারা মীরহুবীবের অধীনে অসিয়া বাজালায় পুবেশ করিয়া রাজনগরকে কম্পানিত করিল কিন্তু ঐবৃদ্ধশুবাদারের মনের বৈলক্ষণ্য কিছুমাত্র হয় নাই তিনি ষয়ং যুদ্ধার্থে পুস্তুত হইলেন মুরসিদাবাদ নিবাসি লোক দিগকে আপন্হ ধন ও পারিবার নদীপারে লইয়া রক্ষাকরিতে উপদেশ করি-লেন অতথ্র যে সকল লোক পলায়নে শক্তছিলেন তাঁহারা সকলৈই ঐ নগর পারিত্যাগ করিলেন

শুবাদার পঞ্চদশ সহসু অশ্বানচ্ত্ত অষ্ট সহসু পদা-তিক সৈন্য সংগুহ করিয়া ঐ দ্রোহিদিগের সহিত

যুদ্ধার্থে গমন করিলেন মারহাটারা তৎক্ষণাৎ ইচ্ছা পুরিবর্ভ করিলেন তাঁহারা তদ্দেশ লুট **নাকরিয়া** শুবাদারের আগমনের পূর্ব্বে পাঠানদিগের সহিত মিলিত ইইবার আশায় পর্কতীয় দেশদিয়া শীঘ চলিলেন সমসেরখাঁ ও সদার্থা নিজ্সৈন্যের সহিত পাটনা হইতে বারে আসাতে নারহাট্রা দিগের সহিত সাক্ষাৎ হইল আমাদের বোধ হইতেছে যে জিন উদ্দী-নের মৃত্যু পাটনা ুট ওবাঙ্গালায় আগমন **ক্রেবল নীর** ভ্ৰীবের কপ্নানুসারে <mark>হইয়াছিল কারণ তথায়</mark> উপস্থিতি মাজে তিনি ও মহারাষ্ট্রায়দিগের প্রধান ্উভয়ে তাঁহাদের তাঁবুমধ্যে **ঐ দুইজন পাঠান সেনা**-প্রতিকে লইয়া তাঁহাদিগের মন্তকোপরি সমুমজনক মৃকট অর্পন করিলেন যেরূপ প্রধান ব্যক্তির। অ্ধান লোকের প্রতি করিয়া থাকেন পরদিন মীরত্বীব ঐ নেনাপতিদিনের সভিত সাকাৎ করিতে তাঁইাদি-গের আবাসে গমন করিলেন তাঁহারা স্বাভাবিক বিন-ম্বের পূরে তাঁহাকে বলপূর্ম্বক আটক করিলেন। এবং কহিলেন যে তাঁহারা কেবল তাঁহার প্রার্থনায় এই দুঃসধ্যে কন্মে প্রযুত্ত হয়েন এব ১ যে বিষয় স্থাকার ক্রিরাছিলেন তাছা সম্পন্ন করিয়াঞ্চেন অর্থাৎ শাসন কর্ত্তাকে মারিয়া পাটনা অধিকার করিয়াছেন এবং তাঁহারা যুদ্ধক্ষেত্রে আসিয়া যুদ্ধকরিতে প্রস্তুত আছেন

কিন্তু তাঁহাদের প্রাপ্য এক্ষণে প্রার্থনা করেন তাহতে যদি তিনি চত্বারি শেশ শক্ষ মুদ্রা নাদেন ভবে তাঁহারা, কদাচ তাঁহাকে ত্যাগ করিবেননা মীর হুবীব নিরুপায় হইয়। জনরব করিলেন যে শুবাদারের দৈন্য তাঁহার হস্তগত আছে এই জনরব জন্য গোলযোগ হওয়াতে দুইলক মুদ্রা মাত্র দানে মোচন পাইলেন উভয় পকে **এ**ইৰপা বিবাদ শুবাদারের শুভদায়ক হুইল কারণ ঐ বিবাদ দ্বার। পরদিবসীয় যুদ্ধে ঐ উভয় নৈন্যের ঐক্য হইল ন। ঐযুদ্ধে শুবাদার সম্পূর্ণৰূপে জয়া হুইলেন এব ে ঐ উভয় ,বিদ্যোহিরা সারাপড়িলেন ও তাঁহাদের মন্তক ছিল হইয়া শুবাদারের হস্তি পাদে वक इहेन । हेह। यथार्थ वर्ष्ट य खे यूक्तकारन नमनाय • মহারাপ্রীয়ের। বাঙ্গালি সৈন্যের বাম পার্শ্বে অগুসর হইল কিন্তু যথন সকল বিপক্ষ সৈনে কারি-দিগের প্রতি আক্রমণ করিল তখন তাহারা এক খাড়ী মধ্যেরহিল মীর ভ্বীব শুবাদারের জয় দেখিয়া কোন আঘাত নাকরিয়া যুদ্ধ স্থান স্ইতে পালায়ন ক্রিলেন অনন্তর আলিবনি শতুবিজয় পূর্বক পাটনায় প্রবেশ করিয়া রিপুদিগরার। যে কন্যা ও দৌহিত্তের। রুদ্ধছি-লেন তাঁহাদিগকৈ আলিঙ্গন করিলেন তিনি এইবিষয়ে অতি মাহায়্য প্রকাশ করিয়াছিলেন নিজ সেনাপতি দিগের সচ্চরিত্রপ্রযক্ত পারিত্যেবিক দিয়া বিদ্যোহ-

काितिमिर्गत खें। भूबािमरक पूर्वत्र श्रेट्ड चािनरनन এব° তাঁহাদিগের প্রতি অধিক দয়া প্রকাশ করিয়া ইচ্ছাচারি করিলেন নীরত্বীব যে পর্যন্ত মহারাইুীয় দিগের পক্ষে গিয়াছিলেন তদবধি অন্তবংসর আলি-বর্দ্দির আক্সাক্রমে ভাঁছার পরিবারেরা কারাগায়ে কুদ্ধ ছিলেন আ্লালিবন্ধি এই উত্তম সময়ে তাঁহাদিগের স্বাধীন - করিতে ঐ বিপক্ষের তাবুতে রক্ষক লোক সনভিব্যাহারে . নিরুদ্বেগে পাঠাইলেন তিনি জিন-উদ্দিনের পুত্র তাঁহার দৌহিত্র সেরাজ উদ্দৌলাকে বেহারের শাসনকর্তা করিলেন ও রাজা জানকী-রামকে তাঁহার নায়েব করিলেন অনন্তর নিজ ভুত্পূত্ৰ সামদ আহমদকে পূরণীয়ার কৌজদারী কর্মে নিযুক্ত করিলেন এইসকল নিযোগানন্তর পাটনা হইতে নিজ রাজধানীতে আসিলেন অতি অপ্পকাল পূর্ব্বে তিনি আউউরাধার ও মীরজেকরখার অপরাধ মার্জনা করিয়া পুনর্বার অনুগুছ করিয়াছিলেন যখন ঐ বিচো-হাচারি সেনাপতিদিগের সহিত যুদ্ধার্থে চলিলেন তখন আউউল্লাকে মুরসিদাবাদের কর্তৃপদে রাখি-য়াছিলেন কিন্তু তিনি আউউল্লার স্থাক্ষরিত পত্র .পথিনধ্যে রোধকরিয়া দেখিলেন যে তাহাতে তিনি বিপক্ষের সহিত শীঘু মিলকরিতে প্রতিছা করি-য়াছেন অতএব এট্র দ্ধিতীয়বার অবিশ্বাসের কর্মে শুবা-

দার অতিশয় ক্রছইয়৷ আজ্ঞাকরিলেন যে তাঁহার প্রত্যাগমনের পূর্বে ঐবঞ্চক নগর হইতে দূর্নাক্ত হয় অতথব ঐদুরাক্স৷ প্রায় সপ্ততি লক্ষ্ণ নগত টাকা ও নানাবিধ রত্ন লইয়৷ মুরসিদাবাদ হইতে প্রস্থান করিলেন যখন তিনি ভগলপুরের দিতীয় ফৌজদার ছিলেন তখন ঐ ধন উপার্জন করিয়াছিলেন অতপ্রে এইরপে আমর৷ আলিবর্দির রাজত্বের. অবস্থা রোধ করিজেপারি যে তিনি যে সকল কর্মকারি লোকদিগকে নিযুক্ত করিতেন তাঁহাদিগের প্রতি নিজহ অধীন দেশল্ট করিয়৷ ধন্সঞ্চয় করিতে অনুমতি থাকিত তাহাতে কর্মকারিরা বর্দ্ধিফু হইতেন ও দরিদ্র প্রজারা মারাপড়িতেন ৷

ভালিবদি কিঞ্চিৎকাল বিশ্বাম করিয়া উড়িস্যাহইতে মহারাষ্ট্রীয়দিগকে তাড়াইতে পুনর্বার সৈন্য
লইয়া যাত্রা করিলেন তাঁহার উপস্থিতি মাত্রে তাহারা
পলায়ন করিল তিনি সাক্ষাৎ যুদ্ধে তাহাদিগকে
নিযুক্ত করিতে পারিলেন না কেবল পর্কতোপরি ও
বনমধ্যে তাড়া তাড়ি করিয়া রাজধানীতে প্রত্যাগমন
করিলেন কিন্তু তাঁহার আগমন মাত্রে মারহ্বীব বন
হইতে বহিভূত ইইয়া পূর্কবৎ লুট আরম্ভ করিলেন
আালিবদিকে সূত্রাণ পুনর্বার সৈন্য লইয়া অগ্নসর
হইতে হইল তিনি এপর্যান্ত বর্যাকালের পুর্কে ভাগী

রথীতীরে আসিতেন কিন্তু তৎকালে ঐ দস্যুদিগ হইতে তদ্দেশ উদ্ধার করিতে অত্যন্ত ইচ্ছক হইয়া মেদিনীপুরে: বর্ষাকাল পর্যান্ত শিবির করিতে স্থির করিলেন কিন্তু যথন এই সকল উদ্যোগ সম্পূর্ণ হইল তথন ঐ হতভাগ্য গুবাদার নূতন বিশ্বাসঘাতক কর্মদারা ভীত হইলেন।

তিনি নিজ দৌহিত্র সেরাজ উদ্দৌলাকে তাঁহার পিতা অপেক্ষা, অধিক ভালবাসিতেন এক্প ঐ বালক তাঁহার অতিশয় স্বেহদারা ভুষ্টমভাব হইয়াছিলেন কতিপয় দুরীচারি মনুষ্য ভাঁহাকে বশীভূত করিয়া ঐ প্রিয় মাভামহের প্রতি মন বিরত করিয়া দিলেন এবণ তাঁহার রাজ্য লইতে চেষ্টা করিবার উদ্যোগী করিয়া দিলেন তিনি তাহাদের পরামর্শে রত. হুইয়া আলিবর্দিকে তাঁহার দুই ব্যবহার নিমিত্তে তিরকার করিয়া এক পত্র লিখিলেন এব ১ ঐ সকল অনুগত লোকের সহিত পাটনায় চলিলেন তাঁহার ঐ স্থানের শাসনকর্ত্তা নামমাত্র ছিল তিনি তথায় সৈন্য সংগ্রহ করিয়া. মাতামহের সহিত যুদ্ধার্থে গমনকরিতে স্থির করিলেন আলিবর্দি এইযাত্রা শুনিয়া হতজ্ঞান .হইয়া অতিশয় ভীত হইলেন কারণ তিনি পাটনায় আক্রমণ করেন তাহাতে তাঁহার প্রিয় দৌহিত্র পাছে, মারাপড়েন তিনি বৈন্যত্যাপ

করিয়া সন্তরে মুরসিদাবাদে আসিলেন কিন্তু তথায় একদিন মাত্র থাকিয়া ঐ বালকের অনেষ্ণার্থে চলি-লেন। সেরাজ উদ্দৌলা পাটনার সম্মুখে আসিয়া জানকীরামকে ঐস্থান ত্যাগ করিতে আক্রাকরিলেন ঐ নায়েব শাসনকর্ত্র। জানিতেন যে যদি তিনি ঐ নগর ত্যাগ করেন তবে শুবাদারের অসস্তোষ হইবে কিন্তু যদি ঐ বালক মারাপড়েন তবে শুবাদার তাঁহাকে কদাচ ক্ষমাকরিবেন না তাহাতে তাঁহার পার্ম সম্ভোষ হইল যে সেরাজ উদোলা ভীত হইয়া অতিদূরে রহি-লেন তাঁহার ষষ্টিজন সাহসী অনুগত লোকেরা ঐ নগরের চত্তর্দিগে যে এক মৃন্ময়ভিত্তি ছিল তাহার কিয়দ শ ভথা করিয়া তন্মধ্যে প্রবেশ করিলেন কিন্তু - তথাকার রক্ষকেরাবাধা দেওয়াতে বীরত্তল্য যুদ্ধ করিয়া অবশেষে মারাপড়িলেন তাঁহাদের প্রভূ পশ্চাৎ২ আসিয়াছিলেন কিন্তু যুদ্ধকালে অতিদূরে এক গৃহমধ্যে পলায়ন করিয়াছিলেন ঐ নায়েব শাসনকর্ত্তা তথা হইতে তাঁহাকে কোন আঘাত ব্যতিরেক রুদ্ধকরিয়া নিরা-পদে প্রীমধ্যে আনিলেন । আলিবদি এই বৃত্তান্ত শুনিয়া আনন্দমধ্যে এমত কুদ্ধ হইলেন যে নিজ ভূত্যদিগকে উপহাস করিলেন তিনি ঐ বিদ্রোহাচারি, দৌহিত্রকে দেখিতে এমত ব্যগু হইলেন যে কোন উপপতি তাহার উপপত্নীকে দেখিতে তাদৃশ কদাচ

হয়েন নাই যখন সমকদৰ্শন হইল আলিবদি তাঁহার , দুরাচর নিমিত্তে কোন র্ভৎসনা না করিয়া তাঁহার গল **प्रम ध**ितशा नर्काटक ठूमन कतित्तन पोश्वि श्राश्चि-জন্য অতিশয় আনন্দ হওয়াতে তাঁহার জুর হইল ও তাহাতে জীবন প্রায় ক্ষুয় পাইন ইতিমধ্যে উড়িস্যা স্থিত মাহারাষ্ট্রীয়েরা ওমীরছ্বীব 🐧 হার বিপদ সময় শুনিয়া পুনর্কার বাঙ্কালা আক্রমণ করিতে উদ্যোগ করিলেন অতএব উত্তমনপে সুস্থ ইইবার পূর্ফ্রেই আলি-বৰ্দ্দিকে সবৈন্যে মেদিনীপুরে যাত্রা করিতে হইল তথায় তিনি মাহারণঙুীয়দিগের সুহিত যুদ্ধ করিয়া সম্পূর্ণ ক্পে পরাজিত করিয়া উড়িস্যা পর্য্যস্ত তাহাদের অনুষ্ণার্থে চলিলেন কিন্তু তাহারা সর্স্রদাই তাঁহার হস্ত হইতে মুক্ত হইত একারণ সবৈন্যে মুরসিদাবাদে প্রত্যাগমন করিলেন ৷

যুদ্ধশ্রমে উভয় পক্ষেই ক্লান্ত হইল ঐ দশবৎসর পর্যান্ত যুদ্ধের মধ্যে প্রথম বার ভিন্ন সকল বারেই শুবাদার বিজয়া হইয়া ছিলেন কিন্তু তথাপি মহারাষ্ট্রায়েরা এদেশের যে দুরবস্থা করিয়াছিলেন তাহা দেখিতে অসহিষ্ণু হইলেন তাঁহাদের উপদোহদারা রাজস্বের এমত হানি হইয়াছিল যে তিনি চাঁহার রাজস্বের প্রথমাবধি দিল্লীতে এক মুদ্রা প্রেরণ করিতে পারেন লাই মহারাষ্ট্রীয়েরা ভাগীরথীর পশ্চিম কটিক হইতে

রাজমহল পর্য্যন্ত সম্দায় দেশ প্রতিবৎসর লুট করিতেন সকল গ্রামে অগ্নি প্রদান করিতেন প্রজা দিগকে মারিতেন ও শস্য সকল নষ্ট করিতেন অত-এব পুজাদিগের দুঃ খ যৎপরো নাস্তি এমত হইয়াছিল একারণ তাঁহারা শুবাদারের নিকটে আসিয়া কহিলেন যেখদি তিনি তাঁহাদিগের বার্ষিক শস্যনাশ নিবারণ করেন তবে তাঁহারা নিয়মিত রাজস্ব হইতে অধিক দিতে স্বীকার করেন আলিবদি পুজাদিগের ও আপনার শোক নিবারণার্থে ইচ্ছুকহইলেন তৎকালে তিনি পঞ্চসপ্ততিবর্ষবয়ক্ষ ,ছিলেন ও অতিশয় পরি-শ্রমদারা ক্ষাণ হইয়াছিলেন এবং দশবৎসর যুদ্ধ করিলেন অতঃপরে মরণের পূর্ফো রাজ্যের নিয়ন করিতে ইচ্ছুক হইলেন **এব**° মহারা<u>খু</u>ীয়ের। ও নীর-হ্বীব সর্বাদা যুদ্ধে পরাজিত হইয়া অত্যন্ত ক্রাস্ত रुरेग्नाहित्वन ठाँहारम् निकर्षे मिक्ति विभित्त अक দুত প্রেরিত হইবানাত্রে তাঁহারা শুবাদারকে অধিক প্রশংসা করিলেন কিন্তু তিনি চিরন্তন যুদ্ধ প্রযুক্ত তাহাতে সমত হইয়াছিলেন তিনি বান্ধানার চৌট বলিয়া প্রতিবৎসরদ্বাদশ লক্ষ মূদ্রা মহারাষ্ট্রীয়দিগকে দিতে স্বীকার কারয়াছিলেন মহারাষ্ট্রীয় সৈন্যদিগের পূর্ব্ব প্রাপ্য পরিশোধার্থে রাজস্ব দিবার কারণনায়েব শাসনকর্তার স্বৰূপে দীর্হুবীবের হস্তে উড়িস্যা দেশ

রাখিতে অস্কীকার করিয়াছিলেন এবং সুবর্ণরেখানদী বাঙ্গালার দক্ষিণ সীনা স্থির করিলেন যে মহারাষ্ট্রীয়েরা কদাচ সে নদী পার হইবেন না অতঃ পর
নীরহুবীবের বাঞ্চ পূর্ণ হইল তিনি আলিবর্দির দর্প
থর্ম করিয়া উড়িস্যার পুতু হইলেন কিন্তু ঐ বিভব
ভোগ অধিক কাল হইল না ঐ সন্ধির পরবৎসরে তাঁহার
মহারাষ্ট্রীয় বন্ধুদিগের তাঁহার আবশ্যকতা না থাকাতে
তাঁহারা শঠতাপূর্ক্ক তাঁহাকে মারিলেন অনন্তর চারি
বৎসরের মধ্যে অর্থাৎ ১৭৫৫ শালে আলিবর্দি জীবনের
শেষকর্ম মধ্যে উড়িস্যা দেশ একেবারে মহারাষ্ট্রীয়দিগকে পুদান করিলেন 11

. তিনি এই রপে ১৭৫১ শালে মহারাষ্ট্রীয় দিগের সহিত সন্ধি করিয়া কিঞ্চিৎ কাল সৃস্থ হইলেন তাঁহার বয়স যদ্যপিও অধিক হইয়াছিল তথাপি তিনি যুবাপুরু-মের ন্যায় যুদ্ধজন্য অপকার শুধরিতে পুরুত্ত হইলেন যে সকল গ্রাম দক্ষ হইয়াছিল তাহা পুনর্বার সংস্থাপন করিলেন যে সকল লোক পলায়িত ছিল তাহাদিগকে পুনরাস্থান করিলেন কৃষকদিগকে আগামি ধন দান করিলেন অর্থাৎ কর্মাকরিবার পূর্ব্বেই ধন দিলেন এবং সর্বাধাজিদারা কৃষ্কির্মের উৎসাহ বৃদ্ধি করিলেন। তিনি নিজরাজ্যের প্রথম দৃশ বৎসর মুদ্ধবিষয়ে যেরপা ক্ষাতা প্রকাশ করিয়াছিলেন

শেষ পঞ্চ বৎসর নির্বিরোধকালেও' সেইনপ বৃদ্ধি
পুকাশ করিয়াছিলেন তিনি সুনিয়মপূর্বক কর্মে
মনোযোগ করিতেন পুতিদিন পুতি মৃহূর্ত্তে কিঞ্চিৎ
নিয়মিত কর্ম কর্ত্ব্য ছিল এই নপ সর্বাদা যত্নারা
এতদেশ সবল হইল এবং মহারাষ্ট্রায়দিগের অপকার
প্রায় বিস্মৃত হইল।

মহারাষ্ট্রী য়দিগের সহিত সন্ধির পরে ১৭৫৬ শাল পর্য্যন্ত তাঁহার রাজ/মধ্যে বর্ণনার উপযুক্ত কিছুই ঘটে নাই অনন্তর তিনি অধিকযত্নপূর্বক যে মাহা-ন্ম্যের মন্দির করিয়াছিলেন তাহা একেবারে মঝ হইল আলিবর্দির ভ্রাতৃপুত্র নেয়াইস মহম্মদ যাঁহাকে পোষ্যপুত্র করিয়াছিলেন তাঁহার ঐ দৌহিত্র ইকু । ম-উদ্দৌলা ঐ বৎসরের প্রথমে মরাতে মহাম্মদ বিবে-চনাশূন্য হইলেন এবং আমরাপূর্ব্বে বলিয়াছি যে শুবাদীরের অপর দৌহিত্র সেরাজউদ্দৌল। মাতা-মহের আদরদারা সম্পূর্ণকপে দৃষ্টচরিত্র হইয়াছি-লেন তিনি সকল দুক্ষম্মেই রত ছিলেন এব কোন জন তাহাতে কোন বিপর্রাত কথা বলিতে সমর্থ হইত না তিনি কামুকসহচরদিগের সহিত মুরসিদা-বাদের সকল পঁথে আড়ম্বরীপূর্ত্তক বিহার করি-তেন এবং জ্রীপুরুষ সাধারণ সকলের প্রতি নানা প্রকার উপদ্রোহ করিতেন নগরের প্রজারা তাঁহাকে

আসিতে দেখিলৈ উচ্চৈঃম্বরে কহিতেন হে পরমেশ্বর , আমাদিগকে ইহা হইতে রক্ষা কর। তাঁহার প্রিয় ও নিৰ্বোধ বৃদ্ধ মাতামহ অশীতি বৰ্ষ বয়ক হইয়া এই সকল দৌরাজ্যের কোন সম্বাদ লইতেন না তাহাতে সুতরা পঐ দুরাচারী অধিক সাহসী হইলেন তিনি ঢাকার নায়েব শাসনকর্তা হাসুনকুলি খার প্রতি বিরক্ত হইয়া তাঁহাকে সপরিবারে নারিতে প্রতিজ্ঞা क्रिल्न बरे रेष्ट्रा माकनार्थि अर्थमञ्ड वक्रांकि अन्-গত লোককে ঐ নগরে প্রেরণ করিয়াছিলেন ঐ লোক তথায় সেই মহাশয়ের ভাগিনেয়কে সর্বলোকের ় সমক্ষে দিবাভাগে মারিয়াছিলেন অনস্তর সেরাজ উদোলা মাতামহের নিকটে হস্তিন কুলিখাঁকে মারি-বার অনুমতি পুার্থনা করিলেন আলিবর্দি উত্তর করি-লেন যে তাঁহার পুভু নেয়াইস মহম্মদের অনুক্রা ব্যতি-রেকে ইহা করা যাইতে পারে না এবং এই দৌরাস্মা করিতে নিষেপ না করিয়া এবিষয় তাঁহাকে নাদেখিতে হয় এই মানসে মুরসিদাবাদ পরিত্যাগপূর্কক মৃগয়া করত রাজমহলে চলিলেন তাঁহার বৃদ্ধপত্নী সেরাজ উদৌলার মাতামহী নেয়াইসের নিক্ট্রে স্বয়^ গিয়া তাঁহার নির্দোষ বন্ধু এবং ভৃত্যকে মারিতে অনুক্রা পুর্থিনা করিলেন নেয়াইসের পত্নী জরিতী বেগম वनानालाकित शार्थनामस्या थे विवरस निक शार्थना

शुकान क्रियान त्याहेन धरे गकन लाक्त्र निय-দনদারা পরাজিত হইয়া অনুমতি করিলেন সেরাজ, উদ্দৌলা ঐ সহাশয়ের সহিত সাক্ষাৎ করিয়া বাটা প্রমনকালে ছব্লিন কুলিখার গ্ছের নিকটে গিয়া তাঁহাকে বাহিরে আনিয়া নিজসমকে টুকরা২করিয়া কাটিতে আছা করিলেন এবং ঐ সময়ে তাঁহার এক অন্ধ্ৰভাতাকে আনাতে তাহাকেও ঐৰপ করিলেন ম্সলমান্ইভিহাসবেভা কহেন যে এই সকল অসঙ্গত হত্যাতে আলিবর্দির পরিবারে পরমেশ্রের শাপ হইল কিঞ্চিদ্নস্তর নেয়াইস মরিলেন দুইমাসমধ্য তাঁহার ভাতা সায়দ আহমদ পূরণীয়ার শাসনকর। মরিলেন আলিবর্দি দৌহিত্তের চরিত্রদার। ভথচিত্ত হইয়া এব^ দুই ভ্রাতৃপুত্রের মরণে শোকাত্তর হইয়া ১৭৫৬ শালের ৯ আপ্রিলে লোকাগুরগত হইলেন।।

আলিবদির যুদ্ধে ও সন্ধিতে অসাধারণ ক্ষমতা ছিল এবং লোক্যাত্রায় উত্তম শক্তি ছিল ইহার স্পষ্ট প্রমাণ এই যে তিনি পঞ্চসগুতি বর্ষবয়সে উড়িস্যান্যথ্য সমৈন্যে মহারাষ্ট্রীয়দিগের অনুবর্তী হইয়াছিলেন বাজালার রাজ্যপুাপ্তির পর দশ বৎসরপর্যান্ত ভিল্ল-দেশায় শত্র বা নিজ বঞ্চকসেনাপতিদিগের সহিত্ যুদ্ধে ক্রমিক নিযুক্ত ছিলেন অনন্তর অন্তিম পঞ্চবর্য-নথ্যে কোন বিরোধ ছিল না ভাহাতেও ভাঁহার কর্ম

অতিশয় পূশ**্স**নীয় ছিল ওঁাহার সেনা**পতি মু**স্তাকা-খাঁ কলিকাভার ইপরাজদিগকে আক্রমণ করিতে পুনঃ২ উত্তেজনা করিতেন তাহাতে তিনি সর্বাদাই উত্তর করিতেন যে স্থল মধ্যে তাঁহার অধিক কর্ত্বা আছে ও এসময়ে সমুদ্রে অগ্নি দিলে কে নির্বাণ করিবে তিনি আর ব্লিভেন যে ইণরাজদিগের সমুদ্রে যে সামর্থ্য আছে তাঁছাদের সহিত বিরোধ করিলে সেই শক্তিদারা এতদ্দেশীয় বণিক্দিগের সামৃত্রিক বাণিজ্য नहें इहेरव ठी श्रांत ब्राक्त काल कब्रामिता उनमास्क्रता **७ हे** तारकता निर्वितार्थ मूत्रकिञ हिलन क्वन দুইবার মহারাষ্ট্রীয়দিগকে তাড়াইতে ধনের আবশ্য-কতা হওয়াতে তিনি ভাঁহাদিগহইতে সাহায্য দইয়া-ছিলেন তাঁহার মনে উদয় হইত যে তিনি যে ব্লাজ্য পাইয়াছেন তাহা তাঁহাদের হস্তগত হইবে যেহেন্ড তাঁহার দৌহিত্রই শরাজদিগের অহিতেচ্ছু ছিলেন তাঁহা তিনি জানিতেন একারণ তাঁহার ভয়পুকাশ করিলেন যে তাহার মরণোত্তর ইউরোপীয়েরা হিন্দুস্থানের নিকট-পর্য্যস্ত অধিকার করিবেন তাঁহার রাজ্যমধ্যে এক মহৎ ভুম এই ছিন যে অতিশয় কুকর্মানিত ট্রেছিজের পুভি হতজ্ঞান হইয়া স্থেহ করিতেন কিন্তু অভ্যন্ত বিলয়ে তিনি ঐ ভূম বুঝিতে পারিলেন যথন তিনি মরণ শয্যায় ছিলেন তখন তাঁহার কোন ভ্তা তাঁহার উত্তরাধি-

কারির নিকটে তাঁহাকে সোপরোধ করিতে প্রার্থনা করিলেন তাহাতে তিনি উত্তর করিলেন যে আমার মরণোত্তর সেরাজ উদ্দোলাকে যদি তাঁহার মাতামহীর সহিত তিন দিবসপর্যান্ত নির্বিরোধে থাকিতে দেখহ তবে তোমার আপনার শুভাশা করিতে পারিবে ॥

॰ नगग अध्याय

ঐ সময়ে অতিশয় গোনযোগ উপস্থিত ছিল আলি-বদিখি অতিসাহসিক যোদ্ধা ও উত্তম রাজনীতিছ ছিলেন নহারাষ্ট্রীয়েরা বাঙ্কালা জয় করিতে নাপারেন এনিমিত্তে দশ্বৎসরপার্যন্ত তাঁহাদিগের সহিত যুদ্ধ করিলেন এব॰ তাহাতে পুমঃ২ তাঁহাদিগকে পরাজয় করিলেন কিন্তু তথাপি অবশেষে তাঁহাকে সন্ধিপূর্বক পুতিরৎসর রাজস্ব কপে ছাদশলক মুদ্রা দিতে স্বীকার করিতে হইল তাঁহার মৃত্যুর পূর্ববৎসরে তাঁহার রাজ্য তিন শুবার মধ্যে উড়িস্যা একেবারে ত্যাগ করিতে হইল অনন্তর তাঁহার দি^হাদনে চত্তর্বি^শতি বর্ষ বয়ক্ষ অহকারী জুর দুর্বল ও দুরাচারী এক বালক আকঢ় হইলেন তাঁহার কেবল আস্থাসুথ ব্যতিরেকে অন্য কোন অভিপাম ছিলুনা অতথৰ ৰাহালা ও বেহার তাঁহার অধিকারে রাখা অসাধ্য হুইল ঐ সুখ্যাত আলিবর্দি. মরাতে মহারাষ্ট্রীয়েরা পুনর্বার উপদ্রোহ করিতে আরম্ভ করিল এবং অতদ্দেশ ঐ কুরদিগের হস্তগত

হইবার নান। পুকার সুযোগ হইল কিন্তু ঈশ্বরীয় ইচ্ছা , তাহার বিপরীত হইল বাঙ্গালার রাজ্য ও অবশেষে হিন্দু হানের সামাজ্য অতঃপরে ই রাজদিগের হই-वात छें भे क्रम इहेन जानिविधित स्जूकाल है । ताज-দিগের ভারতবর্ষের পুভু হইবার কোন আশা ছিল না তাঁহারা যেৰূপে ক্রমে২ এতদ্দেশ ক্রয় করিতে পুবৃত্ত হইলেন তাহা আমরা বিস্তারিত রূপে বর্ণনা করি।। ১৭৫৬ শালের ১০ আপ্রিলে সেঁরাজউদ্দৌল্য বাঙ্গালার ও বেহারের রাজা হইলেন তৎকালে দিল্লীর মহারাজ এমত ক্ষীণাবস্থায় ছিলের যে মৃতন গুরাদার তাঁহা হুইতে অনুজ্ঞাপত্র প্রার্থন নিরাবশ্যক বুঝিলেন শুবা-দার রাজ্যের প্রথমতঃ তাঁহার পিতৃব্য নেযাইন মহম্মদের পত্নীর সমস্ত ধন অপছরণ করিতে সৈন্য প্রেরণ করি-: লেন ঐ রমণীর স্বামী যোড়শ বৎসরপর্য্যন্ত ঢাকার শাসনকর্ত্তা থাকিয়া অপরিমিত ধন সঞ্চয়-করিয়া লোকাস্তরগত হইলে তিনি পতিধনে অধিকারিণী হইয়াছিলেন ঐপনরক্ষার্থে তিনি যেসকল সৈন্য রাখিয়া-ছিলেন তাহারা আবশ্যকসময়ে তাঁহাকে পরিত্যাগ করিল সুতরাণ সমুদায় সম্পত্তি নির্বিরোধে গুবাদারের .পুরীতে প্রেরিড হইল এব ১ এ রমর্ণ বাসস্থান হইতে দুরীকৃত হইলেন রাজবল্লভ ঢাকায় নেঘাইস নহম্মদের নায়েব থাকিয়া মুসল্মানদিশের রাজ্যকালে যেৰপ

রীতি চলিত ছিল তদনুসারে সমুদায় দেশ লুট করিয়া অধিক ধন সংগ্ৰহ করিয়াছিলেন আমরা বর্ণনা করি-য়াছি যে ১৭৫৬ শালের প্রথমে নেয়াইসের মৃত্যু হয় আলিবর্দি তখন সি°হাসনে ছিলেন কিন্তু তাঁহার বৃদ্ধিজুপশ হইয়াছিল রাজবল্লভ তৎকালে মুরসিদাবাদে **থাকাতে সেরাজ উদ্দৌলা তৎক্ষণাৎ তাঁহাকে কারা**গৃহে স্থাপন করিয়া ঢাকায় তাঁহার সম্পত্তি আটক করিতে চর পুরণ করিয়াছিলেন কিন্তু তাঁহার পুত্র কৃষ্ণদাস ঐ সম্বাদ শুনিয়া সমুদায় ধন ও পরিবারলোক নৌকায় তুলিয়া গলাসাগর অথবা ক্লগনাথ তীর্থে গমনচ্ছলে কলিকাতায় আসিলেন ১৭ মার্চ তথায় আসিয়া তথা-কার শাসনকর্ত্তা ভেুক্লাহেবদারা ঐ নগরে বাস করিতে . অনুক্ষাত হইলেন এব পিতার মোচন সম্বাদ যেপর্য্যন্ত না শ্রবণ করেন তাবৎ তথায় থাকিতে স্থির করিলেন সেরাজউদৌলা ঐ ধন বিহস্ত হওয়াতে অতিশয় বিরক্ত হইয়া কলিকাতায় দূত প্রেরণ করিলেন যে কৃষ্ণাৰ, পাতু দুরীকৃত হইবেন ঐ মনুষ্য কোন বিশ্বাৰ জনকলিপিব্যতিরেকে আসাতে ড্রেক্ সাহের তাঁহাকে নগরহইতে বহিভূ ত করিনেন।।

অনন্তর ইউরি পহইতে সম্বাদ আসিল যে অতি. অপেকালের মধ্যে ইংরাজদিগের ফরাসিদের সহিত যুদ্ধ হইবে ফরাসিরা নদীতীরে অতিবলবান ছিলেন এবং ইংরাজদিগের কলিকাতায় যে সৈন্য ছিল চন্দুনগরে তাঁহাদের তাহার দশগুণ ছিল অতএব ইংরাজের।
দুর্গ গুধরিতে আরম্ভ করিলেন এবং এই সমাচার তৎকালে সিংহাসনস্থিত দুরস্ত বালকের কর্ণগোচর শীঘু
হইল গুবাদার সর্ক্রাই ইংরাজদিগের দেবী ছিলেন
তিনি কঠীনরূপে ভুক্ সাহেবকে একপত্র লিখিলেন
তাহাতে আছা করিলেন যে নূতন দুর্গ কদাচ করিবেন
না ও পুরাতন দুর্গভ্রম করিবেন এবং অবিলম্বে কৃষ্ণ
দাসকে সমর্পণ করিবেন।।

আমরা পূর্ধের বলিয়াছি যে সেরাজ উদ্দৌলার পিতৃবা सायम आइयम आलिविक्ति मूहे अक मान शूटल भति-য়াছিলেন ও তাঁহার সমুদায় ধন সৈন্য এব ১ পূরণীয়ার রাজত্ব নিজপুত্র শোকত্জঙ্গকে দিয়াছিলেন এবং. তিনিও তাঁহার পিত্যাপুত্র শুবাদার হইবার কিঞ্চৎ পূর্বের রাজকীয় কন্মে নিযুক্ত হইয়াছিলেন উভয়েই ত্তল্যন্ধপে কর্কশ ক্রর ও নিবৃদ্ধি ছিলেন অতথব ওঁ।হার। পরস্পার মিলপূর্বক অধিক কাল থাকিতে পারিবেন না ইহা স্পষ্ট হইল। সেরাজু উদ্দৌলা পদপ্রাপ্তিমাত্রে মাতামহের সমুদায় ভ্তা ও সেনাপতি দিগকে বিদায় করিয়া অতিলম্পটস্বভাব যুবাপুরুষ দিগকে অনুগুহ পাত্র করিলেন তাহারা নর্মদা তাঁহাকে দুকর্মে সাহস প্রদান করিত তাহারা প্রতিদিন অবিচার ও নিঃরতা

করিতে অন্রোধ করিত এইনপে কোন মনুযোর ধন ও কোন দ্রীলোকের সম্ভূম রক্ষা পাইতনা ৷ এতদেশীয় প্রধান লোকেরা এইসকল উপদ্রোহ সহ্যকরিতে অশক্ত হইয়া তাঁহার পরিবর্ত্তে অন্যকোন লোককে ঐসিৎহা **সনে নি**যুক্ত করিতে পারেন এমত অনুসন্ধান করিতে লাগিলেন তাঁহাদের দৃষ্টি শোকত্জন্তের প্রতি হইল যদ্যপিও তিনি সেরাজ উদ্দৌলা অপেকা উত্তম ছিলেন না তথাপি তাঁহারা মঙ্গলের আশা করিয়াছিলেন। व्यक्तिसः यज्यदा इहेन अव ें हि। कि अहे नकनए-শের নাজিম করিতে মহারাজার অনুভাপত্র প্রার্থনায় দিল্লীতে দৃত প্রেরিত হইল ঐ নিবেদন পত্রে প্রতি বৎসর মহারাজকে এককোটী মুদ্রা পাঠাইতে স্বীকার . ছिन অতএব সুনিদ্ধ হইল।

সেরাজ উদ্দোলা এইষড়যন্ত্র জানিতেপারিয়া তৎক্ষগাং নিজনৈন্য সংগৃহকরিয়া পূরণীয়ার প্রতি চলিলেন ও জ্যেষ্ঠতাতপুত্রকে নষ্টকরিতে স্থিরকরিলেন যখন
সৈনেতরা রাজমহল পর্যান্ত গিয়া গঙ্গাপার হইবার
উদ্যোগ করিতেছিল তখন সেরাজ উদ্দোলা কলিকাতার
শাসনকর্ত্রা স্ক্রেক্সাহেবকে যে পত্র লিখিয়াছিলেন
তাহার উত্তর পাঁইলেন তাহাতে দৃদক্রপে লিখিত
ছিল যে তিনি শুবাদারের আজ্ঞানতে চলিবেননা এই
উত্তর প্রাপ্তিমাত্রে তাহার অস্থানকোধ হইল পরে

ইংরাজদিগকেরাজ্যের অপকারিদিগের আশুয় দানজন্য ও তাঁহার রাজ্যে তাঁহারা আয়রকা করিয়াছেন
অজন্য দোষী করিয়া তাঁহাদের মূলোৎপাটন করিতে
ভয় দেখাইলেন এবং তথাকার শিবির ভঙ্গপূর্ত্তক
নিমেষমাত্র বিলম্ব না করিয়া কলিকাতায় যুদ্ধার্থে
যাত্রা করিতে আজ্ঞা করিলেন আগমনকালে কাশীমবাজারের কার্থানা নুট করিলেন এবং যে সকল ইউরোপায় লোকদিগকে তথায় পাইলেন তাহাদিগুকে কল্মালয়ে স্থাপন ক্রিলেন ৷৷

কলিকাতায় ই৽রাজেরা ষষ্ঠ বর্ষহাত্ত অধিক কালপর্যান্ত নির্বিরোধে থাকাতে মনোযোগের অপতাপ্রযক্ত তাঁহাদের দুর্গ নষ্ট হইতে ছিল তঁহারা এমত আপৎশুনা হইয়াছিলেন যে ভিত্তির অশীতি-ছন্তমধে। গৃহনির্মাণ করিয়াছিলেন তৎকালে তাঁহাদের রক্ষক একশত সপ্ততি মনুষ্য ছিল তাহায় মধ্যে মহিজননাত্র ইউরোপীয় ৷ তাঁহাদের বারুদ পুরাত্রন ও নম্টপ্রাল ইইয়াছিল হামান সকল মলিন হইয়াছিল ৷ সেরাজউদ্দোলা ঐ নগরের আক্রমণার্থে চ লারিণশৎ বা পঞ্চাশৎসহসু সৈনোর সহিত ও উত্তম একদলগোণোনাজের সহিত আদিতাঁছিলেন ইণরাজরা দেখিলেন যে কোনমতে বাধাদিবার উপায় নাই একারণ সন্ধিপ্রাণ্যায়, পনঃ২ পত্র প্রেরণ করিলেন

থবং অধিক টাকা দিতে স্বীকার করিলেন কিন্তু শুনাদার কিছু শুনিলেন না তিনি স্থির করিয়া ছিলেন যে একে
বারে তাঁহাদের শেষ করিবেন অতএব কোন উত্তর
নাপাঠাইয়া ক্রমিক আসিতেছিলেন। ১৬ জুন তাঁহার
অগুসর সৈন্যেরা চিতপুরে উপস্থিত হইল কিন্তু ইংরাজেরা গড়ের রহির্ভাগে কতিপয় সৈন্য স্থাপন
করিয়াছিলেন তাহারা ঐ সৈন্যমধ্যে এমত গোলা
ব্যম্ম করিল যে তাহারা তথাহইতে পলায়ন করিয়া
দমদমায় শিবির করিল।।

১৭তারিখ শুবাদারের সৈন্যেরা নগরুবেষ্টন করিয়া পরদিন চত্তদিগে আক্রমণ করিল পরে ভিত্তির নিক-টস্থ গৃহসকল অধিকার করিয়া এমত ভয়ানক অগ্নি .. রক্ষা করিল যে কোন জন দুর্গোপরি বহিভূতি হইতে পারিল না ঐ দিবসে অধিক লোক মারা পড়িল এব ১ অনেকে আহত হইল মুসলমানেরা বহির্পশ অধিকার করাতে ইপরাজদিগের গড়মধ্যে প্রস্থান করিতে হইল রাত্রিকালে দুর্গের চত্তদি গস্থ কতিপয় বৃহৎগৃহে অথিপ্রদান করাতে অতিশয় উত্তাপ হইল কর্ত্তব্যের অবধারণার্থে যুদ্ধসভা পুস্তত ছইল সেনাপীতিরা কর্ত্ত স্থির করিতে নাপারিয়া কহিলেন যে পলায়ন ব্যতিরেকে রক্ষা নাই এতদ্দেশীয় বহুলোক দুর্গন্ধ্যে থাকাতে যে খাদ্যদ্রব্যছিল তাহা

সপ্তাহের অধিক ছইতে পারে না অতএব দুর্গের ধারে যে সকল নৌকা ছিল তদুপরি পরদিন প্রাতঃকালে প্রথমতঃদ্রীলোকদিগকে তুলিয়া পরে পরুষেরা অরো হণ করিয়া এনগর পরিত্যাগ করিতে স্থির করি-নেন কিন্তু ঐ দুৰ্গ মধ্যে এমত কোন প্ৰধান লোক ছিলেন न। य थे याजी निर्वाष्ट्र करतन नकरन्दर आद्धा कतिरङ ইচ্ছুক ছিলেন আছ্ৰা শুনিতে কেহই ছিলেন না ঐ সময়ে স্ত্রীলোকেরা নৌকায় উঠিলেন দুর্গন্থিত লোকেরা ও নৌকাস্থিত লোকেরা তুল্যৰূপে ভীত হইলেন তীব্ল-স্থিত প্রত্যেকেই বেগে গাবমান হইলেন নাবিকেরা শীঘু নৌকা বাহির করিতে লাগিলেন সকলেই আপন২ রক্ষাচিস্তা করিয়া যে নৌকা প্রথমে পাইলেন তাহাতেই উঠিলেন শাসনকর্ত্তা ড্রেকসাহেব ও সেনাপূতিরা প্রথমতঃ পলায়ন করিলেন অতি অপ্পকালের মধ্যে সমদায় নৌকা প্রস্থান করিল কতিপয় জাহাজের নিকটে ও কতিপয় হাওড়ায় চলিল কিন্তু অর্দ্ধেক অপেকা অধিক্ সৈন্য ও ভদুলোকেরা পশ্চাৎ পড়িয়া রহিলেন যখন শাসনকর্ত্রার পলায়ন বিদিত হইল অবশিষ্টেরা একত্র হইয়া হালওএল সাহেবকে পুভু করিলেন। পলা-য়িত লোকেরা যেসকল জাছাজে ছিলেন সেসকল জাছাজ নদীর এক ক্রোশ দূরে গিয়া নোঙ্গর করিয়াছিল ১৯ জুন বিপক্ষেরা পুনর্বার আক্রমণ করিয়া তাড়িত হইল

অতএব তথায় আসিয়া সৈন্যদিগের উদ্ধারার্থে জাহাজে ইবিত পুেরিত হইল এব তাহা অনায়ানে সম্পন হুইত কিন্তু যে দুইদিনপর্য্যন্ত দর্গ স্ববশে ছিল তক্মধ্যে পোতস্থিত লোকেরা যাঁহাদের পরিত্যাগ করিয়া আসিয়াছিলেন ভাঁহাদের রক্ষার্থে কোন চেষ্টা করিলেন না তাঁহাদের একমাত্র আশা ছিল যে রায়লজজ্জ নামক জাহাজ চিত্পুরে নোজর করিয়াছিল হালওএল সাহেব ঐ জাহাজকে গড়ের ধারে আসিতে আজ্ঞা করিয়া দুইজন ভদুলোককে পাঠাইলেন কিন্তু ঐ জাহাজ আসিবার কালে পথিমধ্যে ভূমিতে এমত রুদ্ধ হইল যে পুনৰ্বার তাহার মোচন হইল না এই ৰূপে ঐ হত চাগা সৈন্যদিগের শেষ আশাও নষ্ট হইল ১৯ তারিখ রাত্রি . কালে বিপক্ষেরাদুর্গেয় চত্তর্দিগস্থ অবশিষ্ট গৃহসকলে অগ্নিপুদান করিল ২০ তারিখ পূর্বাপেকা দৃঢ়তর আক্রমণ করিল হালওএন সাহেব তাহাদের বাধার চেষ্টা বিফল দেখিয়া শুবাদারের সেনাপতি মাণিক-চন্দের নিকটে সক্ষিনিমিত্তে এক পত্র পাঠাইলেন দৃইগ্রহর চত্তর্থ ঘণ্টার সময়ে শত্র্দিগের এক দাহনিবারণার্থে ইঞ্চিত করাতে ইণ্রাজেরা বোধ করিলেন থৈ সেনাপতিহইতে উত্তর আসিয়া থাকিবে একারণ কামানে অগ্নিদান রোধ করিলেন ভাঁহারা এই দ্বপ করিবামাত্তে বিপক্ষেরা

ভিত্তির নিকটে আসিয়া তাহাতে আরোহণ করিতে আরম্ভ করিল একঘণ্টার মধ্যে দূর্গে তাঁহাদের অধি-কার হইল অনন্তর তাহারা তথাকার গৃহসকল লুট ক্রিতে 'প্রবৃত্ত ভ্ইলেন পঞ্চমঘটিকার সময়ে সেরাজ উদ্দৌল। এক দোলায় আদিলেন তাঁহার সমুথে ইউ-রোপীয়েরা আনীত হইল হালওএল সাহেবের হস্ত বন্ধ ছিল কিন্তু শুবাদার তাহা মোচন করিতে আক্সা করিয়া কহিলেন যে তাঁহার মন্তকের এক গাভি কেশ क्ट म्मर्भ कदित्वन। **७**व॰ कहित्वन कि बाम्पर्य যে অতিমাপ মনুষ্য চারিশতগুণে অধিকলৈনে র সহিত এতাৰৎ কালপৰ্যস্ত্য যুদ্ধ করিল তিনি সহজমূত্তি-তেদরবার আরম্ভকরিয়াকৃষ্ণদাসকে তাঁহার নিকটে আনিতে আক্সকরিলেন ইণরাজদিগের প্রতি আক্রম-ণের এক প্রধান কারণ এই ছিল যে তাঁহারা ঐমনুষ্যকে আশুয় দিয়াছিলেন অতএব বোধ হইয়াছিল যে ঐ ব্যক্তির কঠিন দণ্ড হইবে কিন্তু নবাব তাহাব্যতিরেকে তাঁহাকে এক সমুমজনক পারিচ্ছদ দিলেন।

এব° ষষ্ঠঘটিকার পরে সপ্তম ঘটিকার মধ্যে প্রত্যা গমন করিলেন ও এতদেশায় একসেনাপতির অধীনে ঐ দুর্গ সমর্পণ করিলেন তথায় ঐ সময়ে একশত ছয়চল্লিশ জন ইউরোপীয় বন্দী ছিলেন তাহার মধ্যে একজন স্ত্রী লোক ও দাদশক্তন আহত সেনাপতি

हिलन अविभिक्ठ महासम् द्राविकारन डाँहामिशक নিরুদ্বগে রাখিতে স্থান অনেষণ করিতে, লাগিলেন অপরাধি সৈন্টেদিগের আসেধের নিমিত্তে ঐ দুর্গমধ্যে এক গৃহ ছিল তাহার দৈর্ঘ দ্বাদশ হস্ত ও বিস্তার নয় হস্ত ৰাত্ৰ এব° বায়ু গমনাৰ্থে প্ৰতিদিগে এক২ গৰাক हिन এই कृषु गृह्यस्या अिंकिशीया ज्यानिया ग्रानिया সমুদায় ইউরোপীয়দিগকে রুদ্ধ করিলেন সুতরা এ ব্লজনীতে অসম্ভব ক্লেশ হইল বন্দীর্; অবিলয়ে অনিবার্য্য পিপাসাগুস্ত হইলেন এবণ রক্ষকদিগহইতে যে জলপ্রাপ্ত হইলেন তাহাতে কেবল হতজ্ঞান করিল প্রতিজন নিঃশ্বাসনিঃক্ষেপার্থে গ্রাক্ষদ্বারের নিক্টে যাইতে বিবাদ করিতে লাগিলেন এব^ একেবারে এই -যাতনারশেষ করিতে রক্ষকদিগের নিকটে প্রার্থনা করিলেন যে তাঁহাদিগকে দথ্য করেন একে২ অনেকেই **শ**রিয়া " পড়িলেন অবশিষ্টেরা ঐশবসমূহোপরি দাঁড়াইয়া নিঃখাস,নিঃক্ষেপের স্থান পাইলেন তদারা অপলোক বাঁচিয়া ছিল পরদিন প্রাতঃকালে যখন **দার** মোচন হইল একশত ছয়চল্লিশ লোকের মধ্যে ত্রয়োবিপশতি জীবদশায় ছিলেন ব্লাক-হোল নামে ইত্যা অর্থাৎ বাঙ্গালিরা গ্রুদারা মারিয়াছিলেন সে এই ঐ কলিকাতার লুটে বহু

नव छना थेपूरश्वत स्वतं चाह्न ও প্রায় এই বিষয়ের নিমিত্তে সেরাজ উদ্দৌলা ভূরতায় রাক্ষস তুল্য হইয়া-ছেন কিন্তু তিনি পরদিন প্রাতঃকালাবধি এই ঘোর-তর ব্যাপারের কিছুই জানিতেননা সমুদায় দোষ মাণিক-চাঁদনামক হিন্দু করিয়াছিলেন কারণ ঐ নিশিতে দুর্গ তাঁহার আধীনে ছিল ২১জুন প্রভাতে নবাব 🗳 অবস্থা শুনিয়া অতিশয় অসমতি প্রকাশ করিয়া-ছিলেন ৷ যেসকললোক ব্লাকহোলে রুদ্ধ হইয়াও বাঁচিয়া-ছিলেন হালওএল সাহেব তম্মধ্যে একজন ছিলেন গুবাদার তাঁহাকে আহ্বান করিয়া ধনস্থান প্রকাশকরি-তে কহিলেন কিন্তু তথায় পঞ্চাশৎ সহসু মৃদ্যু মাত্র পাও-ষাতে শুবাদারের আশ্চর্য্য বোধ হইল। সেরাজউদ্দৌলা নয়দিবসপর্য্যন্ত কলিকাতার নিকটে থাকিয়া ঐ স্থানের নামআলিনগর রাখিয়ামুরসিদাবাদে প্রত্যাগমনকরি-লেন ২ জুলাই তিনি গঙ্গাপারহইয়া ওলনাজদিপকে ফরাসিদিগকে আনুকূল্য করিতে কহিলেন ও যদি তাঁহারা অস্বীকার করেন তবে তিনি ইণরাজদি-গের প্রতি যেৰূপ ব্যবহার করিয়াছেন সেইৰূপ করি-বার ভয় দেখাইলেন ওলনদাজেরা সাদ্ধ চারি লক্ষ মৃদ্যু ুও ফরাসিরা সাদ্ধ তিন লক্ষ মৃদ্যু দিয়া নিস্তার পাইলেন যেবৎসরে কলিকাতা অধিকার হইল ও ইৎরাজেরা বাঙ্গালাহইতে দুরীকৃত হইলেন সেই বংসরে অর্থাৎ ১৭৫৬ শালে ভেনেরা ভূমির সনন্দ পটেইয়া এরামপর মগর আরম্ভকরিলেন।।

গুবাদার জয়দারা প্রকল্প হইয়া মুরসিদাবাদে আসিয়া পুরণীয়ার শাসনকর্ত্তা তাঁহার জ্যেষ্ঠতাতপুত্র গোকৎ-জঙ্গের প্রতি নুতন আক্রমণ করিতে স্থির করিলেন তাঁহার সহিত বিরোধোত্থাপন করিতে আপনার এক ভৃত্যকে তথাকার কৌজদার করিয়া জেঠতাত পুলকে আঞ্চাকরিলেন যে তিনি ঐ ব্যক্তিকে তৎকর্ম্ম করিতে স্থাপন করিবেন ভাহাতে ঐ বালক ক্লেধে উন্মন্তপ্রায় হুইয়া উত্তর লিখিলেন যে জিনি ব্যবস্থানতত এতদেশের শুবাদার হইয়া দিল্লীহইতে নিয়োগ পত্র পাইয়াছেন এব॰ নবাবকে আজ্ঞা করিনেন যে তিনি মুরসিদাবাদ পরিত্যাগকরিয়া অভিলযিত স্থানে গমনকরেন সেরাজ উদ্দৌলা অতিশয় জুদ্ধ হইয়া একনিমেষ বিলয় ব্যতি-রেকে সৈন্যদিগের সহিত একত্র হইয়া পূরণীয়ায় যাত্রা ক্রিতে আক্স দিলেন শোকত্লঙ্গও নিজসৈন্যদিগের প্রেরণ করিলেন কিন্তু তিনি যুদ্ধ কিছুমাত্র জানিতেননা ও কোনজনেরপর।মর্শগুনিতেনন। তাঁহার সেনাপতির। <mark>দৈন্যের সহিত অগুসর হইয়া এক দৃঢ়স্থানে উপস্থিত</mark> হ্ইলেন ঐ স্থানীয় সন্মুখে এক মাঠ ছিল ও তাহাতে কেবল একসাত্র সেত্র ছিল তথায় সৈন্যেরা শিবির করিল কিন্তু তাহাদের কোন কর্ত্তাছিল না সুতরা পথকৃতকর্মের

কোনপ্রস্তাব হয় নাই সেনাপতিদিগের যে২ স্থান ভাল বোধ হইল নেই২ স্থানে নিজ২ সৈন। স্থাপন করিলেন অবশেষে সেরাজউদ্দৌলারবৈসন্যেরা ঐ মাঠের সম্মুখে আসিয়া শত্রিদেগের প্রতি কামান করিতে আর্ড ক্রিল বৃহৎ কামানদারা শোকত্ জঙ্গের সৈন্যেরা অত্য-স্তবিরক্ত হইল তাহাতে তিনি নিবু দ্বিতাপ্রযুক্ত অশা-কঢ় সৈন্যদিগকে মাঠ উত্তাৰ্ণ হইয়া সংগ্ৰাম করিতে আক্রাকরিলেন তাহারা বহুকেুশে জলকর্দ্ম পারহইয়া গুকভূমিতে উপস্থিত হইবামাত্রে সেরাজউদ্দৌলার সৈন্যেরা চত্তরতাপূর্ব্দক তাহাদের আক্রমণ করিল এই তুমুনযুদ্ধকালে শোকত্জক স্ত্রীলোকদিগের সহিত আসন্দভোগ করিতে তাঁবুমধ্যে গিয়া মদ্যপানে এনত মত্ত হইলেন যে সহজৰপে বসিতে শক্তি রহি<u>ল</u> না তাঁহার সেনাপতিরা পশ্চাৎ২ আসিয়া সৈন্যদিগের আবিপত্য করিতে অনুরোধ করিলেন অনস্তর তঁহি।কে এক গজোপরি বসাইলেন ও একভৃত্যকে ভাঁহার অবলম্বনার্থে নিযুক্ত করিলেন এই রূপে তিনি মাঠের ধারপর্য্যন্ত আসিবামাত্রে বিপক্ষের সৈন্য হুইতৈ এক গোলা আসিয়া কপালে লাগাতে তিনি হাওদার উপরে মরিয়া পড়িলেন সৈনে/রা তাঁহার নিপাত দেখিয়া শ্রেণী ভঙ্ক করিয়া পলায়ন করিল দুই দিবসপরে শুবাদারের সেনাপতি নোহনলাল পুরণীয়া অধিকার করিয়া তাহাতে প্রাপ্ত প্রায় নবতিলক্ষ মৃদু । ও শোকত্ জঙ্গের রমণীসকল মূরসিদাবাদে পাঠাইবেন সেরাজ-উদৌলা এই যুদ্ধে হতসাহস হইয়া রাজসহলের অধি-ক গমন করেননাই কিন্তু তাহাদারাই বিজয় হুইল এমত বিশ্বাস করিয়া বি পুলআড়ম্বরীপূর্ম্বক মুরসিদাবাদে আসিলেন ।৷

আমারা একণে ইণ্রাজদিগের বিষয় বর্ণনাকরি কলিকাতা আক্রমণ করাতে তাঁহাদের একেবারে সর্কাশ হইয়াছিল ডেকু সাহেব লজ্জিতরূপে স্বদেশীয় লোকদিগকে পরিত্যাগ করিয়া মাদুাজহুইতে সাহায়গ্রাথনায় দূত প্রেরণ করিয়া নদীম্থে পোতোপরি বন্ধ লোকের সহিত ছিলেন কিন্তু তথায় রোগদারা অধিক লোক মারা পড়িল 11

কলিকাতায় যেদুর্ঘটনা হইয়াছিল তাহার সমাদ মাদুজে যাইবামাত্রে তথাকার শাসনকর্ত্রা ও প্রধান সভা
ভয়ে নিমগু হইলেন তাঁহারা সকলবিষয়েই বিপদ দেখিলেন কারণ করাসিদিগের সহিত যুদ্ধের সম্ভাবনা পুতিদিন পুবল হইতে ছিল কিন্তু পশুিচরিতে করাসিরা যদ্যপিও অতিবল্বান ছিল ও যদ্যপিও নিজ্সৈন্য অতি
অপ্র ছিল তথাপি তাঁহারা বাঙ্গালায় সাহায্য পুথমতঃ
কর্ত্রব্য স্থির করিলেন তাঁহারা তৎক্ষণাৎ কতিপয়
পোত পুস্ততপুরঃসর কিয়ৎ সৈন্য সংগুহ করিলেন

ওয়াট্সন্ সাহেব নাবিক সেনাপতি হইলেন এবণ কর্ণেল ক্লাইৰ সাহেব ভূমিচরদেনার অধ্যক্ষ হইলেন তিনি ত্রয়োদশ বংসরপূর্বেও অষ্টাদশবর্ষ বয়ঃ ক্রমে ভারতবর্ষে সভ্যকশ্মে নিযুক্ত হইয়া আসিয়াছিলেন পরে তিনি রণেচ্ছক থাকাতে যুদ্ধকর্মে প্রবিষ্ট হটয়া মহংযোদ্ধাস্বৰূপে খ্যাত হইলেন বাঙ্গালায় আসি-বার সময়ে তাঁহার বয়স একত্রি শৎবর্ষ ছিল তিনি বয়সে বালক কিন্তু ব্যবহারে অতিপ্রাচীন ছিলেন ৷ মাদ্রাজে উদের্গা করিতেই অধিককাল যাপন হুইল ১৭৫৬ শালের আক্টোবর মাদের পূর্বে জাহাজ সকল বাহির হইতে পারে নাই পরে উত্তর পূর্অদেশহইতে বায়ু হওয়াতে তাঁহাদের কলিকা-তায় আদিতে ছয় সপ্তাহ হইল এবং সকল জাহাঞ্চ আসিলেও দুইখান অতিবিলম্বে আসিন কলিকাত। নগর উন্নারার্থে যে সৈন্য প্রেরিত হইয়াছিল^{*}তাই। সমুদায়ে নয় শত ইউরোপীয় ও পঞ্চদশ শত এতদে-শীয় সিপাই ছিল ২০ডিসেম্বর তাঁহারা ফল্তায় আসি-লেন ২৮ তারিথ মায়াপুর পর্য্যন্ত আসিলেন ঐ ञ्चारन उथकारन सामनिष्मित अक मुर्ग हिन कारिय সাহেব রাত্তিযোগে সমুদায় সৈন্য অবতারণ করিলেন কিন্তু তথাকার পথপ্রদর্শকেরা তাঁহাকে কুপথে লইয়ানিয়াছিল একারণ তাঁহারা ঐ দুর্গের নিকট় যাইবার পূর্ব্বে সূর্য্যোদয় হইল গুবাদারের সেনাপতি মাণিকটাদ অচিন্তনীয়ৰপে কলিকাতাহইতে আসিয়া, তাঁহাদের প্রতি আক্রমণ করিলেন তাঁহার সৈন্যেরা যদি উচিত কর্ম করিতে পারিত তবে ই^রাজেরাপরা-জিত হইতেন ক্লাইব সাহেব অবিলয়ে বিপক্ষেরপ্রতি কামান ছু ড়িতে আরমুকরিলেন পরেএকগোলা মাণিক-চাঁদের হাওদার মধ্যদিয়া যাওয়াতে তিনিঅতিশয়ভীত হুইয়া কলিকাতায় পলায়ন করিলেন অনন্তর শঙ্কাপ্র-যুক্ত তৎস্থলেও থাকিতে অসমর্থ হইয়া পঞ্চশত লোক রক্ষক রাখিয়া ভরাপূর্বক সুরসিদাবাদে পুভুর নিকটে গমন করিলেন ক্লাইব সাহেব স্থলপথে কলিকাতায় চলিনেন কিন্তু তাঁহার আগমনের পূর্ব্বে জাহাজসকল আসিয়া দুইঘণ্টার মধ্যে ঐ স্থান জয় করিয়াছিল এব॰ ১৭৫৭ শালের ২ জানুয়ারি তথাকার লোক সকল নাবিক সেনাপতির অধীন হইল এইৰূপে এক না**শ**ব্যতিরেকে কলিকাতা পুনঃ পুাপ্ত মনুষ্যের रुहेन ॥

। একাদশ স্থ্যায়।

ক্রাইব সাহেব উত্তমকপে জানিতেন যে নবাবকে ভয়পুদর্শন না করিলে তিনি কদাচ সন্ধি করিবেন না অতএব ক্লিকাতা পুনঅধিকারের দুইদিবসপরে তৎ-কালে পুধানবাণিজ্যের ও অধিকধনের স্থান হুগলি-

দগর লুট করিতে জাহাজ ও সৈন্য প্রেরণকরিলেন। ইহা বোধ, হইতেছে যে কলিকাতাঅধিকারের পরে তিনি মুরসিদাবাদে সেট্দিগের নিকটে সমাচার পাঠাইগ্নাছিলেন যে তাঁহারা ইণরাজদিগের ও নবাবের মধ্যস্থ হইয়া সন্ধি নিষ্পন্ন করেন এবং ইহাও উক্ত আছে যে সেরাজউদৌলা প্রথমতঃ আনন্দের সহিত তাঁহাদের পরামর্শ গুনিতেন কিন্তু যথন তিনি গুনি-লেন যে ক্লাইব সাহেব হুগলি স্থিত রাণিজ্যস্থান অধিকার করিয়া লুট করিয়াছেনতখন অতিশয় ক্রোধা-বিষ্ট হইয়া ভৎক্ষণাৎ কল্লিকাতায় যাত্রা করিতে সৈন্য-দিগের প্রতি আছে৷ করিলেন তিনি ৩০ জানুয়ারি সলৈনে জগলিতে নদীপার হইয়া ২ কিবুয়ারি ক্লাই-বের শিবিরহ্ইতে পাদকোশমধ্যে আসিয়া নগরের পশ্চাৎভাগে ভাঁবু ফেলিলেন ক্লাইবের সৈন্য তৎ-কালে সপ্তশত ইউরোপীয় ও দাদশ শত এতদেশীয় ছিল কিন্তু নবাবের সৈন্য প্রায় চত্তারিংশিৎ সহসু ছিল সেরাজউদৌলা আসিবামাত্রে ক্লাইব সাহেব সন্ধি-প্রস্তাব করিতে তাঁহার নিকটে দূত প্রেরণ করিলেন এব॰ বামঞ্জস্য করিতে ইচ্ছা জানাইলেন এইৰপে নবাবের নিকটে দূত প্রেরিত হইল তাহাতে যদ্যপিও ভাঁহার সন্ধিবিষক উক্তি ছিল তথাপি ভাঁহারা স্পাষ্ট মপে দেখিলেন যে তাঁহার আন্তরিক ইচ্ছা সে- ৰূপ নহে তাঁহার আগমনে কলিকাতার চতুর্দিগস্থ লোকেরা ভীত হইয়া পলায়ন করিলেন ই শ্রাজদিগের খাদ্যদুব্যের অভাব হইতে লাগিল অতএব ক্লাইব সাহেব নবাবের পুতি একবার আক্রমণ করা উচিত বুঝিয়া ৪ কিবুয়ারি রাত্রিকালে নাবিকসেনাপতির জাহাজে গিয়া ভাঁহাহইতে ছয়শত নাবিক লোক লইয়া রাত্রি দুইপুহর একঘণ্টার সময়ে তাহাদিগের সহিত তীরে অবতরণ করিলেন দ্বিতীয় ঘটিকার সময়ে সমুদায় বৈনে রো অক্সধারী হইল এবণ চত্তর্থ ঘটিকায় নবাবের শিবিরের পুতি, ধাবমান হইল ক্লাইব সাহেব সম্দায়ে **দার্দ্ধরে মান্ত ইউরোপীয় ও অষ্টশত সিপাইর**, সহিত বিশ্শতিগুণে অধিক সৈন্য আক্রমণ করিতে माङ्ग्रम् र्क्क गमन कतिलन भीठाएउ यक्षे रहेशा থাকে সেইন্নপ ঐ প্ৰভাতকালে এমত নিবিড় কুজ্বাটিক। হইল **থে কোন মনষ্য সন্মুখে ছ**য়হন্তপর্য্যন্ত দেখিতে পাইতনা এইকপসময়ে ই^রাজেরা যুদ্ধ করিতে২ বিপক্ষের শিবিরমধে। পূবেশ করিলেন তাঁহাদের সর্ম¥মেত দুইশত বি°্শতি লোক মারা পড়িল ও আঘাত পাইল কিন্তু নবাবের ইহাহইতে অতি অধিক অ^শ নষ্ট হইল এই সাহসপূৰ্মক আক্ৰমণে নবাব व्यम इवर्डी उर्हेशा प्रिथितन य किंक्श माहिमक শত্র সহিত তিনি যুদ্ধ করিতে, আসিয়াছেন এবং

তৎক্ষণাৎ চারি ক্রোশ দুরে শিবির নাড়িয়া লইলেন ক্লাইব পুনুর্বার আক্রমণ করিতে উদ্যোগ করিলেন কিন্তু সেরাজউদ্দৌলা যুদ্ধে মনঃপীড়া পাইয়া সন্ধি করিতে সন্মত হইয়া ৯ কিবুয়ারি সন্ধিপত্রে স্বাক্ষর করিলেন ঐ সব্দিদার। ই॰রাজের।পূর্ববৎ সমুদায় ক্ষমতা পাই-লেন তাঁহাদের বাণিজ্য দ্রব্য এদেশে আনিতে পথি-মধে। শুলু রহিঁত হইল এব॰ কলিকাতা সুরক্ষিত করিয়। মুদালয় স্থাপন করিতে অনুমতি পাইলেন,এবং নবাব যেসকল দ্রব্য লইয়াছিলেন তাহা তাঁহাকে প্রতিদান করিতে হইল ও যেসকল্ দ্রব্য নষ্ট হইয়াছিল তাহার মূল্য দিতে হইল এইসকল সন্ধি নিয়ম নবাবের পক্ষে অতি অনুচূল ভিল কারণ তিনি বুঝিলেন যে ই॰রাজের। বিজয়ী হুইয়াছেন কিন্তু ক্লাইব সাহেব জানিতেন যে ইউরোপে ই॰ রাজদিগের ফরাসিদের সহিত যুদ্ধআরম্ভ হইয়াছে এব॰ তাঁহার যাবৎ সৈন্য ছিল চন্দুনগরে ফরাসিদিগেরো তাবৎ ছিল অতএব তাহাদিগকে আক্রমণ করিবার পূর্ফো নবাবহুইতে সম্পূর্ণৰূপে আপ-দাকে মুক্ত করিতে ইচ্ছুক ছিলেন।।

ঐ উত্তর জাতির মধ্যে যুদ্ধের সমাচার কলিকাতার আসিলে ক্লাইব ফরাসিদের নিকটে প্রস্তাব করিলেন যে ভারতবর্ষে উভয় জাতিরা পক্ষপাতশূন্য থাকেন অর্থাৎ কেহ কাহাকে আক্রমণ করিবেনা চন্দুনগরের শাসনকর্ত্ত। উত্তর করিলেন যে তিনি এই প্রস্তাবে সন্মত হইতে নিতান্ত ইচ্ছুক আছেন কিন্তু যদি কোন করাসিদের অধিক সন্থান্ত সেনাপতি আইসেন তবে তিনি এসন্ধি ভঙ্গকরিতে পারেন ক্লাইব দেখিলেন যে এমত কোন ব্যবস্থা নাই যাহাতে নির্ভর করাযায় ও ফরাসিদিগের এতাবৎ অধিক সৈন্য যেপর্য্যস্ত চন্দুনগরে থাকিবে তাবৎ কলিকাভারর্কা কোনমতে নাই এব॰ .তিনি জানিতেন সেরাজ্উদ্দৌলা কেবল ভয়প্রযুক্ত সন্ধি করিয়াছেন অতএব প্রথম অবসর **ङ्हेवामा**ट्वयूटक्रांप्पांश कतिद्वन मर्खम। कतामिपिरशत সহিত বন্ধুত। করিবার চেষ্টায় ছিলেন এব॰ তাঁহা-দের সাহায্যার্থে কিয়ৎ পদাতিক প্রেরণ করিয়া-ছিলেন সে যাহা হউক ক্লাইব নবাবের অনুজ্ঞা ব্যতি-রেকে তৎস্থান আক্রমণ করিতে ইচ্ছুক ছিলেন না কিন্তু এইরপ ফরিতে অনুজ্ঞার্থে নবাবের নিকটে যে সকল পুর্ণেনা হইয়াছিল তাহা তিনি ছলত সম্পন্ন করিতেন না অবশেষে নাবিক সেনাপতি ওয়াট্সন্ সাহেব তাঁহাকে একপত্র নিখিলেন যে তাঁহার যেরপ আশা ছিল তদন-সারে সৈন্য আসিয়াছে অতএব তাঁহার রাজ্যে এমত যুদ্ধ পুজ্বলিত করিবেন যে সমুদায় গঙ্গার জলে নির্বাণ করিতে পারিবে না ইহাতে সেরাজউদ্দোলা অতিশয় ভীত হইয়া ১৭৫৭শালের ১০মার্চ নমুতাপৃত্রক এক পত্র

লিখিলেন তাস্থার তাৎপর্য্য এই যে যাহা উত্তম বোষ হয় তাহাইকরহ ক্লাইব সাহেব এই উত্তরকে করাসিদের আক্রমণার্থে অনুমতি স্বৰূপ মানিয়া তৎক্ষণাৎ সঠেনে ভূমিপথে চলিলেন এব নাৰিকসেনাপতি ওয়াট্সন্ দাহেব জাহাজের সহিত নদীদিয়া শিয়া ঐ নগরের প্রান্ত-ভাগে নোষর করিয়া রহিলেন ক্লাইব সাহেব ভাঁহার ৰাভাবিক সাহসের সহিত যথেষ্ট চেষ্টা করিলেন কিন্তু তৎস্থানের পরাভূব পুায় পোতদারাই স্ইল ভারতবর্ষ-মধ্যে ইণরাজেরা এপর্যান্ত যত যুদ্ধ করিয়াছিলেন তাহার नर्लार्शक। इंश अञ्जिन्द इरेग्नाहिन नम्रिन्नश्याञ्च বেষ্টনের পরে ঐ স্থান অধীন হইল অবিষয়ে এক কিম্ব-দন্তী আছে যেই পরাজেরা উৎকোচদারা করাসিদের সেনা ও সেনাপতিদিগকে নষ্ট করিয়া ধূর্ভতাপূর্কক চন্দ্রগর নাশ করিয়াছেন ইছার মূল কারণ পশ্চাৎ লিখিত হইতেছে। ই॰রাজদিগের জাহাজের আগমন রোধ করিবারনিগিত্তে ফরাসিদের শাসনকর্তা নদী-মধ্যে, কিয়ৎ নৌকা মগু করিয়াছিলেন তাছাতে কেবল এক স্থানে অতি অপুশস্ত বৰ্মা ছিল ও তাহা অতি অপ্ৰা-কে জানিত তরণীয়নামক একজন করাসিদের সেনাপতি কোনকারণবশত শাসনকৈন্তা রিনাদ্বারা ঘৃণিত হইয়া ক্লাইবের পক্ষে আদিয়া ঐ পথের উপ্দেশ করি-त्तन পরে ঐ ব্যক্তি ই রাজদিগের কর্মে नियक

থাকিয়া কিঞ্চিৎধন উপাৰ্জ্জিত ক্ষিয়া ক্ৰানুদেশে বৃদ্ধপিতাকে তাহার কিয়দ শ পাঠাইয়াছিলেন কিন্তু তাহার পিতা তদ্ধন বিশাসঘাতকহইতে আসিয়াছে বনিয়া কিরিয়া পাঠাইলেন তাহাতে তর্গীয় এমত দুংখিত হইলেন যে তিনি নিজ্জারে গাত্রমার্জনী গলায় দিয়া প্রাণত্যাগ করিলেন ॥

নেরাজ উদোলার সহিত সন্ধিদারাই শরাজেরা মৃদ্রা-**লয় ও দুর্গ করিতে অনুমতি পাইলেন কিন্তু ঐ বি**যয়ের निभिट्ड शूर्व्स वर्ष्टिवर्यशर्याञ्च वृथा यञ्च कतियाहितन যে প্রাচীন দুর্গ নবাব অনায়াসে অধিকার করিয়াছি-লেন তাহা গুপ্তভাবে নির্মিত হইয়াছিল ঐ সন্ধির পরে ক্লাইব বাছেব এমত দুর্গ আরম্ভ করিলেন যে এতদেশীয় কোন সৈন্য তাহা অধিকার করিতে না পারে ১৭৫৭ শালে তিনি অদ্যাপি স্থিত এই দুর্গ দৃঢ়-তর্রবর্পে আরম্ভ করিলেন তিনি যখন ইহার কল্পনা করিলেন তখন তাহাতে কিপর্য্যন্ত ব্যয় হইবে তাহা চিন্তা করেন নাই যদ্যপিও তাহাতে ক্রমে ২ দুইকোটী মৃদ্রীব এয় হইল তথাপি একবার আরম্ভ করিয়া তাহার কোন অপশ পরিবত্ত করিতে পারেন নাই এবপ ঐ বৎ-সরে এক মৃদ্যুলয় স্থাপিত হুইল তাহাতে ১৭৫৭ শালের ১৯ बागडे रे ताजि मृन्। अथम बात्र रहेन।।

क्रांहेव नार्छ्व वलशूर्खक हे॰ तालिं तिश्व मञ्चल

স্থাপন করিয়া, স্পষ্টৰূপে দেখিলেন যে ঐ উপায়-দারাই তাতৃ৷ রক্ষাকরিতে হইবে তিনি প্রথমতই বুঝি-লেন যে ইণ্রাজেরা স্থিরতর থাকিতে পারিবেন না তাঁহাদের অবশাই অগুসর হইতে হইবে একারণ করাসিরা পুনর্কার বাঙ্গালায় পাদপ্রক্ষেপ করিতেনা পারেন এমত করিতে চিন্তিত ছিলেন। দেকানদেশ-স্থিত বুসিনামক একজন করাসি সেনাপতি অনেক জয় করিয়া অতিশয় শক্তিমান্ হইয়াছিলেন সেরাজ-উদৌলা মূথে ইণ্রাজদিগের সহিত ব'ব্বুতা প্রকাশ করিয়া বুরিকে আন্থান করিতেছিলেন ক্লাইব সাহেৰ তাঁহার পত্র পথিমধ্যে আটক করিয়াছিলেন নবাৰ ই°রাজদিগদারা অপানাসুস্ত হইয়া তাঁহাদের ক্ষমা করিতে অশক্ত ছিলেন তাঁহার ক্রোধ ক্রমে ২ অপরি-নিত হইল তাঁহার সভাস্থিত ওয়াট্স সাহেবকে একদিন আসেধ করিবার ভয় দেখাইলেন পর্দিন ভাঁহাকে সমুমজনক পরিচ্ছদ প্রেরণ করিলেন এবং এক দিন ক্রোধে ক্রাইব সাহেবের পত্ত ছিল্করিলেন পরদিন তাঁহার নিকট নমুতা স্বীকার করিয়া লিঞ্চিলন এইৰপে ই^রাজেরা দেখিলেন যে যাবৎ ঐ ইচ্ছান্যায়ী ্বালক বাঞ্চালায় রাজা ধাকিবেল তাবৎ তাঁহাদের পক্ষে মঙ্গল নাই তাঁহারা আত্মরকার নিমিত্তে কি করিবেন এইরপ চিম্ভায় যথন দিমথ ছিলেন তথন

ষ্ঠতিপয় নবাবের সভাস্থিত অধিকৃতলোকেরা ভাঁহাদের নিবেদন করিলেন যে নবাবের লোভ ও *কু*রতাদারা তাঁহাদের মন তাঁহাহইতে পৃ**থক্** লাগরে মথ হইয়াছে তাঁছার। পূর্ববৎসরে শোকত্-জন্মকে সি^হাসনে স্থাপন করিতে ঐকনত্য করিয়া-ছিনেন কিন্তু সে আশায় নিরাশা হইয়াছেন তথাপি ভাঁহারা বিপদভয় মাকরিয়া সেরাজউদৌলাকে পদচ্যুত করিতে স্থিরপুতিজ্ঞ হইয়া ই৲রাজদিগের সাহায্য প্রার্থনায় গুপ্তভাবে লোকপেরণকরিলেন। যে-হেন্ত হিন্দুদিগের বোধ আছে যে ভাঁহাদের জমিদারেরা **मित्राक्ष अस्मोना इहेट उत्कार्थ है॰ ता**क्र मिरशत आ स्थान করিয়াছিলেন এইছেত্ত উচিতবোধে স্থিরতা-পূর্বক লিখিতেছি যে বর্দ্ধনান নবদ্বীপ রাজসাহি পুভৃতিত্ব কোন জমিদারের। এইচক্রমধ্যে ছিলেন না তাঁহারা কেবল রাজস্ব আদায় করিতেন এরপ কর্ম করিতে কিরপে পারেন। এই পুনঙ্গের পুগান মহ্বরাজের বণিক্ অতিপরাক্রান্ত সেটেরা সৈন্য-**मिरिश्रत व्याद्धां माञ्चक ७ धनाधिश भीतर**ककत विव ওমিচাঁদ ও খোজা ওয়াজিদনামক দুইখনী বণিক্ এই কয়েক লোক ছিলেন ইহারাই সেরাজউদ্দৌলাকে পদচুত করিয়া তৎপদে শীরজেকরকে স্থাপনার্থে

ইশরাজি সৈন্য আনিতে ক্লাইবসাহেবকে আছান করেন প্রবিষয়ে ইশরাজেরা দেখিলেন যে তাঁহাদের সাহায্যব্যতিরেকেও পরিবর্ত্ত শহুইবে তাহাতে যদি সহায়তা করেন তবে অবশ্য কিঞ্চিৎ লভ্য হুইবে সভান্থিত প্রায় সকলেই ক্ষাণবুদ্ধি ঐ বড়যন্তে যুক্ত হুইতে জরা করিলেন নাবিক সেন্যুপতি ওয়াট্সন্ সাহেবও ক্লিবেটনা করিলেন যে প্রদেশে প্রপর্যান্ত যে-সকল লোকেরা ক্ষুদ্র বিশক্ত হায় ইহাও বড় সাহ-সিক উদ্যোগি বটে কিন্তু ক্লাইবসাহেবের অন্তঃকরণ প্রতি বলবৎ ও সাহসিক ছিল তাঁহার মনেই কেবল বিপদ্ভিত্তার উত্তাপ হুইল।

তিনি নুরসিদাবাদস্থিত ওয়াট্সন্ সাহেব দারা
আপ্রিল মে দুইমাসপর্যান্ত নবাবের আমলাদিগের
সহিত ঐ গুপ্তপ্রস্তাব এমত গুপ্ত ভাবে চালাইলেন
যে সেরাজউদ্দোলা একেবারে প্রকৃত সময় ভিন্ন পর্ফে কদাচ সন্দেহ করেন নাই যথন তাঁহার বোধ হইল তখন মীরজেকরকে আজান করিয়া কোরাণস্পার্মে স্থ্রপথ করাইলেন যে তিনি তাঁহার বিশাসী থাকিবেন সমুদায় বিষয় প্রস্তুত হইলে ওমিন্টাদ ঐ প্রস্তাব নম্ভ করিতে উদ্যত হইয়াছিলেন তিনি অতি ধনী ও তথাপি অতি-শয় লোভী ছিলেন যাবদ্ধন প্রাপ্ত হইবে তাঁহার বিশ্-

শতিতমভাগ তাঁহাকে দিতে স্বীকার,করিয়াছিল কিন্তু তিনি তাহাতে সম্ভুষ্ট নাহইয়া একদিবস সায়ণ কালে ওয়াট্স সাহেবের নিকটে আসিয়া কহিলেন যে যদি ভাঁহাকে ত্রিপশথ লক্ষ মুদ্রা অধিক দিতে স্বীকার না লিখিয়া দেন তবে তিনি তৎক্ষণাৎ শুবাদারের নিকটে গিয়া সমুদায় চাভুৱী প্রকাশ করিবেন তাহাতে ওয়াটস সাহেবের ও এতমধ্যন্থিত অন্যান্যলোকের তৎক্ষণাৎ প্রাণনাশহুইতে পাব্লিত ওয়াট্স সাহেৰ কালবিলয়ার্থে ঐ বিশ্বাসভাতক ব্যক্তিকে সান্ত্রানা করিতে চেষ্টা ক-রিয়া অবিলম্বে কলিকাতায় সম্বাদ লিখিলেন ক্লাইব সাহেব ঐ স্থাচার শ্রবণে হতজ্ঞান হইয়া এরপ কুৎ-সিভউপায়দারা প্রচেষ্টা করাতে ওমিচাদকে সকলের শত্র দেখিলেন এবণ কোন চাত্তরীদারা তাঁহার পরা-ভব করা উচিত বুঝিলেন পরে ওয়াট্স সাহেবকে স্বীকার করিতে আছা করিলেন এবণ দৃইপুস্তত সন্ধি-পত্র করিলেন তাহার একেতে ওমিচাদকে ত্রিপশৎ तक गूजा मिटा बीका**द्र हिन अश**रह हिन माथे शृर्खा छ পত্র তাঁহার মনস্তুষ্টি নিমিত্তে তাঁহাকেই দর্শিত হইল পরে মীরজেফরের সহিত এক নিয়ম স্থির হইল যে ই°রাজদিগের দৈন্য আসিবা মাত্রে তিনি পুভূ দৈন্য ত্যাগ করিয়া নিজ অধীনসৈন্যের সহিত তাঁহাদের পকে আসিবেনা৷

এইৰপে সমুদায় পুস্তত হইলে ক্লাইব সাহেব সেরাজ , উদ্দৌলাকে এক পত্ৰ লিখিলেন তাহাতে ইৎরাজদিগের পুতি তিনি যে২ অপকার করিয়াছিলেন তাহা নির্দিষ্ট ছিল অর্থাৎ তাঁহাকে সন্ধিভদ্নদোষে অপরাধী করি-লেন তিনি লিখিলেন যে নবাব ইণ্রাজদিগের নউদ্রবেএর যে মূল্য দিতে স্বাকার করিয়াছিলের তাহা দিলেন না তিনি করাসিদিগকে ইপরাজদিগের দূরী করণার্থে আহ্বান করিয়াছিলেন অতএব রাজসভাস্থিত পুথান ব্যক্তিদিগের বিবেচনাদারা এই ষকল বিবাদ ভঙ্ক করিতে স্বয় শুরসিদাবাদে চলিলেন এই লিখিয়া পত্র সমাপ্ত ক্রিলেন শুবাদার এই লিখনের ধারানুসারে বিশে-ৰত ক্লাইবের আগমনসম্বাদে ভীত হইয়া সমৈন্য পলাশী চলিলেন ক্লাইব ১৭৫৭ শালের জুন্মাসের পূথমে সলৈনে। বহিভূতি হইয়া ১৭ তারিখে কাটোয়ায় উপস্থিত হইয়া পরদিন তথাকার দুর্গ আক্রমণ করি-য়া অধিকার করিলেন ১৯ তারিখে অতিশয় বর্ষা আরয়ু হইল, পরে ক্লাইব অগুসর হইয়া নবাবের সহিত স^-গুাম করিবেন কিম্বা পুত্যাগমন করিবেন এক্সিয়ে অত্যন্ত সন্দিথা হইলেন কারণমীরজেফরের কোন চিহু . পাইলেন না তাঁহাহইতে এক প্রমাত্রও প্রাপ্ত হইলেন না তিনি এক যুদ্ধীয় সভাপুম্ভত করিলেন তাহাতে সক-লেই যুদ্ধ ত্যাগ করিতে স্থির করিলেন ক্লাইব পুথমত

তাঁহাদের বিবেচনা গ্রাহ্ম করিয়াছিলেন কিন্তু বিলক্ষণ-ৰূপে বিবেচনা করিয়া অবশেষে সমুদায় বিপদ গুস্ত করিয়াও যুদ্ধ করিতে স্থির করিলেন তিনি উত্তম রূপে দেখিলেন যে যদি এতাৰৎপর্য্যন্ত অগুসর হইয়া পুত্যা-গমন করেন তবে বাঙ্গালায় ই^রাজদিগের মঙ্গল একে-বারে মগু হইবে ২২ জুন সূর্য্যোদয় কালে সৈন্যেরা নদী পার হইতে আরমু করিল দুইপুহর চত্তর্ঘটিকার সময়ে সমুদায় লোক অপরতীরে উর্ত্তার্ণ হইল এব 🛰 व्यविशास्य हेलिया ताबि मूरेशुरुत वक चिकात मगरम পৰাশীর নিকুঞ্জে উপস্থিত হইল পুভাতকালেই যুগ্ন আরমু ইইল ক্লাইব সাহেব মীরজেফর ও তাঁহার **বৈন্যকে বাগু হইয়া অনুষণ করিতে** লাগিলেন কি**ন্ত** তৎকালেও তাঁহাদের দর্শন হইল না ৷ নবাবের পঞ্চ-দশ সহসু অখাকঢ় ও পঞ্জিশশৎ সহসু পদাতিক **ছিল তিনি কতিপয় স্তাবকলোকদারা বেপ্টিত হইয়া** সেনাদিগের পশ্চাৎভাগে তাঁবুমধ্যে ছিলেন যথন মীরমদন যুদ্ধ আরমু করিলেন তখন মীরজে্কর সহৈদ্রা তাঁহার নিকটে থাকিয়াও যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেন না পরে প্রায় দুইপুহরের সময়ে এক কামানের গোলা মীরমদনের পুতি বিক্লিপ্ত হইয়া তাঁহার পাদদয় ছিন্ন করাতেতিনি নবাবের তাঁবুমধ্যে আনীত হইয়া তাঁছার সমুখে পুাণ ত্যাগ করিলেন নবার

তখন অতিশয় ভীত হইয়া সকলভৃত্যদিগের চাত্তরী শক্ষা করিতে লাগিলেন তিনি মীরজেফরকে আন্থান করিয়া তাঁহার পাদে উঞ্চীষ রাখিয়া অতি-ন্মুতাপূর্ধক নিবেদন করিলেন যে তাঁহার মাতাম-হের নিমিত্তে তিনি তাঁহাকে ক্ষমা করিয়া আবশ্যক সময়ে তাঁহার পক্ষে থাকেন জেফর প্রভৃতক্ত থাকিতে প্রতিক্রা করিয়া তাহার প্রমাণস্বৰূপে নবাবকে পরা-মশ দিলেন যে অদ্য অধিক বৈলা হইয়াছে অতএব **টসন্যদিগকে প্রত্যাগমন করিতে আজ্ঞা করুন আগা**মি দিনে পরমেশ্বরের আশীর্কাদে আমর। সৈন্য আনিয়া যুদ্ধোদ্যোগ করিব নবাবের সেনাপতি মোছ্নলাল ই ্রাজদিগের সহিত যুদ্ধে সম্পূর্ণৰূপে মথ হইয়াছেন এমতসময়ে প্রত্যাগমনের আজ্ঞা পাইয়া অস্মতি-পূর্বক তাহা মানিলেন তাঁহার প্রস্থানদারা সৈন্য-দিগের মনোভঙ্ক হওয়াতে তাহারা চভর্দিগে পলা-यन क्रिन क्राहेरगार्ट्य ब्रहेस्ट व्यनायारम मण्पूर्भ জয়পুাপ্ত হইলেন ৷ সেরাজউদ্দৌলা এক উষ্ট্রোপরি আরো-হণ করিয়া দুইসহসু অশ্বাকদের সহিত তাবৎস্থাত্তি গমন করিয়া পরদিন অষ্টঘণ্টার সময়ে মুরসিদাবাদে ় উপস্থিত ইইলেন পরে স্বল সেনাপতি ও মন্ত্রিদি-গকে তাঁহার নিকটে আসিতে সমাচার দিলেন কিন্তু ভাঁহারা নিজ২ গ্রে গ্রন করিয়াছিলেন ভাঁহার

শশুরও তাঁহাকে পরিত্যাগ করিলেন তিনি সমস্তদিন পুরীমধ্যে প্রায় একাকী থাকিয়া হতাশপ্রায় দৃঢ়প্র-তিচ্ছ হইলেন। কতিপয় আচ্ছাদিত শকটোপরি নিজ পত্নী ও প্রিয়পাত্রদিগকে আরোপণ করিয়া তাহাতে যাবৎস্বর্গ ও রত্ন থাকিতে পারে তাবৎ লইয়া রাত্রি দুইপুহর তিন ঘণ্টার সময়ে ভগবান্গোলায় পলা-য়ন করিলেন পরে ফরাসিদিগের সেনাপতি লা সাহে-বের নিকট যাইবার মানসে তথায় নৌকা আরোহণ করিয়া চলিলেন তাঁহাকে পাটনাহইতে আসিতে পূর্বেও প্রক পত্র লিখিয়াছিলেন।

এই যে পলাশীর যুদ্ধে ভারতবর্ষের শুভাদ্ট হইল তাহাতে ইপরাজদিগের বিপশতি ইউরোপীয় সৈন্য ও পঞ্চাশৎ নিপাই হত ও আহত হইল। যুদ্ধের পরে নীরজেকর কাইবসাহেবের সহিত সাক্ষাৎ করিয়া এই বিজয়নিমিত্তে তাঁহার বন্দনা করিলেন অনম্ভর উভয়ে একত্র হইয়া মুরসিদাবাদে চলিলেন এবপ নীর-জেকর রাজপুরী অধিকার করিলেন পরে নগরের প্রধাদলোকেরা ও রাজকীয় আমলারা তথায় আসিয়া দর্বার আরম্ভ করিলেন কাইবসাহেব আসন্হইতে উঠিয়া মীরজেকরের হস্ত ধরিয়া তাঁহাকে সিপ্ছা-সনে বসাইলেন এবপ বাঙ্গালা বেহার ও উড়িস্যার ন্বাব বলিয়া অভিবাদন করিলেন অনন্তর তাঁহারা

অনেক ইউরোপীয় ভদ্রলোক ও ক্লাইবসাহেবের দেও-্যান রামচাঁদ্র মুনসী নবক্ফের সহিত ধনাগারে যাইয়া দেখিলেন স্বৰ্ণ ওরজতে দুইকোটী মুদ্রাহইতেও অধিক ছিল তৎকালের ইতিহাস লেখকে বলেন যে উহা কেবল বাহ্য কোষ ছিল কিন্তু তথায় অন্তঃপুরমধ্যে যে গুপ্ত ভাগুার ছিল তাহা ক্লাইবসাহেব নদজানিতে পারেন **ब्**रेश्रकारत यञ्जूर्सक तकिंठ हिन केंद्रल सर्ग तक्रठ ও রত্তে প্রায় স্বাষ্টকোটী সুদ্রা ছিল এব প ঐ ইতিহাস-বেত্তা কছেন যে মীরজেফর ইমরবেগর্থী রামটাদ ও নবকৃষ্ণ এইকয়েক জনে ঐ খন সামঞ্জা করিয়ালই-লেন এব ে ইহাও অযথার্থ বোধ হয় না কারণ রামটা-দের মাসিক বেতন তৎকালে ষষ্টিমুদ্রা ছিল কিন্তু তিৰি দশবৎসরপরে এককোটা পঞ্চবিৎশতিলক মুদ্রা রাখিয়া মরিলেন তথা নবকৃষ্ণ মুনসীর মালিক বেতৰ ষষ্টি মুদ্রার অধিক ছিল না তিনি কিঞ্চিৎপরে রাজা নবকৃষ্ণ হইয়া মাতৃশুান্ধে *নয়ল*ক টাকাব্যয় করিলেন।। অতঃপরে ইণরাজদিগের দুর্ভাগ্য ঘুচিল ১৭৫৩ শালের জুনমানে তাঁহাদের কারখানা লুট হইল বাশিজ্য রোধ হইল এব॰ অধ্যক্ষের। কুরতাপূর্কক হত হইলেন ও তাঁহাদের বাহালায় স্থিতিরোধ হইল কিন্তু >৭৫৭ শালের জুনমাসে তাঁহারা কেবল এ কারখানা পুনঃ প্রাপ্ত হইলেন এমত রুহে প্রধাদ শরু সেরাজউদ্দৌলা-

কেও পরাভব করিয়া আপনাদের মনোনীত নবাৰ করিলেন এবং ওাঁহাদের বিপক্ষ ফরাসিদের বাজালা-হইতে তাড়াইলেন কেবল মুরসিদাবাদে ধনাগার-হইতে ক্ষতি শুধরাণ ক্রব্য ছিল তাহাতেঁ সরকা-রের ক্ষতিনিমিত্তক কোম্পানীকে কোটীমুদ্রা দত্ত হ্ইল কলিকাতার লুট্ছারা যে সকল,ভদ্র ইণরাজ-দিগের সম্পত্তি নষ্ট হইয়াছিল তাঁহাদের পঞ্চাশ্ত লক্ষমুদ্রা ও এতদেশীয়লোকদিগের বিংশতিলক মুদ্রী এব॰ অরমানীয়দিগের সপ্তলক্ষমুদ্র। দক্ত হইল এত-फ्रिम ञ्चलक्ष्वह्रद्रेयन। मिर्ग्यं अधिक 'পারিতোষিক দত্ত হইল এব° যেসকল সরকারের সেনাপতিরা মীর জেফরকে নবাব করিলেন তাঁহারাও এবিষয়ে বঞ্চিত-হয়েন, নাই ক্লাইৰ সাহেৰ যোড়শলক পাইলেন ও অন্যান্য সভাপতিরা অপ্স অংশ পাইলেন এবং ইহা স্থিরীকৃত **হইল যে ই**ণরাজদিগের পুর্ন্ধে যেৰূপ ক্ষনতা ছিল তাহাতীহারা সকলি পাইবেন মহারা<u>খু</u>ীয়খালের নধ্যে ও তাহা**র বাহিরে দাদশশ**ত হস্তপর্য্যস্ত সন্দার ভূদি-তাঁহাদের হইল এবং কলিকাতার দক্ষিণ কুলপী-পর্য্যন্ত জমিদারী কোম্পানীর হইল তথা ফরাসিরা কদাচ বান্ধালায় থাকিতে পারিবেন নাইহাস্থির হইল ৷ সেরাজউদ্দৌলা ভগবানগোলাহইতে প্রস্থান করিয়া পত্নীদুহিতাপুভৃতির আহারার্থে পাক করিতে রাজ-

মহলে অবতরণ করিলেন তিনি পূর্ম্বে যে এক ফকীরের অপকার করিয়াছিলেন তাহার নিকটে যাইবামাত্রে ঐ ফকীর তাঁহার অনেষণার্থিলোকদিগের সম্বাদ করি-নেন তাহার৷ তৎক্ষণাৎ আসিয়া তাঁহাকে ধরিল তিনি এক সপ্তাহপূর্বে যেসকল লোকের সহিত আলাপ করেন নাই তাহাদের নিকটে অতিশন্স বিনয় করিলেন কিছু তাহারা তাঁহার রোদনে বৃধির হইয়া সকল স্বর্ণ রত্ন অপহরণ করিয়া তাঁহাকে পুনর্বার মুরনিদাবাদে ্আনিল সেরাজউদ্দৌলার ঐ নগরে আগমন কালে শীরজেফর অধিক পরিশাণে আফিনদেবা করিয়া স্থাভাবিক নিদায় মথ ছিলেন তাঁহার অতিবুরাঝা পুত্র মীরন তাঁহার আগমন শুনিয়া নিজগুহের নিকটে আসেধ করিতে আজ্ঞা করিলেন পরে দুই এক ঘণ্টার মধ্যে বন্ধুলোকদিগের নিকটে পুস্তাৰ করিলেন যে তথায়গিয়। তাঁহার হত্যা করেন কিন্তু তাহারা একে২ অস্বীকার করিল অবশেষে আলিবর্দির পুতিপালিত মহান্দিবেগনামক এক দুরাত্মা ঐ দুষ্টক্রিয়া স্থাকার করিল ঐজন হতভাগ্যরাজার গৃহে যাইবামাত্রে ভিনি তাহার বৃত্তান্ত জানিয়া অতিখেদজনক স্বরে কহিলেন -হিনিক্লিধার হত্যার পুষিশ্চিত্তার্থে আমি অবশ্য मतिव এইবাক। मनाश्च इहेवामात्व खे. शश्चा उक ছুরিকা বাহির করিয়া পুনং২ আঘাতদারা ভাঁহাকে

ছিন্ন করিলেন এইক্ষণে হিন্নন্তুলির প্রতিকল হইল এই শেষউক্তি করিয়া তিনি নৃত হইয়া তাহার পাদে পতিত হইলেন এইৰপ নৃত্যুর পরে তাঁহার শরীর টুকরা২ করিয়া ছিন্ন হইল ও অযত্পূর্যক হস্তির উপরে আরোপিত হইয়া লোকাকীর্ণ রাজপথদিয়া গোরস্থানে প্রেরিত হইল এই সময়ে এক আশ্চর্যা ঘটনা হয় অর্থাৎ অষ্টাদশ মাস পূর্ফো সেরাজ্তী-দৌলাযেস্থানে হিন্নন্তুলিখাকে কাটিয়া ঐ নির্দোষী ব্যক্তির রক্তপাত করিয়াছিলেন সেইস্থানে ঐ হস্তি-পক কোন কারণবশত কিঞ্চিৎ কাল হস্তিত্তক্ক করাতে ঐবিদ্ধশরীরহইতে কিয়ৎ রক্তবিন্দ পতিত হইল ।

দাদশ অখ্যায়।

তিন দেশের সর্ব্র মীরজেকরের পুরুষ এককালে
স্বীকৃত হইল কিন্তু শান্তু সকলে বোধ করিল যে তিনি
কর্মোপযুক্ত বৃদ্ধিনান্ নহেন এবং অতি দুর্বল ও নিপ্তুর
ও শোষক ছিলেন পূর্ব্বর্তি শুবাদারদিগের অধীনে
যে সকল হিন্দ আমলারা অধিকধন সঞ্চয় করিয়াছিলেন তিনি প্রথমত তাঁহাদের ঐ ধন অপহরণ করিতে
ইচ্ছুক হইলেন তিনি প্রথমে রাজারায়দুর্লভনামক
প্রধানমন্ত্রির প্রতি দৃষ্টিপাত করিলেন ঐ মহাশয়ের
যেরপ ধন ছিল সেইরপ ছায় সহসু নিজ্বৈন্য ছিল
এবং যেসকল মহাশার্মা মীরজেকর্কে সিংহাসনে

স্থাপন করেন তন্মধ্যে তিনি নর্কাপেকা বুদ্ধিমান্ ,ছিলেন সেরাজউদ্দৌলাকে পদচ্যুত করিতে যথন যড়-বন্ত্র হইয়াছিল তখন রায়দুর্লভ বড়যন্ত্রকারিদিগের নিকটে প্রস্তাব করেন যে সেরাজউদ্দৌলার পরিবর্ত্তে মীরজেফরকে নবাব কর। উচিত হয় মীরজেফর তথাপি এফণে তাঁহার সর্জনাশের চেষ্টা করিলেন সীরজেফর তাঁহাকে এমত বিদেষী বোধ করিলেন যে তিনি সেরাজউন্দৌলার কনিগ্রন্থীতার পক্ষে আছেন बहेक्श मत्मश्रयुक व निर्फाधी य त्रताक्र छ ।-লার ভাতা তাহার প্রাণনাপ্র করিলেন দুর্ল্ভ কেবল ই: রাজদিগের শরণাগত হইয়া প্রাণরক্ষা পাইলেন ৷ নবাব বহুকালাবধি বেহারের নায়েব শাসনকর্ত্র। রাম-নারায়ণের সম্পত্তি <mark>অপহরণ করিয়া তৎপদে নিজ</mark> ভুাতাকে স্থাপন করিতে স্থির করিলেন কিন্তু ক্রাইব সাহেব কহেন যে তাঁহার ভাুতা তাঁহাঅপেকাও নির্বোধ ছিলেন ৷ মেদিনীপুরের শার্সনকভারাজারাম-সি^ছ, নবাবের প্রতি ভগ্নচিত্ত হইলেন কারণ নবাব তাঁহার ভুাতাকে কারাগারে রোধ করিয়াছিলেন পূরণীয়ার নায়েব, শাসনকর্ত্তা আদলসি শ্ রাজসভার কুমন্ত্ৰণাদ্বারা রাজবিদ্যোহী হইয়াছিলেন এইৰপে জেক-রের রাজ্যপুাগ্তির পর পঞ্চমানের মধ্যে তিন প্রদেশে তিন বিদ্রোহ উপস্থিত হইল মীরজেফরকৈ সুতরা৲

ক্লাইবসাহেবের সাহায্য প্রার্থনা করিতে হইল কারণ ভাঁহার পুতি বাঙ্গালায় সকলের বিশ্বাস ছিল তিনিও বিশ্বাসের উপযুক্ত পাত্র ছিলেন যেহেত্ত তিনি যুদ্ধব্য-তিরেকে ঐ তিন বিবাদ ভঙ্গ করিলেন। নবাবের অতি-শয় বিনয়পুযুক্ত তিনি ই°রাজিসৈন্যের সহিত পাট-নায় গমনোদ্যত হুইয়া মুরসিদাবাদে উপস্থিত হুইলেন নবাব ইণরাজদিগকে যাবদ্ধন দিতে স্বীকার করিয়া-ছিলেন তাহার অধিক অ<u>ংশ অদত্ত থাকাতে ক্লাই</u>ব সাহেব রাজধানীতে আসিয়া তাহার পরিশোধার্থে নিয়ম করিতে কহিলেন তাহাতে নবাব-তাঁহাকে বর্দ্ধ-মান নবদ্বীপা ও ভ্গলি এই কয়েক স্থানের রাজস্ব ধার্য্য করিয়া দিলেন এই বিষয়ের অবধারণ হইলে এতদ্দেশায় ও ই°রাজিসৈন্য ঐকমত্যে পাটনায় চলিল রামনারয়ণ क्रोहर्दवत निकटि व्यानियाकिहितन य यि है श्वारकता তাঁহাকে রক্ষা করেন তবে তিনি ঐ প্রভুরপ্রতি কৃতচ্চ থাকিবেন ক্লাইব[্]ঠাহার অধীনতাগুছণ করাইতে নব্|-বের স্থাপে যথেষ্ট হেতৃবাদ করাতে অবশেষে ন্বাব দ্ধীকার করিলেন রামনারায়ণ তৎক্ষণাথ তাঁবুতে আসিয়া মীরজেকরের সন্মান করিয়াস্বপদে দুর্ঢ়াকৃত হইলেন অনন্তর ক্লাইব ও নবাব উভয়ে রায়দুর্লভের সহিত মুর-সিদাবাদে আসিলেন রায়দুর্লভ দেখিলেন যে যাবৎ ই রাজেরা তথায় আছেন তাবৎ তাঁহার আত্মরকা

আছে। এইনপ তাঁহাদের কর্মের পরিণাম হওয়াতে মীরণ অতিশয় জুদ্ধ হইলেন কারণ তাঁহার ও তাঁহার পিতার মানস ছিল যে পরাক্রান্ত হিন্দুদিগের দমন করিয়া তাঁহাদের সম্পত্তি অপহরণকরেন কিন্তু এইযদ্ধ-যাত্রাদারা তাঁহাদের **শক্তি** স্থিরীকৃত **হইল** তাঁহারা উভয়েই ক্লাইঘের শব্তিতে অহিতজ্ঞান করিতেন জেক-র নামমাত্রে তিনদেশের শুবাদার ছিলেন কিন্তু সেৰূপা সামর্থ্য ছিল না সকলবিষয়ের কর্ত্তা ক্লাইব সাহেব . ছিলেন দুইবৎসর পূর্ব্বে ইণরাজেরা যেসকল প্রধান লোকদিগকে নবাবের নিকটে উত্তমকথা কহিবার শিনিত্তে ধনপ্রদান করিতেন সম্পুতি তাঁহাদের ই**ং**-রাজদিগের উপাদনা করিতে হইল মুসলমানেরা দেখি-লেন যে বিজ্ঞহিন্দুলোকেরা শক্তিহীন নবাবের উপাসনা নাকরিয়াকোন প্রার্থনা করিতে হইলে ক্লাইবের অনুবর্ত্তী হইতেন তিনিও এমত বিবেচনাপূর্ব্বক ও পরিমিতরূপে ব্যবহার করিতেন যে যাবৎপর্য*্*ন্ত তিনি ক**র্মনিস্গাদক** ছিলেন তাবৎ কোন বিরোধ ছিল না।।

সম্পুতি বাঙ্কালামধ্যে এক নূতন শত্র উপস্থিত হইল দিল্লীস্থ হতভাগ্য মাহারাজের পূত্র বাহআলম পিতার শহিত বিরোধ করিয়া প্রয়াগ ও অযোধ্যার শুবাদারের সহিত মিল করিয়া কিয়ৎ সৈন্যের সহিত বেহার দেশ আক্রমণক্রিতে আসিলেন ঐ দুই শুবাদারের এতদ্দেশে প্ৰভূত্ব হয় কি না ইহা দেখিতে যেৰূপ শানস ছিল যুব-রাজের সাহায্য করিতে সেরপ ছিল না যুবরাজ ক্লাই-ৰকে পুনঃ ২ পত্ৰ লিখিলেন যে যদি তিনি তাঁহার ইচ্ছায় সাহায্য করেন তবে তাঁহাকে কোন ২ প্রদেশ প্রদান ক্রিবেন তাহাতে ক্লাইব উত্তর লিখিলেন যে তাঁহার ভক্তি মীরজেফরের নিকটে বদ্ধ আছে অপর মহারাজ ভাঁহার বিদ্রোহাচারিপুত্রকে আসেধ করিয়া পাঠা-ইতে ক্লাইবের প্রতি আজ্ঞা লিখিলেন তৎকালে মীর-জেফরের সৈন্যেরা বেতনাভাবপ্রযুক্ত এমত অবাধ্য হইয়াছিল ফে ঐ আক্রমণনিবারণার্থে যুদ্ধোপযুক্ত ছিল না অতএব ক্লাইবের নিকটে নিবেদন করাতে ১৭৫৮ শালে তিনি অবিলম্বে পাটনায় যাত্রা করিলেন কিন্তু তাঁহার উপস্থিতির পূর্কেই ঐ ব্যাপারের প্রায় নিষ্পত্তি হইয়াছিল প্রয়াগের শুবাদার ও যুবরাজ নয়দিবসপর্যান্ত পাটনা বেষ্টন করাতে তৎস্থানের অধিকার হইত কিন্তু তাঁহারা শুনিলেন যে ইণরাজেরা আসিতেছেন ও অযোধ্যার শুবাদার প্রয়াগের শুবা-দারের অভাবকালে সুযোগ পাইয়া তাঁহার রাজগানী বেষ্টন করিয়াছেন এইসম্বাদ শুনিয়া তিনি যুবরাজকে স্বকীয় উপায় করিতে রাখিয়া স্বরাজ্যরকার্থে সভ্রে চলিয়াযুদ্দে মারা পড়িলেন অনস্তর যুবরাজের সৈন্যের**৷** তাঁহাকে স্বরায় পরিত্যাগ করিল কেবল তিনশত

মন্যা দুঃথভাগী হইতে তাঁহার অনুযায়ী রহিল তিনি
অতিশয় দুরবস্থাগুন্ত হইয়া ক্লাইবের নিকটে ভিকা
করাতে ক্লাইব দানশীলতাপ্রযুক্ত তাঁহাকে দুইসহসু
অর্ন্মাদিলেন মীরজেফর এইনপে নির্ভয় হইয়া কৃতক্ততার চিত্রস্বরূপে ক্লাইবকে ওমরানাম দিয়া এক নিক্ষর
জাইগির প্রদান করিলেন কলিকান্তার ঐ জমিদারির
নিমিত্তে কোম্পানিতে রাজস্ব দিতে স্বীকার করিয়াছিলেন উহার বার্ষিক রাজস্ব তিন লক্ষমুদু । নির্দিপ্ত ছিল । ৷

কিঞ্চিৎকালপরে মীরজে্ফর ক্রাইবের সহিত সাক্ষাৎ করিতে কলিকাতায় আহাতে ক্লাইব, অতিমান্যতা-প্র্কক তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন মীরজেকরের তথায় স্থিতিকালে ওলনাজদিগের পঞ্চদশশত সেনার সহিত সপ্ত যুদ্ধজাহাজ আসিয়া নদীমুখে নো**হ্মর করিল** ইহা শীঘু প্রকাশ পাইল যে তাঁহারা নবাবের অনুমতি-ব্যতিরেকে আসেন নাই তিনি ইউরোপীয় ঠেসন আনিয়া ইশ্রাজদিগের পরাক্রম রোধ করিবার কারণ কিয়ৎকালাবধি চুচুড়ায় ও**লন্দাজদিগের সহিত বন্ধ্তা** করিতে ছিলেন এবং এইসকল ছলনা আলিবদিখীর অনুগুহপাত্র খোজা ওয়াজিদনামক একজন কাশ্মীর-দেশীয় বণিক্দারা সম্পন্ন হয় তিনি সমুদায় লখণের একচেটিয়া করিয়াছিলেন এবং এমত ধনবান ছিলেন বে প্রত্যহ সহসু মুদ্রা ব্যয় হইত এবণ একবিষয়ে

নবাবকে পঞ্চশলক্ষমূদ্রা উপায়ন দিয়াছিলেন তিনি शृटर्क मूत्रजिमावारम कत्राजिरमत्र अक्षाक क्रिलम शरत চন্দুনগরের লুটছার। তাঁহাদের সর্অনাশা∕হইলে ই∾-রাজদিগের পক্ষে আসিলেন তিনি সেরাজউদ্দৌলার অতিবিশ্বাসী থাকিলেও যেসকর মহাশয়েরা তাঁহাকে পদচ্যুত করিতে • ই•৲রাজদিগের আ্ছান করিয়া-ছিলেন তিনি তন্মধ্যে প্রধান উদ্যোগী ছিলেন ঐ রাজপরিবর্ভ হইলেও ইপরাজদিগের নিকটে তাঁহার আশাপূরণ না হওয়াতে তাঁহাদের নিবারণার্থে ওল-ন্দাজদিগের এক প্রস্তুত বৃহ্ৎবৈন্য আদিতে প্রতিক্রা করিলেন তৎকালে চুচ্ডায় সভা দুই অংশে বিভক্ত হইল এক অংশের প্রধান বিস্ডন্নামক তাঁহাদের শাসনকর্ত্রা ক্লাইবের বন্ধু ছিলেন এবং তিনি চিরস্থায়ি নির্বিরোধের ইচ্ছক ছিলেন বর্ণেটসাহেব অপরা^-শের অধান ছিলেন তাঁহার পক্ষের লোকেরা অতি দুরাত্মা ও চুচুড়ার মধ্যে পরাক্রান্ত ছিল ।ই°রাজের। ওলনাজদিগের রক্ষার্থে নদীমধ্যে তাঁহাদের জাতীয় नार्विकलाक निवातन कतियाहिलन अञ्जव उाँशास्त्र নিমিত্তে এতদেশীয় আপদ নিবারণ করিবার আশায় অধিক দৈন্যপ্রার্থনায় বটৰীয়কে লিখিলেন।।

এই সৈন্যাগমনে ক্লাইক বৃহৎবিপত্তিতে পজিলেন ইণবাজেরা ও ওলন্দাজেরা বৃদ্ধভাবে ছিলেন এবং

ওলকাজদিগের,যে বৈন৴ ছিল তাহার তৃতীয়া∾শমাত্র তাঁহার ছিল কিন্তু ক্লাইব স্বাভাবিক নির্ভয় শ্রিজ-পুরঃসর যুদ্ধ করিতে উর্যুক্ত হইয়া কহিলেন যে ভারত-বর্ষস্থিত সরকারি আমলার। নিজগলায় রজ্জু দিয়া কর্ম করেনতিনি বাঙ্কালায় করাসিদিগের শক্তি নাশ করিয়া ওলন্দাজদিগের শক্তি হ্রাস করিতে নিশ্চয় করিয়াছিলেন এবং মীরজেফরকে কৃছিয়াছিলেন যে ওলনাজি সৈন্যদিগের শীযু প্রস্থান করিতে আজ্ঞা করেন তাহাতে নবাবউত্তর করিয়া**ছিলেন**যে তিনি স্বয়ণ ভ্গলিতে গিয়া তদিষয় নিষ্পান করিবেন কিন্তু তিনি তথায় আসিয়া ক্লাইবকে লিখিলেন যে ওলনাজদিগের সহিত নিয়**ন করিয়াছেন তাঁ**হারা সুসময়ে জাহাজ বিদায় করিবেন ক্লাইব সহজেই ঐ চাতুরী বুঝিয়া নদীমধ্যে ওলন্দাজি নৌকান্ন আ-গমন রেখি করিতে মনস্থ করিয়া কলিকাতার দক্ষিণে তানান্যক স্থানে উত্তম রক্ষা করিলেন কিন্তু প্রথমে দ্বন্দু করিতে উদ্যোগ করিলেন না। ওলনাজেরা জাহাজ আনিয়াই দুর্গ আক্রমণ করিলেন পরে তথায় ব্যাঘাত পাইয়া সগুশত ইউরোপীয় ও অষ্টশত মলয়দেশীয় ইসন্য অবতারণ করিয়া গ্রুার পশ্চিমতীরদিয়া পদ-बुक्त हुहुड़ाश भगन कतिरान क्राहेव शृर्खि है वे हैं।न ख চন্দুনগরের মধ্যে শিবির করিতে তাঁহার ক্রু সৈন্য

ক্লর্ণেল কর্দসাহেবের সহিত পাঠাইয়াছিলেন ওলন্দা-জি বৈন্য অগুসর হইয়া চুচুড়ার একক্রোশদক্ষিণে শিবির করিল ফর্দসাহেব দুইজাতির বিরোধ নাদে খিয়া আক্রমণ করিবার পূর্ব্বে সভার আজ্ঞার্থে লিখিলেন ক্লাইব সাহেব তাসক্রীড়া করিতেছিলেন এমত সময়ে ঐ পত্র পাইয়া সীসকলেখনী দারা তদাসনে পশ্চাদ্ ক্ররী-তিতে উত্তর লিখিলেন প্রিয়তম কর্দ অবিলয়ে যুদ্ধ কর আমি পরদিনে সভার অনুমতি পাঠাইব ফর্দ এই আছা শুনিবামাত্রে ওলন্দাজিসৈন্যের প্রতি আক্রমণ করিয়া একদণ্ডমধ্যে তাহাদের ছিন্ন ভিন্ন করিলেন পুায় তৎসমকালে তাঁহাদের যেসকল জাহাজ নদী-মধ্যে আসিয়াছিল তাহা ইণরাজেরা অধিকার করি-লেন সুতরা পঐ সাহসিককর্মের শেষ হইল চুচুড়ার ষুদ্ধের শেষ হইবামাত্রে ছয় সাত সহসু অখাকঢ় সৈ-ন্যের সহিত রাজপুত্র মীরণ আসিলেন যদি ওলন্দাজেরা জয়ী হইতেন তবে তিনি অবশ্যই তাঁহাদের সহিত যুক্ত হইতেন কিন্তু তদভাবে তিনি তাঁহাদের অনেয়-ণার্থে ই রাজদিগের সহিত মিলিত হইলেন কর্ণেল ফর্দ যুদ্ধাবসানে চুচুড়া বেষ্টন করিলেন ঐ নগর বহুকাল ৰাধীন থাকিতে পারিতনা, কিন্তু ওলন্দাজের। সভরে ক্লাইবের নিকটে ক্ষমাপ্রার্থনা, করিলেন তাঁহারা যুদ্ধের ব্যয় দিতে এবং ক্লাইবওু তাঁহাদের জাহাজ ফিরিয়া

দিতে সম্মত হইলেন অতঃপর ক্লাইব সাহেব ধনে মানে
কিপুল হইয়া এবং তিন বৎসরপর্য্যন্ত অধিক পরিঅমদারা শারীরিকসুস্থতা পূন্য হইয়া বন্শিটার্ট
সাহেবের হস্তে রাজকীয়কর্ম সমর্পণ করিয়া ১৭৬০
শালের ফিবুয়ারিমাসে ইংলপ্তে গমন করিলেন ॥

কিন্তু এতদেশীয় বিরোধের দিষ্পত্তি হইন না প্রাচীন নবাব মীরজেফর নিজপুত্র মীরণের হস্তে রাজ-কীয় শক্তি অপণি করিলেন ঐ নূতন নবাব অহকারদারা স্থামলালোকদিগকে ও অপকারদারা পুজালোক-দিগকে তুচ্ছ করিতেন ওঁাহার দুরাচারদারা সকল লোকে সেরাজউদ্দৌলার দেংযবিষ্মরণ হইল সর্বসাধা রণের অসন্তোষদারা দিল্লীস্থ মহারজের পুত্র সাহ**আলম** দ্বিতীয়বার বেহারে আসিতে সাহস করিলেন. এব^ পূরণীয়ার শাসনকর্তা কাদিম হস্নিন্থা নিজবৈন্যের সহিত তাঁহার পক্ষে আনুকুল্য করিতে উদ্যোগ করি-লেন যুবরাজ বেহারের সীমা কর্মনাশানদীপার হইয়া শুনিলেন যে সামুজেনর উজির কুরতম ইমাদউলমলু তাঁহার পিতাকে মারিয়া হিন্দস্থানের স্মুট্ হইয়া অযো-ধ্যার শুবাদারকে উজির অর্থাৎ পুধান মন্ত্রী করিয়াছেন কিন্তু তিনি শক্তিহীন ও পুজাহীন মহারাজ ছিলেন তাঁহার রাজধানীও শতুহতে ছিল স্তরাণ নিজরাজ্যে প্ৰায়িত ব্যক্তিতুল্য ছিলেন। যুবরাজ পাটনা আক্রমণ

করিলে ঐ সাহসী রামনারায়ণ তৎস্থানের একপ্রকার রক। করিয়া অতিশয় বিনয়পুরঃসর সুরসিদাবাদে। লিখিলেন যে তাঁহার সাহায্যার্থে সৈন্য প্রেরিভ হ্য় তৎকালে কর্ণেল কালিয়দ সেনাপতি হুইয়াছিলেন তিনি ই∾রাজি সৈন্যলইয়ানবাবি সৈন্য ও মীরণের সহিত একত্র হইয়া চলিলেন তৎকালে ঐ সর্ব্যাণিত দুরাত্মা দুইজন সেনাপতির প্রাণনাশ করিয়া ছুরিকাদারা স্বহস্তে অন্তঃপুরস্থিত দুই রমণীর শিরশ্ছেদ করিলেন আলি-বর্দির দুইবিধবা দুহিতা নেওয়ায়িসমহম্মদ ও সায়দ-আহম্মদের পত্নী জম্বতীবেগম ও এমার্নবেগম কিয়ৎ-কালপর্য্যন্ত ঢাকায় অজ্ঞাতবাসে ছিলেন মীরণ এই যুদ্ধযাত্রাকালে তাঁহাদের প্রাণনাশার্থে আজ্ঞ। পাঠাই-লেন ঢাকার শাসনকর্ত্তা তাহা করিতে অস্বীকার করাতে মীরণ <u>একজন নিজভূত্য পাঠাইলেন ও তাহার</u> প্রতি আহ্বা করিলেন যে তাঁহাদের মুরসিদাবাদে আন-য়নছলে নৌকায় আরোপণ করিয়া তাঁহাদের নৌকা নশ্ব করিবে এব॰ ঐ দুরাত্ব প্রভুর আছে। কৃতফ্রতা-পূর্ব্বৰ্ক সুসিদ্ধ করিল যখন নে কামজ্জনার্থে ঘাতকের। ছিপি খুলিতে ছিল তখন ক্নিগ্ৰ ভগিনী অধোলিখিত খেদোক্তি করিল হে সর্কতিনান্ পরমেশ্বর আনরা উভয়ে পাপ্লি ও দোষি বটে কিস্তু-ীরণের কোন অপ-कांत्र कृति नाहे वत्रक 'वहे म॰ मात्त् त छन सक्त

বিষয়ে আমাদিগদারা উপকত হইয়াছে ৷ মীরণ গদন কালে স্থারক অর্থাৎ স্থারণরাখিবার বহিতে তিনশত লোকের নাম বিখিবেন যে প্রত্যাগমন হইলে তাছাদের হত্যা করিবেন কিন্তু তাঁহার আর প্রত্যাগমন হইল না কর্ণেল কালিয়দ্ যেপর্য্যস্ত না যাইতে পারেন রাম-নারায়নকে তা্বং মহারাজের সহিত্ত সংগ্রাম করিতে নিষেধ করিলেন কিন্তু তিনি ঐ পরামর্শ নাশুনিয়া যুদ্ধ করাতে সম্পূর্ণরূপে পরাহিতে হইলেন পাটনারকা-শূন্য হওয়াতে মহারাজ এক আঘাতেই অধিকার করিতে পারিতেন কিন্তু তিনি দেশ লুট করিয়া কাল यालन क्रिलन हेलियथा कालियम मास्टि रेमानात সহিত আসিয়া তৎকণাৎ শত্রুদিপের প্রতি গ্রন করিতে পুস্তাব করিলেন তাহাতে মীরণ কহিলেন যে ২২ ফিবুয়ারির মধ্যে তারাশুদ্ধি হয় না ২০ তারিখে মহারাজ ঐ মিলিত সৈন্য আক্রমণ করাতে মীরণের পঞ্দশ সহসু অশাৰঢ় সৈন্যেরা ছিল ভিল হইয়া পানায়ন করিল কিন্তু কালিয়দ স্থিরতর হইয়া সাহস-পূর্বক মহারাজকে আক্রমণ করিয়া শীঘু তাঁহার <mark>বৈন্যদিগকে তাড়াইলেন সাহআলন ঐ রাত্তিতে</mark> .শিবির ভঙ্গ করিয়া যুদ্ধকৈত্রহইতে পঞ্জোশান্তে পলায়ন করিলেন পারে তাঁহার সেনাপতি পর্বত-মধ্যদিয়া গমন করিয়া অকন্সাৎ সুরম্ভিদাবাদ অধিকার

[']করিতে পরামশ´ দিলেন এব° তদনুসারে ভাঁছারা শীঘু যাত্রা করিলেন কিন্তু মীরণ ক্রতগামিলে কাছারাঐবিপদ পিতাকে জানাইলেন অনন্তর মাহারাজ পর্কত হইতে বহিভূতি হইয়া রাজধানীহইতে পঞ্চদশ ক্রোশ দূরে আসিলেন কিন্তু শীঘু আক্রমণ নাকরিয়া তথায় বিলম্ব করাতে কালিয়দ সাহেব তাঁহার অনুসন্ধান করিয়া উপস্থিত হইলেন উভয়পর্কায় সৈন্যের৷ পরস্পর দর্শনযোগ্যস্থানে রহিল পরে মহারাজের নিকটে ইণরাজের(যুদ্ধপুস্তাব করিনে তিনি ঝটিতি ভীত হইয়া পুনর্বার পাটনায় গমনপূর্ত্তক তৎস্থানে দৃঢ়রপো বেষ্টন করিলেন এব পূরণীয়ার শাসনকর্তা কাদিম্-হিনুন্থী তৎকালে সাহায্য করিবার সদ্বাদ পাঠাইয়া रेमन्। প্রেরণ করিলেন। মহারাজ নয়দিবসপর্য্যন্ত পাটনা আক্রমণ করাতে ঐ নগর অবশ্য তাঁহার হস্ত-গত হইত ইতিমধ্যে কাপ্তান নকু, অতিঅপ্প সৈন্যের সহিত তথায় উপস্থিত হইলেন তিনি কর্ণেল কালি-য়দদারা প্রেরিত হইয়া বর্দ্মানহইতে ত্রয়োদশ্দিনে উত্তরিলেন পরে রাত্রিকালে শত্রদিগের অবস্থা নিরী-ক্ষণ করিয়া পরদিন বৈকালে তাহারা নিদ্রা যাইতেছে এমত সময়ে আক্রমণ করাতে মহারাজের সৈন্যের। সম্পূৰ্ণৰূপে প্ৰাজিত হইল তিনি নিজ ভাঁবুতে অশ্বি প্রদান করিয়া প্রস্থান করিলেন দুই এক দিবস পরে

কাদিনহ সিন খাঁ.পূরণীয়াদেশায় বোড়শ সহসু সৈন্যের সহিত হাজিপুরে আসিয়া পাটনা আক্রমণ করিতে উদ্যোগ করিলেন কাপ্তান নকু অতিঅপ ইউরোপীয় ও এতদ্দেশীয় रेमना ममूनाय मञ्जू लाकित मक्षा লইয়া নদীপার হইয়া তাঁহাকে সম্পূর্ণৰূপে পরাজিত করিলেৰ ঐ সকৃল যুদ্ধমধ্যে ইহা অত্তি সাহিসিক ব্যাপার ছিল এব॰ ইহাতেই এতদ্দেশীয়লোকেরা ইণরাজদিগকে অতিপরাক্রান্ত জানিলেন এবং রাজা খেতাবরায়ও ইহাতে অতিসাহসদারা খ্যাত হ**ইলেন তাহার কারণ** ই°রাজেরা ভাঁহাকে অত্যন্ত প্রশ^সা করিয়াছিলেন পূরণীয়ার শাসনকর্ভা পরাজিত হইয়া মহারাজের সহিত যুক্ত হইলেন অনন্তর কর্ণেল কালিয়দ ও মীরণ আসিয়া পদে ২ তাঁহার অনুসন্ধান করিতে লাগিলেন ৷ অনন্তর বর্যাকাল আরম্ভ হইল কিন্তু ইণরাজি সেনাপতি তথাপি ঐ অনুসন্ধান পরিত্যাগ করিলেন না ১৭৬০ শালের ২ জুলাই রাত্রিকালে অতিশয় ঝড় বৃষ্ঠি হইল মীরণ ঐ সময়ে তাঁবুমধে গল্প শুনিতেছিলেন ইতি মধ্যে একবজুগোতে তিনি ও দুইজন তাঁহার স্বহ্চর মারা পড়িলেন এই দুরবস্থায় কালিয়দকে শত্রু অনেমণ ় পরিত্যাগ করিয়া পাটনার আসিতে হইল পরে তিনি ঐ শ্বন্তপর্য্যন্ত তথায় সৈন্যদিগের আবান করিলেন।। মীরণ অতিশয় দুরাচারী তথাপি তাঁহার পিতার

রাজতের প্রধান অবলয়ন ছিলেন তৎকালীন মুসন-মানইতিহাসলেখকেরা কছেন যে ঐ দুর্বল ও সুভোগী বৃদ্ধের যে যৎকিঞ্চিৎ বিবেচনা ছিল তাহাও **নষ্ট হইল রাজকীয়কম্মের কোন নিয়ম র**হিল না বৈ নের। পূর্বপুণপাবেতনার্থে রাজপুরীর চতুর্দিগে কলবর করিতে জাগিল মীরকস্থিম নামা নবাবের জা-মাতা বহি চূতি হইয়া নিজধনগারা তাহাদের সস্তোষ করিতে পুতিজ্ঞা করিলেন পরে ইপরাজদিগের বহুবায় সাধ্য যুদ্ধ উপস্থিত হইল কিন্তু কিঞ্চিন্মাত্র ও ধন ছিল না যে অধিকধন তুঁছোৱা অচিন্তনীয়ৰূপে পাইলেন তাহাও বিনা বিবেচনায় ব্যয় হইল তাঁহারা তথন নবাবের নিকটে আবেদন করিলেন কিন্তু তাঁহার কোষ শূন্য হইয়াছিল সুতরাণ তাঁহাদের ঋণকরণের আবশাক হইল ইহা স্পষ্ট বোধ ছইতেলাগিল যে ঐৰপ অবস্থা বহুকাল থাকিবে না নবাব মীরকস্থিমকে দৌতা কর্ম করিতে কলিকাতায় পাঠাইয়াছিলেন কোম্পানির তৎকালের পুধান অধ্যক্ষ বন্শিটার্ট সাহেব ও হণ্ডিৎস সাংহ্বে তাঁহার বুদ্ধি বিশেষৰূপে জানিলেন দ্বিতীয়বার দৌত্য কম্মের আবশ্যক হওয়াতে মীর কস্সিম পুনঃ পূেরিত হইলেন তাহাতে শাসনকর্তা সাহেবের স্থির বোধ হইল যে বাঙ্গালায় কর্ম্মোদ্ধার কেবল ঐ মনুষ্য-ছারা হইতে পারে একারণ তাঁহাকে নায়েব নাজিন করি-

ৰার পুস্তাব করিলেন শীরকস্প্রিমও তাহাতে তৎক্ষণাৎ . সন্মত হইলেন পরে বন্শিটার্ডি সাহেব ও হস্তিৎস সা-হেব কিয়ৎবৈনাসমভিব্যাহারে মুরনিদাবাদে গিয়া नरार्वत निकरि धे शुरुवि कतिरान किन्न नवाव তাহাতে অতি অসমত হইলেন কারণ তিনি জানিতেন যে এবিষয়ে তাঁহার জামাতা শক্তিমান, ছইবেন ও তিনি নিজসভায় পুত্তলিকাপ্রায় থাকিবেন বন্শিটাট সাহেব নবাবের অসম্মতি দেখিয়া সনিক্ষে হইলেন কিন্তু মীর-করিম নহারাজের সহিত মিলিত হইবার ভয়প্রদর্শন করাইলেন কাৰণ তিনি উত্তম্বপে বৃঝিলেন যে এতাবৎ-প্র্যান্ত চেষ্টা করিবার পর মুরসিদাবাদে কোনমতে তাঁহার রক্ষানাই অতএব বন্শিটার্টসাহেবকে বল-পূর্বক ব্যবহার করিতে হইল তিনি রাজবাটীতে ইণ-রাজি সৈন্য থাকিতে আজ্ঞা করিলেন মীরজেকর তাহা দেখিয়া অপীন হইলেন এব ্ তাঁহার পুতি আক্স হইল যে কলিকাতায় বা মূরসিদাবাদে বাস করেন তিনি বুঝি-लन एय यपि मूत्रिमावादि थाकिन তবে তথায় পুरान থাকিয়া সর্কাশূন্য হইতে হইবে এবণ জামাতাহ্ইতে। অপমান হইবে অতএব কলিকাতায় যাইতে ইচ্ছাকরি-লেন তিনি এক সাধারণ নর্কীকে অন্তঃপুরে রাখিয়া তাহার অতিশয় বশীভূত ছিলেন যেরমণী किथि ध्कानशास मित्रियामारम शुनिका इहेरनम ।

মুসলমানইতিহাসলেখকে কছেন যে মীরজেকরও এ নারী পুস্থানের পূর্ব্বে অন্তঃপুরে গিয়া মুরসিদা-বাদের অনেক রাজারা ক্রেমে ২ যে সকল অমূল্য রতুসপ্তুহ করিয়াছিলেন তাহা সমভিব্যাহারে লইয়া মর্য্যাদাজনক রক্ষকের সহিত কলিকাতায় আসিলেন ॥ ॥ ত্রয়োদশ অধ্যায় ॥

ই রাজদিগের ইচ্ছানুসারে ১৭৬১ শালের ৪ মার্চ মীরকস্সিম বেহার ও বাঙ্কালাদেশের ভ্রাদার হই-লেন ইহার ক্তত্ততাষ্বপে কোম্পানিকে বর্দ্ধনান দেশ দিলেন এবং কলিকাত্বার সভাপতিদিগকে বিং-শতি লক্ষমুদ্রা দিলেন ও তাঁহারা ঐথন পরস্পার বণ্ট্ন করিয়ালইলেন ৷ মীরকস্সিম অতিশক্তিমান্ ও বুদ্ধিমান্ ছিলেন তিনি রাজাপ্রাপ্তিমাত্রে ই°রাজদিগকে মীর-জেফরের সৈন্যদিগকে ও নিক্ষ ভৃত্যদিগকে যেধন দিতে স্বীকার করিয়াছিলেন প্রথমে উত্তমৰূপে তাহার গণনা করিয়া পরে পরিশোধার্থে উপায় করিলেন রাজসভার ব্যয়লাঘব করিলেন এব° মীরজেফরের অলসরাজ্ঞকালে শ্আমলারা যে অধিকধন লইয়াছিলেন যতুপূর্ব্বক তাহার হিসাব দেখিয়া ফিরিয়া লইলেন তিনি জমিদারদিগের পূর্জদেয় আদায় করিয়া সফলস্থানের নূতন মূল্য নিজ-পণ করিলেন তাঁহার পূর্বে দুইদেশের বার্ষিক রাজস্ব ১৪২৪৫০০ মুদা ছিল তিনি তাহাহইতে ২৫৬২৪০০

মৃদ্রা করিলেন, তৎকালে প্রজাদিগের অধিক কর অসহ হইল এই উপায়দারা শীঘু ভাগুার-পূর্ব করিয়া দেয়পরিশোধ করিলেন ভাঁহার নিজ সৈন্যেরা নিয়মমতে বেতন পাইয়া আচ্ছাবর্ত্তী রহিল তিনি ইণরাজদিগদারা শক্তিপ্রাপ্ত হইয়াছিলেন তথা-পি তাঁহাদের অধীনতা মোচনার্থে বিলক্ষণ যত্ন করি-লেন কারণ তিনি জানিতেন যে যদ্যপিও সর্ব্বসাধারণে তাঁহাকে নবাব বুলিয়া স্বীকার করিয়াছেন তথাপি যে সকল লোক ওাঁহাকে পদস্থিত করেন এদেশে ভাঁহা-রাই যথার্থ নৰাবের শক্তি, এবং ঐশ্বর্য পাইয়াছেন তিনি কলিকাতাস্থিতসভার অধীনতা মোচনে কেবল বলব ্যতিরেকে অন্য উপায় নাদেখিয়া সৈন্যবৃদ্ধিতে মনোযোগ করিলেন তিনি অকর্মণ্য সেনাদিগের বহি-কার করিয়া অপর সৈন্দিগকে ই°রাজি রীত্যন্-সারে সুশিক্ষিত করিলেন এবং পারসীকান্তর্গত ইস্পা হান নামেপুধান নগরে জাত জঝিনখঁ অথবা গ্রেগরিখাঁ-নামক একজন আরমাণীয়কে সেনাপতি করিলেন ঐ জন অসম্ব বৃদ্ধিনান্ ছিলেন তিনি পুথমত বস্ত বিক্রয় করিতেন কিন্তু যুদ্ধোপযোগি বুদ্ধি থাকাতে মীরকস্সিম তাঁহাকে স্বকল্ম নিযুক্ত করিলেন তিনিও দৃঢ়তাপূর্কক পুভুকে ইণরাজদিগের অনধীন করিতে উদ্যুক্ত হইলেন তিনি রুন্দুক নির্মাণ করিলেন ও কামান নির্মাণ করিতে অভ্যাস করিলেন এবং গোলনাজদিগকে শিক্ষিত করিলেন অতএব তাঁহার আক্রাবর্ত্তি
সৈন্য এমত উত্তম হইল যে বাম্বালায় কোন রাজার
সেরপ ছিল না মীরক্রিম ইংরাজদিগের অগোচরে নিজকপনার সম্পূর্ণতা করিবার কারণ মুরসিদাবাদ পরিত্যাগ করিয়া মুম্বেরে রাজ্থানী করিলেন
তথায় তাঁহার আর্মাণীয় সেনাপতি বন্দুক নির্মাণের
কারখানা করিলেন এবং তথাকার বন্দুকের যে প্রশংসা
অদ্যাপি আছে সে কেবল ঐ যুবা জবিনে আঁহইতে
হইয়াছে তিনি তৎকালে ত্রিংশৎবর্ষবয়ক ছিলেন ।।

১৭৬০ শালের বর্ষাবদানে মেজর কার্ণক সাহেব
মহারাজের সহিত যুদ্ধার্থে অনুসর হইলেন মহারাজ
তদব্ধি বেহারের ইতন্ততো ভুমণ করিতেছিলেন কার্ণক
তাহাকে সম্পূর্ণরূপে পরাজিত করিয়া সন্ধি প্রস্তাবার্থে
রাজা থেতাবরায়ের নিকটে সম্বাদ পাঠাইলেন তিনি
তাহাতে অত্যন্ত সন্তোষপূক্ষক সম্মত হওয়াতে ঐ
ইণরাজি সেনাপতি মহারাজের তাঁবুতেগিয়া তাঁহার
সমান করিলেন ইতিমধ্যে মারকস্সিন মহারাজের
সহিত ইণরাজদিগের কথোপকথন শুনিয়া ভীত
হইলেন এবং যদি তাঁহার পাক্ষে কোন অপকার ঘটে
তাহা নিবারণার্থে য়য়ণ পাটনায় গমন করিলেন মেজর
কার্ণক সাহেব তাঁহাকে সাহত্যালমের নিকটে যাইতে

নিবেদন করিলেন কিন্তু তিনি অতিশয় অহ্বার পুযুক্ত .ভাহা করিরেন না অবশেষে স্থির হইল যে ইপরাজদি-গের কারখানায় উভয়পক্ষে আসিবেন তথায় এক ক্ষণিক সি^হাসন পুস্তুত হইল তদুপরি ঐ তিমর্ব^শীয় শ্বরাজ্যে পলায়িত ছিন্মুস্থানের মহারাজ বসিলেন মীরকস্সিম স্থাভাবিকপূজাপূর্বক তথায় পুবেশ করি-লেন মহারাজ ভাঁহাকে বাঙ্গালা বেহার ওউড়িস্যার শুবাদারীতে স্থাপিত করিলেন তিনিও করম্বরূপে বিপশতি লক্ষ মুদ্রা বর্ষে২ দিতে স্বীকার করিলেন অনস্তর মহারাজ দিল্লীতে যাত্রা করিলেন্ কার্ণক সাহেব ক্র্মনাশার তীরপর্যাম্ভ তাঁহার সহচর থাকিলেন তথায় বিদায়কালে মহারাজ কহিলেন যে ই শ্রাজদি-গের যখন ইচ্ছা হইবে তথনি তিনি এই তিনদেশের দেওয়ানী তাঁহাদের দিবেন। এখানে ইহা বলা উচিত হয় যে ১৭৫৫শালে যদ্যপিও উড়িদ্যা নহারাষ্ট্রীয়দি-গের দন্ত হওয়াতে অন্যান্য দেশছইতে পৃথক হইয়াছিল তথাপি সুবর্ণরেখানদীর উত্তরভাগ এতদেশীয়নবা-বের অধীন থাকাতে উড়িস্যা নামে বিদিত ছিল ৷৷

কল্পিমআলি সমুদায় জমিদারদিগের সম্পূর্ণরূপে অধীন করিলেন কিন্তু পাটনার শাসনকর্ত্তা রামনারা-য়ণের কিন্তুই করিতে পারেন নাই তিনি অতিশয় ধনিরূপে বিখ্যাত ছিলেন কিন্তু যথার্থ ইণরাজদিগের

দ্বারা রক্ষিত ছিলেন তিনি তিনবৎসরপর্য্যন্ত হিসাব পরিকার করেন নাই কারণ ঐসময়ে যুদ্ধার্থ সৈন্যদারা বেহ:রের অনেক ক্ষতি হইয়াছিল নবাব কহিলেন ষে যাবৎ রামনারায়ণ দেয় প্রিশোধ নাকরেন তাবৎ ই^-রাজদিগের প্রাপ্য দিতে পারিবেন না তাহাতে কলিকা-ত: স্থিতন ভায় টুই অপশ হইল এক অপশ মীরকন্সিমের বিপক্ষ হইল ও যেপক্ষে শাসনকভা বন্শিটার্চ সাহেব ছিলেন সেপক ওঁাহার সপক হ**ইল প**রে বন্শিটাট্সা-হেবের পক্ষ পুবল হওয়াতে পাটনাস্থিত রামনারায়ণের রক্ষক ই°রাজি সৈন্যদিগের আছান ছইল রামনারা-য়ণের সুতরা[৽]৲ শুবাদারের দয়াব্যতিরিক্ত উপায় রহিল শা শুবাদার অবিলম্বে তাঁহাকে আটক করিয়া আসেধ করিলেন গুপ্তধনপ্রকাশার্থে তাঁহার ভ্তাদিগকে অতিশয় ক্লেশ দিলেন কিন্তু তথাপি রাজকীয় ব্যয়ো-পযুক্ত হইতে অধিক ধন প্ৰাপ্ত হইল না বন্শিটাৰ্ট-লাহেবের রাজস্বনধ্যে এই এক পুধানভূল ছিল কারণ এই ব্যাপার্দ্বারা এতদ্দেশীয়লোকদিগের ইণরাজদি-গের পহায়তায় বিশ্বাস ভল্ল হইল।।

মীরকস্সিম এপর্যান্ত উত্তমৰ পে রাজত্ব করিলেন অতঃপর কোম্পানির তৃত্যদিগের লোভরারা কিবপে ভাঁহার পতন হইল তাহা বর্ণা করি। ভারতবর্ষে কোন দ্রবাস্থানান্তর করিতে হইলে মাসুল দিতে হইত

এব^ ঐ মাসূলদারা অধিকা^শ রাজস্থ উৎপন্ন হইত ্কিন্তু রাজমূব্দির এবড় কুৎসিত রীতি ছিল কারণ ইহাতে বাণিজ্যের ব্যাঘাত হইত তথাপি ঐ রীতি তৎকালে পুবল ছিল এব ১৮৩৫ শালের পূর্জাবধি ই^রাজেরাও অন্যথা করেন নাই যখন ই^রাজি-কোম্পানিতে ্উত্তম বাণিজ্যশক্তি, পাইলেন তথন ৰাৰ্ষিক তিন সহসু মুদাদানে তাঁহাদের মাসূল রহিত হইল কলিকাতান্থিত পুধান অধ্যক্ষ যেদন্তকে স্বাক্ষর করিতেন গুলুগুহিদিগের তাহা দেখাইলে কোম্পানির দ্রব্য বিনা শুলে যাইত কেবল কোম্পানির বাণিজ্যে এইৰপ সুগম ছিল কিন্তু ই°রাজেরা নিজমনো-মীত নবাবস্থাপন করিয়া **এ**দেশে এমত বলবান্ **হইলেন** যে প্রায় কোম্পানির সকলভূত্যেরা নিজ২ বাণিজ্য করিতে আরম্ভ করিলেন ক্লাইবসাহেব যেপর্য্যস্ত এদেশে ছিলেন তদবধি তুঁ৷হারা এতদেশীয়বণিক্-দিগের ত্তল্য শুলু দিতেন কিন্তু তিনি স্থদেশে গমন করিলে এই সভাদারা দিতীয় নবাব স্থাপিত হওয়াতে ইণরাজেরা পূর্জাপেক্ষা অধিক বলবান্ হইয়া সাসুল-ব্যতিরেক বাণিজ্য করিতে স্থির করিলেন বাঙ্গালায় . তাঁ হাদের সামর্থ্য এমত অধিক ছিল যে নবাবের কোন ভৃত্য লোক তাঁহাদের প্রতিবন্ধক হইতে পারিতেন না **অ**তএব ই∿রাজেরা ক্রে ২ অধিক দুরস্ত হইলেন তাঁহা- নের গোমস্তারা ইচ্ছানুসারে ইণরাজি নিশান গাড়িয়া এতদ্দেশীয়বণিক্লোকদিগকে ও সরকারিআ্থল।- ় দিগকে বহুবিধ য়াতনা দিতেন কোন ইণ্রাজের স্বাক্ষ-রিত দন্তক পাইলে **ষ**য়° কোম্পানিত্র সন্ত্রাস্ত হুইতেন যদি নবাবের আমলারা কোন ব্যাঘাত করি-তেন ইউরোপীয় ভূদলোকেরা তৎক্ষণাৎ সিপাই পাঠা-🗪য়া তাঁহাদের কারাগারে রোধকরিতেন মাসূল ব্যাতি-রেকে নিজদ্রব্য চালান করিতে হুইলে নাবিক কোম্পা-নির নিশান তুলিয়াদিতেন এইরূপে নবাবের শক্তি নষ্ট **रुरेन এতদেশীয় ব**ণিক্দিগের সর্কাশ হুইল এব**ণ** ভদ্ৰ ইণরাজেরা বিপুল ধনী হইলেন শুবাদারের রাজ্য অতিক্ৰীণ হইল কারণ ইণরাজেরা ষেৰপে মাসূল দিতেন না সেইৰূপে তাঁহাদের ভূত্যেরা নাম করিয়া সকলেই রাজকর মুক্ত হইতেন মীর কস্থিম এই সকল ক্লেশবিষয়ে কলিকাতার সভায় অভিযোগ করিলেন এবং যদ্যপি ইহার নিবারণ না হয় তবে এককানে রাজ্যনাশ করিবার ভয় দেখাইলেন ৷৷

বন্দিটার্ট সাহেব ও হস্তি স সাহেব এই দোষ
নিবারণার্থে বিবিধ চেষ্টা করিলেন কিন্তু এই দোষদারা
অন্যান্য সভাপতিদিগের লভ্য থাকাতে তাঁহাদের
যত্ন বিফল হইল পরে ঐ স্বব্ধার এমত বৃদ্ধি হইল
যে এতদ্বেশীয়লোক্দিগকে ইণ্রাজ্দিগের গোন্তা-

ক্তৃকি নিৰ্ণিত্মূলেঃ দ্ৰব্য ক্ৰয় বিক্ৰয় করিতে ছ্ইল অতঃপর নীয়কণ্সিম স্পাইৰূপে ইণ্য়াজদিগকে শাত্রোধ করিলেন এব উভয় পক্ষে বৃদ্ধ হইবার বিলক্ষণ সভাবনা হইল বন্শিটাট সাহেব তাহা নিবারণার্থে ভাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করিতে স্বয়ৎ মৃচ্ছেরে গমন করিলেন মীরকস্সিম সৌহাদ্যপূর্বক তাঁছাকে অভ্যর্থনা করিয়া প্রকৃতসময়ে কোম্পানির ভৃত্যদিগের দৌরাস্থ্য ওবিনাশুলে, বাণিজ্যদারা দেশের অপকারবিষয়ে কটুক্তিতে অভিযোগ করিলেন *ব*ন্-শিটার্ট সাহেব ভাঁহার সাক্তুনার্থে সচেষ্ট্রক হইয়া প্রস্তাব ক্রিলেন যে এতদেশীয় লোকেরা ও ই রাজেরা ভল্য-ৰূপে সকলদ্ৰব্যে শতকরানয় টাকা মাসূল দিবেন এব° কহিলেন যে কলিকাতাস্থিত সভার <mark>অনুজ্ঞা</mark>-ব্যতিরেকে এমত ব্যবস্থা করিতে ভাঁহার সামর্থ্য নাই কিন্তু এইৰপ করিতে তিনি পরামর্শ দিবেন নবাব অতিশয়অসমতিপূর্বক তাহাতে স্বীকার করিয়া কহিলেন যদি এদোষ পরিহার না হয় তবে সনুদায় মাসূল রহিত করিয়া ইউরোপ≩য় ও অতদেশীয়লোকের তুল্যতা করিবেন বন্শিটার্ট-় সাহেব ঐ বিষয় সভান্ন পৃস্তাব করিতে সহরে কলিকাতায় আসিলেন ঐীরকস্সিম তাঁহাদের অনু-মতি .অপেকা নাকরিয়া শুরুকগ্রাহিদিগের প্রতি ই৲-

ব্লাজদিগের তব্যে শতকরা নয়টাকা আদায় করিতে তৎক্ষণাৎ আছা করিলেন ইংরাজেরা তাহাদিতে অস্বীকার করিয়া এতদেশীয়আমলাদিগের রুদ্ধ করিলেন এব নানাদেশীয় কারখানার প্রধানলো-কেরা স্বস্থানহইতে শীঘু কলিকাতায় আসিলেন কেবল হৃষ্টি॰\স সাহেবব্যতিরেকে সকলেই শতকরা <mark>নয়টাকা মাসুলবিষয়ে বন্শিটা</mark>র্ট সাহেবের *প্রস্তাব* ঘৃণাপুর্বক তাজা করিলেন তাঁহারা কেবল লবণ বিষয়ে সার্দ্ধ মুদ্র। দিতে সম্মত হইলেন। মীরকস্সিম তৎ-কালে নেপালে যুদ্ধযাত্রা করিয়াছিলেন কিন্তু তথায় मूनिक इहेरनन ना उथाइहेर्ड প্রত্যাগমনকালে শুনি-নেন যে কলিকাতার সভাপতিরা মাসূল দিতে অস্বীকার করিয়া তাঁহার আমলাদিগকে আটক করিয়াছেন তিনি তৎক্ষণাৎ বাহ্বালা ও বেহার সমুদায় অঞ্লে মাসুল রহিতকরিলেন সভাপতিরা তাহাতে অতিশয় ক্রোধা-নিৃত হইলেন ভাঁহাদের ইচ্ছা যে নবাব নিজপ্রজা-হইতে পূর্ববৎ মাসূল আদায় করিবেন ও ইণরাজদি-গকে বিনামাসূলে বাণিজ্য করিতে দিবেন ক্রোধপূর্বক তাঁহাদের কথোপকথন হইতে লাগিল হস্তিৎস সাহেব কহিলেন যে প্রধান রাজা-শীরকসসিম নিজ প্রজাদি-গের ভাল কি কারণে না করিবেন তাহাতে ঢাকার কারখানার কর্ত্যাবাট্সন্সাহের কহিলেন যে এইবাক্য

ল্যাবের অধীনলোকের উচিত বটে কিন্তু **এসভাপতি-**দের যোগ্য নহে হস্টি°\সসাহেব প্রভ্যুত্তর করিলেন যে অতি নিৰ্বোধ না হইলে এমত বাক্যবলে না ঐ আব÷ শ্যক বিষয়ে সভাপতিদিগের এইৰূপ স্বভাবে কথো-श्कथन इहेन जनत्माय छै। हारमज निर्धातन हहेन य অতদেশীয়বাণিজ্যে পূর্ব্বোক্ত শুন্ক নির্ধারণ করিতে মীরকন্সিনের প্রবৃত্তিকারণ আমিয়াট্সাহেব এবং হে সাহেৰ তথায় প্ৰেরিত হইবেন তাঁহারা তথায় গিয়া বত্বার তাঁহার সহিত সাক্ষা**২ করিলেন এব**৭ প্রথমত বোর্ধ হইল যে এবিষয়ের নিষ্পত্তি হইতে পারে <mark>কিন্তু কোম্পানির ভৃত্যমধ্যে অতিবুরস্ত ও পাটনার</mark> মধে। প্রধান ইলিস্ সাহেবের দুরাচারদারা সন্ধির আশা নষ্ট হইল নববৈ আমিয়াট্সাহেবকে .বিদায় করিয়া ইণরাজদিগের কারাগারস্থিত নিঙ্গ ভুত্যদি-গের মোচনার্থে প্রতিভূষনপে হে সাহেবকে রাখি-লেন ইলিস্সাহেব আনিয়াট্সাহেবকে নবাব পুন-ক্রিনা গুহণ করিতে পারেন এমত বুঝিয়া সহসা পাটনা নগর অধিকার করিলেন কিন্তু তাঁহার সৈঁন্যেরা মদ্যপানে মৃত্ত হইয়া বিশ্খল হওয়াতে শুবাদারের .অধিক সৈন্য আসিয়া ঐ নগাঁর পুনরধিকার করিল এব ৭ ইলিস্ সাহেব ও অন্যান্য ইউরোপীয়েরা কারাগারে ক্ল হইলেন কৃষ্সিয়জালি এই পাটনার ব্যাপার

শুনিয়া দেখিলেন যে যুদ্ধ অনিবার্য্য হইল একারণ বহিঃস্থিত কারখানার সকল ইউরোপায়দিশের আটক করিতে ওকলিকাতার পথিমধ্যে আমিয়াট্সাহেবকে রোধ করিতে আজ্ঞাকরিলেন ঐ মহাশয় মুরসিদাবাদের নিকটে যাইতেছেন এমতসময়ে তথাকার অধিকৃতের নিকটে ঐ আজ্ঞা 'আসাতে তিনি তাঁহাকে আজ্ঞান করিলেন আমিয়াট্ স্থাহেব তাহানা মানাতে মহৎ কলহ উপস্থিত হইল তাহাতে তিনি মারা পড়িলেন মুরসিদাবাদ স্থিত জগৎসেটের গৃহের প্রধান বণিকেরা ইশরাজদিগের পক্ষে আছেন একপ 'সন্দেহপ্রযুক্ত মীরকস্বিম তাঁহাদের মুঙ্গেরে আনিয়া দমনে রাখি-লেন ৷৷

আমিয়াট্ সাহেবের মৃত্যুসমাদ ও ইলিস সাহেবের
আর তাঁহার সহচরদিগেরআসেধের সমাদ কলিকাতায়
আসিবামাত্রে সভাপতিয়াতৎক্ষণাৎ যুদ্ধ করিতে স্থির
করিলেন বন্শিটার্ট সাহেব ও হণ্ডি স সাহেব পাটনাস্থিতভদ্রলোকেরা যেপর্য্যন্ত মারক স্নিলের হস্তহ্ইতে
মুক্ত নাঁ হয়েন তাবং ক্ষান্ত রাখিতে যথেষ্ট চেষ্টা করিলেন কিন্তু তাহার কোন কল হইল না সভ্যের অধিকাশ্দ্রারাই রাজ্যিকি সৈন্যদিগের তৎক্ষণাৎ যুদ্ধ করিতে
আক্রা হইল এব্শ তৎকালে তাঁহারা মীরজেকরকে
পুনর্ষার রাজ্যার্পণ করিতে স্থির করিলেন কারণ তিথি

ই৲রাজদিগের বিনামাসুলে বাণিজ্যে ও এতদেশীয় নাণিজ্যে পূর্ব্বং নাসুলস্থাপনে অনুমতি করিতে দ্বাকার করিলেন ঐ বৃদ্ধ মহাশয় দিসগুতিবর্ষবয়ক ও কুণ্ঠরোগদারা গতিশক্তিরহিত তথাপি ই৲রাজি সৈন্যের সহিত কলিকাভাস্ইতে মুরসিদাবাদে চলি-লেন।

মীরকস্সিম সৈন/শিকার্থে বৃহ্বিধ আয়াস করি-য়াছিলেন এবণ ভাঁহার সৈন্য একণ উত্তম ছিল যে এতদেশীয় কোন রাজার কদাচ সেরূপ ছিল না তাঁহার আরমাণীয় গেনাপতি জঝিনখাঁও যুদ্ধবিষয়ে নিপুণ हित्तन किन्न ज्थाणि मीर्चकान यूच इहेन ना नवाद्यत *দে*নাপতিদের পরস্পার অনৈক্য হওয়াতে ১**৭৬৩** শালের ১৯ জুলাই কাটোয়ায় তাঁহার সৈন্যেরা পরা-জিত হইল ২৪তারিখ ইণরাজেরা মুতিঝিলে শ্রেণী-ৰন্ধ নবাবের বৈন্যদিগের পরাজয়,করিয়া মুরসিদা-বাদ অধিকার করিলেন ২ আগষ্ট সুতির নিকটে গরি-য়ায় একযুদ্ধ হইল তাহাতেও মীরকস্সিমের সেনারা আঘাত পাইলেন নবাব রাজমহলের সমীপে উদয় নল্লে দৃঢ়তর শিবির করিয়াছিলেন তীহার সমুদায় ·रेमना उथाय भमन कतिनं जिनि · सयः । এতৎপर्यास মুঙ্গেরে ছিলেন অতঃপর উদয়স্থিত,সৈন্যের নিকটে যাইতে স্থির করিনেন- কিন্তু যাঁতার পুর্বে এতদেশীয়

बन्दीत्वाकृषिरगद्र श्रांग नष्टे कदित्वन कथिত चाह्न य পাটনার শাসনকর্ত্র। রাজা রামনারায়ণের পলায় বালু-कार्श्वर्रभागी वन्न कत्रिया नहीमतथा निःक्लिश कत्रिलन **এব° ঢাকার নায়েব শাসনকর্ত্তা রাজা রাজবল্লভ তাঁহা-**রপুত্র রায় রয়ান কৃষ্টদাসপ্রভৃতি রাজা উমেদসি ১ হ রাজ! বনীয়াদসি[∗]\হ রাজা ফতেসি^হ ও অন্যান্ঃ-দিগকে হত্যা করিলেনু এব ে সেটব শীয় দুই ধনীবণি-ক্কে দুর্গস্থিত বুরুজহইতে নদীমধ্যে নিঃকেপ করি-লেন যেস্থলে ঐ হতভাগ্যেরা মরিলেন নাবিকেরা , অনেকক্ষণপর্য্যন্ত তাঁহাদের অনেষণ করিয়াছিলেন। কস্-সিমস্বালি এইসকল হত্যা করিয়া উদয়স্থিত সৈন্যের নিকটে চলিলেন আক্টোবর মাসের প্রথমে ইণরা-**জেরা** জাঁহা**র শিবিরে আক্রমণ** করিয়া তাঁহাকে পরাজয় করিলেন পরাভবের দুইএকদিবসপরে তিনি মুঙ্গেরে আসিলেন কিন্তু তাঁহার অনেষণার্থে যে সকল ই রাজি-বৈন্য আসিতে ছিল তাহার পরাভাবে স্বয়ণ অক্ষম বুঝিয়া সসনে পাটনায় পলায়ন করিলেন যেসকল ভদ্র ই^রাজেরা তাঁহার হস্তে পড়িয়া ছিলেন তাঁহাদের সম-ভিব্যাহারে লইলেন মুঙ্গেরহইতে যাত্রাক্রিয়া দিতীয় দিনে ব্লেবানদীর তীরে উপস্থিতহইলেম দৈবাৎতক্ষণাৎ তাঁহার সৈন্যম্ধ্যে কলর্ব উপস্থিত হইল সক-**ब्लर्ड नहीशात इरें एक नागु म्या रहेन बद**् किल्या

মনুষ্য এক মৃতশরীর নিখাতার্থে লইয়াযাইতেছিল পরে জিজ্ঞাসা করিলে তাহারা কহিল যে ইহা প্রধান সেনাপতি জবির্মিখার শরীর এইবাক্য শ্রবণে নবাবের সম্ভোষ হুইল । ইতিহাস দারাবোধ হুইতেছে যে দিবা-বসানে তিন চারি জন মোগল বলপূর্ত্তক তাঁবুতে প্রবেশ করিয়া তাঁহাকে মারিয়াছেন এবিষ্য়ে জনশ্রুতি হইল যে তাঁহারা প্রাপ্য আদায় করিতে গিয়াছিলেন পরে দেনাপতি তাঁহাদের দূরীকরণ করাতে তাঁহারা খড় গ বাহির করিয়া তাঁহার প্রতি ধাবমান হইলেন কিন্তু তাঁহার নিকটে প্রাপ্য কিছুই ছিল না নয়দিবস পূর্ব্বে সম্-দায় দত্ত হইয়াছিল ইহাতে স্থির এই য়ে কসসিম আলি . সেনাপতির বধার্থে তাঁহাদের প্রেরণ করিয়াছিলেন তাহার কারণ খোজাপেট্রুনামে বিদিতজঝিনের এক ভ্ৰাতা কলিকাতায় ছিলেন বন্শিটাৰ্ট সাহেবের ওঁহণ্ডি 🗠 সসাহেবের সহিত তাঁহার_ু পরম বন্ধুতা ছিল• অতএব তিনি গুপ্তভাবে জঝিনকে লিখিয়াছিলেন যে তিনি নবাবের কর্ম পরিত্যাগ করেন ও নবাবকে আটক করিতে চেষ্টা করেন নবাবের প্রধান চর এবিষয় জানি-তে পারিয়া রাত্রি দুইপ্রহর একঘণ্টার সময়ে প্রভুকে জাগাইয়া কছিলেন যে ভাঁহার সেনাপতি এইৰপে বিশ্বাসঘাতক হইয়াছেন পরে চত্তর্বিশ্শতি ঘটিকার মধ্যে তৎকালের অতিপ্রধান ঐ আরমাণীয় সেনাপতি জ্বিন মারাপড়িলেন ॥

मीत्रकन्तिम एतालूर्सक लाउँनाम श्रावायन कत्रारङ **সুক্ষের ই^রাজ**দিগের হস্তগত হইল পরে তিনি দেখিলেৰ যে ভাঁছাকে ঐ ৰূপে পাটনাপরিত্যাগ পূर्चक **धरमभ**रहेर७ भनायन क्রिए७ रहेरव 'हे॰ ब्राक्ट দিগের প্রতি তাঁহার অসীন ক্রোধ হইল তিনি পাটনা পরিত্যাগের পুর্দ্ধে কারাগার স্থিত লোকদিগের মৃত্যু বাঞ্চা করিয়া সেনাপতিদের প্রতি আজ্ঞাকরিলেন যে তাঁহারা কারালয়ে গিয়া ঐ সকল লোকদিগের প্রাণ ৰাশ করেন[,] তাঁহারা উত্তর করিলেন যে ঐ সকল লোকের হস্তে অন্ত দিয়া বাহির করুন আমারা যুদ্ধ করিব নত্তবা আমরা হত্যাকারক নহি যে বিনাপরাধে ভাহাদের শিরশ্ছেদ করিব পরে নবাব সমরু নামক একজন ইউরোপীয় সৈন্যাধ্যক্ষকে তাহাদের সংহারার্থে < প্ররণ করিলেন ঐ দুরাস্থা পূর্ব্বে ফরাসিদের চিকৎসক ছিল এব ১তৎকালে মীরক স্সিমের কর্মে নিযুক্ত ছিল সে তৎক্ষণাৎ ঐ কর্ম্মের ভার লইয়া কিয়ৎ সৈনে র সহিত তথায় গিয়া ঐ নিরাশ্রয় লোকদিগের অগ্নিদারা দথা-করিয়ানারিন কেবল কুলার্টন্ সাহেব প্রাণরকা পাই-লেন অন্য সকলেই মারাপড়িলেন ঐপাটনার হত্যাতে অষ্ট চত্বারিপশৎ ভদ্র ইপরাজেরা ও সার্দ্ধশত বৈদন্যরা প্রাণ হারাইলেন সমরু অতঃপর নান।রাজার উপা-খনা করিয়া অবশেষে সর্থান দেশের রাজত্বপাইলেন

যেসকল ভদ্র ইণরাজেরা মারাপড়িয়াছিলেন তক্ষধ্যে কলিকাতার সভাপতি ইলিস্সাহেব হে সাহেব ও ল-বিপ্টন্ সাহে্ব ছিলেম ১৭৬৩ শালের ৬ নবেম্বর পাটনা ই রাজদিগের হন্তগত হইল ও মীরকস্সিম অযো-ध्रात श्वारादात निकरि शनायन कतिरलन बहेन्त्श প্রায় চারিমানের মধ্যে যুদ্ধের শেষ হইল পরবৎনর ২২ আক্টোবর ই৲রাজি সেনাপ্তি বক্সরে অযোধ্যার ইসন্যের সহিত, যুদ্ধকরিয়া সম্পূর্ণৰূপে প্রাজয় করি-্নেন এই জয়ের পরে উজিরের সহিত যে ব্যবস্থা হইয়াছিল তাহা বাজালাক ইতিহাস মধ্যে বলা উচিত দহে কেবল এই মাত্র বলি যে তিনি মীরকস্সিমকে প্রথমতঃ আশ্রয় দিয়াছিলেন পরে তাঁহার ধন অপহরণ করিয়া তাঁহাকে পলায়ন করিতে অনুমতি দিলের কিন্তু নবাব পুনর্বার বাঙ্গালায় উপদ্রোহ করেন নাই 🔃

নীরজেফর দ্বিতীয়বার বাজালারাজ্যে স্থাপিত হইয়া দেখিলেন যে ইপরাজদিগের যে ধন দিতে স্থাকার করিয়াছেন তাহা কোনমতে হইতে পারে না তৎকালে তিনি অতি বৃদ্ধ ছিলেন এবং ক্রমেং রোগের বৃদ্ধি হওয়াতে ১৭৬৫ শালের জানুয়ারিমাসে চতুঃসপ্ততিবর্ষ নয়সে মুরসিদাবাদে প্রাণত্যাগ করিলেন তাঁহার পর-বর্ত্তি নবাব নির্ধারণ করা মহারাজের কর্ত্ব্য ছিল কিন্তু তিনি এমত শক্তিবিহীন ছিলেন যে স্কীয় রাজ- ধানীতে যাইবার উপায় ছিল না অভএব ইণরাজদি-গের যেৰপ স্বেচ্ছা হইল তাহাই করিলেন সভাপতিরা মণিবেগমের গর্ভজাত মীরজেফরের পুত্র নজমউদ্দৌলা-কে বহুধন লইয়া নবাব করিলেন তাঁহার সহিত তাঁহারা নূতন নিয়ম করিলেন সৈন্যদারা দেশরকা তাঁহাদের অধীন রহিল এবং দেশের ফৌজদারী ও দেওয়ানী বিচারাথে নবাবদারা এক নায়েব নাজিম নিযুক্ত করি-त्तन नरात् अ कर्त्या पूताचा नन्मकुमात्रक नियुक्त করিতে প্রার্থনা করিয়াছিলেন কিন্তু সভাপতিরা নিশ্চিত ৰূপে তাঁহাকে অম্বাকারকরিলেন ভাবি শাসনকর্ত্রা দিগের পাঠার্থে বন্শিটার্ট সাহেব তাঁহার দোষ বিল্ল-क्रगकर्भ निथित्नन व्यवस्थाय त्रानिवर्षित মহম্মদেরেজখাঁ তৎকর্মে নিযুক্ত হইলেন ॥

ठजूर्म अथग्रा ।

কোঁট্আবভিরেক্টরেরা ভারতবর্ষস্থিত ভৃত্যুদিগের দুরাচারদারা ঐ সকল উপদোহ অর্থাৎ মীরকৃষ্মিম ও উজিরের সহিত সংগ্রাম এবং পাটলার হত্যা শুনিয়া অত্যস্ত ভীত হইলেন তাঁহাদের
এইভয় ছিল যে তাঁহারা যে দেশ প্রাপ্ত হইয়াছেন তাহাও
লপ্ত হইতে পারে তাঁহারা বিবেচনা করিলেন যে ঐ
দেশ যে জন জয় করিয়াছেন তাঁহার ভলা আর কেহ
রক্ষা ক্রিতে পারিবেন না অত্থব ক্লাইবসাহেবকে

পুনর্কার যাত্রা করিয়া ভাঁহাদের কর্মের প্রতিকার করিতে প্রার্থনা করিলেন ক্রাইবসাহেব রাজাদারা তথায় মহিমাপ্রাপ্ত হইয়াছিলেন ও ই^লপ্তে গমনোভ্র ভিরেক্টরেরা তাঁহার উপযুক্ত মর্যাদা করেন নাই এবণ তাঁহার জাইগির কাডিয়ালইয়াছিলেন তথাপি তিনি ভারতবর্ষে আগমন স্থির করিলেন ভিনি সম্পূর্ণ শক্তির সহিত বাহ্বালার প্রধান সেনাপতিত্বকম্মে ও শাসন কত্ত্পদে নিযুক্ত হইলেন ডিরেক্টরেরা তাঁহাকে কছিলেন যে তাঁহাদের ভৃত্যবর্গের বাণিজ্যই দুঃখের কারণ হইয়াছে অতএব ভাহা রহিত.করিলেন। এক নবাবের পরে অপর নবাব স্থাপন করাতে অতীত অষ্টবর্ষের মধ্যে ভৃত্যবর্গেরা এতদেশীয়লোক হইতে দুইকোটী অপেক্ষা অধিক মুদ্রা উপায়ন পাইয়াছেন এ-ৰূপ উপায়ন নিবারণ করিতে কহিলেন তাঁহারা **অপর** আজ্ঞাকরিলেন যে যুদ্ধবিষয়ক বা বিচারীবিষয়ক স্কল ভূত্যেরা নিয়নিত থাকিবেন তাঁহারা চারি সহস্তের অধিক যে উপঢৌকন পাইবেন তাহাসরকারি ভাঙারে এবং কর্ত্তা সাহেবলোকদিগের অনুজ্ঞা পাঠাইবেন ব্যতিরেকে সৃহসুের অধিক মুক্রা উপহার লইতে পারি-'বেননা ।।

ক্লাইৰসাহেৰ এইসকল উপদেশ লইয়া ভারতবর্ষে যাত্রা ক্রিলেন তিনি ১৭৬৫ শালের ৩ নে কল্কিতায় অবতরণ করিয়া দেখিলেন যে সকল বিপত্তিদারা কোর্ট-আবডিরেক্টরেরা ভীত হইয়াছিলেন তাহরে নিশান্তি হইয়াছে কিন্তু রাজকীয় কর্ম নিয়মশূন্য হইয়াছে সভাপতিরা অবধি কোন ব্যক্তিই কোম্পানির মন্ত্রন দেখেন না সকল ভৃত্যদিগের ইচ্ছ। ছিল যে কোন উপায়-**দারা শী**যু ধন সঞ্চয় করিয়া ই^নণ্ডে যাইতে পারেন সকল অংশেই অবিচার হুইতেছিল এতদেশীয় প্রজা-দিগের প্রতি এমত দৌরাস্ব্য হইতে ছিল যে ইউ-রোপীয়নামে ঘৃণাজন্মাইল রাজসভায় শিষ্টতা বা मर्यामा किहु हे हिल ना काष्ठेव्याविष्ट दिक्ष गेउवर সরে আক্রা পাঠাইয়াছিলেন যে তাঁহাদের ভৃত্যেরা উপায়নগুহণ নাকরেন কিন্তু ঐ আক্রা প্রাপ্তিকালে প্রাচীন নবাব মীরজেকর মরণ শয্যায় থাকাতে সভা-পতিরা ঐ আজ্ঞ। বহিতে না লিখিয়া নবাবের মর ণোভর নুতন নবাব করিয়া তাঁহা ছইতে অসপথ্যক ঊপাপয়ন লইলেন এব৲ ঐ পত্রে ডিরেক্টরেরা লিখিয়া∽ ছিলেন যে তাঁহাদের ভূত্যেরা নিজ২ বাণিজ্য ত্যাগ করিবেন কিন্তু ঐ আজ্ঞার পরেই সভাপতিরা নুতন নবাবের সহিত ব্যবস্থা করিলেন যে তাঁহারা বিনাগুলু পূর্ববৎ বাণিজ্য করিবেন । ক্লাইবসাহেব আগমন মাত্রে ভিরেক্ট্রদিগের আজাচালাইতে প্রতিজ্ঞা ক্রিলেন সভাপতিরা বন্শিটাট সাহেবকে খেকপো

দমনে রাখিয়াছিলেন তাঁহাকে সেইনপে রাখিতে চেষ্টা করিলেন কিন্তু ক্লাইবের ঐ মহাশয় অপেকা অধিক সামর্থ্য ছিল তিনি তাঁহাদের উপঢৌকন নাল-ইয়া নিয়মিত থাকিতে স্থাক্ষর করিতে অনুরোধ করিলেন যেসকল ব্যক্তিরা তাহা অস্থীকার করিলেন তিনি তাঁহাদের তৎক্ষণাৎ পদচুত করিলেন কেহ্২ তাহাতে স্থাক্ষর করিলেন এবং যাঁহারা বুঝিলেন যে এদেশ হইতে অধিক ধন পাইয়াছেন তাঁহারা গৃহসমন করিলেন কিন্তু সকলেই তাঁহার বিপক্ষ হইলেন 11

২৪জুন ক্লাইব কলিকাতাহইতে পশ্চিম দেশে যাইয়া সন্ধি করিতে স্থির করিলেন কারণ যুদ্ধদারা সমুদায় রাজস্ব নষ্ট হইতেছিল নজুমউদৌলার সহিত নূতন নিয়মপত্র করিয়া দেশের কর্ত্ব্য ইশ্রাজদি-গের অধীন করিলেন নবাবের ধর্মাধিকরণের ব্যয়ার্থে বার্ষিক পঞ্চাশত্লক ন্দু। দিতে নিয়ম করিলেন এব**ণ** ঐধন নহম্মদ রেজাখাঁ রাজা দুর্লভরাম ও জগত্সেট**ি** এই কয়েকলোকের পরামশানুসারে বায় ক্রিতে ব্যবস্থা করিলেন পরে অযোধ্যার নবাবের সহিত্ সন্ধি হইল কিন্তু তাঁহার যাত্রার অতি প্রধান ফল এই ·ছিল যে কোম্পানিতে মহারাজহইতে তিনদেশের[°] (म ७ शानी भारेतन आगते। भृत्य वितशि हि (य रे॰ ता-জের ব্যথন প্রার্থনা করিবেন তিনি তখনি ঐপদ দিবেন

এৰপ স্বীকার করিয়াছিলেন ক্লাইব সাহেব প্রয়াগে তাঁহার সহিত নাক্ষাৎ করিয়াঐ প্রতিজ্ঞাপূর্ণ করিতে প্রার্থনা করিলেন তিনিও নিঃসন্দেহে তাহাকরিলেন ১২ আগষ্ট মহারাজ বান্ধালা বেহার ও উড়িস্যার দেও-য়ানী কোম্পানির নিমিত্তে ক্লাইবসাহেবকে দিলেন তিনিও মহারাজকে রাজস্বহইতে প্রতিমাসে দুই नक भूषा फिट्ट बीकांत कतिलन। अञ्चल हेश वना উচিত যে মহারাজ স্বরাজ্যে পলায়িত থাকাতে তাঁহার নিশ্চল সি[্]হাসন ছিল না দুইখান ইণরাজদিগের ভোজ্যাসনযোগ্য কাপ্তাসন বিচিত্রবন্তাচ্ছাদিত হইয়। তাঁহার সিপ্হাসন হইল মহারাজ ঐ আসনে বসিয়া দুইকোটী বার্ষিক রাজস্বসম্বেত তিন কোটী প্রজাদি-গকে ইণ্রাজদিগের অধীন করিলেন এবিষয়ে মুসল-শানইতিহাসলেখক কছেন যে অন্যসময়ে এৰপা আবশ্যককর্মে বিজ্ঞতম মন্ত্রী ও ক্ষমতাপন্নদূতদিগকে প্রেরণ করিতে হইত এবং নানাপ্রকার বাদানুবাদ হইত কিন্তু তৎকালে পশুপালবিক্ৰয় অপেক্ষা ঐ মূহৎ-কর্ম অপকালে হইল পলাশীর যুদ্ধের পরে ইণরাজ-দিগের এই ঘটনা অতি শুভদায়ক ছিল কারণ ঐ যুদ্ধের পরে তাঁহারা যথার্থ. দেশের কর্তা হইয়াছিলেন কিন্তু এতদেশীয় লোকেরা তাঁহাদের কেবল বিজয়ীবোধ কুরিতেন পরে মহারাজের এই প্রসাদদারা প্রজারা

তাঁহাদের যথার্থ দেশের স্বানী দেখিলেন এবং নুর-নিদাবাদের নবাব নিযুল হইলেন অনন্তর ক্লাইব সাহেব ৭ সেপ্টেম্বর কলিকাতায় প্রত্যাগমন করি-লেন।।

কোম্পানির ভৃত্যেরা নিজ২ বাণিজ্যে নিযুক্ত থাকা-তেনানাপ্রকার আপদ ঘটিয়াছিল অতএব কোর্ট আব-ডিরেক্টরেরা পুনঃ২ তাহা নিবারণের আজ্ঞা করিয়া-ছিলেন কিন্তু তাঁহাদের ভৃত্যেরা সর্বদা আজ্ঞাল খন করিতেন তাঁহাদের শেষউপদেশে প্রায় সন্দেহ ছিল না কিন্তু ক্লাইবসাহেব দেখিলেন যে দেওয়ানীবিষয়ের ব্যবস্থাক্স কোম্পানির ভৃত্যদিগের বেতন অতিঅপ অতএব অযথার্থ উপায়ব্যতিরেকে জ'নিক লভ্য হয় না একারণ তিনি বাণিজ্য ক্রমিক রাখিলেন কিন্তু,তাহার রীতি উত্তম করিলেন তিনি এক বাণিজ্যের সভাস্থাপন করিলেন তাহাদারা গুবাক তবাকু ও লবণ এইকয়েক দ্রনের ব্যণিলা চলিল ভাছাতে শতকরা ৩৫ টাকা মাসূল চেপেই তির ভাগুলে দিতে পাণ অবশিষ্ট লাগ্য যুদ্ধাথত ও জিন্মার্থক সকল ভূত্যভিত্তার বণ্টলকরিয়া দিতে বিরম্ করিলেন রাজসভাপতিদের অধিক অংশ ্হইল নীচপদস্থিতব্যক্তিদের অপথ হইল।ক্লাইব সাহেব ডিরেক্টরদিগকৈ এই কপ্না নিবেদনকালে লিখিলেন যে তাঁহারা শাসনকর্তার বেতনবৃদ্ধি করেন

তাহা হইলে তাঁহার বাণিজ্যের আবশাক্তা থাকে না কিন্ত এই উত্তম পরামশ পঞ্চদশবৎসরপর্যন্ত গাহ্য হয় নাই ৷ ডিরেক্টরেরা এই নুতন সভা শুনিয়া কটুবাক্যে নিন্দা করিয়া তাহার স্থাপনের নিমিত্তে ক্রাইবকেদোষী করিলেন এবং তাহা নিবারণের আদ্রা করিয়া সকল ভতাদিগের বাণিজ্য নিষেধ করি-লেন ৷৷

ভারতবর্ষে রাজকীয় কর্মের অধিকব্যয়দারা সমু-দায় রাজস্ব এপর্য্যন্ত নষ্ট হইয়াছিল কোম্পানির যদ্যপিও নামমাত্রে অধিক আয় ছিল তথাপি তাঁহা-দের সর্বদা ঋণ করিতে হইত তাঁহাদের ইউরোপীয় ও এতদেশীয় সকল ভূত্যের¦ নির্দ য় হইয়া লুট করিতেন ৷ যখন ইপলণ্ডে ক্লাইবের নিকটে জিজ্ঞাসা হইল যে এমত অধিক আয়সত্ত্বে কোম্পানি কিকারণ নির্ধন হইলেন তাহাতে তিনি, উত্তর করিলেন যেকোন ব্যক্তিকে হিসাব[ঁ] করিতে নির্ভর করা যায় তিনিই সঞ্চয় করেন কিন্তু কলতঃ সৈন্যদারা অধিক ব্যয় হুইত ই∾রাজি সৈনে৴রা যেপর্য্যস্ত নবাবের নামে যুদ্ধ করিত তিনি তাহাদের পারিতোষিকস্বৰূপে অধিক ধন দিতেন ঐ পরিতোষিকের নাখ ছিল দিগুণ বাটা সৈন্যেরা এমত অধিককালপর্য্যস্ত ঐপারিতোষিক পাইয়াছিল যে পরে চিরকালের ন্যায্য প্রাপ্ন্য বোধ করিল ক্লাইব

দেখিলেন যে সৈন্যদিগের ব্যয়লাক্তব নাস্ইলে কোন সতে রাজষু উদ্ভ হইবে না এবণ জানিতেন যে এ লাঘবের কপ্রনায় প্রচন্তনপে বাধা হইবে কিছ তিনি এনত দৃঢ়চিত্ত ছিলেন যে একেবারে দিগুণ বাটা রোধের আক্সাদিলেন ইহাতে সেনাপতিদের অতি-শয় অপকার হওয়াতে তাঁহারা কহিলেন যে তাঁহা-দের বাহুবলদারা দেশের জয় হইয়াছে অতএব তাঁহা-দের উপকার করা উচিত হয় কিন্তু তাহাতে ক্লাইবের মান্স কিরিল না তিনি তাঁহাদের বেতনবৃদ্ধি করিতে প্রস্তুত ছিলেন- তথাপি স্বৈনে/র ব্যয়লাঘৰ করিতে দৃঢ়প্রতিক্র হইলেন অনন্তর সেনাপতিরা তাঁহাকে আপনাদের ইচ্ছায় অধীন করিতে ষড়যন্ত্র করিলেন তাঁহারা গুপ্তভাবে পরস্পার সমাদ করিয়া একদিনে কর্ম পরিত্যাগ করিতে স্থির করিলেন ক্রাইব সাহেব প্রধানসেনাপতিদের কর্ম্ম পরিত্যাগ শুনিয়া অতি বিপদ্গুস্ত হইলেন সমুদায় দৈন্যদিগের ঐকমত্য সন্দেহ করিয়া নানাপ্রকার বিপত্তির সম্ভাবনা করিলেন তাঁহার বয়সে এমত কঠিন বিষয় কদাচ ঘটে নাই মহারাষ্ট্রীয়েরা পুনর্কার দেশ আক্রমণ করিতে উদ্যোগ .করিলেন এব॰ সৈনে রা অধিপতি শূন্য হইল কিন্তু ক্লাইব স্বভাবিক শক্তি প্রকাশ করিয়া মাদুাজ স্থিত সেনাগতিদিগের আসিতে আজ্ঞা করিলেন এবং

यमकन रेमनाभारकता जन। जन। विन्धि हिलम ना जाँशापत পूनर्वात किताहरनन अधानयज्य जन कातिपिशत পेपत्र जिल्ला जाँक किताहर नार्थ भाठाहरनन अहे कि ठेनवावशात्र नात्र रिमनापिशत भून-क्रांत जभीन कित्रा उत्राक्तात वहकानाविध विभए पृत्र कितरनन ॥

ক্লাইব সাহেব ভারতবর্ষে বি॰ শতি মাস থাকিয়া কোম্পানির কম্মের 'সুনিয়ম করিলেন রাজকীয়ব্যয়ের ভুাস করিলেন এব ও দেত্রয়ানী পাইয়া বর্ষেৎ পুায় पूरे कां हो मून्। आय़वृक्षि कतित्वन जिमि टेमना पिट्गत অতিভয়ানক বিদ্যোহ নিবারণ করিয়া সুশিক্ষিত করিলেন এই নানাপুকার পরিশুমদারা শরীর অপাটু হওয়াতে তাঁহাকে ইপলপ্তে যাইতে হইল বাঙ্গানায় পূথম আগমনাবধি দশ বৎসর পরে ১৭৬৭ শালের কিবুয়ারিমানে জাহাজে আরোহণ করিলেন ইহাও তাঁহাকে বলা যাইতে পারে যে এই দশবৎসরে তিনি ভারতবর্ষে ই পরাজদিগের সামাজ্যস্থাপন করিলেন পূর্ব্বেক্ত দোষ নিবারণকালে তাঁহার অনেকে বিপক্ষ হ্ইয়াছিলেন এব তাঁহাদের কেহ্ বত্ধন লইয়া ই লণ্ডে গমন করিয়া তথান্থিত ভারতবর্ষসম্পর্কীয় গৃহে শক্তিপুাপ্ত হইয়াছিলেন অতএব ক্লাইবের ই॰ লণ্ডে গমন হইলে তাঁহারা তাঁহাকে পার্লিয়ামেণ্টনামক

সভাতে ও ডিরেক্টরদিগের সভাতে কটুক্তিপূর্মক অপমান করিলেন তিনি সকলপক্ষহইতে অকৃতজ্ঞতা পুকাশ দেখিলেন অতএব সামাজ্য স্থাপন করিয়াও শত্রুদিগের হিংসাদারা ক্ষত বিক্ষত হইয়া ১৭৭৪ শালের ২২ নবম্বর অপঘাতমৃত্যতে প্রাণত্যাগ করিলেন ॥

ইণরাজেরা দেওয়ানী পাইয়াছিলেন অর্থাৎ বাহলা বেহার ও উড়িস্যার রাজস্ব আদায় করিতে অনুমতি পাইয়াছিলেন কিন্তু কিৰূপে কৰ্ম 'নিৰ্বাহ করিতে হয় তাহা জানিতেন না কোম্পানির ইউরোপীয় ভৃত্যেরা এপর্য্যস্ত সরকারি বা স্বকীয়,বাণিজ্যে নিযুক্ত ছিলেন তাঁহার। ভূমিজকরের বিষয়ে কিস্ইজানিতেননা পূর্জ-বর্ত্তি শুবাদারেরা ঐ কম্মের ভার ছিন্দুদিগের দিয়া-ছিলেন কারণ তাঁহারা ধীর ও হিসাবে পারগ ছিলে**ন** ই ্রাজেরা যে দেশ পুাপ্ত হইয়াছিলেন তাহাতে অন-ভিচ্চ ছিলেন বিশেষত তাঁহা্দের এতদেশীয় ত্তেরা তাঁহারা নাজানিতে পারেন এমত বিবিধ চেষ্টাকরিতেন অতএব তাঁহাদের সকলি পূর্ববৎ রাখিতে হইল রাজা শ্বেতাব রায় বেহারের দেওয়ান হইয়া পাটনায় রন্তিলেন মহম্মদ রেজাথাঁ বাজালার দেওয়ান হইয়া ম্রসিদা-বাদে রহিলেন এইৰূপে ১৭৭২ শা নপর্য্যস্ত পুায় সপ্তবৎ-সর রাজ্য চলিল পরে ই^রাজেরা স্বহস্তে নির্বাহ করিতে আরম্ভকরিলেন ঐ কালের মধ্যে দেশ প্রায় অরাজক

ইইয়াছিল জমিদীরেরা ও পুজারা কোনজনের অধীন থাকিবেন তাহা জানিতে পারেন নাই। নবাবের ও তাহার মন্ত্রিদিগের হস্তে বিচারের ভার নামনাত্রছিল কিন্তু ইপরাজেরা সর্ক্তর এমত পরাক্রান্ত ছিলেন যে এদেশীয় আমলারা তাহাদের দমন করিতে পারিতেন না এদেশ পার্লিয়ামেণ্টের, আজ্ঞানুসারে কলিকাতান্থিত বড় সাহেবের এমত ক্ষমতা ছিল না যে মহারাষ্ট্রীয়থালের বহিঃ স্থিত দোষীব্যক্তির দপ্ত করেন অতএব ইপরাজদিগের দেওয়ানীপ্রাপ্তির পরে সপ্তবৎ-সরপর্যান্ত দেশের গোলযোগ ও দুঃখের অবধি ছিল না।।

রাজত্বের অনিয়নদারা তক্ষরদিগের সাহসবৃদ্ধি ইওয়াতে সকলজিলায় ডাকায়িতের দল হইল তাহাতে কোন ব্যক্তির বিষয়ের রক্ষাছিল না ডাকায়িতী এমত চলিত ইইল যে ১৭৭২ শালে স্বহস্তে রাজকর্ম লইবার কালে কোম্পানিকে কঠিন ব্যবস্থা করিতে হইল তাঁহা-রা আজ্ঞা করিলেন যে ডাকায়িতলোককে ধরিয়া তাহার নিজপুনে ফাঁসিদিবেন তাহাতে তাহার পরিবারলোক দেশের দাসস্বৰূপে থাকিবে এবং ঐ গুনুনের প্রত্যেক লোকের অপরাধানুসারে অর্থদন্ত করিবেন !৷

ঐ অরাজক কালেই প্রায় অনেক নিকর দূসি হয় মহারাজদারা বাহ্যালার রাজস্বের ভার ইণরাজদিনের

निकरि माञ्ज श्हेला जाशांत्र व्यापांत्र कलिकाजांत्र मा-় হইয়া মুর্সিদাবাদে হইত এবং ভাণ্ডারও তথায় ছিল ताकविविद्यस निष्णि व महत्रमदत्रकार्थं। ताकापूर्वञ রান এবণ অতিখ্যাত গৃহাগোবিন্দ সিণহের ভ্রাতা রা**জা** কান্তদি^হএই তিন বাঙ্গালিদারা হইত তাঁহারা সমু-দায় নিয়ম ক্রিতেন এব ্ কর আদায়ু ও প্রেরণ করিতেন কেবল তাঁহাদের অমনোযোগদারা রাজস্বের প্রধানআ-দায় কারকমাত্র ছিলেন যে জসিদারেরা তাঁহারা প্রায় চত্বারি শৎলক বিগাভূমি ব্রাহ্মণদিগকে নিষ্ণর করিয়া দিয়াছিলেন ইপরাজদিগের দৃষ্ঠিপাতের পূর্ব্বে এইরপে রাজতের ত্রিপশৎ বা চত্বারিপশৎলক্ষ্ বার্ষিক কর নষ্ট হইয়াছিল এইকপ জমিদারদিগের সরকারিধনের অপহরণদারা এবণ মুরসিদাবাদের ভাণ্ডারস্থিত আমলাদিগের চৌর্যালারা দুইকোটী মুদ্রা বার্ষিক কর থাকিলেও ভারতবর্ষস্থিত ই রাজদিগের রাজতের খন কিছুই ছিল না প্রত্যুত ঋণ হইয়াঙিল ॥

ভূত্যদিগের লবণ ও অন্যান্য দ্রব্যের বাণিজ্য নিবারণার্থে কোটআবডিরেক্টরদিগের শেষআছ্মপ্রাপ্তির
দ্বিতীয়বৎসরে অর্থাৎ ১৭৬৭ শালে ক্লাইব সাহেবের পরিবর্ত্তে বরিলম্ভ বাঙ্গালার বর্ডসাহেব হইলেন ডিরেক্টরেরা আজ্ঞা করিয়াছিলেন যে দেশীয় বাণিজ্য সম্পূর্ণদ্বপ্রে দেশীয় লোকেরা করিবেন ভাহাতে কোন ইউ-

রোপীয় লোকেরা নিযুক্ত থাকিবেন না কিন্তু তাঁছাদের ভূত্যদিগের বেতন অপ্প থাকাতে তাঁহারা ভূমিজরাজস্ব-হইতে শতকরা সার্দ্ধ দুইমুদ্রা যুদ্ধার্থক ও বিচারার্থক সমুদায়ভৃত/দিগের উচিতমতে বণ্টন করিয়া দিতে আছা করিয়াছিলেন কিন্তু ক্লাইবসাহেবের যাত্রার পরে কোম্পানির কৃর্মে পুনর্বার অনিয়ম হইল ভারত-**বর্ষে সরকারি আয় অধিক হইলেও ব্য**য় ততোধিক হ**ইল** ভাপ্তারের শূন্যতায় পুতিদিন ভয়বৃদ্ধি হইতে লা-গিল ১৭৯৯ শালের আক্টোবরমাসে কলিকাভায় বড়-সাহেব হিসাবদারা দেখিলেন যে অধিক ঋণ হইয়াছে **এব° আরো অধিক ঋণকরণের আবশ**্যকতা হুই-য়াছে ভাণ্ডারপুরণের উপায় এইমাত্র ছিল যে কোম্পা-নির ভৃত্যেরা যে ধন উপার্জিত করিতেন তা**হা** বড়সাভেব কোষে লইয়া লগুনে কোটআবডিরেক্টর-হইতে দিতে আক্ষা পাঠাইতেন ডিরেক্টরদিগের ঐ সকলহণ্ডীর টাকা দিতে অন্য কোন উপায় ছিল না কেবল ভারতবর্ষহইতে যেসকল দ্রব্য প্রেরিত হইত তাহা বিক্রয় করিয়া দিতেন পরে কলিকাতাস্থিত বড়-সাহেব ও প্রধান সভা এইৰূপে অধিক ঋণ করিতে লাগিলেন কিন্তু স্বদেশে অতি ,অপ্পদ্রব্য প্রেরণ করি-তেন অতএব ডিরেক্টরেরা হুগুরি টাকা দিতে অস-মূর্থ হইয়া কলিকাভার বড়সাহেবের পুতি আজ্ঞা করি-

লেন যে তিনি তক্ৰপ হণ্ডী নাপাঠাইয়া এক্ৰৎসৱের নিমিত্তে কলিকাতায় ঋণ করিবেন তাহাতে তাঁহাদের ভূত্যেরা ফ্রাসি ওলন্দাজ ও দিনামারদিগদারা ইউ-রোপে নিজ২ ধন পাঠাইতে আরম্ভ করিলেন অর্থাৎ চন্দুনগর চুচুড়া ও গ্রীরামপুরের ভাগুারে ধন দিয়া ইউ-রোপের অন্যান্য কোম্পানিহইতে প্রাপ্তির আক্রা লইতেন তাঁহারা ঐ ধনদারা দুব্য ক্রয় করিয়া পাঠাই-তেন ঐ দ্রব্য প্রায় হুণ্ডীর দানযোগ্যসময়ের, পূর্ব্বে ইউ-রোপে নিয়া বিক্রীত হইত এইকপে ভিন্নদেশীয়দিনের বাণিজ্যার্থে ধনাভাব ছিলনা কিন্তু ইপরাজিকোম্পা-নির অতিশয় দুরবস্থা হইল পরে ডিরেক্টরদিগের নিযেধ থাকিলেও কলিকাতাস্থিত রাজসভাকে ১৭৬৯ শালে খত লিখিয়া ঋণ করিতে হইল এব^ ইগলপ্তে হুণ্ডী পাঠাইতে হুইল তাহাতে লণ্ডনে কোম্পানির কর্মের শেষ হইল।।

১৭৬৫ শালে জেফরখার পরিবর্ত্তে নজুমউদ্দৌলা নাজিয় হইয়া পরবৎসরে মরিলেন পরে সেকউ-দৌলা তৎপদে স্থাপিত হইয়া ১৭৭০ শালে বসন্তরোগে মরিলেন তাঁহার ভ্রাতা মকারিক্উদ্দৌলা তৎপদে অভিযিক্ত হইলেন কলিকাতাস্থিত স্ভাদারা তাঁহার পূর্মবৃত্তি নবাবদিগের রাজসভার রায়ার্থে যে ধন নিদিষ্ট ছিল তাঁহাকেও তাহাই দিতে স্বীকার হইল কিন্তু ডিরেক্টরেরা তাহার হাস করিয়াবৎসরে যোড়শ লক সুদা দিতে আতা করিলেন ॥

ৰাজালার ইতিহাসনবেঃ ১৭৭০ শাল অতিদুর্ভিক নিমিত্তে চিরস্মরণীয় আছে ঐ দুর্ভিক্ষদারা বাহ্বালা-দেশ প্রায় ননুযাপুনা হইয়াছিল দরিদুলোকের যে দুঃখ হইয়াছিল 'তাহার বর্ণনা করা মনুষ্যসাধ্য নছে **ই**হাতে তৃতীয়া^শ_্মনুষ্য নষ্ট হইয়াছিল এ**ই উক্তি**-দ্বারা পাঠকবর্গ বিবেচনা করিবেন। ঐ বৎসরে ডিরে-ক্টরেরা মুরসিদাবাদে ও পাটনায় রাজস্বজন্যএক২ সভা স্থাপন করিবেন এব আজা করিলেন যে তাহাতে ই∾রাজদিগের সভা ভূতোরা নিযুক্ত থাকিয়ারাজ্ব-বিষয়ে অনুসন্ধান করিবেন এবং বিধিমতে কার্য্য নিৰ্বাহ হয় কি না তাহা দেখিবেন কিন্তু তথাপি রাজ-ষের নির্বাহ এতদ্দেশীয়লোকের হত্তে রহিল মহক্ষদ রেজার্থ। মুরসিদাবাদে রহিলেন এব॰ রাজা শ্বেতাবরায় পাটনায় রহিলেন ভূমিবিষয়ের যে কোনকাগজপত্র সকলেই তাঁহাদের মুদাচিত্র ছিল।।

বরিলষ্ট সাহেব ১৭৬৯ শালে এদেশের কর্ভ্রকর্ম পরিত্যাগ করাতে কার্টর সাহেব তৎপদ পাইলেন কিন্তু কলিকা তান্থিত রাজসভার ক্ষীণতাপ্রযুক্ত কোম্পা-নির সর্বনাশ হইবার উদ্যোগ হইল অতএব কলি-কাতার পূর্ববিভ্রাহেব বৃন্শিটাই স্ক্রাফ্টন্ ও কর্ণেল কর্দ এই কয়েক সাহেবকে দোষোদ্ধার করিয়া ব্যয়লাস্বার্থ পাঠাইতে স্থির হইল কিন্তু তাঁহার। ভারতবর্ষে
কদাচ আসিতে পারিলেন না তাঁহারা যে জাহাজে
আরোহণ করিলেন তাহা অন্তরীপ উত্তীর্ণ হইলে পরে
কি হইল তাহার সমাদ পাওয়া যায় না বোধ হয়
তৎস্থিতলোকের সহিত সমৃদুমধ্যে মারাপড়িয়াছে।

গ পঞ্চদশ অধ্যায় ।।

১৭৭২ শালে কার্টর সাহেব অধ্যক্ষতা পরিত্যাগ-করিলে ওয়ারেন হণ্টি স সাহেব তৎকন্ম পাইলেন ভারতবর্ষে কোঁম্পানির নিযুক্ত যে সকৰ সনুষ্য ছিলেন ওাঁহাদের সকল অপেকা তিনি অতি পুধান ছিলেন তিনি ১৭৪৯ শালে অষ্টাদশবর্ষবয়সে সভ্যক্ষে আসিয়া অতিপরিশ্রমপূর্ব্বক এতদেশীয় রাজনীতি ও ভাষা শিক্ষা করিতে আরম্ভ করিয়াছিলেন ১৭৫৭ শালে তাঁহার বয়স ষড্বি শতিবর্ষ মাত্র থাকিলেও ক্লাইব তাঁহাকে মুরসিদাবাদের দরবারে রাখিয়াছিলেন ঐ কন্ম তৎকালে অতি প্রধান ও কেবল বড়সাহেবের নীচে ছিল বন্শিটাট সাহেব যখন কলিকাতায় সর্কো-পরি হইলেন তখন তাঁহার কেবল হস্তি^সসাহেবের • পুতি বিশ্বাস ছিল ১৭৬১ শালের ডিসেম্বরমাসে হর্ন্তি ১স সাহেব কলিকাতার সভায় আসিলেন এব॰ বন্শিটাট দাহেবের মতে কেবল তাঁহার মত ছিল নত্তবা স্কল

সভাপতিদের মত বিপারীত ছিল সকলে যেৰূপ চৌৰ্য্য করিতেন তিনি সেৰপ ছিলেন না তাঁহার সহচরেরা এক নবাব রহিত করিয়া অপর নবাব স্থাপনদারা বিপুল **খন সঞ্চয় করিলেন কিন্তু তিনি কদাচিৎ কিঞ্চিৎ লই-**য়াছেন এ্মত সন্দেহও হয়নাই তিনি ১৭৬৫ শালে তাঁহার বন্দ্র বন্শিটার্ট সাহেবের সহিত যখন গৃহগমন করিলেন তথন এমত নিঃস্ব ছিলেন যে ভিন্নদেশীয়লে ক-হুইতে অপ্রথম ঋণ করিতে হুইল তাঁহার অধীন থো-জাপেট্রুস তাহাও তাঁহাকে দিলেন না। ১৭৭০ শালে তিনি মাদ্রাজস্থিত সভায় দিতীয় অধিপতি হইয়। আসিলেন এব ্ তথায় এমত উত্তমরীতি করিলেন যে ডিরেক্টরেরা তাঁহাকে অতিশয় ধন্যবাদ দিলেন এবং যখন কলিকাতায় বড়সাহেবের কন্ম খালি হইল তখন তাঁহারা বুঝিলেন যে হণ্ডি প্স সাহেবহইতে তৎকমে অধিক উপযুক্ত কেহই নাই অতএব তিনি চত্বারিণ শৎ-বর্ষবয়সে বাঙ্কালার বড়সাহেব হইলেন ৷৷

এতদেশীয় লোকদারা ভূমিজকরের নিষ্পত্তিকরায় ডিরেকটরেরা ঘৃণা করিলেন এবং ক্রমে২ আয় ছুাসদেখিয়া দেওয়ানী পুাপ্তির সপ্তবৎসর পরে যথার্থ দেওয়ান হইতে স্থিরকরিলেন অর্থাৎ ইউরোপীয় ভূত্য দারা রাজস্ব আদয় ও তাহার নিষ্পত্তি স্বহস্তে করিতে আরম্ভকরিলেন এই নূতন নিয়ম সকল হস্তিণস সাহেব

নিষ্পন্ন করেন তিনি ১৩ আপ্রিল বড়সাহেব হইয়া ১৪ , মে সভাহইতে আজ্ঞাকরিলেন যে রাজস্বের কন্ম তাঁ হারা স্বয়ণ চালাইবেন ইউরোপীয় যে সকল আম-লারা রাজ্য আদায় করেন তাঁহাদের নাম কালেক্টর থাকিবে এবং কিয়দ্বর্যের নিমিত্তে ভূমি ইজারা দেওযা যাইবে পরে আজা হইল যে চারিজন সভাপতি এক সম্পূদায় হইয়া দেশের সর্বত্ত গুমন করিয়া সমুদায় নিষ্পত্তি করিবেন. ঐ সম্পুদায়ে কৃষ্টনগরে বিস্তর পরি-শ্রমকরিতে আরম্ভকরিলেন কিন্তু ভূমির কর এমত অপ্পদিতে লোকে স্বীকার করিল যে ভাঁহারা নিলাম করিয়া বৃদ্ধি করিতে স্থির করিলেন যদি প্রাচীন জনি-দার অথবা তাল্কদারেরা **উপ**যুক্ত **ধন দিতে স্বীকার** করিতেন তবে ভাঁহাদের পূর্ববৎ **অধিকারে রাশ্মিতেন** নত্তবা তাঁহাদের কিঞ্চিমাত বৃত্তিদিয়া তৎপদে লোকা-স্তর স্থাপন করিতেন এব ১০ তৎকালে মুরসিদাবাদ-হইতে কলিকাতায় ভাগুার আনীত হইল কারণ তাহাতে বড়সাহেবের দৃষ্টি থাকিবে এবং এই সকল পরির্ভদারা দেশের দেওয়ানী ও ফৌজদারীকর্মের পরি-বৰ্ত্ত আবিশ্যক হইল প্ৰতিজিলায় দুই২ আদালত ञ्चाशिज रहेन को जमाती विषय का कि उ मूक रित সহিত কালেক্টর সাহেব বিবেচনা করিতেন এবং দেওয়ানী বিষয়ে দেওয়ান ও অন্যান্য আমলার সহিত ঐ কালেক্টর বিচার করিতেন অপর ঐ সময়ে পুনর্বিচারার্থে সদর দেওয়ানী ও সদর নিজামত আদালত
কলিকাতায় স্থাপিত হইল সদর দেওয়ানীতে দেওয়ানীবিষয়ের ও সদরনিজামতে ফৌজদারীবিষয়ের পুনবিচায় আরম্ভ হয় ইহার পূর্ফো বিচায়্রবস্তর তুরীয়ভাগ আদালতে বিচারকর্তা লইতেন তাহা তদবিধি
রহিত হইল ও গুরুতর ধনদপ্ত রহিত হইল এবং উত্তমর্ণ
স্বেচ্ছা ক্রমে অধমর্গকে আসেধকরিতেন তাহা রহিত
হইল প্রতি পর্গনাস্থিত মপ্তলের প্রতি দশটাকা পর্যান্ত
অভিযোগের নিভ্র হইল ইংরাজদিগের স্বমতানুসারে
বাঙ্গালায় রাজত্বের এই প্রথমউদ্যম হইল ॥

ডিরেক্টরেরা কহিয়াছিলেন যে মহম্মদ রেজার্থার
দুরাচারদারা বাঙ্গালায় রাজস্বের হানিহইয়াছে তাঁহার
পদপ্রপ্তি অবধি তাঁহারা তাঁহার প্রতি সন্দেহ করিতেন কারণ তিনি যথন মীরজেকরআলির নায়েব
হইয়া ঢাকা অঞ্চলে ছিলেন তথন সেখানে কিয়ৎ লক্ষ
মুদ্রার ন্যুনতা হইয়াছিল তাহা তাঁহাদের স্মরণছিল এব ১
১৭৭০ শালের মহাদুর্ভিক্ষকালে নিজলাভার্থে চাউলের
একচেটিয়া করিয়াছিলেন একারণ কেহ্ তাঁহার প্রতি
অভিযোগ করিয়াছিল অতএব সন্দেহ হইল যে তিনি
রাজস্বহরণ ও প্রজাপীড়ন করিয়াছেন। মুরসিদাবাদে
তাঁহার পদ সর্বোপরি ছিল তিনি নায়েব শুবাদার

স্বৰূপে রাজস্বের সমুদায় বিলি করিতেন এবং নায়েক মাজিমস্বৰূপে দেশরক্ষার ভার তাঁহারি ছিল ভিরেক্-টরেরা জানিতেন যে তাঁহার এৰূপ পদসত্তে কোন জন তাঁহার দোষোদ্ঘাটন করিতে সমর্থ হইবেনা অতএব ভাঁহাকে সপরিবারে আটক করিয়া কলিকাতায় রাখি-তে ও সমুদায় তাঁহার কাগজ পত্র আটক করিতৈ আহ্বা পাঠাইলেন হঠিৎস সাহেব দশদিনমাত্র সভান্থিত হইয়া রাত্রিশেষে ঐ আজ্ঞাপীইয়াপরদিন প্রাতঃ-कात्व मूत्रिमिनिष्ठि गिष्ठिन्छेन्मार्ट्रतं निथि-লেন যে তিনি সহস্মদরেজাশ্বাঁকে কলিকাতায় পাঠাই-বে্ম মিজিল্টন্ সাহেব তাঁহাকে সপরিবারে নৌকায় আরোপণ করিয়া তৎপদে, প্রতিনিধি রহিলেন রেজা-খাঁ চিতপুরে আনিলে এইরপ ব্যবহারের কারণ জানা-ইতে একজন সভাপতি প্রেরিত হুইলেন এব° হুষ্ঠি°\স সাহেব তাঁহাকে লিখিলেন য়ে তিনি ডিরেক্টর্দিগের ভৃত্য আছেন একারণ তাঁহাদের আজ্ঞা মানিতে হইল কিন্তু বিরলে ভাঁছার মঙ্গলের চেষ্টা করিবেন।।

বেহারের নায়েব দেওয়ান শ্বেতাবরায়ের প্রতি ঐবপ সন্দেহ থাকাতে তিনি কলিকাতায় আনীত হুইলেন তাঁহার বিচারের শাঘু শেষ হুইল তাহাতে তাঁহার কোন দোষের প্রমাণ হুইল না সূত্রাণ তিনি বস্তুমপূর্বক বিদার হুইলেন তৎকালের মুসলমান ইতিহাসলেখকে তাঁহার বিচারের বিস্তর পুশৎসা क्रिय़ा कंट्न (य ब्यनान) ५० एम्भीय मुर्व नाजित्र नाग्र अथीनलाकरहेरा वल्पूर्सक धनगुरुन कतिराजन তাঁহাকে অপরাধীস্বৰূপে আন্মতে যে অপরাধ হইয়া-ছিল তাহার মাৰ্জ্জনার্থে সভাপতির। তাঁহাকে সমুম জনক পরিচ্ছদ দিয়া বেহারের রায়রয়ান করিলেন কিন্তু তাঁহার যে অপমান হইয়াছিল তাহাতে অতিশর মানসিক ব্যথা পাইয়াছিলেন ই৽রাজদিগের যেসকল এতদেশীয় ভৃত্য ছিল তাহার সকল অপেক্ষা শ্বেতাবরায় অধিক মান্য ছিলেন অতথৰ তাঁহার মানসে রাজত্ব-চু্রতি কলিকাতায় প্রেরণ ও সম্ভাবিতদোষের বিচার সহু হইল না তিনি পাটনায় পুত্যাগমনের পরে **অ**তি-ক্ষীণ ছুইয়া লোকান্তরগমন করিলেন তাঁহার পুত্র কলি-ম্বান্সিশ্ছ অবিলম্বে তৎপদে স্থাপিত হইলেন পাট-নায় যে অতি সুখ্যাত আজুর ফল হয় তাহার আদি কারণ শ্বেতাবরায় ছিলেন তিনি পুথনে তথায় ঐ আ-ব্দুরের ও খরমুজের চাসকরেন।।

নহম্মদরেজাখার বিচার হইতে অধিক বিলম্ব হইল ঐ কলঙ্কিত নন্দকুমার তাঁহার দোষ দেখাইতে পুবৃত্ত হইলেন তিনি সর্ব্যপুকারদোষে দোষী ছিলেন একারণ পুথমতঃ বোধ হইয়াছিল যে তাঁহার দোষ সপ্রমাণ হইবে কিন্তু দুই বৎসম্পর্যান্ত অনেকঅনুসন্ধানের পরে

ভিনি নির্দোষ হুইলেন তথাপি রাজকীয় কর্ম পুনঃ , প্রাপ্ত **হইলেন না** মুরসিদাবাদহইতে তাঁহার স্থানাস্তর করণের পরে তাঁহার নিজামতের কম্ম নানা অংশে বিভক্ত হইল নবাবের শিক্ষারভার মণিবেগমের রহিল এব তাঁহার ধনব্যয়ের ভার হস্তি সাহেব নন্দকুমারের পুত্র গুরুদাসকে দিলেন,তাহাতে অনেক সভাপতিরা বিস্তর আপত্তি করিলেন তাঁহারা কহি-লেন যে গুৰুদাস অতিবালক অতথৰ তাঁহাকে নিযুক্ত করিলে ই রাজদিপের অবিশাসী তাঁহার পিতাকেই নিযুক্ত করা হয় ছঙি প্র সাহেব তাঁহাদ্রে পরামর্শনা শুনিয়া ঐ পরিবারে অনুগুহু করিয়া ঐ কর্ম দিলেন ৷৷ অতঃপর ইপলপ্তে কে ম্পোনির কম্ম শেষ ছইল ১৭৬৭ শালে ক্লাইবসাহেবের গমনাবিধি ১৭৭২ শালে হৃষ্টি সসাহেবের নিয়োগপর্যান্ত পঞ্চবৎসর ভারতবর্ষে যেৰপ সুব্যবস্থা , ছিল না ই॰ লণ্ডে ভিরেক-টর্দিগের ব্যবহার ততোধিক ছিল কোম্পানি প্রায় নির্দ্ধন প্রমত সময়ে ভাগিদিগকে শতকরা সার্দ্ দাদশনুদা ভাগ দিতে স্থির হইল যদি উত্তৰ্জপো তাঁহাদের কর্ম চলিত তবে উহা কদাচ ন্যায্য হুইত ়না এইৰপ নিবৈধির কর্ম করিয়া ডিরেক্টরের। পশ্চাৎ ভাণ্ডার শূন্য দেখিলেন অতএব তাঁহাদের ইৎলণ্ডের

ৰণিগাপণহইতে প্রথ্মে চন্ধারিণশৎলক

বি°শতিলক্ষমুদ্রা ঋণ করিতে হইল এব° অব-শেষে থত লিখিয়া কোটীমুদ্রা ঋণ করিতে রাজম-দ্রির নিকটে যাইতে হইল ।।

কোম্পানির এইৰপ দুরাবস্থাব্যক্ত হইলে পালিয়া-মেণ্টসভাপতিরা তাহাতে হস্তক্ষেপ করিতে নিশ্চয় করিলেন ভাঁহারা প্লপর্যান্ত ভারতবর্ষীয় ব্যাপারে মনো-যোগ করেন নাই কোম্পানির রাজহুদারা যেসকল দোষ উৎপন্ন হইয়াছিল তাহার পরীকার্থে এক সনাজ স্থাপিত হইল ওঁংহাদের সম্বাদদার। সভাপতিরা বুঝি-লেন যে স্বনূলে পরিবর্ত্ত না করিলে কোম্পানির রকা। কোনমতে নাই পার্লিয়ানেণ্টে ঐ দোষ শুধরিবার নানাপুকার পুস্তাব হইল ডিরেক্টরেরা ঐ প্রস্তাব সর্ক শক্তিতে নিবারণ করিলেন কিন্তু ওাঁহাদের কুব্যবহার এমত স্পষ্ট ছিল এবং সকললোকে তাহাতে এমত বিরক্ত' ছিলেন যে তাঁহাদের বাধা নাশুনিয়া পালিয়া-মেণ্টে ঐ প্রস্তাব গ্রাহ্য করিলেন অতএব ভারতবর্ষীয় রাজ্যের সমুদায় রীতি দেশে বিদেশে পরিবৃত্তিত হইল নূতন ডিরেক্টর করিবার রীতি কিঞ্চিৎ পরি-বৰ্ত্তিত হইল তাহাদার৷ ইণ্লণ্ডের অনেক দোষ নিবা-রণ হইল এব॰ বর্ষেহ ছয় জন ডিব্রেক্টরদিগকে. বিদায় করিয়া তৎপদে অপর ছয় জন নিযুক্ত করিতে

ভারতবর্ষের বড়সাহেব করিয়া রাজকীয়ব্যাপারে অন্যান্য রাজ্য তাঁহার অধীন রাখিতে আজ্ঞা হইল অপর বড়সাহেব ও অন্য সভাসদ্দিগের মধ্যে যে পরস্পর প্রাধান্যের বিবাদ হইত তাহাতে বড়সাহেবকে সর্বপ্রধান ও কলিকাতারাজ্যের আক্রাদায়ক করাতে তাহার নিপাত্তি হইল বড়সাহেব, অন্য সভাসদ ও অপরবিচারকর্ত্তাদিগের বাণিজ্যকরিতে নিষেধ করিয়া বার্ষিক বেতন বড়সাছেবের সাঁর্দ্রলক ও অপর সভাসদদিগের প্রত্যেকে অশীতি সহসু মুদ্রা নির্ধারিত হুইল অপর · নিয়ম হুইল যে কেম্পোনির অথবা ইপলগুরাজের কর্মকারী কোনজন উপায়ন লইতে পারিবেন নাএব ও ভারতবৃষীয় রাজত্বের যেকোন কগেজ পত্র যাইবেতাহা রাজমন্ত্রিবর্গের নিকটে পাঠাইতে ডিরেক্টরদিগের প্রতি আজ্ঞা হইল।।

পরে বিচারার্থে কলিকাতায় এই বড়জাদালত স্থাপিত হইল উহাতে জ্বশীতি সহসু মুদ্রা বার্ষিক বেতনে একপ্রধান বিচারকর্ত্তা ও প্রত্যেকে ষষ্টি সহসু মুদ্রা বেতনে তিনজন ক্ষুদ্র বিচারকর্ত্তা নিযুক্ত হই-লেন এবং এই নিয়ম হইল যে তাঁহারা কোম্পানির জ্বণিন থাকিবেন না ও মাজা স্বয়ং তাঁহাদের নিযোগ করিবেন এবং তাঁহারা কেবল ব্রিটনদেশীয় প্রজাদি-গের তদ্দেশীয় নিয়নানুসারে বিচার করিবেন পার্লি-

য়ামেণ্টদারা এই যেসকল ভারতবর্ষের নিয়ম হইল
১৭৭৪ শালের ১ আগস্টঅবধি তাহার ব্যবহার হইবে ॥
এই ব্যবস্থা সমাপন হইলে বাজালার বড়সাহেবের
সমুদায় ভারতবর্ষে মনোযোগ হইল কিন্তু আমরা
বাজালাদেশের সংক্ষেপ ইতিহাস লিখিতে প্রবৃত্ত হইয়া
প্রায় ঐ রাজ্যের রিবরণ করিব অতএব বড়সাহেবের
আজ্ঞামুসারে ক্রমে২ হিন্দুস্থানের নানাস্থানে যেসকল

জয় হয় তাহার জ্ঞানার্থে পাঠকবর্গ ভারতবর্ষীয় ইতি-হাস দৃষ্ঠি করিবেন ॥

হণ্ডি প্সসাহেব এমত ক্ষমতাপূর্ত্তক বাঙ্গালার কর্ম নিষ্পন করিয়াছিলেন যে প্রথমত তিনিই সমুদায় ভারতবর্ষের বড়সাহেব হইলেন ইপলপ্তে তাঁহার বৃদ্ধি ও কর্মের সুসিন্ধি বিদিত থাকিলেও যেসকল লোকে-রা এদেশের কিছুই জানিতেন না তাঁহারাও অধনচরিত্র বলিয়া ওাঁহার হিশ্সা করিতেন কলিকাতার পুধান সভায় বার্ওয়েল সাহেৰ কর্ণেল মন্সন্ সাহেব সরজান ক্লেবরি পাহেব এব প্টুান্সিস্ সাহেব এই ক্য়েক মহাশয়েরা নৃতন সভাসদ্ হইলেন ইহার মধ্যে বার-ওয়েল সাহেব পূর্বেই ভারতবর্ষে সভ্য কর্মে নিযুক্ত ছিলেন অপর তিন মহাশয়েরা হস্তি সসাহেবের নিতান্ত হিণ্সক হইয়া আসিয়া তাঁহার সকল কম্পনায় দোষ দেখিতে नाशिलाम इष्टि भगाट्य छ। ङाहारमञ

মাদ্রাজে আগ্নন শুনিয়া বিশ্বাসপুকাশার্থে পুরেই এক পত্র লিখিলেন পরে তাঁহার। খাজ্রীতে আসিলে পুধান সভাসদ্ সাক্ষাৎ করিতে প্রেরিত ছইলেন এব বড়সাহেবের একজন নিজলোক অভ্যর্থনা করিতে পুেরিত হইলেন পরে তাঁহারা কলিকাতায় আসিলে লার্ডক্রাইব ও বন্শিটার্ট সাহেব অপেক্ষা অধিক মর্য্যাদা পূর্বক গৃহীত হইলেন তাঁহাদের সম্মানার্থে সপ্তদশ তোপ হইল ও স্মুদায় সভাসদেরা একত্র হইয়া অভ্য-র্থনা করিলেন তথাপি তাঁহাদের পুচুর অহু কার-পু্যুক্ত সন্তোম হইল না ওঁাহারা কোট্আবভিরেক্টরে অভিযোগপূর্বক লিখিলেন যে তাঁহাদের উচিত সন্মান হয় নাই তাঁহাদের অভ্যর্থনা করিতেসৈন্যরা আহূত হয় নাই সন্মনার্থে বহুসংখ্যক তোপ হয় নাই এবংতাঁহারা সভাস্থলে আনীত না হইয়া বর্ণ হস্থিণস সাঁহেবের বাটীতে আনীত হইলেন, এবং যে রাজসভার অধ্যক্ষ হইয়া আসিলেন তাহাতে কোন ঘঁটা হইল না।।

১৪ আকটোবর ঐ তিন সভাসদেরা থাজ্রীতে আসিলেন কিন্তু তাঁহাদের কলিকাতায় আসিতে পঞ্চদিবস
হইল ২০ তারিখ প্রথম সভাহইল কিন্তু বারওয়েল সাহেব
সেপর্য্যন্ত নাআসাতে কেবল নূতন রাজত্বের ঘোষণা
নাত্র হইল আগামি সোমবার ২৪ তারিখ কর্মে প্রবৃত্ত
হইবার হিরহইল উক্তসময়ে সভাহইলে হতি শসাহেব

ভারতবর্ষী য়কর্মে সম্পূর্ণৰূপে অনভিচ্ছ ঐ সহচরদিগের সন্মুখে সরকারিকন্মের সকলবিষয়ে কোম্পানির ব্দবস্থা জানাইলেন কিন্তু ঐ প্রথম সভায় এমত বিবাদ উপস্থিত হইল যে তাহাতে প্রায় সপ্তবর্ষপর্য্যস্ত ভারতবর্ষীয় রাজসভা স্থিরনপে হয় নাই বার্ওয়েল-লাহেব কেবল বড়ুসাহেবের পক্ষে ছিলেন অপর তি**ন নভাসদের মত সকলবিষয়ে তন্মতে বিপরীত হইত** তাঁহাদের পক্ষে অধিধ হওয়াতে বড়সাহেব শক্তি-শূন্য হইলেন যথার্থকপে সকল শক্তি তাঁহাদের হইল জ্®ি•সসাহেবের্প্রতি দ্বেষ্প্রযুক্ত ভাঁহনর। যেবিয**য়ে** বাদানুবাদ করিতেন তাহাতে হেত প্রায় ছিল না কেবল ক্রোধমাত্র মূল ছিল অতএব পালিঁয়ামে-ণ্টের এই নৃতন কল্পনাবধি ১৭৮০ শালপর্য্যন্ত ছয়বৎ-লরের মধ্যে যে ভিন্নমতাবলম্বিসভা একেবারে উচ্ছিন্ন হয় নাই ইহা অতি আশ্চর্য্যের বিষয় হণ্ডি সসাহেব মিডল্টন্সাহেবকে লক্ষণৌতে স্থাপিত করিয়াছিলেন ঐ সভাসদের৷ স্বপক্ষে আধিক্য হওয়াতে প্রথমসভার দুইদিনপ্ররে তাঁহাকে আন্থান করিলেন এবং হ্সি°৲সসাহেব নবাবের সহিত যেৰূপ নিয়ম করি-য়াছিলেন তাহা না মানিয়া তাঁহাহইতে অধিক প্রার্থনা করিলেন হৃষ্টি শসমাহেব তাঁহাদের একপা কম্মে নিরস্ত রাখিতে বিস্তর নিবেদন করিলেন ঠিন

কহিলেন ইহাতে অত্যন্ত অপকার হইবে কারণ ইহাতে

সর্ক্ত্র বিদিত হইবে যে রাজসভায় মততেদ হইয়াছে যেহেত্ত এতদেশীয় লোকেরাজানে যে রাজসভার প্রধান
বড়সাহেব যদি তাঁহাকে শক্তিহীন দেখে তবে সহজে
বুঝিবে যে রাজসভায় গোলযোগ উপস্থিত হইয়াছে
কিন্তু সভাসদেরা ক্রোধপুযুক্ত তাঁহা গুনিলেন না
অত্রব তাঁহাদের ব্যবহারে মুর্থতা ও অবিবেচনা
সর্ক্রবিদিত হইল ।।

দেশস্থলোকেরা অবিলয়ে রাজসভার বিবাদ দেখিয়া यूबितन य इष्टिं भन नाट्यं भूर्स अशोन हितन किड একণে ভীহার কোন সামর্থ্য নাই অতএব যেসকল মনুযোরা ভাঁহার বিচারে অসম্ভষ্ট ছিলেন ভাঁহারা কুন্বিনের নিকটে ও তাঁহার অন্যবন্ধদিগের নিকটে অভিযোগ করিলেন ওাঁহারাও তাহা ইচ্ছা**পুর্বক** করিলেন বর্জানের মৃতরাজা তিলকচন্দের পর্তাস্বীয়পুত্রের সহিত ঐ সময়ে কলিকাতায় আসিয়া নিবেদনপত্র পাঠাইলেন যে রাজার মরণাবধি ইপরুজ-দিগকে ও তাঁহাদের ভৃত্যদিগকে উৎকোচদানে তাঁহার নয়লক্ষমুদ্রা ব্যয় হইয়াছে তথাখে হণ্ডি প সাহেব পঞ্চদশ সহসুমূতা লইয়াছেন হাষ্টি পস সাহেব তাহার বাঙ্গালি বা পারসীক ছিসাব দেখিতে প্রার্থনা করিলেন কিছু রাণী তাহার কিছুই পাঠাইলেন না তৎকালে

লোকের মর্যাদাদান প্রধানরাজসভাষদের অধীন ছিল কিন্তু হস্তি শ্ব সাহেবের বিপক্ষেরা র্টাহার অপ-. মান করিবার মানসে ঐ রাণীর বালকপুত্রকে স্বহস্তে **এক থেলোয়াৎ পারিতো্যিক দিলেন হ**র্ন্থি সসাহে-বের দোষ দেখাইতে সমর্থলোকদিগের প্রতি পারি-তোষিক হইতে नाशिन সূতরা राज्यानात मक्न স্থানহইতে তদ্রপলোকেরা আনীত হইল হর্ছিৎস সাহেবের বহুবিধ নিন্দা শীঘু২ আসিতে লাগিল এতদেশীয় এক জন আবেদন করিল যে হুগলির ফৌজ্-দার বৎসরে গ২০০০ মুদু¦'বেতন পার্মেন তাহাহ্ইতে ৩৯০০০ হস্টিৎসমাহেবকে ও ৪০০০ তাঁহার দেওয়ানকে **দিয়া থাকেন অতএব ৩২০০০ মুদু ৷ বাৰ্ষিক বে**তনে তিনি **ঐকর্ম প্রার্থনা করেন। যেমহাশয় এতদেশী**য় ব্যবহার জানেন তিনি অনায়াসে বুঝিতে পারেন যে এ কিরপ দোষ কিন্তু ইহাও রাজসভায় গ্রাহ্য হইল এব ১ এ সভাসদের অধিকাপশই সাক্ষ্য লইয়া তাহা নিশ্চিত বলিলেন এব॰ ঐ ফৌজ্দারকে বিদায় করিয়া ঐ স্থাবে-দনকারিকে তৎকর্ম না দিয়া লোকান্তরকে অপ্প (बर्ज्यन मिलन । अक्यारमञ्ज सर्थ। अभन अभनाम হুইল মণিবেগম নয়লক্ষটাকার হিসাব দিতে পারেন নাই তাঁহাকৈ পিড়াপিড়ী করিলে কহিলেন যে হণ্ডি শস লাহেৰ যখন তাঁহাকে পদস্থিত করিতে গিয়াছিলেন

তথন তাঁহাকে সার্মলক্ষ টাকা ভোগার্থে দিয়াছিলেন হুষ্টি স্বাহেব কহিলেন যে ঐ ধন তিনি লইয়া সরকারি হিসাবে ব্যন্ত করিয়া কোম্পানির লভ্য করিয়াছেন তাহার উদাহরণ দেখাইলেন যে বাজালার নবাব কলি-কাতায় আসিলে প্রত্যহ ব্যয়ার্থে সহসুমুদ্রা পাইতেন তাহার এই উত্তরদারা সভাসদ্দিগের সম্ভোষ হইল না কিন্তু ঐ ধন কোম্পানির হিসাবে ব্যয় হয় নাই এরপ অনুমানে কোন প্রমাণ ছিল না।

তৎকালে যেঁকোন অখ্যাতি গ্ৰাছ হওয়াতে ঐ 'সর্কানিকিত নক্কুমারও ৢহঙি∿সস্হেবের অভিযোগ করিলেন তিনি কহিলেন য়ে মুরসিদাবাদে মণিবেগমকে ও তাঁহার নিজ পুত্র গুরুদাসকে নবাবের গৃহকৰ্মে নিযোগকালে বড়সাহেব তিন লক্ষমুদ্রা লইয়াছেন তাহাতে <u>কু</u>ান্সিস্ সাহেব ও তৎ**পক্**যি মহাশয়েরা সাক্ষাদানার্থে নক্ষুমারকে ঐ• সভায় আনিবার প্রস্তাব করিলেন হুষ্টি⁴স সাহেব কহি-'লেন যে তিনি যেসভায় কর্ত্তা আছেন সেখানে তাঁহার দোষী ব্যক্তিকে আসিতে দিবেন না ও এইৰূপ অধীনতাদারা সমুদায় ভারতবর্ষীয়লোকের নিকটে ্বড়সাহেবের কম্ম ঘূণিত করিবেন্না অতএব ঐ বিবে-চনা বড়আদালতে সোপরোধ করিলেন পরে তিনি গাৰোপান করিয়া ঐ সভাহইতে বহিভুঁত হইলেন

ৰার্ওয়েল সাহেব তাঁহার পশ্চাৎ চলিলেন অনস্তর কুন্িসস্ সাহেব ও তৎপক্ষীয় মহালয়েরা নক্কু-মারকে আহ্হান করিবেন নন্দকুমার এক পত্র পড়িয়া কহিলেন যে মণিবেগম যে উৎকোচ দিয়াছেন তাহ। স্থামাকে এইপত্তে লিখিয়াছিলেন মণিবেগম ঐ সভায় আর এক পূত্র লিখিয়াছিলেন সরজান্ডি আয়লি ঐ পত্র বাহির করিলেন সকলে ঐ উভয়পঁত্রের তৃল্যতা আছে কিনা এই বিবেচনা করিয়া দেখিলেন যে উভয়ে भूषा खना किन्छ इस्राक्षत्रं विचित्र हिन नक्तूमादित मत-গানস্তর ঐ দুষ্টতা প্রাকাশ পাইল যে বান্দালার সর্কল প্রধান মনুষ্যের জ্ঞিম মৃদুর্তাহার নিকটে ছিল অত-এব ঐ পত্র নক্ষকুমার কৃত্তিম করিয়াছিলেন ও ঐ মৃদুার ভাঁহার দারা হয় ইহাতে সন্দেহ নাই কিন্তু সভাস-দেরা নন্দকুমারের বাক্য সত্য জানিয়া হস্তি^নসসাহে-বকে ঐ ধন প্রত্যর্পণ করিতে আজ্ঞা করিলেন তিনি তাহা সর্বপ্রকারে অস্বীকার করিনেন। ঐ অভিয়োগের শেষ না ছইতে ২ ছষ্টি শ্স সাছেষ বড়আদালতে নন্দ-কুমারের নামে ঐকুমন্ত্রণানিমিত্তে অভিযোগ করিলেন পুর্ব্বোক্ত তিন সভাসদ বড়সাহেবের সহিত অপ্রণয় প্রকাশ করিতে নন্দকুমারের, সৃহিত সাক্ষাথ করিতে গমন করিলেন এৰপ ব্যবহার ভারতবর্ষে তদবধি কদাচ रुप्र नारे वरेकाल कुनिन्न गार्ट्य ও उदलकी द्विता

হৃতি প্রনাহেবের বিপক্ষতা করিয়া বহকালাবিধি রাজতের অনিয়ম করিলেন।।

হস্তি শ্সনাহেব নন্দকু মারের প্রতি অভিযোগ করিলে কতিপয়দিনের পরে ক্ষলউদ্দিননামক একজন নন্দ-কুমার ক্তিমতাপুর্কে কোনবিষয়ে তাঁহার নাম স্বাক্ষর করিয়াছেন বলিয়া ঐ বহুজাদালতে আবেদন করিলেন তাহাতে নন্দকৃনারের দোষ সপ্রমাণহওয়াতে ১৭৭৫ শালের জুলাইমাসে তাঁহার ফাঁসি হইল এতদে-শীয়লোকেরা কলিকাতানগরে ভারতবর্ষসংখ্য স্পতি প্রধান ও ঝুন্ধণ নন্দকুমারের কাঁসি দেখিয়া বজাঘাত ত্তল্য বোধ করিলেন ইপরাজদিগদার। উচ্চপদস্থিত এতদ্দেশীয়লোকের হত্যা এই প্রথম হইল এবিষয়ে উক্ত আছে যে এদেশীয় লকাধিক লোকেরা ঐ ফাঁসিকাণ্ডের চত্তদিপে শেষপর্যান্ত ছিল তাহারা বুঝিয়াছিল যে তাঁহাকে পাুণে নষ্ট করিবেন। কিন্তু যখন দেখিলেক নিতান্ত তাঁহার প্রাণনাশ হইল তাহার্রা একত্র হইয়া সক-লেই শুদ্ধ হইতে পঞ্চাসানে চলিল নন্দকুমারের মৃত্যুতে ज्ञकत्त्र रुष्टि भगार्ट्यक एवि (वाथ क्रिलन काइन ভাঁহাদের ৰোধ হুইল যে তিনি ঐ বিষয়ে সহায়তা করি-য়াছিলেন কিন্তু ইহার যথার্থ এই যে বড়জাদালাতের ঐকপ নিয়ম ছিল এব ্ কিয়ৎবর্ষপরে ঐ আদালতের পু। তিকু ल। यमकन विषयात अधियोभ इस छ। इस

সংখ্য ঐ এক বিষয় ছিল কিন্তু ইহাতে কোন সন্দেহ মাই যে এতদেশীয় সকল লোক অপেকা নন্দকুমারের চরিত্র অতিকুৎসিত **ছিল বাজালার বড়সাহেবেরা একে** ২ অনেকে তাঁহাকে অবিশ্বাসী বলিয়াছিলেন তিনি ই %-রাজদিগের বিপক্ষের সহিত মিল করিয়া তাঁহাদের বিদ্যোহ করিবার চেষ্টায় ছিলেন তাহার প্রকাশ হইয়া-ছিল এব^ পলাশীর যুদ্ধের পরে নানাজাতীয়ের সহিত ঐক্য করিয়া ছলনার ড়েষ্টায় ছিলেন কিন্তু তথাপি এই-**ৰূপে মরিতে হইল বড়স্বদালাতে যেদোষজন্য তাঁহার** পাণ দপ্ত হইল ঐ দোষ তিনি ঐ আদালত স্থাপনের চারি বৎসর পুর্ব্ধে ক্রিয়াছিলেন তৎকালে তিনি সুতরাণ अवामानार्ज्य व्यथिकात्त्र हिलन ना हिन्सू भाज्य गाउ তাঁহার দোষ আত্যন্তিক ছিল না অতথৰ তাঁহার হত্যা উভ্রমবিটারপূর্কক হয় নাই। মৃত্যুকালে তাঁহার অধিক ধন ছিল তিনি যেসকল কৃষ্ম করিয়াছিলেন তাহাতে এক কোটীছইতে অধিক মুদ্রা সংগুহ করিয়াছিলেন।। মহন্দরেজার্থার বিচারের যে নিপাত্তি হইয়াছিল তাহার সম্বাদ ইপলপ্তে যাইলে ভিরেকটরের। কহিয়া-ছিলেন যে তাঁহার নির্দোষিতা হওয়াতে ও তাঁহার দোষদায়ক নন্দকুমারের বুঁইতাপ্রকাশে তাঁহারা সন্তুই

হইয়াছেন তাঁহারা আজ্ঞা করিলেন যে নবাবের গৃহ-কম্মে গুরুদাসের পরিবর্ত্তে মহম্মদরেজাখাঁ নিযুক্ত হইবেন ৷ অনস্তর কলিকাতাস্থিত সদর নিজামত আদালতে বিচারার্থে রাজসভার সময় মাথাকাতে সভা সদের৷ পূর্বেমত এতদেশীয়লোকের অধীনে ফৌজ্দারী রাখিতে স্থির করিলেন অতএব ঐ আদালত কলিকাতাহইতে মুরসিদাবার্দে স্থাপিত করিয়া মহম্মদ-রেজার্থাকে তাহার প্রধান অধ্যক্ষ করিলেন ৷৷

।। ষোড়শঅধ্যায়।।

জ্ঞমে২ কর্বৃদ্ধির আশায় \$ 99২ **শাল হইতে পঞ্** বৎসরের নিমিত্তে সকল ভূমির ইজারা হইয়াছিল কিছ প্রথমবৎসরেই দৃষ্ট হইল ,যে জমিদারেরা যাবৎ দিতে পারেন ও তাঁহাদের যাবৎ দিবার মানস ছিল তাহা-হইতে অপ্পে তাঁহারা চুক্তি করিয়া**ছেন ঐ রাজ**ছের অধিকা° শের আদায় হইল না সমুদায় পঞ্বৎসরে রাজসভাকে এককোটী অষ্টাদশলক মুদ্রা পাঠাইতে হইল কিন্তু তথাপি জ্মিদার্দিগের নিকটে এক কোটী বিপশতিলক্ষুদ্রাবাকী রহিল তক্মধ্যে অধি-কাপ্ৰের প্রাপ্তিন দ্রাবনাও ছিল না উভয়পক্ষীয় সভা-সদের৷ নূতন চুক্তিকরিবার রীতি **স্থদেখে পাঠা**-ইলেন কিন্তু ডিরেক্টরেরা উভয় রীতিই অপ্যাহ্য করি-লেন ১৭৭৭ শালে পাউার সময়,উত্তীর্ণ ইইলে তাঁহা-দের আজ্ঞানুসারে এক্বৎসরের নিমিত্তে ভূমির ইজারা হইল এবং ১৭৮২ শালপর্যন্ত ঐ রীতিতে বর্ষেই

ইজারা হইত এইৰণ নিয়মের তাৎপর্য্য এই ছিল যে পূর্ব তিনবৎসরের প্রাপ্য উত্তমৰূপে আদায় হইবে এবং কোনমতে পূর্বজমিদার্দিগকে দিবার সম্ভাবনা থাকিলে অপর লোককে দন্ত হইত না !!

১৭৭৬ শালের সেপ্টেম্বরমাসে কর্ণেল মন্সন মরিলে তৎপক্ষীয় -সভাপতি দুইজন থাকাতে হুষ্টিৎস সাহেব পুনর্বার শক্তিমান্ হুইলেন কারণ তাঁহার আছে৷ বলবতী ছিল ৷৷

১৭৭৮ শালের শেষে নবাব মবারিক উদৌলা বয়ং-প্রাপ্ত হইয়া রাজসভায় এক.প্রার্থনাপত্র লিখিলেন ষে মহম্মদরেজার্থাকে তাঁহার কর্মা রহিত করেন কারণ তিনি তাঁহার প্রতি কঠিনতা করিয়া থাকেন হিছে স্বাহ্রের পরামর্শানুনারে তাঁহাকে পদচ্যত করিয়া ঐ নায়েবস্তবাদারী কর্মা রহিত হইল এবং নবাবের গৃহকম্মের ভার মণিবেগমের রহিল কিন্তু এরণ ব্যবস্থায় কোর্ট্রার ভার মণিবেগমের রহিল কিন্তু এরণ ব্যবস্থায় কোর্ট্রার ভার মণিবেগমের রহিল কিন্তু এরণ ব্যবস্থায় কোর্ট্রার ভার করিবানাত্রে আজ্ঞা করিলেন যে ঐ কর্মা পুনা স্থাপন করিয়া মহম্মদরেজার্থাকে দিবেন এবং মণিবেগনের প্রতি নবাবের শরীরর্কার ভার রহিত করিলেন যে

১৭৭৮ শালে বাঙ্গালি অক্যয়ে প্রথম পুত্তক মুদ্রিত হওয়াতে বাঙ্গালার ইতিহাসনধ্যে ঐশাল চিরশন-

ণীয় আছে এন হাল্ছেড্নামক অতিবুদ্ধিমান্ এক জ**ন** ভদ্র সাহেব ১৭৭০ শালে সভ্যকন্ম লইয়া বাঙ্গালায় আসিয়াছিলেন তিনি এতদেশীয় ভাষাশিকায় নিমথ ছইয়া এমত ব্যুৎপত্তি করিলেন যে ইহার পূর্ফে কোন ইউরোপীয়ের সেরপ হয় নাই ৷ ১৭৭২ সালে এতদে-শীয়কম্মে ইউরোপীয়ত্বামলাদিগ্নের নিয়োগকালে হুষ্ঠি°সসাহেব বিবেচনা করিলেন যে ঐ আমলাদিগের এতদেশীয়ব্যবস্থাজানাউচিত হয় অতএব তাঁহার সাহা-ছদারা হাল্হেড্সাহেৰ এদেশীয় গুন্তইতে হিন্দু ও মুসলমান্দিপের ব্যবস্থা সংগ্রহ করিয়া ১৭৭৫ শালে মৃদ্ভিত করিলেন। তিনি এমত পরিশুমপুর্বক বাজালা ভাষা অভ্যাস করিয়াছিলেন যে সকলে বোধ করেন य हे तो क्रिनिशत मरक्षा शुथरम जिनिहे छे छमक्रि खे ভাষায় বিদ্বান্ হইয়াছিলেন তিনি ১৭৭৮ শালে ঐ ভাষার এক ব্যাকরণ করিলেন ঐভাবার ব্যাকরণ ইহার পুর্বে ছিল না ঐ ব্যাকরণ ছগলিতে মুদুত ছইল কারণ তৎ-काल ताजभानीएक मृद्रु यदा हिन ना। वित्रकान अत्र न-যোগ্তার্স উল্কিন্সসাহেব ইহার পুর্বে এতদ্দশীয় ভাষাশিক্ষায় রক্ত ছিলেন এবং তিনি অতি উত্তম ় শিপ্পী ও অডুতকর্মে উদেগ্রা ছিলেন পূথমে স্বহত্তে বাজালি অক্ষর খোদিত করিয়া ভাহাতে সীসক ঢালিয়া অক্সর করিলেন পরে 💁 আক্রদারা তাঁহার ব্যু হান্হেড্সাছেবের ব্যাকরণ মুদ্রিত হ**ইল ।।**

বভূজাদালতের ও রাজসভার পরস্পার বিবাদদারা ৰত্কালাৰধি দেশের অতিশয় দুঃখ হইয়াছিল ১৭৭৪ শালে ঐ আদালত কোম্পানির রাজ্যের অনধীন হইয়া স্থাপিত হয় ঐ আদালতের বিচারকর্তাদিগের আগ-মনকালে বোধ ছিল যে প্রজাদিগের প্রতি অত্যন্ত मोताका इरेशाष्ट्र ७ भे पृथ्यनिवात्रभित्र अधान छेलाग्र বড়আদালত হইল ঐ মহাশয়েরা টাদপালের ঘাটে অবতরণ করিয়া, দেখিলেন যে এতদেশীয় লোকেরা খালিপায়ে গমন করিতেছে তাহাতে এক জন কহিলেন ওহে বন্ধু দেখহ এদেশের লোকের প্রতি কির্নপ দৌরাত্ম্য হইতেছে এদেশে বড়আদালতের আবশ্য-কতা নাহইলে স্থাপনা হয় নাই আমার বোধ হয় আমাদের আদালতে ছয়্মাসের মধ্যে এই দুঃখি লোকদিগের পাদুক। ও মোজাদারা সুখভোগ হইবে। ঐ আদালতের শক্তি ভারতবর্ষস্থিত সমুদায় ইণরাজ লোকের উপরি ও মহারাষ্ট্রীয়খালের মধ্যে নিবাসি এতদেশীয়লোকের উপরি হইল এবণ সাকাৎ বা পরস্পরায় কোম্পানির কর্মকারি অথবা ব্রিটেন্দেশীয় লোকের কর্মকারি জনের উপরি শক্তি হইল এই নিয়ম-ছারা বিচারকর্তারা দেশের অন্যান্যস্বস্থিত লোক-

দিগকে ঐ আ্দালতের অধিকারে আনীতে আরম্ভ করিলেন ভাঁহারা কহিলেন যে যেসকল মনুষ্যেরা করপ্রদান করিয়া থাকেন তাঁহারা সকলেই কোম্পানির কন্ম কারির মধ্যে আছেন স্বতএব পার্লিয়ামেণ্টের এই ভুল ছিল যে তাঁহারা উত্তমর্নপে ঐ আদালতের শক্তি নির্ধারিত করেন নাই এব° একস্থলে পরক্ষার নির-পেক ও বিরোধী দুই পক স্থাপন করিয়াছিলেন তাহাতে দুই পক্ষে অবিলয়ে পরুস্পর বিবাদ উপস্থিত হইল বড়আদালত স্থাপিত হইবামাত্রে মিজ অধিকার বৃদ্ধি করিতে লাগিলেন যে কোন জন তথায় গিয়া यिः मश्रथभूर्सक दनिष्ठिन य मार्सपूर्वभेठ कामास्त्र-ক্তি এক জমিদার তাঁহার অধ্যর্ণ আছেন তৎক্ষণাৎ তাঁহার আহ্বানপত্র হুইত ও ঐ জন্মিদারকে আনয়ন করিয়া কারালয়ে স্থাপন হইত ভাহাতে যদি ঐ জনি-দার কহিতেন যে তিনি ঐ আদালতের অধিকারে নাই তবে সর্বদাই তাঁহার মোচন হইত কিন্তু তাহাদারা তাঁহার অপমানের মার্জন হইতনা। এইৰপ রীতির কল শীঘু দৃশ্য হইল যেসকল পুজারা ইচ্ছাপূর্ক্ত কর দিতেন नो यथन. জिमात्रिमिशक ও ইজারাদার্দিগকে কলিকাতার আহ্বান হইক তখন তাঁহারা কোনমতে কিছুই দিলেন না পুথয়বৎসরে ঐ আদালতের এই ৰূপ .আ্ছানপত্ৰ প্ৰায়ু সকল জিলায় প্ৰেরিত হইয়াছিল

ইহাতে সর্বাত্ত অতিশয় ভয় উপস্থিত হইল সকল পূজারা অতিভয়ানক ও নূতন বিপদে নিমগ্ন হইলেন যেনিয়মদারা তাঁহাদের কলিকাতায় বিচারাথে আন-য়ন হইত তাহা তাঁহাদের রাতি বৃদ্ধির বহিভূতি ছিল তাঁহারা তাহার কিছুই জানিতেন লা।

রাজস্ব আদায়নিমিত্তে স্থানে২ যে সমাজ স্থাপিত **ছিল বড় আ**দালতে তাহার **শক্তি হীন** করিয়া তাহাতেও স্বশক্তিবিস্তার করিলেন তৎকালে যদি কোন জমি-দার বহুকালাবধি রাজস্ব নাদিতেন তবে প্রাচীন রাতি-মতে তাঁহাকে কারাগ্হে স্থাপন হইত রেড়আদালতে ঐৰপ নিয়মে নিজ হস্তক্ষেপ করিতে আরম্ভ করিলেন জমিদারেরা পূর্বমতে রুদ্ধ থাকিলে ভাঁহাদের বড় আদালতে আবেদন করিতে পরামর্শ দিতেনও তাহা **হইলে 'তৎক্ষণাৎ তাঁহাদের প্রতিভূলইয়া খোচন করি-**তেন ঐ আদালতে নিবেদনদারা আ্সেধ মোচন দেখিয়া জমিদারেরা সুতরাণ কর দিতেন না এইৰপে রাজস্বের আদায় প্রায় স্থগিত হইল বড়আদালতে क्रात्र नत्रकाति नमूनाय काम रखा रखाना জুমিবিষয়ের অভিযোগ তথায় আনীত হইলে বিচার কর্ত্তারা তদ্দেশীয় ধর্মাধিকরণে সমর্পণ নাকরিয়া স্বয়াপ নিষ্পত্তি করিতেন যদি কোন জমিদার স্বীকৃত ক্র নাদিতেন ওবে ভাঁহার ভূমি বিক্রীত হইত

তাহাতে ক্রেতাকে ঐ আদালতে আনয়ন হইতও তাহাতে তাঁহার সর্কানাশ হইত যদি কোন জনিদার কোন বিষয় ক্রয় করিয়া তাহার কর আদায় করিতেন তাহাতেও নিঃম্ব ব্যক্তিরা তাঁহার নামে অভিযোগ করিলে তাঁহার অপমান ও অর্থদণ্ড হইত ৷৷

এইৰপে বুড়আদালতে দেশের অন্যান্য স্থলে ফৌজ-দারীবিষয়েও সামর্থ্যবিস্তার করিলেন কিন্তু রাজ-সভাধারা ঐ বিষয় মুরসিদাকাদের নবাবের হস্তে নিঃক্ষিপ্ত ছিল ঐ আদালতের বিচারকর্ত্তারা কহিলেন ্যে মবারিকউদ্দৌলা কল্পিত নবাব ও এক তৃণভল্য মনুষ্য তিনি কোনমতে নৃপত্তল্য নহেন এব বড়আ-দালতের অধিকার সমুদায়রাজ্যে বিস্তৃত আছে অতএব তিনি ই৲লঙীয়রাজার ও ভাঁহার নিয়মের বশীভূত **দাথা**কিলেও ঐ আদালতে তাঁহার প্রতি আহ্বা**ন** পত্র বাহিরকরা উচিত বুঝিলেন বিচারকর্ত্যদিগের এইমত ছিল যে এদেশের রবঁজ স্ব ও প্লাজ স্ব আদায় সমু-দায় তাঁহাদের অধীন আছে এব প্রেজন তাঁহাদের আক্রা অমান্য করিবে তাহাকে ইপলগুয়িনিয়ুমান্-লারে কঠিন দণ্ড দিবেন তাঁহার। কহিতেন যে এই আদালত কোম্পানির ভূত্যুধর্গের এদেশীয়লোকের প্রতি দৌরাক্স্য ও , অবিচারনিবারণার্থে হইয়াছে তাহাতে তাঁহাদের একপ অধিক শক্তি নাহইলে কিৰপে তাছা সম্পন্ন হইতে পারে তাঁছাদের, মানস ছিল যে রাজসভাকে শক্তিবিহীন করিয়া সকলবিষয়ে বড় আদালতের শক্তিস্থাপন করেন।

ইহা উত্তমৰূপে প্ৰকাশাৰ্থে আমরা এক দেওয়ানী বিষয় ওএক কৌজদারী বিষয় লিখি। পাটনায় এক জন ধনী নুসলমান্ একপত্নী ও এক ভ্ৰাকৃপুত্ৰ রাখিয়া মরিয়াছিলেন এব° অনেকে কহেন যে তিনি ঐ ভ্রাতৃ-পুত্রকে পোষাপুত্র করিয়াছিলেন উভয়পক্ষে ঐ ধন লইয়া বিবাদ উপস্থিত করিলেন পরে তথাকার ধর্মাধি-করণে ঐ বিষয়ের অভিযোগ হইলে বিচারকভারা তৎকালীনরীতানুসারে কাজিকেও নুক্তিকে সাক্ষ্য লইয়া মুসলমানের ধর্মশাস্তানুসারে নিষ্পত্তি করিতে পাঠাইলেন তাঁহারা দেখিলেন যে উভয়পক্ষেরি কাগজ পত্র কৃত্রিম তাহাতে কোন ব্যক্তিই যথার্থ অধিকারী বোধ হইল না অতএব মুসলমানি ধৃষ্ শাস্তানুসারে ভাগ করিয়া দেওঁয়া উচিত বুঝিয়া চত্তর্থা শশ ঐ বিধ-বাকে ও অবশিষ্ট ঐ পোষ্যভ্রাতৃপুত্তের পিতা মৃত-**थनिর ভ্রাতাকে দিলেন । ঐ বিথবা বড়**আদালতে পুন-র্বিচারার্থে আবেদন করিল এবিষয়ে ঐ আদালতের অধিকার ছিল না কিন্তু কিচারকর্ত্তারা অধিকারমধ্যে আনয়নার্থে কহিলেন যে মৃতধনী কোল্পানির কর-প্রদ অতথ্ব কোম্পানির কর্মকরমধ্যে ছিলেন এবং সনুদায় সরকারি কর্মকারির উপরি ওাঁহাদের অধি-কার আছে।।

এবং আরো কহিলেন যে ইংরাজিব্যবস্থামতে পাটনার বিচারকর্তাদিগের একপ সামর্থ্য নাই যে তাঁছারা কোনবিষয়ে বিচার করিতে 'লোক প্রেরণ করেন অত-এব ঐ বিষয়,পুনর্বার শ্রবণ করিতে স্থির করিলেন পরে ঐ বিধবার পক্ষে নিপাত্তি করিয়া তাহাকে তিন লক্ষ মুদাদেওয়াইলেন অধিকস্তু তাঁহারা ঐ কাজিও মুক্তি ও ঐ ভ্রাতৃপূত্রকে নিরোধ করিতে এক সার্জন প্রেরণ করিলেন এব: তাহার প্রতি আক্সকরিলেন যে চারি লক টাকুর প্রতিভূ নাপাইলে তাঁহাদের কদাচ মোচন ফ্রিবেন না কাজি কাছারিছইতে যাইতে ছিলেন এমত সন্যে তাঁহাকে কারাগৃহে লইয়া যাইল ইহাতে लाक्ति **गत्न किंगु छम्य इहेर्द बहेर्दिर्दे**ष्टनाय ফথাকার **আদালতের বিচারকর্তারা অতিশয় ভীত** ভ্টলেন তাঁহার। দেখিলেন["] যে রা**ধ্রসভার শক্তি ন**ষ্ট ভ্ট্য়াছে ও যথার্থ বিচারের রোধ হইল অতএব ভাবি-দোষান্তর নিবারণার্থে তাঁহারা কাজির প্রতিভূতুইলেন বড়ু খাদালতের ,বিচারকর্ত্তারা তদেশীয় আদালতের আছাক্রমে 'যেসকল লোক ,ঐ' বিষয় বিচার করিয়াছি-লেন তাঁহাদের সকলকে আটক করিতে সিপাই পাঠা-ইলেন্ ঐ কাজি অতিষ্দ্ধ ও ঐ আদালতে বহুকার

বিচার করিয়াছিলেন পরে কলিকাতায় আগমনকালে পথিমধ্যে তাঁহার প্রাণত্যাগ হইল মৃক্তিরা চারি বৎসরপর্য্যন্ত কারালয়ে থাকিয়া পার্লিয়ামেণ্টের নিরমদারা উদ্বৃত হইলেন তাঁহাদের এইমাত্র অপরাধ ছিল যেতাঁহারাকর্ত্র্যকর্মা করিয়াছিলেন। ঐ বিচারকর্ত্রারা ইহাতেও সন্তুই নাহইয়াতদ্দেশীয় আদালতের বিচারকর্ত্রার নামে বড়আদালতে অভিযোগদারা ভাঁহার ১৫০০০ মুদ্রাদ্ধ করিলেন ঐধন কোম্পানির কোষহইতে দত্ত হইল।।

বড়আদালতের বিচারক্রারা যেরীতিতে দেশের কৌজ্দারীকম্মে. হস্তক্ষেপ করিয়াছিলেন ভাহার এক উদাহরণ পশ্চাৎ লিখিতেছি ঐআদালতের এক জন প্রতিনিধি ঢাকায়বাসকরিতেন ঐ নগরের ফৌজ্-দারী আদালতে একজন পিয়াদার নানে দৌরাজ্যের অভিযোগ হইল পরে তাহাতে দোষ প্রমাণ হওয়াতে যেপর্য্যস্ত সে ক্ষতি ধরিয়া নাদিবে তদবধি কারাগৃছে রাখিতে আক্রা হইল পরে তাহাকে বড়আদালতে আবেদন করিতে পরামর্শ দেওয়াতে সে তাহা করিল তাহাতে এক জন বিচারকর্ত্তা ঐ পিয়াদাকে নির্থক আসেধনিমিত্তে ঐ ফৌজ্দারী আদালতের দেওয়া-নকে রোধ করিতে আজ্ঞা পাঠাইলেন ঐ ইউরোপীয় প্রতিনিধি একজন এদেখীয় লোককে কৌজ্যারের

ৰাটীতে পাঠাইলেন ফৌজদার আদানতের আমলা ও বজুবর্গবেস্থিত আছেন ইতিমধ্যে ঐ লোক তথায় প্রবেশ করিয়া তাঁছার দেওয়ানকে গুহণ করিবার চেষ্টা করিলেন কিন্তু ভাঁহারা তাহাতে বাধাদেওয়াতে ভাঁহাকে প্রভুর নিকটে প্রত্যাগমন করিতে হইল ঐ প্রতিনিধি তাহা শুনিবানাত্রে এক প্রস্তুত অন্ত্রধারী-मन्या नरेशा वनशृक्त के वां ही एक श्रादम क्रिएक कि করিলেন ফৌজদার তাঁহার জ্রীয়লাকেরা যে বাটীতে আছেন তাহাতে এইৰপ উপদ্ৰোহ দেখিয়া দাররোপ করিলেন তাহাতে তুমুলবিৰাদ উপস্থিত হইল ঐ প্রতি-নিধির একজন সহচর ফৌজ্দারের পিতার মস্তকে আঘাত করিল এবং তিনি ষয়ং কৌজদারের ভগিনী-পতির পুতি পিস্তন করিনেন কিন্তু ভাহাতে তাহার পূাণনাশ হইল না। হাইদনামক বড়আদালতের এক জন বিচারকর্ত্ত্য এই বিষয় শুনিয়া ঢাকার সেনপিতিকে আক্সা লিখিলেন যে তিনি ঐপুতিনিধির সহায়তা করেন, এব^ ঐ পুতিনিধিকে বিজ্ঞাপন করিতে লিখি-লেন যে তাঁহার ঐৰপ ব্যবহারে বড়আদানতে সম্ভষ্ট হইয়াছেন ও ঐ' আদালতদারা তাঁহার উপযুক্ত সহা-য়তা হইবে । ঢাকার আদালতে বড়সাহেবকে লিখি-লেন যে অতঃপর সমুদ্য়িকৌজ্দারী বিচার রোধ হইল এবং এইকৃপ উপদ্যোহের পরে আর কোন এদেশীয় আমলারা স্বকার্য্য করিবেন না ।।

বড়কাছেব ও অন্যান্য তৎসভাসদেরা দেখিলেন যে বড়আদালতদারা রাজসভার শক্তি নষ্ট হইয়াছে ভাহাতে কোন বাধা দিতে সাহস হয় নাকারণ বিচার-কর্ত্তারা বলেন যে আহারা রাজার নিযুক্তর্কোক কোম্পা-নির রাজ্যের সমুদায় আমলা অপেক্ষা পুথান শক্তি-মান্ এবং ভাহাদের আজ্ঞা না মানিলে দণ্ডভয় দেখা-ইতেছেন কিন্তু অভঃপর এমত এক বিষয় উপস্থিত হইল যে তাহাতে উভয়পক্ষের বিবাদের শেষ হইল !!

১৭৭৯ শালের ১৩ আগষ্ট কাশীবোড়ার রাজার লামে তাঁহার কলিকাতান্থিত পুতিনিধি কাশীনাথ মাবুদারা এক অভিযোগ আরম্ভ হইল ঐরাজার আজান-পত্র ও তিন লকটাকার পুতিভূ পার্থনা হইল ঐ আজানপত্র নিবারণার্থে তিনি পলায়ন করিলেন তাহাতে ঐ পত্র নিষ্কল হইয়া ফিরিয়া আসিল পরে তাহার স্থাবর জক্ম সমুদায় সম্পত্তি আটক করিতে অপরপত্র প্রেরিত হইল তথাকার দপ্তনায়ক ঐরপ করিতে বন্ধি পদাতিক ও এক সার্জন পাঠাইলেন তাহাতে ঐরাজা রাজসভায় নিবেদন করিলেন যে তাহারা আসিয়াতাহার ভৃত্যদিগকে আঘাত করিয়াছে ভৃত্যপুরে প্রেশ করি-

শ্বাছে সমুদায় ধন লুট করিয়াছে দেবমন্দির অগবিত্র করিয়াছে ও বিগুহহইতে অলকার হরণ করিয়াছে রাজস্ব আদায় নিবারণ করিয়াছে এব ওপ্রজাদিগের ভবিষ্যৎকর দিতে নিষেধ করিয়াছে অতঃপর বড়-সাহেব সতর্ক হইতে প্রতিজ্ঞা করিলেন কারণ যদি এরপ দেখিয়াও কিছুই না বলেন ত্বে অবকাটে রাজ-ত্বের শেষ হইবে তিনি রাজাকে ঐ আদালতের শক্তি মানিতে নিষেধ করিলেন এব ্তথাকার সেনাপতির প্রতি ঐ দণ্ডনায়কৈর লোকদিগকে রোধ করিতে আজ্ঞা 'করিলেন। রাজার গৃহ লুট ও ঐ সকল উপদ্যেহ সমা-भन इहेरन **के जाड़ा** याहेंन किन्न याहिनामार्क छ ९-পক্ষীয় সমুদায় লোক ৰুদ্ধ হইল এইকালে বড়সাহেব সমুদায় জমিদার ও তালুকদার এব চৌধুরিদিগের নিকটে আজ্ঞা পাঠাইলেন যে যাবৎ তাঁহারা ব্রিটেন্-দেশীয় প্রজা লা হয়েন অথবা কোন বিশেরনিয়মে বদ্ধ না হয়েন তাবৎ কদাচ ঐ আদানতের **শক্তি মানি**-বেন না এবং প্রদেশীয় সেনাপতিদিগের প্রতি ঐ স্মাদালতের সাহায্য করিতে নিষেধ করিলেনু।।

বড় আদালতের বিচারকর্তারা ঐ সারজন এবং তাহার সকললোকের আসেধ শুনিধানাত্রে কলিকাতান্থিত কোম্পানির নিযোগকর্তার প্রাতিকূল্যাচরণ করিতে লাগিলেন ও সাধারণকারালয়ে, ওঁাহাকে রুদ্ধ করিলেন পরে কাশীনাথবাবুর অভিযোগে আমলাদিগের আসেধাজ্ঞাদানহেন্ত বড়সাহেবকে তাঁহার সভান্তলোকের
সহিত আহ্লান করিলেন কিন্তু হস্তি সন্মাহেব একেবারে উত্তর করিলেন যে তিনি কিন্তা তাঁহার সহচরেরা
বিচারকর্ত্তাদিগের স্থশক্তিকিল্পিতনিয়মানুসারে আজ্ঞা
শুনিবেন মা ১৭৮০ শালের মার্চমাসে এইকাপ ঘটনা
হইল ও কলিকাতাদিবাসি বিটেন্দেশীয়েরা এবং
বড়সাহেব সভান্তলোকের সহিত পালিয়ামেণ্টে ঐ
আদালতের দৌরাক্সামোচন প্রার্থনাকরিলেন তথায়
এবিষয়ে উত্তমবিবেচনার পরে এক নূতন নিয়ম হইল
তাহাতে ঐ আদালতের বাঞ্ছিত সমুদায়দেশের অধিকার লুগু হইল ।।

এ মৃতন নিয়মের আক্রা আসিবার পূর্বে হণ্টি প্রসাহেব বিচারকর্জাদিগের মুখে আহার দিয়া বড়আদালক্রের সাস্ত্রনাকরিয়াছিলেন তিনি প্রধান বিচারকর্ত্তা সরইলিজা ইম্পিকে পঞ্চসহসু মুদ্রা মাসিকবেতন
অধিক দিয়া সদরদেওয়ানী আদালতে প্রধান বিচারকর্ত্তা করিলেন এব ওলক্ষাজদিগের সহিত যুদ্ধে চুচুড়া
ই রাজদিগের হস্তগত হইয়াছিল তথায় একজন ক্ষুদ্র
বিচারকর্তাকে নৃতন পদ. করিয়াদিলেন অভঃপর
কিয়ৎকালপর্যান্ত বড়আদালতের আপত্তি শুনা যায়না
এইসময়ে হণ্ডি প্স সাহেব নানাস্থানে আদালতের

উন্নতি করিলেন্ তিনি নানাস্থানে দেওয়ানীবিষয়ের বিচারার্থে দেওয়ানী আদালত স্থাপন করিলেন এবং যেসকল প্রদেশীয় আদালত পূর্ফ্বে ছিল তাহাদের কেবল রাজস্ববিষয়ে নির্ভর করিতে আজ্ঞা করিলেন। ঐ প্রধান বিচারকর্তা 'সদরদেওয়ানীআদালতে থাকিয়া দেকোর সনুদয় দেওয়ানি আদালতের উপ-দেশার্থে কিয়ৎ বিধি কম্পনা করিলেন অবশেষে ঐ বিধি সনুদায়ে নবতি সংখ্যুক হইল এবং তাহাই লার্ডকর্ণওয়ালিসের দেওয়ানী ব্যবস্থাগুদ্ধের মূল হইল।।

সর্ইলিজাইন্পির ঐকন্মে নিযোগসম্বাদ ই কাপ্তে য়াইলে কোর্ট আবভিরেক্টরেরা ইহা অতিশয় অপ-রাধ বোধ করিলেন গ্রাহারা বুঝিলেন যে হস্তি স সাহেব কেবল বিরোধভন্ধনিসিত্তে এরপ করিয়াছেন কিন্তু ইহা অবৈধ হইয়াছিল ঐ রাজ্যে সর ইলিজ'-ইন্পিকে আহ্বান করিয়া তাঁহার ঐ কর্মগুহুগুনিমিত্তে অভিযোগ হইল তাঁহার বিচারাথে সর্গিল্বট ইলিয়ট্ সাহেব নিযুক্ত হইলেন যিনি পরে লার্ডমিণ্টনামে ভারতবর্ষের বড়সাহেব হইয়াছিলেন।

১৯৮০ শালের ২৯ জানুয়ারি কলিকাতায় নৃতন
সমাদপত্র হইল ইহার পূর্ফে ভারতবর্ষে তাহা কদাচ
পুকাশ হয় নাই ৷

অতঃপর চারিবৎসরপর্য্যস্ক হর্ষ্টি শসসাহেব বাজা-

লার কর্মে পুায় বিরত থাকিয়া বারাণসী ও অযোধ্যার কর্মনিবাহ করিয়াছিলেন এবণ মাইসরদেশীয়রাজা ছাইদরআলির সহিত যদ্ধ ও ভারতবর্ষীয় সমুদায় দেশে সন্ধি করিয়াছিলেন তাঁছার পশ্চিম দেশীয় ব্যব-ছার ই^লণ্ডে কোর্ট <mark>আবডিরেকটরেরা ও পার্লিয়ামেণ্ট</mark>-সভাপতিরা উভয়েই মিন্দা করিয়াছিলেন এবং ছৌস-আবকামানসতে ও প্রস্তাব হইয়াছিল যে তিনি ই^-লণ্ডের সন্মান ও উপ্কারের প্রাতিকৃল্য করিয়াছেন অতএব তাঁহাকে *স্থদেশে* আহ্লান উচিত **হয় কিন্তু** সকলের সন্মতি না হওয়াতে তিনি স্থপদে রহিলেন ১৭৮৪ শালের শেষে অযোধ্যায় পুনর্যাক্রাকরিয়া ১৭৮৫ শালের পৃথমে কলিকাতায় পুত্যাগন্দ করিলেন পরে নেক্করসন্সাহেবের হস্তে ধনাগার ও কোটউলিয়ন রাজ্য 'সমর্পণ করিয়া ই পলপ্তে গমন করিয়া জুনমানে তথায় উপস্থিত হইলেন।।

১৭৮৪ শালে এদেশের পরমোপকারক ক্রেবিলপ্তন্দাহেব লোকান্তর গমন করিলেশ তিমি অতি বাল্যকালে সভ্যকর্ম লইয়া ভারতবর্ষে আসিয়াছিলেন আগমন মাত্রে ভগলপুর জিলার কর্মে নিযুক্ত হুইলেন পরে ঐ স্থানের দক্ষিণ অঞ্চলে পর্ত্তে শ্রেণীতে যেসকল বন্য অসভ্য জাতিরা বাসকরিত তাহাদেরপুতি পুতিবাসি-লোকেরা অতিশয় দৌরাত্ম্য করাতে তিনি তাহাদের

উন্নতি নিমিত্তে মনোনিবেশ করিয়া শক্ত্যনুসারে তাহাদের সুখা করিতে সর্বতো ভাবে যতুকরিলেন এব॰ তাহাতে তিনি সুসিদ্ধ হইলেন তাঁহার ব্যবস্থা-দারা দেশের 🗐 অবিলম্বে ফিরিল যেসকল লোকের। অপকারিদিগের লুট করিত ভাহাদের নির্বিরোধ চরিত্র হইল কিন্তু ঐ দেশে উত্তম কৃষিকৰ্ম নাথাকাতে অতি-শয় পীড়া হইত তাহাতে ক্লেবিলণ্ডের শরীর পীড়িত হওয়াতে তাঁহাকে সমুদ্রে যাত্রা-করিতে হইল ও তথায় ঊনত্তিশ বৎসর বয়সে তাঁহার প্রাণত্যাগ -হইল কোর্ট-**অংৰডিরেক্টরেরা তাঁহার গুণে বাধ্য হইয়া** তাঁহার **অর-**যেসকল পর্বতীয় দরিদ্রলোকের তিনি সভ্যতা করিয়া-ছিলেন তাহারা তাঁহার গুণের স্বরণার্থে এক স্তম্ভনিনাণ করিতে অনুমতি প্রার্থনা করিল ইউরোপীয় ব্যক্তির ব্যরণার্থে এদেশীয় লোকেরা কেবল ঐ স্তম্ভ মাত্র করিয়া-ছেন ৷৷

১৭৮৩ শালে সরউলিয়ম জোনস বড়আদালতের বিচারকর্ত্র হইয়া এদেশে আসিলেন তিনি, স্বদেশে অতি পাঞ্জিরপে খ্যাত ছিলেন তাঁহার ভারতবর্ষে আগমনের প্রধান হেন্ত, এই ছিল্ল যে তিনি এদেশীয় প্রাচীন ইতিহাস ধর্ম,ও রীতি অনুসন্ধান করিতে পারিবেন অতএব আগমনমাত্রে তিনি সংকৃত অভ্যাস করিতে আরম্ভ করিলেন কিন্তু তাঁহার পণ্ডিত পাওয়া দুর্ঘট হইল কারণ ব্রাক্ষণেরা তাঁহাদের ধর্ম্যভাষাও ধৰ্ম গৃন্থ অপবিত্ৰলোকদিগের জানাইতে অনিচ্ছুক ছিলেন পারে বহুযভেল্পক উত্তম সংস্কৃতক্ত বৈদ্য পঞ্চ-শত টাক৷ মাসিক বেতনে তাঁহাকে ভাষা অধ্যাপন করিতে সুন্থত হইলেন জোন্সসাহে বের সংস্কৃতে এমত ব্যুৎপত্তি হইল যে তিনি মনুসংহিতা ইংরাজি করিলেন তিনি ভারত্ববীয় প্রাচীন রীতি ভাষা ও রাজকীয় নিয়মের অনুসন্ধানার্থে ১৭৮৪ শালে এসি-য়াটিকসোসাইটিনামে সভা কলিকাতায় স্থাপন করি-লেন যেসকল ব্যক্তিদিগের ঐ অনুসন্ধানে অনুরাগ ছিল তাঁহারা ঐকর্মে তাঁহার সহায়তা করিলেন এব ১ তাঁহাদের অনুসন্ধানদারা এবিষয়ে প্রথমত ইউরো-পায় সকললোকের মানস হইল হস্তি^সনাহেব ঐ সভার অতিশয় উৎসাহ বৃদ্ধি করিয়া ক্রমে সর্ক-প্রধান হইয়াছিলেন যেসকল ই^রাজেরা ভারতবর্ষে আসিয়াছেন তাঁহাদের সকল অপেকা সর্উলিয়ম জোন্স অতি প্রসিদ্ধ ছিলেন এবং অদ্যাপি এদেশীয় উত্তম পণ্ডিতেরা তাঁহার নামে অতিশয় মর্য্যাদা করিয়া থাকেন তিনি এদেশে দশ্বৎসর থাকিয়া উনপঞ্চা-শৎ বর্ষবয়সে মরিলেন ॥

হ্স্তি প্ৰসাহেব ইপলুৱে যাইবামাত্ৰে ডিরেক্ট্রেরা

প্রকাশিতবাকেন তাঁহার চরিত্রের গ্রাহ্যতা পুকাশ ক্রিলেন তাঁহার ভারতবর্ষীয় খনেককমে নিক্<u>না ছিল</u> কিন্তু ইছা অবশ্য স্বীকার করিতে হয় যে তিনি সুবুদ্ধি ও দৃঢ়তাপূর্ধক কর্ম করিয়াছিলেন এবং ক্লাইবসাহেব এই সামাজ্য জয় করেন তিনি ইহার দৃঢ়তা করেন তাঁহার প্রতিশ্বেসকল তিরস্কার হইয়াছিল তাহা ভৎ-কত্কি নিযুক্ত এদেশীয়লোকের প্রতি উপযুক্ত ছিল তাঁহার অধিকারকালে গঙ্গাগোরিন্দসি-ছ কান্তবাবু ও দেবীসি^হ এই তিনজনের প্রধান শক্তি ছিল ও তাঁহারা বিপুল**ধন স**ংগুহ করিয়াছিলেন এই তিন জনের মধ্যে দেবীসিৎহ অতিদুষ্ট চরিত্র ছিলেন তিনি জমি-দার থাকিয়া প্রজাদিগের অত্যস্তক্রেশ দিয়া ধনার্জ্জন করিয়াছিলেন ঐ নিন্দিত দুরাত্মার সর্বত বিশেষত দিনাজপুর প্রদেশে ক্রুরতাব্যবহার যেজন পূর্ব্বে শুনেন নাই তাঁহার প্রবণকালে অবশ্যই ভয়ানক বেধি হয় हे भारि अहे मकन विषया हि भे भारत हिन्दा है-য়াছিল কিন্তু ভারতবর্ষীয় লোকেরা উত্তমৰূপে জানি-তেন যে প্রভূর আজ্ঞার ও ভৃত্যদিগের দৌরাজ্মোর মধ্যে কিপর্যান্তভিন্নতা ঢ়িল তাঁহার রাজ্তের প্রথম ছয় বৎসর রাজসভাপতিরা শক্তানুসারে তাঁঁহার অপ্যান ও মনস্তাপ করিয়া ব্যাঘাত করিয়াছিলেন ঐ সময়ে বড়আদালতদারা তাঁহার শক্তিপ্রায় উচ্ছিন্ন

হইয়াছিল কিন্তু তিনি উদারতাপুর্যক কহিলেন যে তিনি

যপদ পরিত্যাগ করিবেন না কারণ সে অতি কঠিন
ব্যাপার ছিল তাঁহার এমত সাহস ও শক্তি ছিল যে

অত্যন্ত বিপদেও তাঁহাকে পরাভব করিতে পারিত
না রাজত্বের শেষাবস্থায় তিনি হাইদর আলির
সহিত অন্ধে নিবিষ্ট হওয়াতে সমুদাস রাজয় ব্যয়

ইইল তিনি পুনং২ ধনাভাবে ক্রেশ পাইতেন কিন্তু
ধনপ্রাপ্তিনিমিত্তে ক্রথন২ আশ্চর্য্য উপায় করিয়াছিলেন অতএব তিনি সর্বাণশে মহাত্মা ছিলেন এদেশীয় লোকেরা তাঁহার অতিশয় সমুম করিয়া থাকেন
এবং অদ্যাপি সন্তানাদিকে দয়াপুর্যক ওয়ারেন হস্তিণ সসাহেবের নামোচ্চারণ করিতে শিক্ষাদিয়া থাকেন ৷৷

১৭৮-৩ শালে কোম্পানির রাজকীয়ব্যাপারে পার্নিয়াণ্টের দৃষ্ঠিগোচর হইল এবং প্রধানমন্ত্রী কাক্স
সাহেও ভারতব্যাঁয় রাজত্বিষয়ে এক নুতন রীতি
প্রস্তাব করিলেন যদি সেরীতি চলিত হইত তবে এতদেশ কোম্পানির বিহস্ত হইত কিন্তু ইংলপ্ডীয়রাজ
তাহাতে বিমুখ হইলেন ও কাকস সাহেব পদচ্যুত
হইলেন তাঁহার পরিবত্তে উলিয়ম্পিট্সাহেব প্রধান
মন্ত্রী হইলেন তৎকালে তাঁহার বরস চন্তবিংশতিবর্ষমাত্র ছিল কিন্তু তিনি অমাত্য ত্তল্য উত্স বুদ্দিমান্
ছিলেন তিনি এতদেশীয় রাজ্য নির্বাহার্থে এক নুতন

রীতির প্রস্তাব করিলেন তাহা স্বয়ণ রাজার ও পর্লিয়ামেণ্টের উভয়েরি গুাহ্ছ হইল ইহার পূর্বে কোর্ট আবডিরেক্টরেরা রাজমন্ত্রির আজ্ঞাবিনিমু খে এদেশ
শাসন করিয়াছিলেন কিন্তু ১৭৮৪ শালে পিট্সাহেবের
নিয়মপত্রদারা ভারতবর্ষীয় রাজকীয় ব্যাপারে দৃষ্টি
পাত করিছে বোর্ড আব কমিসনর অথবা কাণ্ট্রোল
নামে কতিপার কর্মকারকের একসমাজ স্থাপিত
হইল ঐ সমাজাধিপতিরা রাজাদারা নিযুক্ত হইলেন
এবং কোম্পানির বাণিজ্যভিন্ন ভারতবর্ষীয় সকল
কর্মে তাঁহাদের হস্তার্পণ ক্রিবার ক্ষম্তা রহিল অতঃপর ইণলপ্তে এদেশীয় রাজত্বের নির্বাহ রাজমন্ত্রী ও
কোম্পানি উভয়দারা হইতে আরম্ভ হইল 11

मश्रदम अध्याय।

হণ্ডি সসাহেব সারজন মেক্ফরসন্ সাহেবের হস্তে রাজত্ব নিঃক্ষেপ্করিয়াছিলেন কোর্ট আবডিরেক্টরের। তাঁহার গৃহগমন সমাদ পাইয়া লার্ডকর্ণভয়ালিস্কে শাসনকর্ত্ব সেনাপতিও ও আজ্ঞাদায়কত্ব এই মিলিত তিন কম্মে নিযুক্ত করিলেন তিনি অতিপ্রাচীন্ত ভদ্র-বংশীয় এবং ধনবান্ ও সুবুদ্ধি ছিলেন তিনি নানা স্থানে বিবিধ প্রকার সরকারিক মাঁকরিয়া সকল বিষয়ে বিজ্ঞ হইয়াছিলেন তিনি ১,৭৮৬ শালে ভারতবর্ষে উপ-স্থিত হইলেন পরে যে সকল বিবাদধারা হণ্ডি স্সা- হেবের রাজত্ব দুর্যল হইয়াছিল তাঁহার উৎকৃষ্ট চরিত্র ও প্রধানশক্তিদারা তাহার একেবারে শেষ হইল তিনি সপ্তবৎসর পর্য্যন্ত সুসিদ্ধিপুত্রক দেশরক্ষা করি-লেন মাইসর্দেশের অধিপতি হাইদরঅংলির পুত্র টিপুসুলানের সহিত যুদ্ধ করিয়া তাঁহার দর্প থর্ক করি-লেন এবং তাঁহাকে নিজ রাজ্যের অধিকৃংণশ ও যুদ্ধের বছব্যয় ইণরাজদিগকে দিয়া সন্ধি করিতে হইল ৷৷

ই লণ্ডে হণ্টি প্সমাহেবেরপ্রতি লোকের হি পা ক্রমে২ পুবৃদ্ধা হইল পরে ১৭৮৮ শালের ১৩ কিত্র-য়ারি হৌসআবকামান্স হৌস আবলার্ডসের নিকটে তাঁহার অপরাধ ও দুশ্চরিত্র নিমিত্তে অভিযোগ করি-লেন অসাধারণ পুাগল্যু পূর্বক তাঁহার বিচার আরম্ভ হইল তাহাতে রাজকীয় পরিবার সমুদায় কুলীন কুলীনা ও ই^লণ্ডস্থিত ক্ষমতাপন্ন লোকেরা ভাঁহার দোষ দর্শ-কৰপে,,ঐ সম্ভ্ৰান্ত সভায় উপস্থিত হইলেন তাঁহার চরিত্রের যেৰূপ শাচনি হইল ইহার পূর্ব্বে রাজকীয় সমুস্তি ব্যক্তির কদাচ সেক্রণ হয়নাই নানাপুকারে তাঁহার বিচারে সাতবৎসর বিলম্ব হইল পরে ১৭৯৫ শালের ২৩ আপ্রিল ছৌসআবলার্ডসের প্রায় সকলেই তাঁহার পুতি যে২ দোষের অভিযোগ হইফ্লছিল তাহার মোচন করিলেন।।

বাঙ্গালা ও বেহার দেশের ভূমিজ রাজস্বের চ্রিন্তন

চুক্তি করাতে ভারতবর্ষে কর্ণওয়া**লিসের নাম** চির-স্মরণীয় আছে সর্বদা রাজস্ব আদায়ের পরিবর্ত্ত হওয়াতে কোর্ট আবঁ ডিরেক্টরেরা দেশের অপকার বোধ করি-লেন তাঁহারা বুঝিলেন যে দেওয়ানী প্রাপ্তি অবধি প্রায় ব্রি°\শৎবৎসর অতীত <mark>ইইল অ</mark>তএব ইউরোপ্<u>রী</u>য় আনলারা এভূনিবিষয়ে বিশেষ বৃত্তান্ত অরগত হইয়। থাকিবেন তাঁহার। বহুপুকার বিতর্ক করিলেন যে এক্ষণে দীর্ঘকাল পর্যন্ত যথার্থ রাজস্ব আদায় হইতে পারে এবং তহি৷ হইলে পুজাদিগের পক্ষে ও রাজ্যের পক্ষে মঙ্গল হুয় অতএব চিরকালের নিমিত্তে রাজস্বের নির্ধারণ করিতে তাঁহারা নিতান্ত ইচ্ছুক ছিলেন কিন্তু লাডকণ্ওয়ালিস দেখিলেন যে এবিষয়ে রাজসভার यत्पष्ठेक्टान नाहे अञ्धंव किय़ थ्कान भर्याञ्च भूकिन রীত্যন্সারে বর্ষেৎ রাজস্বের চুক্তি করিলেন এবং তংকালে কর্মাদায়কারিদিগের পুতি কত্বিপয় পুশু পাঠাইলেন যে তাঁহাদের উত্তরদারা ভূমিজ রাজস্বের উত্তমজ্ঞান হইতে পারে তাঁহারা যে২ নিবেদন প্রাঠাইলেন তাহা সম্পূর্ণ ছিল না কারণ উহু৷ কেবল এদেশীয় আমলাদিগদারা লিখিত হইয়াছিল ঐ আম-लाता अविवरस विलक्ष्ण. ध्रनार्ड्सन कतिरलन अ नकल সম্বাদ যদ্যপিও অসম্পূর্ণ ছিল তথাপি তৎকালে তদ-পেকা উত্তম পাওয়া যাইত না অতএব দশবৎসরের

নিনিত্তে চুক্তি হইন এবং ঘোষণা হইল যে যদি কোট আবিডিরেক্টরেরাইহা গ্রাহ্য করেন তবে ঐরপ চির-স্থায়ি হইবে জান্ যোর নামক একজন কোম্পানির সভ্যভৃত্যমধেদ অতি পুধান রাজস্ববিষয়ে[।] বিশেষ ব্ত্ৰাস্ত লিখিতে নিযুক্ত হ'ইলেন ঐ বিষয় তিনি যতু পূর্ষক অভ্যাদ করিয়াছিলেন তিনি চির্ন্তন চুক্তির পুস্তাব করিয়া স্বয়ণ বাধা পাইয়াছিলেন তথাপি উহা করিতে রাজসভাগক অনির্বাচনীয় সাহায্য দিয়া-ছিলেন ঐ দশ বাৰ্ষিক নিষ্পত্তিতে ইহানিদিষ্ট ছিল যে যেসকল জমিদারেরা এপর্য্যন্ত কেবল রাজস্ব আদায়-মাত্র করিতেন তাঁহাদের অতঃপর ভূমির স্বামী বোধ-হইবে ও তাঁহাদের সহিত করের চৃক্তি হইবে যে সকল প্রাচীন রাজস্বের খাতা এদেশীয় আমলারা নষ্ট করিতে পারেন নাই সেসকল অনুেষণ করাতে অতীত-কালের রাজম্বের গড়হিসাবে রাজম্বের স্থিরতা হইল ঐনময়ে মধ্যন্ত ও মধ্যন্তের রাজন্ব আদায় নিষিদ্ধ হইন অতএব জনিদারদিগের এবিষয়ে ব্যয়ের অপ্রতা হইল রাজসভায় আরে৷ কহিলেন যে নিকর ভূমির সহিত এচুক্তির কোন সম্বন্ধ রহিল না ঐ সকল ভূমির বিষয়ে তাঁহারা আদালতে নিচার করিয়া যাহা যথার্থ বুঝিবেন তাহা রাখিবেন ও অন্যথা বুঝিলে তাহার ব্যাঘাত করিয়া ঐ ভূমি. গুহুণ করিবেন এই সমুদায়

প্রস্তাব কোর্টআবভিরেক্টরদিগের নিকটে প্রেরিত হইবামাত্রে তাঁহারা অবিলম্বে গ্রাহ্য করিয়া ঐবিষয় চিরন্তন করিতে লার্ডকর্ওয়ালিস্কে লিখিলেন ১৭৯৩ শালের ২২ মার্চ বাঙ্গালা ও বেহার দেশের রাজস্বের, নির্ধারণ চিরস্তন করিতে ঘোষণা হইল তাহাতে ৰাহ্বালা ও বেহারদেশে, ৩১০৮ ৯১৫০ মুদ্রা এবং বারাণ-পীতে ৪০০০ ৬১৫ মুদ্রা বার্ষিক কর স্থির হইল ইহাতে কোন সন্দেহ নাই যে চিরস্তন চুক্তিদারা বাঙ্গালার মঙ্গল হইয়াটে যদ্যপি পূর্ব্বত পুনঃ২ রাজস্বের পরি-বৈত্তি হইত তুবে দেশের এমত উত্তম অবস্থা কদাচ হইত্না কিন্তু ইহাতে দুই দোষ হুইয়াছিল পুথমত 'ভূমি সকল ও তাহার মূল্য উত্তমৰূপে নাজানাতে কো**ন**২ঁ স্থানের অতি অধিক ও কোন২ স্থানের অতি জপ্প কর ধার্য্য হইয়াছিল দিতীয়ত কৃষকদিগের রক্ষার্থে কোন উপায় হয় নাই এতদেশীয় যেসকল রাজ্য আদায় কারিব্যক্তিরা জমিদার পদাভিষিক্ত হইলেন কৃষক দিগের মধ্যে অনেকের তদপেক্ষা অধিক লভ্য ছিল।

বাঙ্গালার ইতিহাসমধ্যে ১৭৯৩ শালে সুপর স্বরগীয় আছে ব্রিটেনদেশীয় রাজত্বের রাজনিয়ম বাঙ্গালায় ঐ শালে পুথমে হয় ক্রমে২ যেসকল নিয়ম হইয়াছিল লার্ডকর্ণগুয়ালিস তাহা সংগৃহ করিয়া অনেক
পুকার নূতন নিয়মের সহিত্ত একত্র করিয়া একগৃন্থ

পুকाশ করিলেন ঐগুস্থ ভাবি সকলনিয়মের মূলী-ভূত হইল ১৭৯৩ শালের ঐযাবৎ নিয়ম কঠিনতা-বজ্জিত ও অতিবিজ্ঞতাপূর্মক হইয়াছিল এবং তাহাতে বড়গাহেবেরপ্তি সকলের অতিশয় শ্রনা হুইল ঐনিয়ম সকল এদেশীয় ভাষায় অনুবাদিত ছইয়া দেশের সর্পত্র প্রেরিত হইল স্মূপ্তিকার এদেশীয় লোকেরা অবশিষ্টনিয়মে অক্স থাকিলেও ১৭৯৩শালের ঐ নিয়ম স্কুদ্যাপি এমত অভ্যস্ত রাখি-য়াছেন যে ইচ্ছাক্রমে তাহার প্মাণ দেখাইতে পারেন ঐ নিয়ম কর্ষ্টরসাহেব বাজালাভাষায় , অনুবাদিত করিলেন তিনি তৎকালে সর্বাপেক। উত্তম ব্যঙ্গাল। জানিতেন তিনি কিয়ৎকাল পরে বাঙ্গালাভাষার অভিধান পুথমে পুস্তত করেন উত্তম বিদ্বান্ এন, বি, এড্গন্ষ্টোন সাহে্ব ঐ নিয়নসকল পারসীক ভাষায় অন্বাদিতক্লরেন এবিষয়ে উক্তমাহে যে তাঁহার ঐ নির্নিতি দারা রাজ্যভাপতিরা এমত সম্ভুষ্ট হইয়াছি লেন যে ভাঁহাকে দশসহসুমুদ্রা পারিভোষিক দিলেন ঐ নিয়মদার। ধর্মাধিকরণে যে রীতি হইল তাহা এদেশীয় লোকের দেওয়ানী আদালতে পদবৃদ্ধির পূর্ব্বা বধি পায় চতারি শৎবর্ষপর্যান্ত ছিল লার্ড কর্ণওয়া-লিপ্দেওয়ানী আদালতে ক্ষে২ বিচারার্থে পাঁচ থাক कतित्वन यथा मून त्मक अतः भवतं भागीन उ तिकि हेत उ

জিলার বিচারকর্তা ইহাঁদের সর্ফোপরি আট্২জিলায় এক২ ধর্মাধিকরণ এব ওভারতবর্ষমধ্যে সদর দেও-यानी जामानठ नर्स्र नय इहेन कर्व आनिन् छे ९ काठ লোভনিধারণার্থে কোম্পোনির সভ্যভৃত্যদিগের বেতন বৃক্তি করিলেন কিন্তু তৎকালে এদেশীয়ভৃত্যদিগের নেতন অতি ৰুপ্প স্থির হইল ইউরোপীয় আমলারা অতি-উচ্চপদে কিয়ৎশতমূদু৷ মাসিক পাইতেন তাঁহা-দের কিয়ৎসহসু হইল এদেশীয় লোকের পুর্দে অতি উত্ত্য বেতন ছিল যেমন ফৌজ্দারেরা বর্ষে শৃষ্ঠি বা সপ্ততি সহসু সুদা পাইতেন এব° দেশের নায়েবদেওয়ানের বর্ষে লয়নকটাক। বেতন ছিল কিন্তু ১৭৯৩ শালে প্রধানপদস্থিত এদেশীয় লোকের মাসিক বেতন শত মূদ্রার অধিক রহিল না সে যাহা হউক তথাপি লার্ড কর্ণ ওয়ালিসের ব্যবস্থা দেশের সর্ব্বত প্রিয় বোর্থ হইল তিনিই কেবল রাজসভার (স্থ্রতা করিলেন 🕫 চির-স্তুস্ত্তিবারা এদেশীয়লোকের মনৌভীষ্ট নিদ্ধি করি-লেন প্রজারা যে তাঁহার প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করিয়া-ভিলেন সে তাঁহার দয়াও বুদ্ধির উপযুক্ত বটে কেটেআব-ডিরেক্টরের। তাঁহার গুণবোধ**একাশার্থে ই**∾**লঙে** ্ভারতবর্ষগৃহনামক যে বাউনি আছে তাহাতে তাঁহার প্রতিমৃত্তি হাপন করিতে আজা করিলেন এবং তিনি বেদিবদ ভারতবর্ষহুতে যাত্রা করিলেন তদব্ধি

বিশ্পতিবৰ্মরপর্যান্ত তাঁহাকে ৫০০০ মুদ্রা বা যিক বৃত্তি দিয়াছিলেন ৷৷

২৮ আক্টোবর সরজান্যোর বড়সাহেবের কর্মে প্রবৃত্ত হইলেন তিনি বাল্যকালে ভারতবর্ষে সভ্য ক্রেম্ আসিয়া অবিলয়ে উত্তমবৃদ্ধি ওবিবেচনাদার। খাত হইলেন তিনি দশবার্ষিক চুক্তিকালে এদে-শীয় রাজস্ববিষয়ে ঐ সর্কবিদিত বৃত্তাস্ত লিখিয়াছি-লেন পরে ইপলণ্ডের পূধান মক্তি পিট্সাহেবের সম্ব্রুখে ঐ লিখন পুেরিত হওয়াতে তিনি লেখকের বুদ্ধিমতা ও পারকতাদারা এমত চমৎকৃত হইলেন যে কোর্ট-আবভিরেক্টরদিগের সভাস্থ হইতে আহ্বান করিয়া তথায় লার্ডকর্ওয়ালিসের অনন্তর ষোরসাহেবকে তৎক্ষে নিযুক্ত করিতে স্থির করিলেন এবণ তৎক্ষ-ণাৎ তাঁহাকে বেরোনেট উপাধিদারা সম্ভ্রান্ত করি-লেন তাঁহার পদপুাপ্তির পরবৎসরে ঐ অপক্ষপাতি বিচারকর্ত্তা এব° পুসিদ্ধ পিণ্ডিত সরউলিয়মজোন্স সপ্তচন্তারি শৎবর্ষ বয়সে পুগণত্যাগ করিলেন তিনি সরজাশ্যোরের পরমাত্মীয় ছিলেন অতএব যোরনা-হেব তাঁহার জীবনের বৃত্তান্ত সংগ্রহ করিলেন।।

১৭৯৫ শালে নবাৰ মৰাগ্নিকউদ্দোলা মারিলে তাঁহার পুত্র নাজির উল্মুল্ক পিতৃপদ প্রাপ্ত হইলেন কিন্তু তৎকালে মুরসিদাবাদের নবাবনিয়োগ অতি সামান্য

কর্মছিল অতথ্য এই বলিলাম যে তাঁহার পিতার , যে মাসিক ছিল তাহা তাঁহাররহিল। সরজানবোর লার্ড कित्रोथनारंत्र शक्षव अत्र शर्या स्व कितिराप जातर-वर्ष मामंन कतिया समाप शृतिकाग कतिएव शुर्थना করিলেন ঐ কাল মধ্যে লিখনোপযুক্ত কোন বৃত্তাক্ত ঘটে নাই তাঁহার রাজত্বের শেষাবস্থায় বিপদ উপ-ন্থিত হইল এব°**\ তাঁহার সৈনে**/রা অসম্ভোষের চিহ্ন দেখাইতে লাগিল মাইসরদেগের রাজা টিপুসুল্তান ফরাসিদিগের সহিত তৎকালেঐকমত্যকরিলেন ফরা-সিদিগের তৎকালে ই৲রাজদের সহিত যুদ্ধ হইতে ছিল স্ল্তান নিজসাহায্যার্থে তাহাদের সৈন্যপুর্থনা করিলেন ইণরাজেরা শেষ্যুদ্ধে তাঁহার দর্প থর্ক করি-য়াছিলেন তাহাতাঁহার বিলক্ষণ স্বরণ ছিল এবণু পুতি-হি॰ সা করিতে ক্রোধে দঞ্চপ্রায় ছিলেন এব॰ ফরাসি-দিগের সাহায্যদারা ভারতবর্ষছইতে ইণরাজদিগের দূরীকরণের আশা করিয়াছিলেন কোঁট আবডিরেক্ট-রের।, এই সকল অবস্থ। অবগত হইয়া একজন সূবুদ্ধি বড়সাহেব পাঠাইতে স্থির করিলেন তাঁহারা লার্ড-কণ্ওয়ালিস্কে পুনর্কার রাজ্যভার লইতে বিনয়পূর্বক · নিবেদন করিলেন তাহাতে তিনিও সমত হইলে**ন** কিন্তু তাঁহার আগমনের উদ্যোগকানে তিনি আইর-नक्षित वर्षमाञ्चि इहेरनन्।।

ডিরেক্টরেরা তৎক্ষণাৎ লার্ডমরি টন্ সাছেবকে ঐ উচ্চপদপ্রদান করিলেন তাঁহার নাম পরে মার-कुश्चिम् अञ्चालम्झि इहेननार्ड कर्व अञ्चालित्मत जारात নিকটে তিনি শিক্ষিত হই য়াছিলেন এব^০ ভাঁরতব্যীয় লালনীতিশিকায় সতত রত ছিলেন তি্নি **১**৭৯৮ শালের ১৮ মে কলিকাতায় আসিলেন তাঁহার ঐ বিপৎকালের উপযুক্ত ভবিষ্যদৃষ্ঠি শক্তি ও স্থির-প্রতিক্রতাপ্রভিৃতি সঁকলি ছিল তিনি ভারতবর্ষীয় কর্মে হস্তার্পণ করিবামাত্রে এই মহারাজ্যবিষয়ে ষেসকল বিপদের সভাবনা ছিল তাহা অদৃশ্য হইল এব॰ সকললোকের মনে বিশ্বাস হইল তিনি যখন ভারতবর্ষে আসিলেন তথন কোম্পানির প্রতি লোকের এমত অবিশ্বাস ছিল যে কোম্পানির কাগজের বার্ষিক বৃদ্ধি শতকরা বারটাকা থাকিলেও তাহার বিক্রয়-কালে শতকরা চারিটাকা ক্ষতি হইত আর সৈন্যেরা অতি দুর্বল ও অসম্ভুষ্ট হইয়াছিল এবং উভ্রে সিঞ্চি-য়ারা ও দক্ষিণে টিপুরা ভয়প্রদর্শন করাইজেছিল ও করাসিরা ক্রমে২ ভারতবর্ষে শক্তি প্রাপ্ত হইতে ছিল তিনি অতিশীঘু দৈন/দিগের খুনিয়ম করিলেন ক্রাসিদের যেসেনাপতিরা হাইদ্রাবাদে বিপুল সৈন্য রাখিয়াছিল তাহাদের দুর্ন্ত্ত করিয়া তাহা-দের সঞ্চিতবৈদ্যদিগের ছিন্ন ভিন্ন করিলেন এবং

ভৎপরিবর্ত্তে তথায় একপ্রস্তুত ইণরাজি সৈন্য স্থাপিত করিলেন পারে টিপুর সহিত যুদ্ধের ঘোষণা করিলেন কারণ তিনি সকল শত্র অপেক্ষা পরিপকৃ হইয়াছিলেন কিন্তু মাদ্রাজের সভাপতিরা তাঁহার বাঞ্ার সাহায্য নাকরিয়া বিপরীত হওয়াতে তিনি অবিলয়ে স্বয়শ তথার যাইলেন এবং তাঁহাদের দ্রাচারের দমন করিয়া সমুদায় কার্য্যভার স্বয়^ লইলেন পরে শীঘু এক প্রস্তুত টসন্য পুস্তুত হুইয়া ১৭৯৯ শালের ২৭ মার্চ টিপুর ়সহিত যুদ্ধার্থে যাত্রা করিল তাহাদের গতি এমত ত্বরাপূর্ব্বক হইয়াছিল যে ৪ মে টিপুর রাজধানী শৃঙ্গাণীয় ইপরাজদিগের হস্তগত হইল টিপু স্বয়প যুদ্ধে নারা পড়িয়াছিলেন অতএব এইকপে হাইদর পরিবারের রাজ্যের শেষ হইন কোর্ট আবড়িরেকুটরেরা এই তেজফিবুদ্ধি শ্রবণ করিয়া বড়সাহেবকে পঞ্চাশৎ-সহসুমুদা বার্ষিক বৃত্তি করিয়াদিলেন্।।

১৭৯৯ শালের আকটোবর মাসে ডাক্তার মার্যমন সাহের ও ওয়ার্ডসাহের এবং তাঁহাদের বন্ধুলোকেরা বাঙ্গালার মধ্যে প্রথমতঃ শ্রীরামপুরে প্রোটেণ্ডাল্টমিসনর অর্থাং খ্রীন্থিয়ান্দিগের মত বিশেষ লোককে ভজনা করাইবার নিমিত্তেইত স্ত তঃ দূত প্রেরণ করিবার উদ্যোগ করি লেন ডাক্রাক্রকেরিসাহের ছয় বৎসর পুর্ফের্ডারতবর্ষে আসিয়া মান্দা অঞ্চলে ছিলেন তিনি অবি-

লম্বে আসিয়া ভাঁহাদের সহিত্যুক্ত ছইলেন সর্কবি-দিত আছে যেগ্রীরামপুর মিসন্ তাহা ঐ তিন ব স্থাপন করেন ইহার প্রধান অডিপ্রায় এই ছিল যে ভারতবর্ষ মধ্যে খ্রীষ্টিয়ান্ ধূর্মের প্রচার করেন তাঁহারা ভংক্ষণাৎ ছাপাখানা করিলেন এবং চারল্স উল্কিন্ সাহেবের বাঙ্গালা অকর খুদিতে এদেশীয় যেলোক সাহায্য করিয়াছিলেন তাঁহাকে পাইয়া প্রায় এদে-শীয় সকল প্রকার অষ্ঠরের মূল প্রস্তুত্ করিতে নিবুক্ত করিলেন তাঁহারা মহাভারত রামায়ণ ও অন্যান্য বাঙ্গালা পুত্তক, প্রকাশ করিয়া এভাষার উন্নতিতে পুথম পুবৃত্তি দিলেন এবং নিজ ধর্ম্য পুস্তকসকল বাঙ্গালায় সংস্তেও ভারতবর্ষে চলিত অন্যান্য ভাষায় অনুবাদ করিতে নিযুক্ত রহিলেন তাঁহার৷ ইউরো-পীয় রীতানুসারে পূথমে বাঙ্গালা পাঠশালা স্থাপন করিলেন তাঁহারা বিনাপুর্কারে এতাদ্শ পরিশ্ন করিতেন এবং নিজ২ যে অধিক আয় ছিল তাহাও ঐ বিষয়ে ব্যয় করিতেন তাঁহাদের চেষ্টানারা বাঙ্গালা ভাষার 'যেকাপ উন্নতি হইল সেৰূপ অন্যকোন জনের याजू इस नाहे वन हेशां वन। याहेत्र शादत य वाप-শের সভ্যতা ও উন্নতির উদ্রেক পূথমে শ্রীরামপুরে रुय ॥

লাড ওয়ালেস্লি দেখিলেন যে সভ্যত্ত্যেরা এদে-

শীয় ভাষা উত্তমক্ৰপে জানেন না অতএব ১৮০০ শালে কলিকাতায় ফোট উলিয়মনামক পাঠশালা স্থাপন করিলেন যাঁহাকে কোম্পানির বারিক বলা স্নায় সকল কোম্পানির কেরাণীরা ইপলগু হইতে আসিয়া পুথমে তথায় থাকিতে লাগিলেন পরীক্ষাদারা তাঁহাদের উত্তুস বিদ্যা পুকাশু নাহইলে এবং কোম্পানির ক্মে পারগ এমত সম্বাদ নাহইলে সরকারি কর্ম প্রাপ্ত হইতেন না তথায় উত্তনোত্তন পণ্ডিত নিযুক্ত রহিলেন নানাপুকার গুন্থ বান্ধালায় ও অন্যান্য ভাষায় সণগৃহীত হইয়া মুদ্রিত হইল এইকপে এদেশের উর্তিতে নৃতন প্রবৃত্তি হইল এদেশীয়ভাষাশিকা করাইতে যে ২ লোক ছিলেন তন্মমধ্যে উড়িস্যানিবাসী মৃত্যুঞ্জয় বিদ্যালকার প্রধান ছিলেন তাঁহার উৎক্ষরুদ্ধির দারা পাঠশালায় অত্যন্ত সমূম হইল কোট আবডিরেক্ট-রেরা এইপাঠশালাস্থাপন, শুনিয়া এরপ রীতি গ্রাহ্ করিলেন কিন্তু এরপ ব্যাপার অধিকব্যয়সাধ্য বলিয়া তাহার সংক্ষেপ করিতে আজ্ঞা করিলেন তথাপি বহু-কালপর্যান্ত উত্তম পণ্ডিত নিযোগ করিয়া এতুদেশীয় ভাষাশিকা হইতেছিল অতএব আনরা স্থির করিতে পারি যে বাঙ্গালাভাষার শৈক্ষা ও উন্নতিনিমিত্তে গ্রীরামপুর মিসনে ও ফোর্ট উলিয়ক পাঠশালায় প্রথম

উদাম হয় ডাক্তারকেরি সাহেব ঐ স্থলে ঐ ভাষার শিক্ষক ছিলেন।।

১৮০৩ শালে লাভ अয়ালেশ্লিকে निक्षियां निर्श ও হন্কারের সহিত যুদ্ধ করিতে হইন কিন্তু ইহার সুমাপ্তি শীঘু হইল ঐ উভয় প্রবল রাজারা পরাজিত হইয়া থর্জ হইনেন কিন্তু তাঁহাদের রাজ্যের,অপ্স অংশ ও ই°রাজদিগের সামুজে আসিলনা সেপ্টেম্বর্যাসে ই॰ রাজের। মুসলমান্দিগের প্রাচীন রাজধানী দিল্লী অধিকার করিলেন মহারাষ্ট্রীয়েরা তথাকার মহারাজের প্রতি দৌরাক্সা করিয়া ক্লাণ করিয়াছিলেন পরে তাঁহাকে শক্তিব্যতিরেকে পুনর্বার মাহারাজের স্থুন দিয়া পঞ্চৰশানক মুদা বার্ষিক বৃত্তি স্থির করিয়া দিয়া-ছিলেন। ঐসনয়ে নাগপুরের রিজোর সহিত লাড ওয়া-লেস্লির বিবাদ উপস্থিত হইল তিনি অবিলয়ে এক প্র-স্তুত বৈন্য উড়িস্যায় পাঠাইলেন তাহাতে মঁহারাষ্ট্রী-য়েরা পলায়ন করাতে ১৮০৩ শালের ১৮ সেপ্টেম্বর ইণরাজি সৈনেএরা জগন্ধাথের যন্দির অধিকার করিল এব॰ আলিবর্দির রাজত্বের শেষবৎসরে উড়িস্যাদেশ নহারাষ্ট্রীয়দিগের দত্ত হইয়াছিল অস্টচভারিণ্শং-বর্ষের পরে বাঙ্গালার সহিত যুক্ত হইল পুরীস্থিত शुर्ता श्चिमिरगत शुं **अ** जिम्सा ७ माना जाशूर्वक ইণরাজদিনের ব্যবহার হইল তাহাদের প্রতি মন্দি-

রের কর্মনির্বাই করিতে ও স্বেচ্ছাক্রমে, দেবতার
কর আদায় এবং ব্যয় করিতে অনুমতি রহিল কিন্তু
কতিবর্ষপরে করের বৃদ্ধি করিতে রাজসভাপতির।
মন্দিরের ভার লইয়া সজাতীয় আমলাদারা কর আদায়
করিতে আর্ড করিলেন যে কর উৎপন্ন হইত তাহার
কিয়দংশ দেবতার ব্যয়ার্থে দত্ত হইত অবশিষ্ঠ সরকারি ভাগুরে আসিত।।

এদেশে বহুকানাবধি <mark>অপর এক' রীতি ছিল যাহা কাল</mark> জ্বনে পিতাসাভার স্মরণ যোগ্য নহে যে তাঁহারা নিজ২' সম্ভানকে গন্ধাসাগরে নিঃক্ষেপ করিতেন সম্ভানদিগকে তথাকার উপদ্বীপে नहेशा धर्मा अञ्च ७ পূজাদি সমাগু হইলে সমুদ্রমধ্যে নিঃফেপ করিতেন এইরপ ব্যবহার ধর্ম্মার্থেহ্ইত কিন্তু কোন শান্তে এরপ করিবার নির্দেশ নাই ১৮০২**∙**শালের ২০ আগ**ন্ত বড়সাহেব এই**ক**প** ব্যবহার নিবারশার্থে এক ভিরম করিয়া একেবারে তথায় এক প্ৰস্তুত দেপাই পাঠাইলেন যদ্যপিও এৰপ নির্মে এতকৈশীয় লোকের ধর্মের প্রতি হিশ্সাকরা হুইল তথাপি দেশন্থ্যেকোন জনরব শুনার্গেল না এবং পঞ্বি: শতিবৎসরপরে. সতীগমনরোধকালে বাদানুবাদে ঐ বিষয়ের উত্থাপন করাতে অনুভব হইল যে তাহা এমত বিষ্ঠু হইয়াছে যে এৰপ ব্যৱ-.হার ছিন ইহাও অনেকে স্বীকার করিল না ॥

ভারত্রবীয়ইতিহাসে লার্ডওয়েলেস্লির চরিত্র দেদীপানান আছে তাঁহাকে নানাস্থানে যুদ্ধ করিতে : হইয়াছিল এব তাহাতে এই সামাজারসীমাপুর্কা-পেক্ষাতৃতীয়া শশের অধিক বিস্তার করিয়াছিলেন ও পঞ দশকোটী চত্বারি শংলকমু দাপর্যাপ্ত রাজস্বের বৃদ্ধি করিয়াছিলেন কিপ্ত এই অধিক রাজস্ব থাকিলেও পূর্বা-পেকা অধিক ঋণ হইল ড়িরেক্টরেরা তাঁহার যুদ্ধজনক উপায়ে রতথাকাতে স্বতিশয় অসম্যেষ প্রকাশ করি-লেন তাঁহাদের বাঞ্চাছিল যে তিনি বিরোধশুন্য রাজ <mark>নীতিব্যবহার করেন তাহাতে তাঁহার্দের</mark> প্রাপ্তরাজ্যে<mark>র</mark> কিয়দ শ পরিত্যাগ করিতে হইলেও স্বীকার ছিল তাঁছারা এপর্য্যন্ত জানিতে পারেন নাই যে ভারত-ৰৰ্ষমধ্যে তাঁহারা সকলবিষয়ের নিষ্পত্তিকারক হইবেন অপবা সকলবিষয়ে শক্তিহীন হইবেন তাঁহাদের এমত चून हिन य शार्तिशारमा के बियम न क्षन करिया-ছেন বলিয়া লার্ড ওয়েলে স্লিকে দোষী করিলেন তিনি দেখিলেন যে ড়িরেক্টরদিগের তাঁহার প্রতি অবিখাস হইয়াছে একারণ সভাহইতে প্রকাশপূর্বক তাঁহাদের পত্রের উত্তর পাঠাইলেন পরে রাজসভাইইতে বহি-ভুত হইবার স্থির করিলেন ১৮০৫ শালের শেষে তিনি ইংলপ্তে যাত্রা করিলেন তথায় উপস্থিতিমাত্রে পার্লি-দানেক্রের মধ্যে ও বাহিরে উভয়স্থলে ভাঁহীর প্রতি

অভিযোগ হইল তাঁহার পূর্ববর্ত্তি কাইব সাহেব ও হন্তি পস সাহেব এই দুই মহাশয়ের প্রতি যের্নপ হইয়া-ছিল সেইৰূপ হইল কিন্তু তাঁহার প্রতি তাদৃশ প্রচণ্ডতা হয় নাই তাঁহার যেসুবুদ্ধিযুক্ত রাজনীতি ও পুভাযুক্ত জয়দারা এই সামুজ্যের এমত অধিক বিস্তার হইয়া-ছিল তাহার এইনপ পুতিফল হইল পার্নিয়ামেণ্টে তাঁহার পূতি অভিযোগে এই এক আশ্চর্য্য ঘটনা হইল যে ছৌস-আবলাড়ে লাড় ময়রা সাহেব তাঁহার চরিত্রে তিরকার क्रियाहितन अर्वे क्रियाहितन त्य जिनि शार्तिया-নৈন্টের নিয়মের বিপরীতে, অযথার্থরূপে জয় করিয়া-**ছেन किन्ত उपविध प्रभाव भारत मार्च मार्च भारत है। स्वा** বড়সাহেব হইয়ালাড় ওয়েলেস্লিকে যেনিমিত্তে নিকা করিয়াছিলেন তদপেক্ষা অধিক যুদ্ধ ও অধিক জয় করিয়াছিলেন অতএব যাঁহারা এসিয়াতে কদাচ আসেন নাই ও এতদেশীয়লোকমধ্যে ব্যবহার কল্পেন নাই তাঁহাদের ভারতবর্ষীয় রাজ্যোপায় যুণার্থ বিবেচনা কর। এমত কঠিন হইতেছে ।।

অনন্তর কোর্ট আবজিরেক্টরেরা অধিক হালিতেও বিরোধ ভক্ত করিয়া বাদ্যের লাঘব করিতে হির করিলেন ভাঁহারা লাড় কর্ণগুয়ালিস্কে নৃতন বড়-নাহেব করিতে ইচ্ছা করিলেন তিনি অভিশয় প্রাচীন হইয়াছিলেন তথাপি ভাঁহাদের প্রার্থনায় সমত হই- লেন এব° কলিকাতায় যাত্রাকরিয়া ১৮.০৫ শালের ৩০
জুলাই তথায় অবতরণ করিলেন পরে এতদ্দেশীয় রাজাদিগের সহিত সন্ধি করিতে অবিলয়ে পশ্চিলদেশে
চলিলেন কিন্তু গমনকালে ক্রমে২ অসুস্থ হইয়া ঐ
শালের ৫ আক্টোবর প্রাণত্যাগ করিছেন তাঁহার
মৃত্যুসম্বাদ ই লণ্ডে যাইলে কোটআবৃতিরেক্টরেরা
তাঁহার সন্ধান জানাইতে তাঁহার পুত্রকে ৪০০০০ পৌও
উপায়ন দিলেন 11

রাজসভার প্রধান সভাপতি সরজর্জবার্লো তৎক-ণাৎ তৎপদে বড়সাহেব <u>ছুইলেন কোট</u> আবডিরেক্ট-রেরা তাঁহার ঐ উচ্চপদে নিয়োগ স্থির করিলেন কিন্তু রাজমন্ত্রিরা তাঁহাদি গকে জানাইলেন্যে একম্মে নিয়ো-গের ভার তাঁহাদের আছে এবিষয়ে প্রথর বাদানু-বাদ ইইল অবশেষে লাড মিণ্টকে বড়সাছেবের কর্মে नियाश कतिया विवासितृ भिष इहेन नवकंकंवार्लाव রাজত্বের মধ্যে এইমাত্র কর্ম হইল যে রাজসভায় জগ-ক্লাথের নিকটে^{*} ভীর্থযাত্রিস্ইতে স্বরণ কর<u>গু</u>হণকরিয়। মন্দিদের কভূত্ব করিতে ন্থির করিলেন প্রজাদিণের তথায় গমনে প্রবৃত্তি দিতে নানাপ্রকার উপায় কল্গিত হইল এইৰূপে তৃথাকার রাজ্যের বৃদ্ধি হইল এবং তৎকালে যে২ রীতি ছইয়াছিল তাহা তৎপরে ত্রিশ বহসরহইতে অংখিককালপর্যান্ত প্রবল ছিল।।

া লার্ডনিন্ট ১৮০৭ শালের ৩১ জুলাই কলিকাতায় অবতরণ করিলেন ভাঁছার রাজত্ব ১৮১৩ স্পালপর্য্যন্ত ছিল কিন্তু তম্মধ্যে বাঙ্গালার কর্ম্মে কোন আবশ্যক পরিবর্ত হয় নাই কেবল কর্ণওয়ালিস্ ১৭৮.৮ শালে . স্থানান্তরীকৃত দ্রবেঁ র মাসুল রহিত করিয়া ১৮০১ শালে পুনঃস্থাপন করিয়াছিলেন তিনি তাহাতে এক নূতন ও অতিকঠিন রীতি করিলেন এইন্বপে দেশের রাজস্ব বৃদ্ধি হইল কিন্তু বাণ্মিজ্যর ব্যাঘাত ও প্রজা-দিগের অত্যস্ত অপকার হইল ১৮১০ শালে ইণরা-জেরা বোবুর ও মারিসস্নানক দুই উপদীপ করাসি ङ्हेर क् किंगा नहेरन वें ५व° श्रेंबर भारत अनना क হৈইতে বিপুল ধনযুক্ত জাব। উপদ্বীপ কাভিয়া লইলেন ।। পার্লিয়ামেণ্টে বি॰ শতিবর্ষনিমিত্তে কোম্পানিকে যেসনন্দ দিয়াছিলেন ১৮১৩ শালে তাহার শেষ হও-श्राट्य अक बूजन मनन्त्र फिटनन किन्तु के मृश्रं अपन-শীয় কৰে বিশেষ পরিবর্ত হুইল ইহার দুইশত বৎ-সরঅপেকা অধিক পূর্বাবিধি ভারতবর্ষ ওইপন্ত . এই দুই স্থানের মধ্যেবাণিজ্য কেবল কোম্পানির হস্ত গত ছিল কিন্তু কোম্পানিরা প্রথমে ভাত্তিবর্ষে থাতা বাটী করিয়া বাণিজ্য কারত করেন পরে তথাকার রাজা হইলেন ইহাতে বিবেচনাসিত্ব এই হইল যে রাজার বাণিজ্য করা উচিত মহে অত্এব এই বর্ষের নূতনত্বস্থা

দারা কোম্পানির রাজত্ব রহিল ও বাণিজ্য বণিক্দি-গের হইল পূর্ব্বে কোম্পানির ভৃত্যভিন্ন ইউরোপীয়ের। ভারতবর্ষে আসিতে আদ্ধা পাইতেন না কিন্তু তাহা একণে সহজ হইল যেসকল লোককে ডিরেক্টরের। অনুমতি নাদিতেন তাঁহারা বোর্ড আবকাণ্ট্রোলনামক সমাজহইতে, অনুমতি পাইতেন।।

১৮১৩ শালের ৪ আক্টোবর লাড মিণ্টসাহেব ভারত বর্ষের রাজত লাড ময়রার হস্তে সমর্পণ করিয়া ইপ্ল লপ্তে যাত্রাকরিলেন কিন্তু নিজ গৃহগমনের পূর্ফো তাঁহার প্রাণত্যাগ হইল ঐ ময়রাসাহেবের নাম, উত্তরকালে মার্কুয়িস্আবহস্থিপস হইল 11

॥ अक्षेप्रम अक्षायः॥

লার্ডহণ্ডি পা সাহেব রাজত্বগুহণ করিয়া দেখিলেন যে নেপালীয়েরা ক্রমেই ই রাজদিগের রাজ্যের প্রতি আক্রমণ করিতেছে তথাকার রাজপরিবারেরা গত শতবৎসরের মধ্যে জয়দার নেপালে রাজ্য প্রাপ্ত হইয়াছিলেন পরে ক্রমেই রাজ্যের সীমাবৃদ্ধি করিয়া লার্ডমিণ্টের রাজ্যকালে নানাপ্রকার বিবাদ উপস্থিত করিয়াছিলেন লার্ডহণ্ডি পা দেখিলেন যে নেপালীয়-দিগের সহিত যুদ্ধ অনিবার্য্য হইল তিনি বিরোধভঙ্গার্থে শক্ত্যনুসারে সকল উপায় করিলেন কিন্তু কত্মন্মুর মন্ত্রিদিগের অহঙ্কারদারা ১৮১৪ শালে তাঁহাকে যুদ্ধেচ্ছা করিতে হইল প্রথম যুদ্ধে কিছুই হইল না কিন্তু ১৮১৫ শালের ,যুদ্ধে সেনাপতি আক্টরলনির অধীন ইপ-রাজী সৈনে,রা সম্পূর্ণকপে জয়ী হইলেন নেপালীয়-দিগের স্বরাজ্যের অধিকাপ দিয়া সন্ধি করিতে হইল।।

ভারতবহর্ষর মধ্যাহিত পিন্দারীজাতীয় বহুস্ৎ-খ্যক তন্ধরেরা অশ্বারোহণপূত্তক বহুকালাবধি তথা-কার সমুদায়দেশ লুট করিত তাহারা অবশেষেই শরা-ক্লদিগের রাজ্যে প্রবেশ করিল তদ্দেশের প্রধান লোকেরা ও অনেক রাজারা তাহাদের রক্ষক ছিলেন . তাহারা পঞ্চশত ক্রোশহইতে অধিকদূরপর্যান্ত লুট করিতে আরম্ভ করিল এবণ প্রতিবৎসর তাহাদের নিবারণার্থে ইপরাজি রাজসভাকে এক প্রস্তুত সৈন্য রাখিতে হইত তাহাতে বহুব/য় হইতে আর্ড হইৰ অবশেষে ভাহাদিগকে ৮ দেশহইতে নিমূল করিবার কারণ সম্পূর্ণ চেষ্টাকৃরিতে পরামর্শ স্থির ইইল লার্ড-হ্স্তি^স কোট আব্ডিরেক্টরহইতে অনুমতি পাইয়া তিন রাজ্যের সৈন্য একত্র হইতে আজ্ঞা করিলেন পরে সৈনে রা ক্রমে২ ঐদস্যদিগের আশ্রয় বেষ্টন করিয়া একে২ সমুদায়কে নষ্ট করিল এর ে নিঃশেষরূপে তাহা-দের দল ভঙ্গ করিল কিন্তু সৈন্যের যুদ্ধক্ষেত্রে পিন্দারি-দিগের অনেষণকরিতেছে এমতকালে পেষওর ওঁনাগ-

পুরের রাজা ও হল্কার এই কয়েক জন মিলিত্যত্ দারা এদে**শ্**হইতে ই^রাজদিগকে তাড়াইবার আগা-य धैकमञार्भूर्सक छेमाङ इहेरनन किन्नु थे नकन श्रधान ব্যক্তিরা পরাভূত হইলেন পেৃষ্ওর ও নাগপুরের রাজা রাক্ষ্যসূত হইলেন এবং তাঁহাদের রাজ্যের অধিকাংশ ই রাজদিগের রাজ্যসাৎ হইল এই সকল ব্যাপার মারকুয়িস্ হঙি^সদাহেবের আজ্ঞানুসারে কৃত হইয়া-ছিল কিন্তু তিনি দশবংসরপূত্রে নার্ক্রিস ওয়ালে-স্লির ঐকপ রাজনীতি দূয্য করিয়াছিলেন তিনি यष्टिवर्य वस्त्रक रहेसां अवत्र नृर्वजाशास्त्र उर्शयूक শক্তি ওবুদ্ধিপুকাশ করিয়াছিলেন পিন্দারিদিগের ও . महाताष्ट्रीयिकता मिक्कि नण्णू-(तारभ नष्ट हरेन **५**२% ই^রাজেরা ভারতবর্ষনধ্যে নর্মপুধান হইলেন।।

লাভ ইছি সসাহেবের পূর্বে এদেশীয়লাকের শিক্ষার্থে কোন উদ্যোগ হয়, নাই এদেশীয়লাকের শিক্ষা দেওয়া রাজনীতিমধ্যেনিদিত বোধ ছিল কারণ তাহাদের মূর্যতায় এইসানুজ্জার এক প্রকার নিরাপদ পদ বোধ কিল লাভ ইছি স সাহেব এই নির্ববৃদ্ধি পরিত্যাগ করিলেন তিনি কহিলেন যে প্রজ্যাদগের মঙ্গার্থে ভারত হর্ষে ইপরাজ দিগের রাজ র স্থাপিত ইয়াছে অতথ্য তাহাদের সভ্যতা বৃদ্ধি করা ইপরাজ-দিগের আশাক কর্মা হইয়াছে তাহার রাজ্যকালে

নূতৰ সময় উপঞ্তি হইলনানা ছানে**পাঠশালা স্থাপন** হইল এব ্রদেশীর লোকের মনের উচ্চতা করিবার চেষ্টায় ঐ প্রথম উৎসাহ হইল ১৮১৮ শালের ২৯ মে সমাচারদর্পণনামক সম্বাদপত্র ভারতবর্ষমধ্যে প্রারাম-পুরের ছাপাখানাছইতে পুর্থনে পুকাশ ছইল লাড হণ্ডি প্ৰসাহের তাহার এক সমানপুত্ৰ পাইমা পুজা-দিগের সভ্য করিবার এই উত্তম চেষ্টায় ভীত নাহইয়া রাজসভায় লইয়া যাইলেন পারে চলিত ডাকমাসুলের পার্মাত্রে তাহা ইতন্ততঃ পাঠাইতে আজ্ঞা করিলেন এব প্রায় ঐ স্মায়ে লাড হিছি গেবর পাত্রীর যতুষারা বিশেষভঃ ভবলিউ বি বেলি সাহেবের ও ডাক্তার কেরি স ছেবের চেষ্টারার। কূলবুক্সোসাইটিনামিক। সভা কলিকাতায় স্থাপিত হইল এবং এদেশীয় বালকদিগের শিকার্থে পাঠশালাস্থাপনাকারণ রাজধানীতে আর এক সভা হইর এদেশীয়ল্লোকের স্বদেশীয়, ভাষা শিকার্থে রেবরেণ্ড মে লাছেবদ্বারা চুচুড়ার নিকটে ও জ্ঞীরামপুরের ধর্মালয়নারা তথাকার নিকটে এক**২** व्र्९ भार्रमाना स्थान स्थेन जान य स्मूकालक নামক পাঠশালায় সহসু২ ব্যক্তিরা ইণরাজি ভাষা ়ও ইউরোপীয় বিদ্যা অভ্যাস ক্রিয়াছেন তাহাও ঐ সময়ে সর এডওয়াডঁহাইছ ইউ হরি পটন্ ডেবিড হের ইত্যাদি সাহেবেরা স্থাপন ক্লক্লিলেন সকল ইউরোপী-

মেরা ও এদেশীয়লোকেরালার্ডহণ্ডি ংসের এইনপ উপাকারক উৎসাহ গ্রাহ্য করিলেন এবং অনেক বৎসরাবিধি যেসকল পাঠশালার বিষয় কেহ স্বপুত আরণ করেন নাই তাহা অনেকে বহুব্যয়পূর্কক সাহায্যক্রিয়া উন্নত করিলেন ॥

১৮২ ৩শালের জানুয়ারিমানে লার্ড ইপ্রিণ ভারতবর্ষহইতে গমন করিলেন তাঁহার অত্যন্ত যতুরারা নয়
বৎসরের মধ্যে কোনুসানির রাজ্য বিস্তীর্ণ হইল এবং
রাজস্ববৃদ্ধি ও ঋণক্ষয় হইল ভারতবর্ষে ইংরাজদিগের
সামুজ্যে এমত উত্তম অবস্থা কদার হয় নাই তৎকালে ভাগুরে পরিপূর্ণ হইল এবং ব্যয়অপেকা প্রায়
দুইকোটা মুদ্রা বার্ষিক আয় অধিক হইল ।।

রাজমন্ত্রিদিগের মধ্যে সংকাত্তম জর্জকানি শাহেব বাড আবকাণ্ট্রোলনামক সমাজে বহুকাল প্রভুত্ব করিয়া ভারতবর্ষীয়কন্মে দক্ষ হইয়াছিলেন অতএব লাড হস্তি শক্ষা ত্যাগকরিলে তৎকর্মে তিনি নিযুক্ত হইলেন কিন্তু তিনি আগমনের উদ্যোগ করিলে পর তাঁহার, এক জন সহচর মরাতেই শল্ভে অভিবিদ্যা-স্যোগ্য পদপ্রাপ্ত হইলেন অতঃপর ড়িরেকটরেরা লাড় আমহ্রত্তিকে বড়নাহ্নের করিয়া পাঠাইলেন তিনি দশবৎসর পূর্কে পেকিন্ শহরে ই শল্ভের রাজার দূত হইয়া আসিয়াজিলেন লাড আমহ্রের আগমন ভ লার্ড হস্টিপ্সের গমনাবধি ১৮২৩ শালের ১ আগষ্ট পর্যান্ত পুথান সভাপতি জান্ আদম সাহেব বড়-সাহেবের কর্ম করিয়াছিলেন ছাপাখানার শক্তির সীমানিধারণ করাতে কেব্ল তাঁহার রাজত্ব নিন্দিত-কপে খ্যাত আঁছে ।।

লাড আনহর্ড কৈ কলিকাতায় আসিবাশাত্রে ব্রহ্ম-দেশীয়দিগের দুরাচারে শীঘু মনোযোগ করিতে হইল ই ্রাজেরা যৎকালে বাহুঁগা অধিকার করিয়া-ভিলেন তৎকালে ঐ ব্রহ্মদেশীয় রাজপরিবারেরা আবানগরে রাজত্ব পাইয়াছিলেন পরে ঐ রাজা মণিপুর ও আসাম জয় করত অহঙ্কারী হইয়া বাহ্বারা জয়পূর্ম্বক স্বরাজ্যবৃদ্ধির আশা করিলেন যেপর্য্যন্ত ই^রাজদিগের সহিত মিল ছিল তম্মধ্যে তিনি কাচার ও আরাকানঅঞ্চলে কোম্পানির রাজ্যমধ্যে বৈন্য পাঠাইয়া সাপুরীনামক উপেদীপ আক্রমণ করিলেন এবং তথান্থিত অপ্সেন্টেন্ডিগের প্রাণ নষ্ট করিলেন ঐ উপদ্বীপ আরাকানের তীরস্থিত টিক্নাক্নদীর সম্বাহে পরে আবায় তাঁহাকে ঐ বিষয়ের কারণ জিজ্ঞান। করাভে তিনি অহ্কারপূর্বক উত্তর করি-লেন যে যদি ঐস্থানে তাঁহার অধিকারে সন্মতি নাহ্য় তবে তিনি বাঙ্গালা অধিকার করিবেন এই সকল উপদোহদারা ১৮২৪ শালের ৫ মার্চ বড়সাহেব

ব্রহ্মদেশীয়দিগের সহিত যুদ্ধের প্রসঙ্গ করিলেন ১১ মে ইপরাজদিগের সৈদ্যের। ব্রহ্মরাজ্যে অবতরণ করিয়া সমুদ্রতীরে রাঙ্গুনের বহুধনযুক্ত বাণিজ্যস্থান অধিকার করিল পরে আসাম ও আরাকানদেশ এবং মগু য়ি পুদেশের নিকটন্থান অধিকার করিল অনন্তর অপ্সে২ আবানগরের রাজধানীর প্রতি গমন করিল এবং গমনকালে প্রতিস্থান ও নগর অধিকার করত ব্ৰহ্মদেশীয় সৈন্যদিগোঁর পরাজয় করিয়া চলিল পরে ১৮২৬ শালের প্রথমে অমরপুরের অতিনিকটে উপ-স্থিত হওয়াতে তথাকার রাজ। নিজপুরীরক্ষার্থে ইণ-রাজেরা যেৰূপ সন্ধির প্রস্তাব করিবেন তাছাতেই সন্মত হইলেন অবন্তর যান্দাবৃনামে সন্ধির নিষ্পত্তি **হইল ঐ সন্ধিতে** ব্রহ্মদেশীয়েরা ইণরাজদিগকে মণি-পুর আসাম ও আরাকান দেশ ও মার্তাবান প্রদে-শের সমুদায় দিলেন এবং যুদ্ধব্যয়ার্থে কোটী মুদ্রা

ই রাজদিগের সৈন্যের। যখন ব্রহ্মদেশীয়দিগের সহিত যুদ্ধে নিযুক্ত ছিল তৎকালে ভরতপূরের কর্ত্ত। দুর্জনশালের সহিত বাদানুবাদ উপস্থিত হইল তিনি নিজ ভ্যুতা মধুসি হের সহিত একত্র হইয়া তাঁহাদের পিতৃবাপুত্র অতিবালক বলবস্তাসি হের হস্তহইতে রাজত্ব লইবার চেষ্টা করিলেন সর চারল্স্ মেট্কাফ্ দুর্জনশালের পুবোধার্থে বিবিধটেটা করিলেন কিন্তু সেসকল নিষ্ফল হইল অতএব বাছ্বলে নির্ভর করা আবশ্যক হইল কিন্তু ঐ স্থান অধিকারকরণ অতিদুঃসাধ্য कर्म छिल ১৮-०६ भारत नार्ज त्नक् मारहव खे छान বেষ্টন করিয়াছিলেন তাহাঁতে এমত অধিক সেনা ও সেনাপতিরা মারা পড়িল যে ইণ্রাজকভূকি ভারত-বর্ষমধ্যে কোন নগরবেষ্টনে যেৱপ হয় নাই এব॰ যদ্য-পিও তথাকার রাজা ইণরাজদিগের নিবারণার্থে বিণ-শ্তিলক মুদ্রা দিয়াছিলেন তথাপি ই রাজেরা সেস্থা-নের অধিকার করিতে পারেন নাই অতথব কেবল ঐ দুর্গনাজ তাঁহারা বেষ্টন করিয়া গুহণে অশক্ত হইয়াছি-লেন ভারতবর্ষ ব্যাপিয়া জনবর হইল যে তাঁহারা ভরত-পুর অধীন করিতে অসমর্থ হইলেন ঐ দুর্গের চত্তর্দিগে মৃন্ময় ভিত্তি ছিল এব তাহার মূলে খাল ছিল অধিক रेमतात याव उक्तापत्म नियुक हिन उत्प्राधा वि --শতি সহসু সৈন্য ও একশত কামান ঐদুর্গরে সম্মুখে আনীত হইল এবং সম্দায় ভারতবর্ষীয় লোকেরা ইহার পরিণান দেখিতে নিতাস্ত ইচ্ছুক হইলেন ২৩, ডিসেম্বর যুদ্ধ আরম্ভ হইল পরে ১৮২৬ শালের ১৮ জান্য়ারি সৈন্দিংগার আজ্ঞাদায়ক লার্জয়র্মিয়র্ ঐ স্থান অধিকারকরিলেন দুর্জনশাল ই^রাজদিগের হস্তে थिषिय। भुषात्मत पूर्वि अभुतिक इंहेलन बन्नामतमत ও ভরতপুরের এই যুদ্ধে ই^রাজদিগের ত্রয়োদশ কোটা মুদ্রা অপেকা অধিক ঋণ হইল ৷৷

১৮২१ माल नार्ज्ञागरहें शिन्छम परंगयाजा कति-য়া প্রথমে দিল্লীতে যাইলেন্ এব॰১ ই॰বাজদিগের ব্যব-স্থার ও অবস্থা তথাকার রাজাকে জানাইলেন এবং বিশেষৰূপে কহিলেন যে ইণ্রাজদিগের তিগরের পরিবারে যে অধীনতা ছিল তাহার শেষ হইল আর হিন্দুস্থানের রাজস্ত তাঁহাদের হস্পত হইয়াছে পলাশীর যুদ্ধের ষষ্ঠিবৎসরপরে এইনপ উক্তি হইল ইহাতে রাজপরিবারেরা অতান্ত দুঃখিত ছইলেন এবং বিবেচনা করিলেন যে মহারাষ্ট্রীয়দিগদারা তাঁছাদের দানাপ্রকার **অপ**নান হইলেও ভারতবর্ষীয় সামুজ্যে তাঁহাদের রাজবৎ সমুম ছিল কিন্তু এক্ষণে রাজদণ্ড চির-কালের নিমিত্তে তাঁহাদের বিহস্ত হইল সমুদায় ভারত-বর্ষে প্রজাদিগের এবিষয়ে কিছুই উত্তেজনা না হওয়াতে সূতরা । আর কিছুই পুকাশ পাইল না।।

লার্ড আমহন্ট উলিয়ম বটরওয়ার্থ বেলিসাহেবের হস্তে রাজত্র অর্পণ করিয়া ১৮২৮ শালের মার্চমাসের শোষে ইণলপ্তে পুত্যাগমন করিলেন তাঁহার কর্মপরি-ত্যাগ করিবার সমাদ ইণলপ্তে যাইলে লার্ড উলি-য়ম বেণ্টিক কোটআবভিরেক্টরদিগের নিকটে ঐ রাজ্যভারপ্রার্থনা করিলেক্ডিনি বিণশতিবর্ষ অপেকা

অধিক কালপুৰ্কে মাদ্ৰাজে বড়সাহেব ছিলেন কিন্তু ডিরেক্টরেরা সমাক্বিবেচনা নাকরিয়া তাঁহাকে সহরে গৃহপমন করিতে আক্সা করিয়াছিলেন ভাঁহারা এবিষয়ে তাঁহার পাুর্থনা গ্রাহ্য করিয়া ১৮২৭ শালে তাঁহাকে বড়সাহেবের কর্মে নিয়োগ করিলেন ইুহা অবশা স্বীকার করিতে হয় যে এমত প্রধানকম্মে তাঁহার ভল্য উপযুক্ত লোক ইণলণ্ডে ছিল না তিনি ১৮২৮ শালের 3 জুলাই কলিকাতায় উপস্থিত হইলেন পুায় ছয় বৎ गंत्रপুर्व नार्ज्ञ ष्टि · गगा छ्व ता करम्ब উন্নতি করিয়াছিলেন কিছু তাঁহার আগমনকালে পুন-বার রাজস্বের দুরবস্থা হইল ও সরকারি আয় অপেকা ব্যয় অধিক হইতে লাগিল তাহাতে ঋণ অধিক হইল কিন্তু লাড বেণ্টিক্ক আগমনের পূর্বে ভিরেক্টর্দিগের নিকটে বলিয়াছিলেন যে তিনি ্ব্যয়ের লাঘ্ব অবশ্য ক্রিবেন অতএব আগ্নমনমাত্রে যুদ্ধার্থক ও বিচারার্থক উভয়বিশ্ব ভৃত্যমধ্যে কোন বিষয়ে সরকারি ব্যয়ের লাঘব হইতে পারে ইহার .অনুসন্ধানার্থে দুই সমাজ স্থাপন করিলেন পরে তাঁহাদের পরামশানুসারে সকলবিষয়ে ব্যয়ের লাঘব করিলের ইহা অতি নিজ্ঞনীয় ব্যবহার হইল এবং লাড় বৈণ্টিক্ষের লাঘবুদারা যেসকল লোকের ক্লেশ হইল তাঁহারা ঐডিরেক্ট্রদিগের আক্রাপ্রতিপালন

করাতে তাঁহাকে অত্যন্ত নিন্দা করিলেন সরকারি ষেসকল ভ্তাদিগের ভাগ্যক্রমে ঐলাঘব ঘটিল তাহা-দের তাঁহাহইতে সদিচারের আশা ছিল না কেবল ভাবিব্যক্তিহইতে আশা হইল এইকপ তাঁহার প্রতি সকলে আপত্তি করিলেও যেপর্যান্ত রাজকায় ব্যয়লা-ঘব ও ঋণ মাশের উপায় সুসিদ্ধ না হইল ভাবৎ দৃঢ়তা পূর্কক স্বন্যান্থায়ী ছিলেন।

সতীগমনবিধিতে বহুকালাবধি রাজসভার মনো-বোগ হইয়াছিল এব কিয়ৎকাল পৰ্য্যন্ত এৰপ ব্যব-হার হইতেছে ও ইহাতে প্রজ্ঞাদিগের কিরপ মনোনি-বেশ আছে এবিষয়ে অনেক অনুসন্ধান হইয়াছিল অনেক আমলারা সম্বাদ পাঠাইলেন যে এদেশীয় লোকেরা ইহাতে অত্যন্ত আসক্ত আছেন অত্থব ইহা রহিত করাতে বিপদ্ উপস্থিত হইবে লার্ডবেণ্টিঙ্ক এবিষয় ক্ষতি যতুপূর্ত্তক রিবেচনা করিয়া বুঝিলেন যে ইহা অনায়াসে রহিত করাযায় পরে রাজসভা পতিরা সকলেই তাঁহার মত গুাহ্য করাতে ১৮২৯ শা-লের ৪ ডিস্নেম্বর ঐ চিরস্মরণীয় নিয়মস্থির হইল তাহাতে ই^রাজদিগের সমুদায় রাজ্যনথ্যে ঐ হত্যাকারি নিধ্র ব্যবহার রহিত হইল এদেশীয় অনেক ধনা ও মান্য ব্যক্তিরা এই হিতকক্ষে অহিত জ্ঞান করিয়া বৃঝিলেন যে তাঁহাদের ধন্মাকন্দে হস্তাপণি হইল অতএব এ

নিয়মনিবারণাথে বড়সাহেকের নিকটে আবেদন করি-লেন তিনি সতীগমনরোধপক্ষে নানাবিধ হৈত্ত দেখা-ইয়া তাঁহার্দের আবেদনে সর্মত হইলেন নাকিন্তু তিনি ঐ আবেদনকারিদিগকে স্থিরতাপূর্ম্বক কহিলেন যে যদ্যপিও বর্ষেহ বহুপ্রাণনাশি এই ব্যবহার ইণরাজ্ব-দিগের রাজ্যভাকে রোধ করিতে হইন তথাপি অন্যান্য যেসকল বিষয় চলিত আছে তাহা তাঁহারা অগ্ৰাহ্য করিবেন না ইতিমধ্যে ধারকানাথ ঠাকুর রায়-কালীনাথ চৌধুরীপ্রভৃতি এদেশীয় তেজম্বী কতিপয় ব্যক্তিরা সভীপমনরোধ করাতে লার্ড বেণ্টিক্ষ সাহেবের নিকটে অত্যন্ত ধন্যবাদ প্রকাশ করিয়া এক নিবেদন পত্র পাঠাইলেন যেসকল ব্যক্তিরা সতীগমনস্থাপন-পকে ছিলেন তাঁহারা তৎক্ষণাৎ কলিকাতায় এক ধর্মনভাস্থাপন করিলেন এবং টাদাদারা বহুধন সংগৃহপূর্কক. ইপলগুয়িরাক্লসভায় ঐ বাবহারস্থাপন প্রার্থনায় এক নিবেদনপাত্রের সহিত একজন প্রতি-নিথি পাঠাইলেন কিন্তু রাজমন্ত্রিরা তৎপক্ষীয় সমৃদায় বৃত্তান্ত শুনিয়া রোধপক্ষই স্থির করিলেন নয়বৎসর ্হইল ঐবিধিক নিষেধ হইয়াছে কিন্তু অসন্তোষের কিছুই চিহ্ন নাই বোধ হয় ঐ অসভ্য ব্যবহার একণে স্মরণশূন্য হইয়াছে অতএব যদ্যপি ইতিহাসমধ্যে

না লেখা যায় তবে এরপ ব্যবহার ছিন ইহাও ভবিষ্যৎ লোকে বিশ্বাস করিবে না ।।

১৮৩১ শালে আদালতে অনেক পারিবর্ত্ত হুইল এ-পর্য্যন্ত এদেশীয়লোকেরা অপ্রবেতনে কুক্র বিষয় বিচারে নিযুক্ত ছিলেন কিন্তু বেণ্টিঙ্ক লাহেব অধিক कमठा थरान भूर्वक् जाँ शास्त्र मसुभवृष्टि कति छ। स्वि ক্রিলেন ঐবৎসরে মুন্সেফ্ও সদরআমিনের বেতন ও ক্ষমতাবৃদ্ধি হইল এবং অধিকবেতন ও অধিক ক্ষমতার সহিত সদর্আলানামে নূতন আমলা ভাপিত হইল রেজিষ্টরের কর্ম ও প্রবিন্সিয়াল কোর্ট অর্থাৎ পুনবিচারার্থে নানাস্থানের আদালত রহিত হইল অত-এব কেবল এদেশীয়লোকের আদালত ও প্রতিজিলায় ়এক২ ইউরোপীয় বিচারকর্তার আদালত এব° সদর-দেওয়ানী আদালতমাত্র রহিল এই নূতনরীতির আনূল কহিলামু ঐ রাতি গত অষ্ট বৎসরাবধি চলিত হইয়াছে ইহাতে স্থির হইল যে এদেশীয় আমলাদিগের আদা-লতে প্রথমতঃ অভিযোগ শুনা যাইবে এবং তথায় निष्णिबि इरेल भूनर्विषातार्थ रेडेरताशीय विषातकर्वाता শুনিবেন লাড বেণ্টিক কৌজ্দারী স্থাদালতের ঐরপ উন্নতি করিয়াছিলেন পূর্ফে কোর্ট্জাবসকু ট্ছারা অর্থাৎ নানা স্থানে বিচারার্থে স্থাপিতআদালতদারা ছয়মা-সঞ্জন্তে এক২ বার বিচার হইত এবণ তৎকালেও তিন

নাস মন্তরে কলিসনর সাহেবেরা একই বার বিচার
করিতেন লাড বেণ্টিক্ষসাহেব আছা করিলেন যে
প্রতিমাসে জিলার বিচারকর্তারা একই বার কৌজদারী
বিচার করিবেন তাহাতে কারালয়ে রুজলোকদিগের
ও সাক্ষিদিগের দৃঃখ দূর হইল লাড বেণ্টিফের রাজ্য
কালে এদেশীয়লোকের সন্তুগ বৃদ্ধি করিতে ও সরকারি
কর্মের সুগম করিতে যেসকল উন্নতি হইয়াছিল তাহা
এই সংক্ষিপ্রত্তু বিশেষরূপে বলা যাইতে পারে না ।।

১৮৩১ শালে রানমোহন রায় ইপলপ্তে যাত্রা করিলেন বান্সালায় তবুলা বিজ্ঞ লোক বহুকালাৰখি হয় নাই তিনি বিপুকুলে জন্মিয়া রাজসরকারে বিশ্বাসিকর্মে নিযু*ক্ত ছিলে*ন তিনি বা**ঙ্গালা স**∿কৃত পারসীক ও ই∾-রাজী এই কয়েক ভাষায় নিপুণ ছিলেন এব তাঁহার মনে নানাপুকার জ্ঞানোদয় ছিল তিনি ষদেশীয় লোক-দিগকে দেব দেবীভজনাহইতে নিবৃত্ত করিয়া ধ্বদোক্ত অকৈতব ধর্মে পুবৃত্তি দিতেন ইহা বঁড় আমর্য্য যে এ-দেশীয় ছিন্দরা বেদনতে রত আছে কিন্তু তথাপি তাঁ-হাকে ঐ সকল হিন্রা নাস্তিক বলিতেন স্বপর যে সকল লোকেরা ভাঁহার মতে বিমতি করিতেম ভাঁহারাও তাঁহার উত্তমবুদ্ধির পুশানা ক্রিতেন এবং বুঝি-তেন যে একপ মনুষ্য উৎপন্ন হওয়াতে দেশের মর্যাদা इहेबाटह । आगवा े शृतंत्रं विनिष्ठाहि य नार्ज्ञार्गहर्टे **সাহেবের অধিকারকালে তিমরব°্শীয়রাজপরি**-বারের প্রধানত৷ নষ্ট হইয়াছিল ঐ মহারাজ নষ্টসমূম উদ্ধারার্থে ইপলপ্তে আবেদন করিতে স্থিরপ্রতিজ্ঞ হ্ইয়া রাসমোহনরায়কে প্রতিনিধি স্থির করিলেন হিন্দুদিগের পূর্অকালে সমুদ্রগমনে ফোন দোর ছিল না কিন্তু কলিযুগে বোধ আছে যে সমুদ্রগন্নৰে জাতি-ভুষ্ট হয় রামমোছনরায় সজাতীয় লোকের উপহাসে মনোযোগ নাকরিয়া ইশুলপ্তে যাত্রা করিলেন এবং তথায় অতিসন্ধানপূর্জক ভাঁহার অভ্যর্থনা হইল কিন্তু ভাঁহার মানস সিদ্ধ হইল না তিমরবং শীয়েরা ক্রিংশৎবৎসর পর্য্যন্ত বৃত্তিভোগী থাকাতে বি্টন্দেশীয় লাজা-ধিকারির। ঐবংশের প্রধানতাস্বীকার করিলেন না কেবল রামনোহনরায়ের অনুরোধপ্রযুক্ত তিন লক্ষ মুদ্রা বৃত্তিবৃদ্ধি করিয়া দিলেন রামমোহনরায় প্রত্যা-গমনের পূর্ব্বে লোকান্তর গ্রুম করিলেন ভাঁছার শরীর ব্রিষ্টল্নগরের নিকটে নিখাত আছে ॥

১৮৩৩শাল বাঙ্গালার ইতিহাসমধ্যে স্মরণীয় আছে কারণ ঐশালে বড়ং বণিক্সকলে নির্দ্ধন হইলেন তাঁহাদের কেহং পঞ্চাশংবংসরপর্য্যন্ত বাণিজ্য করিয়াছিলেন সর্কপ্রধান পামরকোম্পানি ১৮০০ শালে বাণিজ্যের শেষ করিলেন অপর পঞ্চ বণিকেরা তিন চারি বংসর অধিক্পর্য্যন্ত বাণিজ্য রাখিয়াছি- লেন অবশেষে তাঁহারা নির্ধন হইয়া সাধারণ লোকের প্রায় যোড়শ কোটী মৃদ্রা নষ্ট করিলেন তাঁহাদের অব-শিষ্টবিষয়হইতে দুই কোটী মুদ্রাও প্রাপ্ত হইল না।।

ঐবৎদরে কোম্পানির সনন্দের বিপশতিবৎসর অতীত হওয়দতে পুনৰ্বার নূতন সনন্দ হইল তাহা¢ত এদেশীয় কর্মের অধিক পরিবর্ত্ত হইল কোম্পানিকে ভারতবর্ষীয় বাণিজ্য একেবারে পরিত্যাগ করিতে হইল তাঁহাদের কারখানা বিক্রা করিতে আজ্ঞা হইল গতবি^শতিব্¢সরে তাঁহাদের চীনদেশে বাণিজ্য-দারা বহুপকার হইয়াছিল তাহাও পরিত্যাগ করিতে হইল তাঁহারা ২৩০বৎসরপর্য্যন্ত যেরণিক্ভাবে ছিলেন তাহা ত্যাগ করিয়া কেবল ভারতব্যীয় রাজ্বমাত্র লইয়া থাকিতে হইল বি শতিবৎসরপর্য্যন্ত বর্ষেহ ভারতবর্ষীয় রাজস্বহইতে ৬৫ লক্ষ্মুদা ইষ্টইন্ডিয়া-थरनत ভাগिদिগকে দিতে स्टित इहेन हेहार नकरनहे যথার্থকপে নিন্দা করিয়াখাকেন কলিকাতায় লেজিস্ লেটিব কৌনসেলনামে এক সভাস্থাপন হইল তাহাতে ·রাজঁসভার নিয়মিতসভাপতিরা ও কো**ম্প্রানির** ভৃত্য ডিন্ন এক জন, সভাপতি নির্দিষ্ট রহিলেন তাঁহাদের कर्य थहे इंहेन (य সমুদায় जीत उत्दर्श नियम ठाना है दिन এবং বড়আদালতের নিয়ম দমন করিবেন অপার সমুদায়দেশের নিয়ুমগুন্ত, করিতে লাকমিসন্নামক সমাজস্থাপন হইল ভারতবর্ধের সর্বাত্ত, বড়সাহেব প্রক্রিধান ইইলেন অন্যান্য রাজ্য তাঁহার শক্তির অধীন রহিল এব প্রাঞ্জালারাজ্য কলিকাতা ও আগু। এই দুই নামে দুই অংশে বিভক্ত, হইল নুতন সন্দ্রারা এই সকল পরিবর্ত হইল।।

লার্ডবৈণ্টিক্ষের রাজত্কালে প্রজাদিগের বিদ্যা-শিক্ষায় বিশেষত ইণরাজিভাষাশিক্ষায় অত্যন্ত উং-नाइ अनान इरेशाङ्ज >५->० नात्न लार्जिशात्म एउँ আক্রাকরিয়া ছিলেন যে প্রজাদিগের বিদ্যা নিকার্থে সরকারিরাজস্বহইতে বর্ষে২ একলক মুদ্রান্যয় হইবে প্রায় সমুদায় ঐ ধন সংফৃতও আরবীয় বিদ্যাশি-ক্ষার্থে ব্যয় হইত কিন্তু এতনুভয় বিদ্যাই প্রজাদিগের উপকারিণী ছিল না লার্ডবেণ্টিক্ষের বিবেচনায় ইণরাজিভাষার অভ্যাস অতি উপকারি বোধ হইল অত্তর ইণরাজিপাঠশালার স্থাপনে পার্লিয়ামেণ্টের দানঅপেকা তিনি শুধিক ব্যয়করিলেন এবং ঐস-ময়ে আছা করিলেনযে রাজকীয় সংস্কৃত ও_ুআর-বীয় পাঠশালায় ছাত্রদিগের যেবেতন দেওয়া যাইত তাহা বর্ত্তনান বৈতনিকছাত্রেরা বহিভূকি হইলে আর নূতন হইবেনা ইত্যাদি উপায়দারা দেশের স্ক্র **ই**°রাজি ভাষাশিকায় নিতান্ত ইক্ছা হইন।।

তাঁহার রাজ্যকালে অপ্রপ্রক প্রযোপকারি ক্ষা

इहेशिक्त या जिनि वह्रग्रशृद्धक अप्रभीशतादित विकित्रमाणिकार्थ किनकाचा अक देक्तकभारखन शांजेगाना हाशन करन अप्रभीशताकरक अखिकिष्ट-माग्न अधिविक्षित्रमा निश्र किन्न भारखन नाना भाषा अध्राश्रनार्थ छेन्न । । अध्राज्ञ माज्ञ हुरे-तान अव अशिका नामाना । जन्मुमारन एएमन छेश-कान इहेरांन महावना इहेन ।।

नार्ज्यक्तिः इत ताजवकात्तु अपनि त्रिश्रक्षां दिश्वत পরিনিত ব্যয়• করিবার কারণ সেবিং সব্যাক্ষনামে এক আপণস্থাপন হইল এবং তাহাতে অভীউনিদ্ধি হইল।পরে তিনি ভূমিজগুল্কের প্রতি মনোযোগ कितरान वहकानाविधि अपराभन्न नोजि हिन य अक স্থানহইতে দেশের অপরস্থানে কোন দ্রব্য লইয়া याईएठ इहेरन अनुधनान क्रिड इहेठ कालाञ्चान রাজপথে জলে ও স্থলে শুলুগুহণের পৃহ ছিল তথা-স্থিতভূত্যের<mark>া স</mark>কলদ্রবেয়ী অনেমুমণ ও রোঁধ করিত এইনপে বাণিজ্যের ব্যাঘাত করিয়া রাজ্যের রাজ-. স্বধৃদ্ধি হইত অপর ঐ শুল্কস্থানে নিযুক্তভৃত্যের। রাজার একটাকাগুহণস্থলে স্বয়ণ দুইটাকা অধিক লইত তাহার! এমত দৌরাত্মা করিত যে ঐবিষয়ে নিযুক্ত একজন ইউরোপীয় আমলা ঐ রীর্মতির নাম অভিশাপ রাথিয়াছিলেন ই শরাজেরা যুথন মুসল্মানহইতে রাজ্য

ভার লইলেন তখন ঐরীতি চলিত দেখিয়া ক্রমাগত রাখিরাছিলেন কিন্তু লার্ডকর্ণগুয়ালিসের অভিমহৎ অভঃকরণে ঐসকল দৈাষের একবার উদয় হইয়া-ছিল ১৭৮৮ শালে তিনি ঐরীতি রহিত করিয়া দেশ মধে। শুল্কস্থানরোধ কারিয়াছিলেন ত্রয়োদশ বৎ-সরপরে ইপরাজদিগের রাজত্বে রাজস্বরূদ্ধির ইচ্ছা হওয়াতে ঐশুল্কের পুনঃস্থা**পন হয় লাড বেণ্টি**শ্ব বাল্লার সভাকন্মে বিযুক্ত নি ই ট্রিবেলিয়ন সাহেব-কে ঐ রীতির অনুসন্ধান করিয়া সন্বাদ লিখিতে নিযুক্ত ক্রিলেন পরে শুল্ক র্ছিত ক্রিবার, উত্তম উপায় বিবেচনার্থে একস্মাজস্থাপন করিলেন যদ্যপিও তাঁহার রাজন্বকালের মধে ওলক্র রহিতকরণের শেষ হয় নাই তথাপি রহিতকরণের প্রথম উদ্যোগপুযুক্ত তাঁহারি গুণে হইল ইহা বলিতে হয়।।

লাড বৈণ্টিস্ক স্বকীয়াধিকারের পুথমাবধি বাস্থালায় নদীতে ও সমুদ্রে বাস্পানীকা চালাইতে চেছিত
ছিলেন তিনি ইপলগু ও ভারতবর্ষমধ্যে একমাসে
গমনাগমন হয় এবিষয়ে সাধ্যানু সারে চেষ্টা করিলেন
কিন্তু ডিরেক্টরেরাইহাতে নানাপুকার, ব্যাঘাত করিলেন এবপ তিনি বোম্বেও সুয়েজমধ্যে পত্রাদিপ্রেরগার্থে হিউ লিন্সেনামিকা তরণী নিযুক্ত করাতে
তাহাকে স্বতান্ত তিরকার ক্রিয়াছিলেন লাড বেণ্টিস্ক

তথাপি বাঙ্গালার ও পশ্চিমঅঞ্চলের নদীমধ্যে লোহ-নির্মিত. বাস্পনৌকা চালাইতে লাগিলেন এদেশীয় লোকেরা ওইউরোপীয়েরা তাহা এমত ব্যবহার্য্য দেখি-লেন যে ঐনৌকার দিগুণসংখ্যা কুরিতে হইল এবং বোধ হয় ইণলণ্ডে ও এমেরিকায় যেৰূপ আবশ্যক ও চলিত আছে কালক্রন এখনেও সেইৰূপ হইবে ॥ ১৮৩৫ শার্নের মার্চমানে লার্ড বেণ্টিক্ষের রাজ-র্বের শেষ হইল তন্মধ্যে কোন দূরবর্ত্তী শতুরা উপ-দ্রোহ করে নাই ইহা নির্বিরোধে যাপন হওয়াতে কেবল প্রজাদিগের উন্নতি হইয়াছিল এবং তৎকত্ ক' ক-ন্সিত উপায়ের ফল যেপর্য্যন্ত সম্পূর্ণৰূপে প্রকাশিত না হইতেছে তাবৎ তাঁহোর রাজত্বের যুথার্থ স্বরূপ জানা যাইতে পারে না তাঁহার কোনে২ কঁপনায় বিবে-চনার অপতা ছিল কিন্তু তথাপি এই বৃহৎ সামুংজ্যের ইতিছাসনধ্যে তাঁহার্রাজন্কাল অবশ্য উত্তম বর্ণ-নীয় আছে এব ও এদেশীয়লোকদিগের তাঁহাত্র নামে ৰহকাৰ ধন্যবাদ করিবার নানাহেতু আছে ।।

॥ नगारक्षाय शृद्धं था

অগুদ্ধশোধন

ই বাজি সেক্সন্ শব্দের অর্থ প্রথমে পরিচ্ছেদ লে-খা গিয়াছে পরে ভ্রান্তিক্রমে দিতীয়স্থানে কিছুই না লিখিয়া তৃতীয়স্তানে তৃতীয়পরিচ্ছেদের পরিবর্ক্ত দিতীয় অধ্যায় লেখা হইয়াছে জুতএব উত্তরোত্তর অধ্যায়ের সংখ্যায় এক এক ন্যুন আছে 11

| ક્રાંફ્ર ્ટ | পণক্তি | অশুদ্ধ | শুদ্ধ |
|--------------------|------------|-----------------|--------------------|
| <i>>9</i> . | 9 | স্ তূ্য | मृक् |
| ঐ | २० | ग य्र | সম্মত |
| > }- | ` ع | যদ্ধ | যু দ্ধ |
| ঽ৽ | >0 | নিৰুগণ | नियांन |
| २२ | ২০ | ম হ ম্মদ | व्यक्षम् |
| २७ | २२ | মসল্মান | <i>মূ</i> সল্মান্ |
| ২ 8 | 9 , | শাহাকে | শাহকে |
| २৫ | હ | ্বেষ্টন | <u>বেষ্টন</u> |
| ৩২ , | 8 | . পশ্ৰ | পুঞ |
| e e | >0 | উপকার | উপকীব্র |
| 9¢ | 2 <i>9</i> | উড়িস্যা | উজিস্যা |
| ৩৬ | Ġ | বৃদ্ধিশাল | वृक्ति भी न |
| À | 79 | .বৈষ্ঠন | বৈষ্টন |
| ac. | | · বেষ্ঠন | বেষ্টন, |

অশুদ্ধশোধন

| . બુક | পণ্জি | শ শুন্ধ | শুদ্ধ |
|------------|----------------|-------------------|--------------------|
| ر د | 5¢ | বক্তি য়ার | বখ্ তিয়ার্ |
| 80 | 36- | উপস্থিত | উপস্থিত |
| à | 27 | উত্তমর্বাভি | উত্তমরীজি |
| 63 | ۲ | বেষ্টৰ | বেষ্টন |
| À | ን ፦ | हिन्म | श्चिम ू |
| 88. | >• | ष्ट | पू रे े |
| 80 | <i>55</i> | उद्यासन | ७८२४-माल |
| 8* | 8 | इिन्ह | ङिन् ष् |
| 81- | b - | स्कूर्र 🕆 | মৃ ত্যু |
| Q o | 32 | अच्चर थः | म भ्रद्य |
| @ 8 | 23 | শুদ্রা | मूका |
| 29 | >¢ | সরতে | সুরতে |
| •0 | 21- | <u> </u> | দৃ ঢ়তাপূৰ্বক |
| ভহ | 22 | কি ঞিন্দাত্ৰ | কিঞ্চিশাত্র |
| 5.9 | 2 | <u>ব্যাতিরেকে</u> | ব্যতিরেকে |
| ঐ | æ | উরোইপীয় | ইউরোপীয় |
| અ | · • | ৰ্গ্ৰন্থ। | ব্যবস্থা |
| À | ** | ্যদ্ধ | यू का |
| 90 | ર | না বজার | সাসুজার |
| ঐ | 79 | यूकः | যুদ্ধ [`] |
| À | 4 | সজ ার | সূজার |

| અંક્ર | প^ক্তি. | অশুদ্ধ | শুদ্ |
|-------------|-----------------|-----------------------|------------------------|
| 9> | • | ट् खी | হ न्डी ' |
| 98 | * | ৰন্ধ ৰৎৰগ্ৰহার | বন্ধুৰৎব্যবহান্ত্ৰ |
| 99 | 25 | স্থূল ঐপথদিয়া | স্থলপথ বিয়া |
| 99 | 8. | শীরজঁম্লা | भीत्रकृ्म्ला |
| b } | | সাহার্য/ছারা , | সাহাম্যদারা |
| F 2 | > 8 | উপৰিপ | উপদ্বীপ |
| re | 30 | বন্ধ | বন্ধু |
| }-9 | 9 | इिम | इ न्द्र् |
| b b | > *, | निर्मां । | निर्माণ |
| ঐ | • | হইয়াছিল | হইয়াছিল |
| F 2 | 28 | কাশাস্থাজারের | কাশীয়াজারের |
| ঐ | ٤٩٤ | <u>ত্রিচত্বাবিণশৎ</u> | ত্রিচত্বারি ংশৎ |
| £ \$ | 4 | ১ ৬৮৯শালের | ১ ৬৮৬শালের |
| હ્યે | 36- | ঘ ঢ়নায় | ঘটনায় |
| 90 | >> | সুতানটি | সুতানু টি |
| 8.5 | >> | স° रिषा | निक् |
| Ø.5 | Ġ | স ন্তেষ্ | সম্ভো শ্ব |
| લ્લે | ¢ ' | माञ्चादर्थ | সান্ত্ ৰাৰ্থে |
| ঐ | 220 | ভতাকাকে | ভৃত্যবৰ্গকে |
| 300 | >0 | দিল্লাস্ইতে | मिल्ली ३३८७ |
| 305 | 3 | তুহার | তাঁহার। |

অন্তদ্ধশোধন

| ગ ું | পণক্তি | অশুদ্ধ | শুৰ |
|-----------------------|------------|----------------|------------------------|
| 206 | ¢ | তঁহার | তাঁহার |
| ঐ | • | শুভিসি°\হ | শোভাসি° [্] হ |
| 308 | > | লট | लू हे - |
| ঐ | २२ | কৰ্ম | কৰ্ম |
| 704 | ११. | কোমতে | কোনমতে |
| 202 | à | বাছ্যুদ্ধ | বাহুযুদ্ধ |
| ঐ | \$8 | কিছ | কিছু |
| 220 | ¢ | হিন্দলোকেরা | হিন্দু লোকেরা |
| >>> , | २ २ | মক্ত ন | মুক্ত |
| 332 | ११ | <u>ৰায়তে</u> | ৰায়ুতে ' |
| >>@ | ২১ | যন্ধ | युका |
| >>9 | ٩ | যুদ্ধের | যুদ্ধের |
| >2> | >8 | <u>আহ্</u> ত | আহূত |
| \$ 2.8 | 22 | নিযক্ত | নিযুক্ত |
| 32 C | 9 | জেনের | ज रनद्र |
| ঐ | 59 | নিযক্ত | नियुक् |
| 52.9 | >0 | জনক | জনকে |
| <i>5</i> %> | २२ | নয় | ' नम् |
| 205 ₁ | ⊗ (| যেৰপ | যেৰূপ |
| ن ا . | 23 | डेब्जन ' | উজ্জ্বল |
| 200 | 30 | ঢাকায় | টাকায় |
| 201 | ,32, | পুর্বগত | পূর্ব্বগত |

অশুদ্ধশোধন

| સંક્ર | পণ্ডি | অশুদ্ধ | শুন |
|-------------|-------------|--------------------|------------------------------|
| 2000 | 9 | কিঞ্চিশাত্র | কিঞ্চিন্সাত্ত |
| 58 2 | b . | 'আলিবদিখা | আলিবদিখা |
| >8€ | ٠, ٢ | ,শ ত্রদিগের | . শতুদ্দিগের |
| ঐ | 25. | পোষ্যপত্ৰ | পৌষ্যপুত্ৰ |
| 68 ¢ | 2,2 | नर्ष | नूषे |
| 260 | > | কিছক ল | কিছুকাল |
| ঐ | 2 | হটাৎ , | इ ठा ९ |
| ঐ | ; 2 | ,মরসিদাবাদ | • মুরসিদাবাদ |
| >@> | 55 · | মক্তৃ | মূক্ত |
| a • | > | শ্ত্ৰপক্ষে | শত্রপক্ষে |
| ે હ | 22 | উদ্দৌনার | উদ্দৌলার |
| >02 | • | বন্ধতা | ব ন্ধু তা |
| હ્યે | 52 | শত্রদিগের | শতুদিগের |
| ঐ | २०, | পনর্বার | পুনরার |
| 200 | 5 | ধ নক | ধনুক |
| <u>ه</u> , | ~ 3 | শত্রপকে | শত্র্পিকে |
| ' | २२ | ই চ্ছক | ই ন্দু ক |
| .* 568 | 2 | য ই লেন | যা ইলেন |
| હ્યે | <i>ج</i> د. | শ্ৰহইতে | শত্ৰুহইতে |
| >৫% | > | শত্রদিগের | শ ৰু হইতে শৰুদিগের |
| <u>ن</u> | 3.5 | অভিবন্ধতা | অতিবন্ধতা |
| | | | |

অশুক্ষশোধন

| পৃষ্ট | প^জি | অশুদ | ্ শুদ্ধ |
|-------|----------------|-------------------------|-------------------------------|
| Jak | 9 ' | শত্ৰাশ | শত্ৰাশ |
| 696 | b | শত্রা | শত্রা |
| . ঐ | 30 · | শ্ৰ | শ্ৰু |
| >>\g | œ | শত্রা | শ্ৰুল |
| 200 | 8 . | শীঘ | শীঘু |
| 202 | 20 | মহারাষ্ঠীয়েরা | নহারা ঙ্গী য়ের |
| 396 | >0 | पूरे गामगशा | पू रुया ग याथ । |
| 21-0 | > | কঠীন | ক ঠিন |
| ঐ | 79 | ক্র র | জুর , |
| ঐ | ११ | নিষ্ঠর হা | নিঙুরত |
| 31-9 | 24 | नगराय | ज नुमाञ्च |
| 366 | 9 , | ए र्श | पूर्व |
| 220 | » , | शीया | श्रीष |
| ঐ | 27 | नर्ष | नूरछे , |
| ろうく | • | ্রফল | প্রফুল্ল |
| ঐ | > | <u> </u> | <u> </u> |
| À | ، و | উন্ত্ | উন্মন্ত |
| 864 | 32 | বন্ধলোকের | বন্ধুলোকের |
| >26 | œ | র ণেচ্ছক | রণে-ছুক |
| 721 | > @ | ম ন্ ষ ্য | মন্য্ |
| 200 | ِ عاد ٰ | তদনসাংস্ | তদনুসারে |

| পৃষ্ঠ | পণ্ডি: | অশুদ্ধ | •শুদ্ধ |
|-------------|----------------|--------------------|-----------------|
| 203 | ११ | নিযুক্ত | নি যুক্ত |
| २०७ | ; · | উপ †য় | উপায় |
| 200 | •>0 | ওয়ু চ্ সন্ | ওয় ়৳্স |
| 2 58 | 75 | রক্তবিশ | রক্তবিন্দু 🐣 |
| ঐ | 34, | श्कि | , हिन्सू . |
| /2.5¢ | 20 | কুমন্ত্রণা | কুমন্ত্ৰণা |
| ঽ১৭ | 71- | শত্ৰ | শত্ৰ |
| ২ ২8 | 22 , | পর্যস্ত | পর্যান্ত |
| १ २७ | ર જુ | লোকাদারা | নৌকাদারা |
| ঐ | 76 | শত্রদিগের | শুত্রুদিগের |
| ₹ ·95 | >3 | জঝিনখঁ | জঝিনখাঁ৷ |
| ঐ | ঽ৽ | স্বকমে | স্বকর্মে |
| ২ ৩৪ | b | বন্শিটাট্ | বন্শিটাট' |
| २७७ | >0 | কোস্পানির | কোষ্পানির |
| ২্৩৬ | >0 | ভ্ত্যেরা | ভূত্যের |
| २०४ | ~ | মূদা' | বুজা |
| ২ ৪১ | 9 | বয়ক | বয়স্ক |
| २ 8२ | >4 | जगत् । | गटेगटना |
| ২ 8৩ | ; & | ষে 😲 | যে |
| २ 8% | >9 | রেজর্থী। | রেজার্থা |
| ঐ . | >@ | ভৃতুঁচিগের | ভৃত্যদিগের |

| ৰ্কা | পণ্ডি | ক্ত অভন্ত | গুদ্ধ , |
|--------------|-------------|------------------|----------------------------|
| ₹81- | ૨ ૨′ | <u>ষেৰূপে</u> | যেৰূপে |
| २৫२ | ৬ | ভত্যদিগের | ্তুত্যদিগের |
| , 280 | | ् कृष्टेनগরে | ্ ক্ ফনগ ের |
| <u>ن</u> ھ | 19 | কিঞ্চিস্মাত্র | কৈঞ্চিম্বাত্ৰ |
| ঐ | २०, | সুফ্টির | মুক্তির, ' |
| ঽ৽৮ | 8 | পালিয়ামেণ্ট | পালিয়ামেণ্ট |
| २ १० | 52 | কর্মে | কৰ্মে |
| २१२ | 9 | . তন্মতে | ৃত্যুতের |
| ২৭৩ | 24 | তিলকচন্দের ু | তিলকচ্ দ্ৰে র |
| 26% | ২ | স ভ়∕কন্ম | স ভ্যক্ ষ ্ট |
| ब्रे | २० | উদ্যোগী | উদে গগী |
| ২ ৯• | 3 | কোস্পানির | কোম্পানির |
| २ २८ | * | কৰ্মনিবাহ | কৰ্মনিৰ্বাহ |
| ঐ | 9, | থ দ্ধ | যুদ্ধ . |
| % 08 | 50 | ুস্তত | প্রস্তুত |
| 209 | . œ | সাহাত্যগ্রা | সাহায/ছারা- |
| 201 | ٥٥, | যেসকল্ | যেসকল |
| 600 | 2 | যুদ্ধের | यूष्कत . |
| ঐ | 9 | ়শত্র | শৰু 🗸 |
| 10 55 | • | য়ায় | যায় |
| ७०० | ' 为 | 'যোগ্য | যোগ্য |
| 6 (0) | ٠, ٩ | | शृंखंक ' |